शास्त्रों द्वारा छुटकारा

ख्रीस्ट और उसके छुटकारे के कार्य के स्पष्ट चित्र को प्राप्त करना

Paul J. Bucknell

शास्त्रों द्वारा छुटकारा

ख्रीस्ट और उसके छुटकारे के कार्य के स्पष्ट चित्र को प्राप्त करना

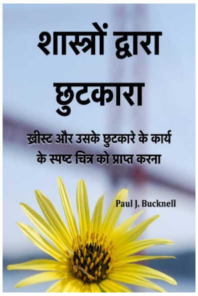

“उनका छुड़ाने वाला सामर्थी है; सेनाओं का यहोवा, यही उसका नाम है। “

यिर्मयाह-50:34

अर्पण

अतुल्य

परमेश्वर का असीम प्रेम शास्त्रों के पन्नों में बिखरे हुए प्रकाशनों से बहता है, जब हम ख्रीस्ट के सुसमाचार की ओर मुड़ते हैं। हमारा पूरा अस्तित्व परमेश्वर की उदार और अयोग्य भलाई जो यीशु की महिमामय छुटकारे के कार्य में मिलती है, डूबी हुई है।

सरहाना

मैं अत्यंत सराहना करता हूं परमेश्वर की स्थानीय कलीसिया की जिसकी मैंने बीते 20 वर्षों से ज्यादा पासबानी की है तथा जिन के साथ

कार्य किया है । मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ कि परमेश्वर के कुछ महान सेवकों के साथ कार्य कर सकूं। मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ की परमेश्वर के कुछ महान लोगों के साथ काम कर सका: कैल्विन चिआंग, जसे मक्लॉघलिन तथा रिज ओर्र, शास्त्रों के दवारा छुटकारे की वयस्को की पहली प्रशिक्षण श्रृंखला बनाने के समय कई फलवन्त विचार उत्साहवर्धक अध्यनो के समय जन्मी। यदि आप को कक्षा के पर्चे, कई ऑडियो/ वीडियो तथा पावर पॉइंट स्लाइड्स तथा और भी कुछ चाहिए तो BFF शिष्यता 3 वाचनालय देखें। मैं अपनी बेटियों की शब्दों के प्रति आकर्षण मैं बहुत आनंदित होता हूं। अल्लिसों बुकनेल ने उदारता से कई अद्भुत सुझावों को इस पुस्तक के संपादन में जोड़ा है।

विषय तालिका

परिचय...
6

परमेश्वर के छुटकारे की योजना का स्वरूप (1-5)

छु ट का रे की
योजना..9

छुटकारे का उद्देश्य..30

छु ट का रे की
घोषणा 52

छु ट का रे का
कार्यक्षेत्र...74

छु ट का रे की
योजना..100

परमेश्वर की छूट कार्य की योजना का अर्थ (6-10)

छु ट का रे की
रूपरेखा..126

नुकसान जिस से छुटकारे की आवश्यकता है............................154

छुटकारा देने वाला छुटकारा लेकर आता है..............................174

छुटकारे का दाम 201

छुटकारे की बहुमूल्यता...236

परमेश्वर के छुटकारे की योजना की पूर्णता (11-14)

संयुक्त सेवा का आनंद..262

उसकी पवित्रता विभागीय होने का दृढ़ संकल्प 288

एक प्रेम संबंध की चाह 308

अपने प्रभु के साथ एक गहरी सहभागिता 333

परमेश्वर के छुटकारे की योजना का सारांश (15-16)

छुटकारे के सत्य का सारांश..367

छुटकारे की पुनर्स्थापना का सारांश 393

शेष संग्रह 1 लेखक के विषय में और..425

शेष संग्रह 2 पुस्तक का सारांश..427

परिचय

किसी भी अद्भुत कार्य के समान चाहे फिल्मों में, चाहे संगीत में, या चाहे नाटिका में, एक कथानक धीरे धीरे एक समय में एक बात उजागर करता है जो कि विस्मय और कुतूहल उत्पन्न करता है कि क्या हो सकता है, क्या क्या किया जा सकता है। हर एक दृश्य उसकी तीव्रता को बढ़ाता है, जब तक अंतिम प्रकाशन नहीं आता तब सबकुछ साफ हो जाता है । दर्शक उस कथानक के विश्लेषण का आनंद उठा सकते हैं जो उन कौतूहल उत्पन्न करने वाले दृश्य पर विचार करने के द्वारा आते हैं। उसी रीति से परमेश्वर के छुटकारे की कहानी उन समयों में लिखी जाती है जो धीरे-धीरे हमें उसके श्रेष्ठ काम में जोड़ती जाती है । जो बात हम में से कई लोग नहीं समझते हैं वह यह है कि हम सब इस महान नाटिका में भागी हैं ।यह उस फिल्माए जाने की प्रक्रिया के दौरान हैं, जिसमें हम में से प्रत्येक का छुटकारे के नाटक में भाग हैं । जो की अनंत काल तक निभाया जाएगा जो कि आगे परमेश्वर के प्रेम और दया जो प्रभु यीशु मसीह में है उसकी महिमा प्रकट करेगी। शास्त्रों के द्वारा छुटकारा परमेश्वर के छुटकारे की योजना के प्रमुख दृश्यों को विशिष्ट रुप से दिखाता है जो ख्रीस्त के व्यक्तित्व और उसके कार्य तथा जो निरंतर आगे शास्त्रों में प्रगट होता है। विस्तृत वर्णन के सूक्ष्म धागो को आखिर समझा जाता है। परमेश्वर की अद्भुत करुणा तथा भलाई को जो परमेश्वर मनुष्य के प्रति उस कार्य में इस्तेमाल करता है उस में दीखता है, और कैसे वह बचाता है और उस व्यक्ति में आनंदित होता है जिसे उसने छुड़ाया है। जिस प्रकार से यह छुटकारे का प्रकाशन बढ़ता है और

इसका उद्देश्य इस बात पर सतर्क ध्यान ले जाता है कि किस प्रकार से यह उसके लोगों के जीवन में पूरा होता है। यह भाग उस प्रक्रिया का अनुसरण करते हैं जिसके द्वारा एक व्यक्ति उस बहुमूल्य चीज को खरीद सकता है या छुड़ाता है। वह (1)योजनाएं (2) खरीदारियों तथा (3)जिस चीज को उसने पाया है उसमें आनंदित होना। हर एक अध्याय में 3 से 5 वचन के भाग है जो छुटकारे के विषय समय दर समय बढ़ोतरी को के विभिन्न दौर को प्रस्तुत करता है । (निम्नलिखित चित्र को देखें)

हर एक भाग एक उचित विषय को समझाता है हमें उस अंतिम सत्य की प्रकाशन में अगुवाई करते हुए । यह ना तो ख्रीस्त के ऊपर अध्ययन है (जो कि क्रिस्टोलोजी) ना ही उद्धार के विषय पर जोकि (सोटेरिओलॉजी) परंतु यह छुटकारे के ऊपर अध्ययन है । जो कि बाइबल अध्ययन से प्रेरित है । यह बताते हुए उन विभिन्न तरीकों से जिसके द्वारा ख्रीस्त की योजना और उसका कार्य हमारे जीवन को प्रभावित करता है । विशेष ध्यान इस बात पर दिया गया है कि कैसे छुटकारा एक बलवंत मसीह विश्वासी के जीवन में अहम भाग को निभाता है । अध्ययन के प्रशन उपलब्ध है ।

परमेश्वर के छुटकारे की योजना का स्वरूप (1-5)

" मुझे चाहिए ! "

1 छुटकारे की योजना

क्या कभी आपने सोचा है क्यों येशु को जरूरत पड़ी की उद्धार लाने के लिए वह अपनी जान दे? यदि हम गहराई से इसके अर्थ को देखें और इस शब्द के इस्तेमाल को 'छुटकारा' तो उद्धार की योजना की गूढ़ता और प्रसांगिकता हमारे जीवन में एक सामर्थी प्रभाव बन सकता है । छुटकारे का विषय शास्त्रों में पाया जाता है हालांकि यह शब्द आधुनिक संदर्भ में उसके वास्तविक अर्थ जोकि बंधुओं के छुटकारा है बड़ी मुश्किल से बताता है । क्रिस्ट का क्रूस पर सामर्थ्य बलिदान उस छुटकारे के चित्र को अमर कर देता है , जिसमें परमेश्वर की धार्मिकता

प्रगट की गई और उसकी करूणा और उसकी बुद्धि तथा विश्वास से किताने विश्वास योग्यता यीशु के लहू के द्वारा लोगों के छुटकारे से सिद्ध होती है ।

परमेश्वर की योजना बनाम मेरी योजना

हाल ही में विश्वव्यापी कलीसिया का कैसे सुसमाचार प्रचार करना और मिशन में नई शुरुआत करने के कदम से बढ़कर किसी और चीज ने उसे आशीषित और बढ़ाया नहीं है हालांकि इस पर ध्यान केंद्रित करने से एक कमजोरी उजागर हुई है की मसीही कलीसिया का बड़ा समूह उनके बड़े उद्धार के अर्थ और उसके परिणाम को केवल उत्सव में स्थान पाने तक ही सीमित कर चुका है । कई मसीही अपने विश्वास की और अपने बपतिस्मे की पहचान स्वर्ग में जाने के लिए एक टिकट के रूप में पहचानते हैं जो कि यीशु पर विश्वास पर आधारित है यह ना केवल शुरूआती इवेंजेलिकल आंदोलन जो पश्चिमी देशों में था उनके लिए सत्य था परंतु यह उन कलीसिया पर भी लागू होती है जो अफ्रीका-भारत हो पूरे संसार में बढ़ रही है । विश्वासी और अधिक सीखने के विरोध में नहीं है तथा और अधिक समझ रहे हैं । परंतु कई प्रकरणों में वह सुसमाचार के पूर्ण संदेश के लिए अपने आप को बंद कर लेते हैं ।

ख्रीस्त के विश्वासियों को उनका जो स्वर्ग में स्थान है उसके लिए बड़ा हियाब होना चाहिए । योहन्ना ३:१६ वायदा करता है कि जो ख्रीस्त पर विश्वास रखता है उसके पास अनंत जीवन होगा जब मैंने पहली बार

यीशु पर विश्वास किया मैं बड़े आनंद के साथ बचाया गया और मुझे तुरंत मेरे प्राण में उस अनंत जीवन के लिए या प्राप्त हुआ यह ही आप ही आप ही आप ही उद्धार के संदेश और उसके अनुभव का एक भाग है और यदि उधार के इसी बात पर विश्वास किया जाए तब यह केवल एक भाग पर ही क्रिया करने के समान होगा कलीसिया इस बात को नहीं समझ पाती कि उसका यह एक तरफा विश्वास उसे मजबूर करता है कि वह एक बलवंत आत्मिक जीवन जिए । बिल्कुल उस कार के समान जिसके चक्कों में हवा नहीं तब

कलीसिया अपनी ध्यान को कुछ शुरुआती उद्धार के कुछ शुरुआती आत्मिक अनुभव पर लगाता है तथा उस आने वाले भविष्य की सुरक्षा पर जोर डालता है इसके बजाय कि अपने ध्यान को केंद्र को परमेश्वर के उन लोगों पर लगाएं जो आत्मा से भरे हैं और परमेश्वर के राज्य की योजना को पूरा करने के लिए कार्यरत है । जो कि उस भविष्य की सुरक्षा से कहीं बड़ा है परमेश्वर हमारे जीवन में पर हमारे जीवन ओके द्वारा आज कार्य करना चाहता हैA

हम विश्वास के प्रति दो प्रकार की पहुंच को इन तरीकों से फर्क कर सकतेहैं ।

- “परमेश्वर ने मुझे बचाया ताकि मैं स्वर्ग जा सकूं” (ऊपर देखें :“मेरी योजना का चित्र)

- परमेश्वर ने मुझे इसलिए बचाया कि मुझे अपनी तरफ पुनर्स्थापित कर सकें और उसने मुझे सक्षम किया है ताकि मैं उसकी योजना को पूरी कर सकूं (नीचे: “परमेश्वर की योजना”)

जब अनंत जीवन सही रुप से समझा जाता है ,यह केवल इस बात को समझना नहीं कैसे उस न्याय से बचाएं यह उस प्रेरणा कि लो के विषय में है । एक अच्छा और एक आशा जो परमेश्वर की संतान होने के फलस्वरुप आती है एक व्यक्ति के जीवन के लिए परमेश्वर की सारे उद्देश्य उसके अनुग्रह के द्वारा पूरे किए जा सकते हैं तथा दूसरे लोगों की भलाई के लिए इस्तेमाल किए जा सकते हैं । तब तक जब तक एक बड़ा उद्देश्य बना रहता है जो कि परमेश्वर को महिमा देने के लिएA

मेरी योजना पहली योजना मेरा उद्देश्य योजना है क्योंकि एक मसीह

व्यक्ति अभी भी अपने ऊपर ही केंद्रित है वह अभी भी जीवन के प्रति दुनिया भी तरीके से प्रदूषित हैं और यह इसलिए होता है क्योंकि उसका धर्म ज्ञान विकृत है । वचन में बचाए जाने का विश्वास उस उद्धार की योजना में एक अहम भाग को बनाता है । हम कह सकते हैं “परमेश्वर की योजना “।

ख्रीस्त के द्वारा उद्धार प्राथमिक रूप से हमारे लिए नहीं है हलाकि बिना प्रश्न हम आशीषित हुए ताकि उसके भाग ठहरे । परिणाम स्वरुप उद्धार को हमें ऐसे देखना है जो परमेश्वर की महिमा के बड़े चित्र को प्रकट करता है क्योंकि उसके द्वारा और उससे ही और जिसके लिए सब कुछ है उसी की महिमा सर्वदा होती रहे आमीन ।(रोमियों 11:36)

हम क्रूस को एक आपातकालीन योजना के रुप में नहीं देखना है । मानो परमेश्वर ने कोई गलती की है परंतु परमेश्वर के अनंत योजना में एक मुख्यता निभाता है जो परमेश्वर की महिमा में प्रेम तथा सामर्थ्य क्रोध को प्रकट करता है । और उसके साथ ही अत्यधिक अनुग्रह जिसके हम योग्य नहीं अपने लोगों पर मिलता है और जैसे हम आगे बढ़ते हैं परमेश्वर की योजना की अद्भुत सुंदरता बढ़ती जाती है । अभी के लिए हम देखेंगे कि कैसे पौलुस जो कि एक समय संतों का सताने वाला था अगली बार राजा अग्रिप्पा के सामने अपने विश्वास की वकालत करता है

सो परमेश्वर की सहायता से मैं आज तक बना हूं और छोटे बड़े सभी के साम्हने गवाही देता हूं और उन बातों को छोड़ कुछ नहीं कहता, जो भविष्यद्वक्ताओं और मूसा ने भी कहा कि होने वाली हैं। कि मसीह को दुख उठाना होगा, और वही सब से पहिले मरे हुओं में से जी उठकर, हमारे लोगों में और अन्यजातियों में ज्योति का प्रचार करेगा।। (प्ररितो के काम 26:22-23)

पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं में पूरी जगह हम परमेश्वर के महान योजना के इशारों को देख सकते हैं और नया नियम उन उदाहरणों से भरा है कि कैसे परमेश्वर ने अद्भुत रीति से अपनी महान योजना को पूरा किया । हमारा ध्यान इस बात पर ना रहे कि हमारे पास एक तरफ का टिकट है स्वर्ग जाने के लिए परंतु हमारे विश्वास पर होना चाहिए आशा पर होना चाहिए कि परमेश्वर ने अपनी सोचनीय भलाई में मनुष्य को अपने साथ पुनर्स्थापित किया ताकि वह उस योजना को पूरा करता रहे जो उसने आदम और हव्वा से शुरुआत की थी । इस बगीचे की घटना

जो हमें उत्पत्ति दो और तीन में मिलती है एक वास्तविक घटना ऐतिहासिक सच्चाई को दर्शाती है । ना केवल इस बात को की दुनिया के साथ क्या गलत हुआ परंतु परमेश्वर के मनुष्य के प्रति प्रारंभिक सोच को भी चित्र करती है हर एक अध्याय परमेश्वर के कार्य की योजना के विभिन्न पहलुओं को जांच की है उसमें क्यों और कैसे हुआ इसकी व्याख्या भी । संक्षिप्त में कलीसिया कमजोर और हारी भी इसलिए है क्योंकि परमेश्वर की योजना की जगह मेरी योजना रख दी गई है । विश्वासी परमेश्वर को जानने के बावजूद उसके लिए नहीं जीते, नहीं तो कैसे यह अध्यात्म विद्या संबंधी बहस आती कि यीशु एक व्यक्ति का उद्धारता हो सकता है परंतु उसका प्रभु नहीं । परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा जैसे उसकी संपूर्ण सुरक्षा की योजना आगे और स्पष्ट की जाती हैपरमेश्वर की योजना ना केवल हमारे लिए और अधिक स्पष्ट होगी परंतु वह हमें परमेश्वर की वह योजना में बुलाती है । जिसकी सामर्थ और उसकी महिमा के लिए हम जीवन को जिए ,एक बल देने वाले दर्शन को प्रदान करेगी । परमेश्वर के वचन में जो सत्य हमें मिलता है हमारी आंखों को खोलें , अद्भुत रीति से तरीकों के प्रति जिससे परमेश्वर हमारे बेजान तत्वों में अपनी योजना को खोलता है । सुसमाचार लोगों को सवर्ग पहुंचाने का एक रास्ता नहीं है यह वह तरीका है जो लोगों को परमेश्वर तक पहुंचाता है । यह हर एक बाधाओं के ऊपर जय प्राप्त करने से परमेश्वर के आनंद आनंद तक का तरीका है । यदि हम परमेश्वर को अपनी सब बातों के ऊपर नहीं चाहते इसका मतलब हम वह सुसमाचार से परिवर्तित नहीं हुए हैं । जॉन पाइपर *(गॉड इस गॉस्पेल :व्हाट इज द कॉस्ट इन मेडिटेशन गॉड गिफ्ट ऑफ हिमसेल्फ)*

इस बाकी अध्याय में हम इस विषय पर चर्चा करेंगे की छुटकारे के शब्द का अर्थ क्या है और क्यों यह वचन में बार-बार इस्तेमाल किया गया है । हमारे गीतों में इस्तेमाल किया गया है । और क्यों इस किताब के शीर्षक में यह आया है ।

महिमामय छुटकारे की योजना

हम जीवन को विशेष रुप से अपने छोटे नजरिए से देखते हैं । जब हम एक कदम पीछे रहते हैं और ध्यानपूर्वक उन बातों को देखते हैं जो परमेश्वर ने अपने वचन में कही है हम अचंभित होते हैं और परमेश्वर की अनंत योजना की महानता को देख कर यूं ही कुछ किताबों का पवित्र किताबों का संग्रह नहीं है । यह एक है जो परमेश्वर इस दुनिया में कर रहा है उस बात को रेखांकित करती हैA

जैसे हम परमेश्वर के छुटकारे की योजना को देखते हैं हम एक उपभोक्ता के दृष्टिकोण से देखते हैं । व्यक्ति के समान जो महंगी चीज खरीद रहा हो ।

(1) पहला कार्यक्रम (#1-5) " मुझे चाहिए "

कार्यक्रम का अध्याय परमेश्वर की मुख्य इच्छाओं को रेखांकित करता है उसकी योजनाएं आनंद है जिसका अर्थ यह है कि वह कभी भी नई नहीं है नहीं है। उनकी कोई शुरुआत नहीं है ।उसने हमें उसमें चुना (ख्रीस्त) इस संसार की उत्पत्ति से पहले ताकि हम उस में पवित्र और निर्दोष ठहरे पिता के सामने (इफिसियों 1:4) परमेश्वर ने अपनी योजना को प्रकट किया और इस सृष्टि की रचना में सृष्टि की रचना, पृथ्वी, मनुष्य जाति का इतिहास और समय खुद में उसको इसको बुना।

“आदि में परमेश्वर (उत्पत्ति 1:1) परमेश्वर की योजना की शुरुआत का परिचय देती है समय तब परमेश्वर के छुटकारे की योजना के विषय में ही था तथा ईस्वी और ईसा पूर्व एकाक्ष रेखा को बनाती है परमेश्वर की योजना के लिए जो रिश्तों के उस क्रूस पर कार्य के चारों ओर घूमती है ।

(2) खरीदारी (#6-10)“ मैंने इसकी कीमत को दिया ”

खरीदारी इस बात को बताती है कि कैसे समयों में परमेश्वर ने अपनी योजना को प्राप्त किया । शुरुआत के तुरंत बाद मनुष्य ने अपनी इच्छाशक्ति का फायदा उठाया और अपने मार्ग पर चला उसको नाश करते हुए, जो परमेश्वर की सिद्ध योजना प्रतीत होती थी । परमेश्वर की योजना को नाश करने की बजाए मनुष्य का विद्रोह हमें इस काबिल बनाता है इस बात को देखने के लिए ही परमेश्वर की योजना और अधिक गहरी जाती है तथा उसने उस समस्या को जो मनुष्य के विद्रोह से उत्पन्न हुआ हल कर ली है । अपने पुत्र को अपने लोगों के लिए क्रूस पर पर भेजने के द्वारा । बलिदान उसकी योजना कार्यक्रम सुरक्षित करती है यह यीशु के पुनरुथान और महिमाय होने के द्वारा और उसके लोग उसके साथ उठाए जाते हैं प्रारंभिक योजना में आगे बढ़ने के लिए ।

(3) आमोद (#11-14) “ मुझे पसंद है ”

आमोद इस बात पर चर्चा करता है कि किस प्रकार परमेश्वर अपने उद्धार की योजना को पूरी होते हुए देख आनंदित होता है यह आनंद तब होता है जब वह अपने लोगों को यीशु के पीछे चलते हुए देखता है ना केवल जब वह स्वर्ग में पहुंचते हैं परंतु अब जब वह पृथ्वी पर है । परमेश्वर ने अपने कार्य को पूरा किया और फिर से मनुष्य की क्षमता को

कि उसकी सेवा यीशु के कार्य के द्वारा करें वह ठीक किया है । वह अपने लोगों के साथ और उनके द्वारा जब वह पृथ्वी पर है कार्य करने से प्रेम रखता है तथा वह ऐसा अनंत काल तक करता रहेगा ।

(4) छुटकारे का सारांश (#15- 16)

परमेश्वर की छुटकारे की योजना को हम दो दृष्टिकोण से देखेंगे पाठकों की सहायता के लिए कि वह बाइबिल के विषयों तथा उल्लेखों पर मजबूत पकड़ बना सकें । पहला सारांश सामर्थी काल अनुक्रमिक छुटकारे के विकास को के उपर जो यीशु के वस्त्र उस पर कार्य तक ले जाती है ,ध्यान केंद्रित करता है । और दूसरा बाइबल आधारित सारांश परमेश्वर के उस ध्यान पूर्व पूर्व स्थान पुणे की योजना पूर्ण स्थापना की योजना को चित्रित करता है । इस बात पर रोशनी डालते हुए की अपनी योजना में अपने उसका मूल छुटकारे के कार्य में हमें सम्मलित करने के उद्देश्य के लिए ।

परमेश्वर की योजना छुटकारे की योजना है क्योंकि यह मनुष्य की परमेश्वर के साथ संगति की पुनर्स्थापना में मृत्यु के श्राप से छुटकारे की रचना पर कार्य करती है तथा आत्मिक जीवन को पुनः पाने के ऊपर कार्य करती है केवल यही एक तरीका है जिसके द्वारा मनुष्य को परमेश्वर के साथ पुनर्स्थापित किया जा सकता है ।एक सौदा किये जाने की जरूरत थी कि हम उस शैतान के अधिकार से बाहर आ सकें ।

छुटकारे का शाब्दिक अर्थ यही है कि खरीदना या मोल लेना यह एक आदान-प्रदान है या कुछ वस्तुओं का या कुछ फायदे का प्राप्त करना । छुटकारे का लेन देन दुकानों पर हर समय किया जाता है जहां

हम पैसे के बदले जो उसकी कीमत है अपनी चुनाव अनुसार चीजों को घर ले जाते हैं । अंग्रेजी में इस शब्द छुटकारे को बहुत कम हम इस्तेमाल करते हैं जब मैं छोटा था मैं हमेशा जमीन पर देखते हुए चलता था पुरानी बोतलों को ढूंढते हुए और जब मुझे कुछ मिल जाता था मैं उसको आदान-प्रदान के लिए इस्तेमाल करता था मैं उन बोतलों को दुकान पर ले जाता जहां दुकान का मालिक उन बोतलों के बदले मुझे पैसे देता था । नए नियम में भी इसका अर्थ वही हैफायर की यूनानी शब्दकोश छुटकारे को किस तरह से परिभाषित करती है । एक मूल्य को चुकता करना ताकि दूसरे के सामर्थ से उसको पुनः प्राप्त कर सकें धन देकर बंदी को मुक्त कर सकें खरीद सकें दूसरी परिभाषा पहली परिभाषा के बिल्कुल समान है जो कि खरीदना खुद के लिए खरीदना खुद के उपभोग के लिए खरीदना परमेश्वर एक खरीदार के समान है जो इच्छुक है मूल्य देने के लिए उस चीज के लिए जिससे वह चाहता है उसको किस चीज की आवश्यकता थी और किस चीज की वह बलिदान को देने के लिए तैयार था ताकि स्त्री और पुरुष के मालिकाना हक को उस दुष्ट की सामर्थ्य से तांत्रिक स्थानांतरित कर सके जब हम इस छुटकारे के विचार पर सोचते हैं। कुछ महत्वपूर्ण प्रश्न हैं जिन्हें हमें पूछना है कुछ ऐसे प्रश्न है जिनका जांच-पड़ताल किया जाना है बेहतर समझ के लिए एक खरीदारी की जरूरत क्यों पड़ी क्यों इस खरीदारी की चाह की गई यह महान आदान-प्रदान समयों का केंद्र है क्योंकि यह परमेश्वर के महान अनंत योजना का हिरदय है । इसी कारण से कई कलीसिया में कलीसिया भवन के पास बड़े क्रूस को देखते हैं और क्यों कई लोग अपने गलो में उसको टांगते हैं ।

क्रूस की सामर्थ उस चिन्ह में नहीं है परंतु जिस बात को दर्शाता है उसमें सामर्थ सत्य को जानने में है जो कि यीशु की उस क्रूस पर मृत्यु के पीछे हैं । क्रूस हमें इस खरीदारी के विषय में स्मरण दिलाता है जिसकी हमें आवश्यकता पड़ी सुधार प्राप्ति के लिए तथा परमेश्वर के उस महान प्रेम और योजना जो हमारे लिए है विस्तृत रूप से चित्रित करता है स्मरण रखेंगे यद्यपि यह खरीदारी परमेश्वर की योजना का केंद्र बिंदु तथा अति आवश्यक भाग था वह उस योजना का अंत नहीं था वह तरीका था जिससे वह योजना पूरी हो सके ।

मनुष्य का प्रयास

हालांकि मनुष्य कई तरीकों को लेकर आया कि परमेश्वर के लिए और समाज के लिए अपने आप को सुधार सकें । उसकी सारी योजनाएं धर्म उसका सारा दार्शनिक चिंतन कुछ कार्य नहीं कर सके । परमेश्वर के लोगों के हृदय में एक बड़ा भय छा गया जब पहला नियम उनको दिया गया जो कि उनको इतना उत्साहित नहीं कर पाया उस कार्य को करने के लिए जिसे उन्हें करना था और जिसे निर्गमन की पुस्तक में बड़ा साफ किया गया है । गिनती की पुस्तक में हालांकि इजरायल और परमेश्वर की महिमा को लाल समुद्र को पार करते हुए देखी थी वह निरंतर शिकायत करते रहें और विश्वास नहीं किया A

मनुष्य की अपने आप को बचाने में असमर्थता

हम लाज़र की कहानी में यीशु के उस जाने-माने शब्दों को देखते हैं तब उसने कहा कि “हे पिता मैं तुझ से विनती करता हूं कि तुम मुझे मेरे पिता के घर में भेज दे क्योंकि मेरे पांच भाई हैं”

पुराने नियम में परमेश्वर की दया के विषय में कई उदाहरण है गिनती 11:2 में हम इसी प्रकार से परमेश्वर के प्रकोप को उसके लोगों पर आते हुए देख सकते हैं उनके पास कोई आशा नहीं थी कि वह अपने आप को छुड़ा सकें और यदि मूसा नहीं होता एक धर्मी व्यक्ति का हस्तक्षेप पर लोग पूर्ण रुप से नाश हो जाते ।

भले लोगों के विषय में

भले लोगों के विषय में क्या कई सोचते हैं कि परमेश्वर अच्छे लोगों को आशीष देता है या उन लोगों को जो कठिन प्रयास करते हैं अच्छा बनने के लिए हालांकि पुराना नियम इस तथ्य की गवाही देता है मूसा और दाऊद जैसे महान व्यक्तियों के पापों के ऊपर रोशनी डालते हुए मूसा ने उस पत्थर पर बात करने के बजाए छड़ी को मारकर परमेश्वर की आज्ञा को नहीं माना (गिनती 20: 11 -12) और दाऊद ने बतशेबा के साथ संबंध तथा उसके पति की हत्या द्वारा पाप किया (1 राजा -15: 5)जो व्यक्ति दाऊद का सामर्थी जन था (1 इतिहास 11:41)

हमारा ‘अच्छा’ परमेश्वर के ‘अच्छे’ से बहुत निम्न है मुसा उस वायदे किए हुए देश में प्रवेश नहीं कर पाया (गिनती 20: 11-12) दाऊद को उस मंदिर को बनाने के लिए नहीं चुना गया (2 शमूएल 7:12 -16) मनुष्य शायद इन कमियों के ऊपर परत चढ़ा सके और मनुष्य ऐसा ही है परंतु परमेश्वर जिम्मेदारी के साथ ना केवल हमारे कार्य को वश हमारे विचारों को भी जा सकता है (1 पतरस4: 17-18 ;1 कुरंथियो 3:13-15)

आत्मिकता के तरफ प्रयास

दूसरे नैतिक चाल चलन को कम करते हैं तथा उसकी बजाय मनुष्य के धर्म को विकसित करने के प्रयास पर जोर डालते हैं जोकि उनके परमेश्वर के विचार को सैद्धांतिक रुप से संतुष्ट करता है परंतु फिर से जैसे हम मनुष्य के धर्मों को देखते हैं केन के अधूरे और अयोग्य बलिदान से शुरुआत करते हुए उत्पत्ति 4 वालों की आराधना तक जिसका अर्थ है प्रभु या दूसरे धर्मों तथा मूर्तियों को जो पुराने तथा नए नियम में वर्णित किए गए हैं यह धर्म परमेश्वर के लिए असहनीय है और जो उनके विरोध में एक अपराध बन गया जिसके कारण से परमेश्वर ने उनका न्याय किया।

इस्त्राइलियों का परमेश्वर के विषय में गलत बयानी ने उनकी परमेश्वर की समझ को प्रकट किया। मनुष्य जाति और मनुष्य की समस्या की प्रकृति को प्रकट किया। कई प्रयास किए गए इन परिस्थितियों को हल करने के लिए परंतु वक्त पूर्ण रूप से अपर्याप्त रहेंA

परमेश्वर की योजना ना केवल आज्ञाकारी लोगों पर निर्भर करती है परंतु धर्मी व्यक्ति पर भी क्योंकि परमेश्वर आपको अनदेखा नहीं करता उसे उसका न्याय करना ही है और यह हमें पुनः उस मूल प्रश्न की ओर ले कर आता है। जो मनुष्य की मुख्य समस्या को पहचानने का प्रयास करता है मनुष्य इतना बुरा क्यों है? क्या मनुष्य हमेशा से परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारी रहा?

छुटकारे की आवश्यकता

खरीदारी आवश्यक थी क्योंकि मनुष्य दूसरे मालिक का गुलाम दास बन चुका था दो क्रियाएं आवश्यक हैं। (1) दुबारा मनुष्य पर अधिकार

प्राप्त करना तथा (2) उसके पापों को साफ करना ताकि उसके ऊपर परमेश्वर का क्रोध ना पहुचे क्रोध परमेश्वर ने मनुष्य की रचना उसकी सेवा करने के लिए की परंतु मनुष्य ने परमेश्वर के अधिकार के विरुद्ध बलवा किया और विधिवत रूप से दूसरे की के अधिकार में चला गया हम अदन की वाटिका के उस दृश्य को देखें । तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को ले कर अदन की वाटिका में रख दिया, कि वह उस में काम करे और उसकी रक्षा करे, तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को यह आज्ञा दी, कि तू वाटिका के सब वृक्षों का फल बिना खटके खा सकता है: पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खाना: क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाए उसी दिन अवश्य मर जाएगाA (उत्पत्ति 2: 15-17)

मनुष्य ईश्वर के अधिकार को पलट देता है

परमेश्वर मनुष्य के ऊपर अधिकार में था । परमेश्वर ने मनुष्य को बनाया(उत्पत्ति 1:26-27) और दोनों स्त्री और पुरुष पर उनके सृष्टि कर्ता और राजा के रूप में अपने अधिकार को रखा । इस अधिकार में उसने मनुष्य को आज्ञा दी और स्त्री को उस पुरुष की संगनी के रूप में कि उस बगीचे को उठ जाएं और उसकी रखवाली करें । (उत्पत्ति 2: 15) यह कार्य उन्हें 2:15 में सौंपा गया परंतु अगली दो पदों में एक और आज्ञा उन को दी गई यह शब्द अधिकार (उत्पत्ति 2: 16)से गूंजती है ।साफ तौर पर परमेश्वर जो वह चाहता था कुछ विषयों में यहां पर उनको चुनाव नहीं दे रहा । परमेश्वर ने ज्यादा नहीं कहा पर जो कुछ उसने कहा उसमें बड़ा वजन था आदम और हवा मनुष्य जाति के प्रथम बगीचे के अनेकों वृक्षों से ले सकते थे उसने उनको यह नहीं कहा कि किसको पहले खाना

है इसको दूसरा और ऐसे ही उसमें हालत की एक और आज्ञा आज्ञा दी जिसने उन्हें भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष के फल खाने से वर्जित ।

बलवे का परिणाम

परमेश्वर ने उनको बताया यदि वह इस वर्जित वृक्ष में से खाएंगे तो क्या होगा (उत्पत्ति 2:16-17) स्पष्ट रूप से परमेश्वर और मनुष्य के बीच में कोई दीवार नहीं थी । मनुष्य परमेश्वर की उपस्थिति के उस अद्भुत स्थान में रह रहा था तथा वह परमेश्वर की इच्छा को पूरी कर रहा था । यह अधिकारवाद विचार उस मनुष्य के लिए जो मुख्यता लोकतांत्रिक संस्थान संसार में जड़ों को रखता है इतनी आसानी से नहीं समझ सकता । परमेश्वर ना केवल एक अच्छे जीवन की चाह करने वाला है परंतु वह सर्वोच्च अधिकारी है ,जिसकी हमें आज्ञा मानना है ।वह एक चीयरलीडर नहीं है हलाकि वह चाहता है कि हम जीते पर वह हमें संचालित करता है कि किसकी हम शक्ति से आज्ञा मानी और उसकी पीछे चलें ।

विचार

हम उन तर्कों की समीक्षा करें जो धर्मों की बहुतायत का समर्थन करता है मसीह हो को और सही शुभ समझा जाता है क्योंकि वह दूसरे धर्मों में सत्य की संभावना को अपनाते नहीं ।परमेश्वर ,हालांकि उस ने मनुष्य को अपने उन बनाए हुए धर्मों से बाहर बुलाया ताकि वे केवल उसकी आराधना करें परमेश्वर ने मनुष्य को बनाया और उन्हें उसकी आराधना करनी है मनुष्य के पास कोई अंतिम चुनाव नहीं इस बात में क्योंकि परमेश्वर एक दिन उनके दृष्टिकोणों को उलट-पुलट कर देगा और अपने आप को प्रकट करेगा और उनकी गलतियों को उजागर करेगा समाज

दूसरे धर्मों को अपना सकता है परंतु उनके बलवे के कारण परमेश्वर हरेक को उखाड़ फेंकेंगे ।

अनाज्ञाकारिता का परिणाम

यह शब्द अधिकार उत्पत्ति 2 के इस भाग में नहीं पाया जाता परंतु जो मनुष्य जाति को और उसके बारे में शब्दों को कहा गया उससे यह अर्थ निकलता है । मनुष्य के पास यह अधिकार नहीं कि वह परमेश्वर के विरुद्ध निर्णय को ले सकें नाही स्वतंत्र अभिव्यक्ति परमेश्वर के द्वारा दी गई इच्छा शक्ति के लिए एक सही शब्द है । तर्क करने की क्षमता खासतौर से जब वह परमेश्वर की इच्छा के विपरीत होती है उसने हमें चुनाव को दिया है और दिमाग को दिया है ताकि हम चुनाव करें । आज्ञा मानने और उसके पीछे चलने का तथा उसमें आनंदित होने का ।

उत्पत्ति 3 में हम पाते हैं की स्त्री और उसके बाद पुरुष ने को वर्जित वृक्ष के फल को खाया दोनों यह जानते थे कि उन्हें यह फल नहीं खाना है उत्पत्ति 3:23 परंतु फिर भी उन्होंने खाया मनुष्य उसी क्षण आत्मिक रूप से मर गया और तुरंत ही परमेश्वर के द्वारा तैयार किए हुए बगीचे से बाहर कर दिया गया और उसके बाद उसने आदम से कहा क्योंकि तूने अपनी पत्नी की बात को सुना और इस वृक्ष सिखाया जिसकी मैंने तुझे आज्ञा दी थी वह उत्पत्ति 2:17 वह शारीरिक रूप से कुछ समय तक जीवित रहे परंतु बाद में उनके शरीर उस पूरे श्राप में जाते रहे और जैसे इतिहास आगे बढ़ता गया परमेश्वर ने उनके शारीरिक जीवन की अवधि को कम करता चला गया ।

और इस मोड़ पर यह बड़ा गंभीर है की मृत्यु मनुष्य के अनुभव में प्रवेश करती है मनुष्य ने परमेश्वर के वचन को तोड़ा और परमेश्वर के

साथ आत्मिक खुद को खो दिया मनुष्य की आन आज्ञाकारिता ने उसकी परमेश्वर के साथ आनंदमय संगति को परमेश्वर की सृष्टि में आनंद को और निरंतर चलने वाली आशा को परमेश्वर की महिमा के भागी होने की आशा को बर्बाद कर दिया और सब कुछ चला गया तरीकों की खोज करते हुए कि परमेश्वर की महिमा हो और तेज के उड़ने उड़ने की जगह कुछ और पा सके उत्पत्ति 37 और तब आज के संसार में मनुष्य अभी भी सब प्रकार के प्रयासों को करता है उन संबंधों और चीजों को जो परमेश्वर ने बनाई है संतुष्टि को प्राप्त करने की और यह चीजें कभी भी मनुष्य को संतुष्ट नहीं कर सकती है ,केवल परमेश्वर ।

विनाशकारी चुनाव

एक महत्वपूर्ण बात है जिसको वर्णन करना अनिवार्य है इस बात को समझने के लिए के क्यों छुटकारे की आवश्यकता पड़े प्रभु एक और मुख्य किरदार की पहचान इस कहानी में करता है ;सर्प ।(उत्पत्ति 3:1)सर्ग और शैतान एक ही है (प्रकाशित वाक्य 12:9) ।

इस बिंदु पर शैतान की भूत काल के विषय में वर्णन करना आवश्यक नहीं है परंतु यह बड़ा गंभीर है कि हम देखें कि आखिर अनआज्ञाकारिता क्या है? आमतौर पर यह समझा जाता है कि यह एक चुनाव है कि परमेश्वर की आज्ञा नाम आने पर उसी समय इसका अर्थ यह भी है कि किसी और की आज्ञा मानने का चुनाव क्योंकि मनुष्य परमेश्वर के अधिकार के अधीन था और कोई भी निर्णय यदि परमेश्वर के विरुद्ध में है तो वह बलवा करना होगा चुनावों का अर्थ है आजादी और अधिकार मनुष्य किसी और की आज्ञा मानने का चुनाव करता है और उसकी वफादारी जिसकी वह आज्ञा मानता है सौपता है ।

शैतान अपने सुझावों तथा कथन में बड़ा ही धूर्त उसने यह नहीं कहा कि यदि वह उसके सुझावों को सुनते हैं तो वह परमेश्वर सृष्टि कर्ता के विरोध में बलवा करेंगे ना ही यह कहा कि यदि वह उसकी सुनेंगे तो वह अपने आप को उसका गुलाम बनाएंगे हालांकि यह सब चीजें हुई । हवा ने केवल आकर्षित करने वाले फल को देखा । शैतान में यीशु को भी इसी प्रकार जाल में फसाने की कोशिश करें । इस प्रयास में यीशु किसकी सुनें मती 4:11

सारांश में हम यह पाते हैं कि सारी परीक्षाओं के पीछे एक बड़ा फैला हुआ ग्रुप षड्यंत्र है ना केवल मनुष्य को परमेश्वर द्वारा श्रापित किए गए संसार में जीने की जरूरत हुई (उत्पत्ति 3 :16 और 19)वर्ण अब एक नए अभागे प्रबंधन के अधीन रहता है । आदम और हवा का उस वर्जित फल को खाना खाने का निर्णय का अर्थ दूसरे स्वामी के द्वारा गोद लिया जाना है जो कि नाही अनुग्रह कारी और नेक दिल है और शैतान पूर्ण रूप से दूसरे प्रकार का स्वामी है । हे स्वर्ग सुन, और हे पृथ्वी कान लगा; क्योंकि यहोवा कहता है: मैं ने बाल-बच्चों का पालन पोषण किया, और उन को बढ़ाया भी, परन्तु उन्होंने मुझ से बलवा किया। बैल तो अपने मालिक को और गदहा अपने स्वामी की चरनी को पहिचानता है, परन्तु इस्राएल मुझें नहीं जानता, मेरी प्रजा विचार नहीं करती॥ हाय, यह जाति पाप से कैसी भरी है! यह समाज अधर्म से कैसा लदा हुआ है! इस वंश के लोग कैसे कुकर्मी हैं, ये लड़के-बाले कैसे बिगड़े हुए हैं! उन्होंने यहोवा को छोड़ दिया, उन्होंने इस्राएल के पवित्र को तुच्छ जाना है! वे पराए बनकर दूर हो गए हैं॥ तुम बलवा कर कर के क्यों अधिक मार खाना चाहते हो? तुम्हारा सिर घावों से भर गया, और तुम्हारा हृदय दु:ख से भरा है। यशायाह 1:2-5,

जब मनुष्य पाप करता है तो वह अपने आप को एक स्वतंत्र अभिकर्ता समझता है जोकि वचन के अनुसार नहीं है मनुष्य आजाद नहीं है उसकी रचना इसलिए हुई कि एक अधिकार के अधीन सेवा करें उसे किसी ना किसी की सेवा करना है यहां तक कि समाजवादी भी इस बात को जो कहते हैं कि वह किस चीज की सेवा नहीं करते वरन खुद कि वह इस संसार की ईश्वर की सेवा करते हैं यदि हम यीशु को नहीं जानते तो हम भी ऐसा ही करते हैं तो प्रश्न यह है हम किस की सेवा करते हैं?

नए नियम का परिज्ञान

यीशु निष्ठा के विषय को योहन्ना 8 में दो स्तरीय तर्कों के द्वारा स्पष्ट करते हैं :

(1) मनुष्य पाप का दास बना (योहन्ना 8:34-35)

> यीशु ने उन को उत्तर दिया; मैं तुम से सच सच कहता हूं कि जो कोई पाप करता है, वह पाप का दास है। और दास सदा घर में नहीं रहता; पुत्र सदा रहता है। (योहन्ना 8:34-35)

पाप करने के द्वारा हम यह दर्शाते हैं कि हम परमेश्वर के बजाए आपके दास हैं इसी कारण से यहूदियों ने यीशु के साथ वाद विवाद किया उन्होंने दावा किया कि वह केवल परमेश्वर की ही सेवा करते हैं पर तू उनके बाप के कार्य इस बात को सिद्ध करते कि वह आपके बंधवाई में हैं

(2) मनुष्य शैतान का दास बन गया (योहन्ना 8:44)

> तुम अपने पिता शैतान से हो, और अपने पिता की लालसाओं को पूरा करना चाहते हो। वह तो आरम्भ से हत्यारा है, और सत्य पर

स्थिर न रहा, क्योंकि सत्य उस में है ही नहींजब वह झूठ : बोलता, तो अपने स्वभाव ही से बोलता है; क्योंकि वह झूठा है, वरन झूठ का पिता है। (योहन्ना 8:44)

यीशु अगले कदम को लेता है और इस भाइयों को दिखाता है कि पापी व्यक्ति उनके गोद लिए हुए पिता जो शैतान है उनका हृदय उसी के समान है। एक बार मनुष्य ने पाप किया और उसने परमेश्वर के उस रक्त संबंध को त्याग दिया और शैतान की पीछे चला गया। और यही हमारे लिए भी सत्य है क्योंकि हम भी उन्हीं के समान पतित लोग हैं ।इससे फर्क नहीं पड़ता कि हम किस जाति के या किस धर्म के हैं जिसमें हमारी परवरिश हुई हो ।इसी कारण से यह संसार एक अधर्मी स्थान है। वयस्क अपने उन बचपन के पापों को वास्तविक रुप से नहीं छोड़ते वह और भी छुपे हुए तरीके निकाल लेते हैं उन कार्यों को करने के लिए।

खरीदारी की रकम (कुलूसियो 1:13-14)

पौलुस दो आत्मिक आदान प्रदान का परिचय कुलूसियो 1:13-14में देता है उसमें से पहला हुसैन की वाटिका में हुआ उसी ने हमें अन्धकार के वश से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया। जिस में हमें छुटकारा अर्थात पापों की क्षमा प्राप्त होती है। (कुलूसियो 1:13-14)

यह शब्द कि उससे हमें अंधकार की अधिकार क्षेत्र से मजाक किया अबे यह बताता है कि हम आदम के पाप के परिणाम स्वरुप किस स्थिति में गिर गए ।उसी पद में पौलुस उलट लेनदेन के विषय में स्पष्ट करता है। परमेश्वर ने हमें उसके प्रिय पुत्र के राज्य में स्थानांतरित किया। यहां ध्यान से देखें कि यहां पर अंधकार से निकलना है और उसके पुत्र के राज्य में पहुंचना है। यीशु ख्रीस्त सफलतापूर्वक शैतान के

अधिकार को छीन लिया और उसे मनुष्य की पुत्रों पर अधिकार दिया गया परमेश्वर का राज्य इन पुत्रों से बना है । खास तौर से जो प्रभु के प्रति निष्ठावान परमेश्वर हमें उसमें पुनर्स्थापित किया है जैसे हम उसके पुत्र के राज्य में जुड़ते हैं ।परंतु यीशु के द्वारा चुकता की गई बड़ी कीमत के बिना नहीं था उस राजा था परंतु वह राजा नहीं जो परीक्षा में खड़ा रह सका केवल यीशु ही उस मार्ग को उपलब्ध करा सकता है परमेश्वर के साथ पुनर्स्थापना का और एक बार और शैतान के अधिकार से छूटने का।

अंत में कुलूसियो 1:14 हमें उस तरीके को बताता है जिसके द्वारा हम पूरे स्थापना को प्राप्त कर सकते हैं " प्रिय पुत्र, जिसमें हमें छुटकारा और पापों की शमा है" हम परमेश्वर के पुनः स्थापित किए गए राज्य के भाग बने हैं उसके पुत्र के द्वारा और हमें छुड़ाया जाना है और छुटकारे का पापों की क्षमा प्राप्त करने के साथ पूरा संबंध है हम यीशु कृष्ट के द्वारा परमेश्वर ने हमें वापस खरीदा है हमारे लिए परमेश्वर ने एक समझौता किया यीशु मारा गया और हम आज़ाद कर दिए गए ।

> तब यीशु ने उन यहूदियों से जिन्हों ने उन की प्रतीति की थी, कहा, यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे, तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे। और सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा। (योहन्ना 8:31-32)

यीशु ने अपने चेलों से वायदा किया की जो विश्वास उनका उसमें है (ध्यान दें "जिन्होंने उस पर विश्वास किया") वह उनकी सफलता की कुंजी होगी यदि तुम मेरे वचन में बने रहो । यह एक सीधा प्रतियोगिता है उस दुष्ट की आवाज को सुनने के साथ यीशु अपने लोगों की अगुवाई

सत्य की ओर करता है और सत्य हमें दुख वापस आज्ञाकारिता की ओर ले कर आता है आज्ञा मानने से गुलाम आजादी प्राप्त करते हैं । यह आजादी नहीं कि हम जो चाहे वह करें पर वह आजादी ताकि हम वह हो और वह करें जो परमेश्वर ने हमारे लिए बनाई है और मूल बनावट स्वामी के कार्य द्वारा पुनर्स्थापित की जा रही है। **निष्कर्ष**

सारांश में हम देखते हैं कि यह छुटकारा है की यीशु की क्रूस पर मृत्यु के द्वारा परमेश्वर ने हमें खरीदा और वह हमारे जीवन को बदलने वाला बिंदु बन गया । दो चीजें हुई ,हम शैतान के स्वामित्व से आजाद किए गए और हमारी निष्ठा परमेश्वर के प्रति स्थानांतरित की गई और परिणाम स्वरूप हमारा हमारे रचने वाले के साथ संबंध पुनर्स्थापित किया गया । यह लेन-देन इसलिए हुआ क्योंकि परमेश्वर ने हमारे क्रूस पर चढ़ाए जाने के बदले अपने पुत्र को दिया । उसका जीवन हमारे लिए केवल यीशु के द्वारा ही हम अपने पापों की शमा पा सकते । यह हमारा पाप था जिसने हमारे मूल स्थान को प्राप्त करने से रोक रखा था । अब हलाकि , ख्रीस्त में हमें आजादी है कि हम परमेश्वर के हो और उस की सेवा करें और जैसे हम परमेश्वर की सेवा करते हैं हम पाएंगे कि हम खुशी से दूसरों की सेवा करेंगे और परमेश्वर के उस प्रेम के आदेश को पूरा करते हुए पाएंगे । जैसे परमेश्वर ने हमें शैतान से छुड़ाया । हमें बुलाया गया है कि हम यीशु में उस छुटकारे को उन लोगों के साथ बाटे जो हमारे आसपास है हमें ऐसे जीवन को जीना है जो यह यीशु के प्रेम को जो कि उसने उस पर बलिदान के द्वारा दिखाया प्रतिबिंबित करता है ।

“मैं यही कहूंगा कि हर एक बार जब आप चुनाव करते हैं आप अपने केंद्र के भाग को मोड़ते हैं आप का वह भाग जो किचुनाव करता है उस चीज

में जो कि पहले से थोड़ा फर्क है और अपने जीवन को पूर्ण रूप से अगर हम देखें आपकी उंर अनगिनत चुनावों के साथ अपने जीवन भर आप धीरे-धीरे अपने उस केंद्रीय भाग को या तो उस स्वर्गीय प्राणी के रूप में मोड रहे हैं या तो वह नरक प्राणी के रुप में या तो ऐसे प्राणी के रुप में जो परमेश्वर के अनुरूप है दूसरे प्राणियों के साथ खुद के साथ या तो उस व्यक्ति में जो परमेश्वर से नफरत में है और उसके विरुद्ध युद्ध में है उसके संगी प्राणियों के साथ तथा खुद के साथ” सी.एस लुइस

#2 छुटकारे का उद्देश्य

यीशु को हमारे लिए मरने के लिए भेजने में ,परमेश्वर इस बात को साबित करता है की उसके पास हमारे जीवन के लिए बड़े उद्देश्य हैं । यीशु ने केवल इस कारण से ही नहीं जान दी की हमें नरक से बचाये ;यीशु के आने का अधूरा दृश्टिकोण उसके हमारे जीवनो में उसके समलित होने के स्तर पर भरोसे को कमज़ोर करता है । ख्रीस्त के आने के दौ मुख्य कारण हैं ,तथा उनको समझना हमारी सहायता करता है की हम पुनः अपने मसीही जीवनो के विषय में सोचें।

परमेश्वर का यह उदेश्य नहीं था की अपने लिए एक दासों की सेना को बनाये जो केवल उसके आदेशों के अनुसार चलें ,परन्तु इसके विपरीत इस बात को चाहा की हमें एक निकटतम मित्र के रूप में पुनस्थपित करें ताकि हमें अच्छे कार्यो में सम्मलित कर सके । जो उसने हमरे लिए रचे हैं इस पृथ्वी पर भी और सवर्ग में भी ।यधपि इससे बढ़कर और कोई तरीका नहीं होगा इसको देखने के लिए की वाचाओं में इन को देखें , पुरानी वाचा तथा नयी वाचा दोनों में, जिन्हें परमेश्वर ने रखा

है की अपने लोगो को तैयार कर सकें उसकी हमारे साथ भागीदारी की पुनर्स्थापना के लिए ।

उद्देश्य

छुटकारे का मनुष्य को केवल स्वर्ग में ले जाने से बढ़कर उद्देश्य हैं ।इस उद्देश्य का कुछ भाग हम अदन की वाटिका में देख सकते हैं जहाँ परमेश्वर आदम और हव्वा के साथ चलता फिरता और बातचीत करता था । परमेश्वर का यह उदेश्य नहीं था की अपने लिए एक दासों की सेना को बनाये परन्तु इस बात को चाहा की मनुष्य जाती के साथ एक गहरे सम्बन्ध को बनाये की वह उनके साथ संगती रख सके । इस स्तर की मित्रता को हम उत्पत्ति 3:8 में देख सकते हैं , तब यहोवा परमेश्वर जो दिन के ठंडे समय बाटिका में फिरता था उसका शब्द उन को सुनाई दिया। तब आदम और उसकी पत्नी बाटिका के वृक्षों के बीच यहोवा परमेश्वर से छिप गए। परमेश्वर वाटिका में चला फिरा और मनुष्य से बातचीत की ।आदम और हव्वा ने परमेश्वर की उपस्तिथि को ऐसे जाना की वह उनके लिए सामान्य बात थी । प्रभु परमेश्वर ने उनसे ऐसे बात की जैसे वह ऐसी पहले कर चुका है । तब यहोवा परमेश्वर ने पुकार कर आदम से पूछा, तू कहां है? आश्चर्यजनक तत्व परमेश्वर का बोलना नहीं है परन्तु मनुष्य का छुपना ।

पर्दा गिरने के पश्चात

परमेश्वर कुछ अद्भुत मानवजात के मध्य में कर रहा था जिसका प्रमाण हमें उसकी करुणा में मिलता है की उसने हमे नाश नहीं किया । प्रलय और 2००० वर्ष इ .पु अब्रहाम की बुलाहट इसका उदहारण है ।स्पष्ट रूप

से परमेश्वर जल्दी में नहीं था ,नक़्शे के अनुसार वह उन लोगो को बना रहा था जो उसे जानते थे ,प्रेम करते थे तथा उसकी सेवा करते थे ।

परमेश्वर तैयार था की वह बलवा करने वाली मनुष्य जाती के साथ उनकी सारी दुर्बलताओं के बावजूद कार्य करे।कई बार उसकी योजनाए शायद इतनी स्पष्ट न हो परन्तु हर समय परमेश्वर ने आशीषो की ही बात की है (उत्पत्ति में अब्राहम के साथ सात आशीषें ,इसने यह सन्देश दिया की परमेश्वर की भली मनसा थी ।परमेश्वर मनुष्य जाती के लिए अपनी योजनाओ को उभार रहा था ।

अब्राहम ने 1०० वर्ष ऊपर की और देखते हुए इंतज़ार किया इससे पहले की वह वायदे किये गए संतान को प्राप्त करें ।परमेश्वर इसको आसान कर सकता था परन्तु इसके बजाये चीज़ों को पूरा करने के लिए एक कोमल मार्ग चुना । आप उस शर्म, वियाकुलता तथा निराशा की कल्पना करें जिसे अब्राहम तथा सारा ने अनुभव किया । परमेश्वर प्रशंसा तथा विस्मय की रचना कर रहा था । यह वह चीज़े थी जो मित्रता को और अधिक गहरा बनाएंगी । और इब्राहीम ने अपने पुत्र का नाम जो सारा से उत्पन्न हुआ था इसहाक रखा। और जब उसका पुत्र इसहाक आठ दिन का हुआ, तब उसने परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार उसका खतना किया। और जब इब्राहीम का पुत्र इसहाक उत्पन्न हुआ तब वह एक सौ वर्ष का था। और सारा ने कहा, परमेश्वर ने मुझे प्रफुल्लित कर दिया है; इसलिये सब सुनने वाले भी मेरे साथ प्रफुल्लित होंगे। फिर उसने यह भी कहा, कि क्या कोई कभी इब्राहीम से कह सकता था, कि सारा लड़कों को दूध पिलाएगी? पर देखो, मुझ से उसके बुढ़ापे में एक पुत्र उत्पन्न हुआ। (उत्पत्ति 21: 3-7)

परमेश्वर की हठीले लोगो के साथ कार्य करने की इच्छा आश्चर्यजनक है । उत्पत्ति 2 में परमेश्वर ने मनुष्य जाती के साथ कार्य करने का संकेत दिया था । यह निरंतर अनुग्रह का विधान मनुष्य जाती के साथ सारे सम्बन्धो के पीछे है

हमारा जीवन कुछ मात्रा तक उनके सामान है ,विशेष रूप से हमारी शिष्यता की यात्रा में । परमेश्वर का छुपा हुए उद्देश्य को कभी बी नहीं भूलना नहीं है क्योकि यह इस महान योजना के पीछे के उद्देश्य तथा मंशा की ओर संकेत करता है । हर एक बार जब परमेश्वर अपने लोगो से बात करता है , हमें उसके आश्चर्यजनक उद्देश्य को पापी मनुष्य के साथ कार्य करने के लिए अनुमति देना है तथा और अधिक आशा में ले जा सके । यह अनुग्रह का वृत्त उन सरे सत्यों के पीछे है जिन्हे हम शास्त्रों में पड़ते हैं ।

समीप और समीप

परमेश्वर के मौलिक उद्देश्य के साथ ,हम महत्वपूर्ण प्रश्न पूछ सकते हैं : " कैसे एक पवित्र परमेश्वर लोगो के समीप आ सकता हैं बिना उसके क्रोध को उन पर बड़काये हुए तथा नाश किये हुए ?" यह छोटी समस्या नहीं है , क्योकि हम इसे बार बार परमेश्वर के मनुष्य के साथ सम्बन्ध में उठते हुए देखते हैं ।

हम जितना परमेश्वर के निकट जाएंगे उतनी ही सम्भावना है की परमेश्वर का क्रोध हमारे बिच में भड़के । यद्यपि पुरानी नियम में वचाओ ने मनुष्य को अनुमति दी की वह करुणा की अस्थायी दिवार के पीछे

छुप सके ,परमेश्वर के न्याय को थाम कर , तथा बाद में, मसीह की क्रूस पर मृत्यु के द्वारा , उसका न्याय पूर्ण रूप से तृप्त हुआ ।

मुसाई वाचा ,जो पुरानी वाचा के लिए नाम दिया गया जिसे मूसा के साथ सीने पर्वत पर बनाया गया , एक विस्तृत बलिदान की व्यवस्था थी जिसने परमेश्वर को समर्थ किया अपने लोगो के मध्य में रहने के लिए । इस व्यवस्था को हम गिनती की पुस्तक में देख सकते हैं । परमेश्वर उन गोत्रों के बीच में रहा जो उसे घेरे हुए थे (नीचे बने रेखा चित्र को देखें) इसी प्रकार की बनावट को हम दोबारा देखते हैं जब लोगों को उस समय देश में स्थापित किया गया यरूशलेम मध्य में था । सिद्ध रूप से नहीं परंतु बड़े करीब । इससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण तथ्य यह था यरूशलेम सांस्कृतिक, धार्मिक ,सरकारी, आर्थिक, व्यापार, सेना तथा इजराइल का शिक्षा का केंद्र था ।

साल में तीन बार 21 साल तथा उससे अधिक उम्र के पुरुष इस पवित्र स्थान पर यात्रा करते थे । जिसके लिए कई बार एक हफ्ता लग जाता था । वर्ष में तीन बार, अर्थात अखमीरी रोटी के पर्व्व, और अठवारों के पर्व्व, और झोंपडिय़ों के पर्व्व, इन तीनों पर्व्व में तुम्हारे सब पुरूष अपने परमेश्वर यहोवा के साम्हने उस स्थान में जो वह चुन लेगा जाएं। और देखो, छूछे हाथ यहोवा के साम्हने कोई न जाए; (व्यवस्थाविवरण 16:16)

यह सब इस बात की ओर इशारा करते हैं परमेश्वर के अंशु के उद्देश्य के विषय में कि वह अपने लोगों की एक करीबी सहभागिता चाहता है यीशु ने खुद कहा, “कि देखो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे मध्य में

है” (लूका 17:21) परमेश्वर के लोग परमेश्वर का मंदिर है! “ क्या तुम नहीं जानते कि तुम परमेश्वर का मंदिर और परमेश्वर का आत्मा तुम में वास करता है? ”(१ कुरंथीओ 3:16;6:19)और पुनः एक विस्तृत दृष्टिकोण में हम देखते हैं कि कैसे पौलुस की मंगलकामना इन विचारों को रखती है जो कि अनोखे प्रेम और आपसी सहभागिता के विषय में है । “अब प्रभु यीशु ख्रीस्त का अनुग्रह तथा परमेश्वर का प्रेम और पवित्र आत्मा की सहभागिता हम में से प्रत्येक के साथ बनी रहे” (2 कुरिंथियों 13: 14)यह सारे विचार पूर्ण रुप से विकसित होंगे जैसे हम पुराने नियम और नए नियम की वचाओ को प्रस्तुत करेंगे ।

दो नियम तथा दो वाचा

इन वचाओ का परिचय देने से पहले, तथा सहज ढांचा जो कि परमेश्वर के लोगों को उसके करीब लाता है तथा अनुमति देता है कि उसके मध्य में रह सकें यह जरूरी है कि कुछ शब्दावलियों को स्पष्ट किया जाए । पुराना नियम तथा नया नियम दो भाग है जिनमें बाइबल को बांटा गया है कुछ लोग तीसरे भाव को भी जोड़ते हैं जिसे अपोक्रिफा कहा जाता है या इन नियमों की मध्य की किताबें परंतु इन पुस्तकों को यहूदी लोगो तथा यीशु द्वारा शास्त्र के भाग के रूप में कसौटी में अपनाया नहीं गया । पुराने नियम में उत्पत्ति से लेकर मलाकी तक सारी पुस्तके हैं । अंग्रेजी बाइबल क्रम अनुसार तथा नए नियम में मत्ती से लेकर प्रकाशित वाक्य की पुस्तक तक सम्मिलित हैं । यह पुस्तकें जो यीशु की इस पृथ्वी के जीवन के पश्चात लिखी गई, बाइबल के दो भाग आम तौर पर पुराने नियम तथा नए नियम के रूप में उनकी व्याख्या की जाती है । इस बात को देखना जरूरी है कि यह शब्द नियम ,वाचा के लिए एक और उपयोग

किए जाने वाला शब्द है । यह जरूरी है कि इन दोनों नियमों को एक इकाई के रूप में देखा जाए हालांकि पुरानी नियम का ज्यादा तर केंद्र मूसा के द्वारा दिए गए पुराने वाचा का परिचय देना है । तथा नया नियम जो कि यीशु के द्वारा नई वाचा है बाइबिल का यह महान और अधिक इसका विवरण देता है । उदाहरण के तौर पर उत्पत्ति मूसा की वाचा के पहले के समय का विवरण देता है परंतु इस बात को भी दिखाता है कि परमेश्वर के पास क्यों यह अधिकार था कि वह अपने लोगों के साथ वाचा को बनाएं ।

पुराने नियम की वाचा

उत्पत्ति से व्यवस्थाविवरण तक ,बाइबिल की पहली पांच पुस्तकों को कानून के रूप में जाना जाता है । इब्रानी में तोरह , लातिनी से पेन्टट्युक । पुराना नियम जैसा की मसीही समाज में जाना जाता है वह पहले केवल उस सिनाई पर्वत या मूसा के द्वारा दी गई वाचा के रूप में जाना जाता था । और इसी रूप से दूसरी वाचाओं से फर्क लिखा जाता था । एक और उदाहरण जो वाचा के विषय में है वह परमेश्वर की नूह के साथ जल प्रलय के पश्चात बनाई गई वाचा के विषय में है और (उत्पत्ति 9: 1-17) कई बार परमेश्वर शब्द इस शब्द भाषा वाचा का इस्तेमाल करता है नूह और उसके पुत्रों के साथ बनाए गए करार का विवरण देता है । जिसमें सारी मनुष्य जाति सम्मिलित की (उत्पत्ति 9: 9 ,11 ,12, 13, 14, 15, 16, 17)

वाचा एक विशेष करार था जो कि एक सामर्थ्य पक्ष तथा उससे कमजोर पक्ष के बीच में बनाई जाती थी । आमतौर पर वह राज्य जिन पर युद्ध के दौरान कब्जा किया गया हो । यह शब्दावली हमेशा इस

प्रकार के करार हो का विवरण देने के लिए उपयोग नहीं की जाती परंतु यह मुख्यता ऐसा ही करता है । हर एक वाचा में एक चिन्ह, एक बलिदान तथा नियम हैं । जब बाइबल इस बात को बताती है कि प्रभु अपने लोग इस्त्राइलियों के साथ एक वाचा को बनाते हैं यह साफ तौर से परमेश्वर द्वारा दिए गए नियमों की ओर बताता है इन नियमों का को ना तो बदला जा सकता था ना ही मूलभाव किया जा सकता सारी नियम मजबूत थे तथा इन वाचा को तोड़ने के परिणाम भी उसके साथ थे । (दूसरा इतिहास 7:19 से आगे)

यदि हम तोरह को एक पुस्तक के रूप में देखें तब हम देख सकते की उत्पत्ति किस प्रकार से परमेश्वर का परिचय देती है । तथा उसके परिवार का परिचय जिनके साथ उसने मूसा मूसा की वाचा को बांधने को चुना परिवार , यह परिवार याकूब के वंश से आया (उसका नया नाम इजरायल उत्पत्ति 32:28) ।

निर्गमन इसराइल राष्ट्र के जन्म को दिखाता है उसके मिस्त्र में जन्मे हुए बच्चे के रोने से परमेश्वर द्वारा तैयार किए गए देश में प्रवेश करने तक । हर एक व्यक्ति की शुरुआत परमेश्वर से हैं परंतु इसराइल को विशेष रुप से परमेश्वर के लोग कहां जा सकता है । 10 आज्ञाएं मूसा द्वारा दी गई इजरायल राष्ट्र के साथ वाचा की शुरुवात को बनाती है ।

मुसाई वाचा

परमेश्वर इस रीती से वाचा की शुरुवात करता है, “तब परमेश्वर ने ये सब वचन कहे, कि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा हूं, जो तुझे दासत्व के घर अर्थात मिस्त्र देश से निकाल लाया है।। तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना” (निर्गमन 20:1-3) क्या

आप देख सकते हैं कुछ विशेष संबंध को जो परमेश्वर ने अपने लोगों के साथ बनाया इस वाचा के शब्द इस बात को प्रकट करते हैं कि परमेश्वर ने योजनाबद्ध संबंध बनाया

" मैं तुम्हारा प्रभु परमेश्वर हूँ " ।

परमेश्वर अपने लोगों के साथ एक विशेष संबंध का दावा करता है वह यहोवा (यहोवा के समान, प्रभु)अपने आप को इन लोगों के साथ जोड़ता है परमेश्वर अपने आपको उत्पत्ति 20:1 सृष्टिकर्ता परमेश्वर के रूप में पहचान देता है, परंतु एक वचाई परमेश्वर की रीती से उन्हीं के साथ जो इस वाचा में सम्मिलित हैं । अपने आदरणीय नाम को प्रकट करने के द्वारा वह एक गहरे संबंध की शुरूआत करता है जिसके द्वारा वह उसको जान सकते हैं । उसके नाम को जानने के द्वारा एक व्यक्ति से बातचीत कर सकता है । वह ना केवल एक महान परमेश्वर है जो शब्दों से परे है परंतु वह वह भी है जिसने हमारे साथ उस संबंध की शुरुआत की ।

" मैं तुम्हारा प्रभु परमेश्वर हूं जिसने तुम्हें मित्र में से निकाला "

परमेश्वर ना केवल अपना परिचय स्वर्ग और पृथ्वी बनाने वाले के रूप में देता है परंतु उनको छुड़ाने वाली के रूप में भी यह बहुत आवश्यक है छुटकारे के विषय में हमारे विचारों की ढलने की राह में इन आने वाले शब्दों के कारण बंधुआई के घर से बाहर ,वह यह कहता है कि अब हम उसके हैं वरना केवल वह परमेश्वर है जो उनसे जुड़ा है परंतु उसी समान वह भी उसके हैं एक समय में मिस्त्र की गुलामी में परंतु अब उसके दयालु हाथों में उसके सेवक । छुटकारे का पूरा विचार स्वामित्व के विचार पर बना है । (व्यवस्थाविवरण 5: 6)

तेरा परमेश्वर यहोवा, जो तुझे दासत्व के घर आर्यात् मिस्त्र देश में से निकाल लाया है, वह मैं हूं।

व्यवस्थाविवरण (5.6)

“ मुझे छोड़ तुम्हारे लिए और कोई ईश्वर ना हो ”

दस आज्ञाओं की सूची उनके लिए परमेश्वर की उपेक्षा को रेखांकित करती हो परंतु यह पहली आज्ञा इस बात को प्रकट करती है कि वह उनसे अपेक्षा करता है कि उनका पूरा ध्यान उसकी ओर उन्हें बुलाया गया था कि वह परमेश्वर और उसके वचन के अनुरूप अपने आपको भाले ध्यान दीजिएगा इसके पृति से वह उन को चेतावनी देता है दूसरों के विरोधाभासी शब्दों की ओर अपने हृदय को लगाने के विषय में परमेश्वर इन चेतावनियों को देता है ताकि वह आदम और हवा के समान अनाज्ञाकारिता से रुकें

अपना बनने की बुलाहट

इससे पहले इसराइल के लोगों के साथ वाचा बांधी गई उन्हें अपने आप को तैयार करना था तथा शुद्ध करना (निर्गमन 19:10-11) “तुम मेरी संपत्ति ठहरोगे” (निर्गमन 19:4-6) पर ध्यान दें लेकिन शब्दों से प्रभु यह उस औपचारिक समझौते में उनको बुलाता है ।

कि तुम ने देखा है कि मैं ने मिस्त्रियोंसे क्या क्या किया; तुम को मानो उकाब पक्षी के पंखों पर चढ़ाकर अपने पास ले आया हूं। इसलिये अब यदि तुम निश्चय मेरी मानोगे, और मेरी वाचा का पालन करोगे, तो सब

लोगों में से तुम ही मेरा निज धन ठहरोगे; समस्त पृथ्वी तो मेरी है। और तुम मेरी दृष्टि में याजकों का राज्य और पवित्र जाति ठहरोगे। जो बातें तुझे इस्त्राएलियों से कहनी हैं वे ये ही हैं। (निर्गमन 19:4-6)

परमेश्वर का गहरा संबंध का उद्देश्य और स्पष्ट हो जाता है तुम्हें अपने निकट लेकर आया इजराइल के लोग परमेश्वर के निकट लाए गए यह उसके विपरीत है उन लोगों की जो परमेश्वर के साथ इस वाचा में नहीं है । और यही पवित्र शब्द

का एक बड़ा महत्वपपूर्ण आरंभ हुआ "तुम मेरे लिए पवित्र ठहरोगे"। (निर्गमन 22:31) यह शब्द पवित्र पहली बार निर्गमन 35 में उपयोग किया गया जब प्रभु ने मूसा को उस जलती झाड़ी में से पुकारा ।

यह वाक्य कि तुम मेरी संपत्ति ठहरोगे तथा तुम मेरे लिए एक याजकों समाज तथा एक पवित्र जाती ठहरोगे यह दोनों परमेश्वर के लोगों का विवरण देने के लिए पहला पतरस 2:9 में उपयोग किया गया यह महिमामय संबंध की एक खूबसूरत चित्र को चित्रित करती है तथा उसकी कार्य करने वाले संबंध की जो परमेश्वर अपने लोगों के साथ रखने की इच्छा करता है जब उन्होंने विश्वास योग्यता से वाचा को माना परमेश्वर ने उनको आशीष दी कई बार हम सोचते हैं यह परमेश्वर की आज्ञाएं बोझ डालने वाली है परंतु उनके विषय में हमें इस प्रकार से नहीं सोचना है (1योहन्ना 5:3) किसी रीति से जीवन जीने की आज्ञाओं ने इस्त्राइलियों को समर्थ किया कि वह परमेश्वर के साथ एक करीबी और आशीषित संबंध को रख सकें पुराने नियम का बिंदु ,एक ऐसे संपर्क के स्थान को तैयार करना था जिसके द्वारा लोग परमेश्वर के साथ बातचीत कर सकें तथा इस पृथ्वी पर उसके उद्देश्य को पूरा कर सकें।

पुराने नियम की दुर्बलता

पुराना नियम महिमामय न केवल उस धुएं, तूफान तथा ध्वनि के कारण से जो उसके बनाए जाने के समय हुई, था (इब्रानियों 12:18-21), परंतु वह उसकी समर्थता के कारण से जिसने मनुष्य को अनुमति दी कि बिना मृत्यु के भय के साथ परमेश्वर के सामने अपनी प्रार्थनाओं को रख सकें हालांकि पुराने नियम में कुछ कमजोरियां थी और पौलुस गलतियों में उनको विस्तृत रुप से बताता है दोनों वाचाओं को अलंकारिक रूप से तुलना करने के द्वारा

> इन बातों में दृष्टान्त है, ये स्त्रियां मानों दो वाचाएं हैं, एक तो सीनै पहाड़ की जिस से दास ही उत्पन्न होते हैं; और वह हाजिरा है। और हाजिरा मानो अरब का सीनै पहाड़ है, और आधुनिक यरूशलेम उसके तुल्य है, क्योंकि वह अपने बालकों समेत दासत्व में है। (ग़लतियों424, 24)

और आने वाले भाग में जब नए नियम के ऊपर चर्चा करेंगे तब यह कमजोरियां और भी उजागर होंगी परंतु अभी के लिए हम इस बात को याद रखें कि पुराना नियम परमेश्वर के लोगों की जो उसके वाचा के अधीन है उनकी अविश्वास योग्यता का अभिलेख है उन्होंने परमेश्वर के चुनाव को संजोया नहीं वरन वह दूसरे देवताओं के पीछे जाते रहे हम बाइबल की ऐतिहासिक किताबों को देखें आप पाएंगे उनके भटकने के मार्ग के विषय में न्याययियों की पुस्तक इसको एक बार में दिखाती है उनके इस्त्रायल के वाचा की भूमि में प्रवेश करने के तुरंत बाद ।

निष्कर्ष

परमेश्वर की योजना स्पष्ट थी वह उस वाचा के द्वारा इस पृथ्वी पर बढ़ती हुई सहभागिता तथा सहकर्मिता के द्वारा अदन की वाटिका की समानता को पुनर्स्थापित करना चाहता था यद्यपि वह अधिकार में था वाचा का उद्देश्य लोगों की सहायता करना था ना कि उन को चोट पहुंचाने के लिए उस संबंध को बनाए रखने के लिए जब भी उन्हें आज्ञा माननी थी अन्यथा परमेश्वर का क्रोध उन पर भड़क सकता था परमेश्वर की उसके लोगों के प्रति सहनशीलता बड़ी थी क्योंकि पुराने नियम वाचा कि उसकी सारी अवाश्यकताओ के साथ बलिदान, लहू और याजको के साथ यह बातें नए नियम के साथ नहीं बदलती परंतु एक पूरी नई व्यवस्था को लागू करना आवश्यक था यदि परिस्थितियों को बदलना था तथा परमेश्वर के लोगों को परमेश्वर के और करीब लाना था।

वाचाओं का बदलाव

यह परिभाषिक शब्द नए नियम में अकेला मसीही व्याख्यान नहीं है जैसे कि यह पहली बार यर्मियाह 31:31 में इस्तेमाल किया गया प्रभु मूसा के द्वारा दी गई वाचा की कमी, सीमित नज़दीकी तथा वाचा की अपने आप में सिमित्ता की ओर जिसे उन्होंने तोड़ा उसकी ओर इशारा करता है इब्रानियों 8:13 कहता हैनई वाचा के स्थापन से उस ने प्रथम वाचा को पुरानी ठहराई, और जो वस्तु पुरानी और जीर्ण जो जाती है उसका मिट जाना अनिवार्य है।

> फिर यहोवा की यह भी वाणी है, सुन, ऐसे दिन आने वाले हैं जब मैं इस्त्राएल और यहूदा के घरानों से नई वाचा बान्धूंगा। वह उस वाचा के समान न होगी जो मैं ने उनके पुरखाओं से उस समय

बान्धी थी जब मैं उनका हाथ पकड़ कर उन्हें मिस्र देश से निकाल लाया, क्योंकि यद्यपि मैं उनका पति था, तौभी उन्होंने मेरी वह वाचा तोड़ डाली। परन्तु जो वाचा मैं उन दिनों के बाद इस्राएल के घराने से बान्धूंगा, वह यह है: मैं अपनी व्यवस्था उनके मन में समवाऊंगा, और उसे उनके हृदय पर लिखूंगा; और मैं उनका परमेश्वर ठहरूंगा, और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे, यहोवा की यह वाणी है। यर्मियाह 31:31 - 33

नए नियम में इब्रानियों की पुस्तक एक मुख्य विषय को जो कि परमेश्वर और मनुष्य के बीच में नजदीकी के विषय में है उठाती है इससे पहले कि हम अगले सत्र में इस बात को जानने के लिए यह दोनों भाषाओं में क्या अंतर है हम इस बात पर विचार करें, कि परमेश्वर क्यों इस बात को विचार करें की एक नई और बेहतर वाचा को उन लोगों के साथ बनाएं जिन्होंने उसको तथा उस भाषा को जो उनके साथ पहले बनाई गई थी कुछ जाना वह कुछ पहेली बादशाह के साथ काफी दयालु रहा हालांकि कराया गया परंतु उसने इस बात की कोशिश करें कि परमेश्वर के लोगों को परमेश्वर के और करीब लेकर आए ताकि उन लोगों के साथ दुनिया के लोगों के मध्य में कार्य कर सकें उसने उसके विपरीत किया जो हम में से कई लोग करते यह अत्यधिक अनुग्रह है। परमेश्वर की उसके लोगों के साथ और नजदीकी संबंध की इच्छा का एक और सूत्र उसके भले और बड़े संयम के द्वारा प्रकट होता है इब्रानी शब्द 465 से N A S B में लविंग का इंग्लिश में अनुवादित हुआ है जो प्रेम और भलाई दोनों को साथ जोड़ता है और यह पुरानी नियम में 175 बार उपयोग किया गया है यह शब्द और इसका अर्थ नए नियम की यूनानी शब्द जैसे प्रेम दया 54 बार उपयोग की गई तथा अनुग्रह 114

बार में अंतर स्थापित है अपने लोगों को त्यागने के बजाए प्रभु ने नई वाचा में एक बेहतर योजना को स्थापित किया जिसे किसी ने सोचा नहीं था और जिसके लिए कोई योग्य नहीं था यह ना केवल नहीं थी परंतु उसने एक गहरे संबंध की अनुमति दी।

नई वाचा

यह परिभाषिक शब्द नई वाचा नए नियम में सात बार उपयोग की गई तथा शायद यह प्रभु भोज के समय अत्यधिक स्मरण किए जाने वाला निर्देश अंक है :"यह कटोरा मेरे उस लोहू में जो तुम्हारे लिये बहाया जाता है नई वाचा है। "(लुका : २२:२० ; १ कुरंथियो ११:२५)यह भाग इस बात का प्रतिक है की यीशु की मृत्यु और लहू के उँडेले जाने के रूप में ,जिसके द्वारा परमेश्वर के लोग परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश कर सकते हैं । नई वाचा को पुरानी वाचा के एक सुधार किए की वाचा के रूप में कहना अत्यधिक छोटी बात है यीशु बेहतर वाचा का मध्यस्थ है(इब्रानियों ८:६) तो आइए हम पुरानी और नई वाचा के कुछ अंतरों को चिन्हांकित करें हम यर्मियाह के उस भाग को जो ऊपर बताया गया है देखें जो कि इब्रानियों 8.8- 12 में भी मिलता है।

सेवकाई का एक बेहतर स्थान इब्रानियों 8.1-5

नई वाचा में यीशु स्वर्गो में सेवकाई करता है वह सच्चे मिलाप वाला तंबू में प्रतापी राजा के दाहिने हाथ पर जब की पुरानी वाचा की शारीरिक बातें पृथ्वी पर ही हो सकती थी मिलाप वाला तंबू केवल एक नमूना था जिसको मूसा ने स्वर्ग में देखा और वह वास्तविक नहीं था (इब्रानियों 8:1-8)

सेवकाई का बेहतर रूप (इब्रानियों 8:6-7)

बेहतर वाचा को बेहतर निर्वाहक की आवश्यकता होती है (इब्रानियों 8:6-7) में वह यीशु की ओर दर्शाता है जो कि नए नियम का मध्यस्थता जैसे ही मूसा पुराने नियम का नई वाचा बेहतर है क्योंकि वह बेहतर वायदों पर आधारित है उदाहरण के तौर पर यह अनंत जीवन का वायदा करती है केवल पृथ्वी पर अच्छे जीवन का ही नहीं नई वाचा अभी भी पूर्ण रुप से सक्रिय है और सुसमाचार या उद्धार जैसे शब्दों में इसका सारांश है।

एक गहरी आत्मिक सेवकाई (इब्रानियों 8 :9 -1०)

यह उस वाचा के समान न होगी, जो मैं ने उन के बाप दादों के साथ उस समय बान्धी थी, जब मैं उन का हाथ पकड़ कर उन्हें मिसर देश से निकाल लाया, क्योंकि वे मेरी वाचा पर स्थिर न रहे, और मैं ने उन की सुधि न ली; प्रभु यही

कहता है। फिर प्रभु कहता है, कि जो वाचा मैं उन दिनों के बाद इस्त्राएल के घराने के साथ बान्धूंगा, वह यह है, कि मैं अपनी व्यवस्था को उन के मनों में डालूंगा, और उसे उन के हृदय पर लिखूंगा, और मैं उन का परमेश्वर ठहरूंगा, और वे मेरे लोग ठहरेंगे। (इब्रानियों 8 :9 -10)

9 पद इस प्रकार से कहती है कि वह मेरी वाचा में बने नहीं रहे और वह इस बात को तुलना करता है इस बात से कि परमेश्वर "मेरे नियमों को उनके हृदय में डालता है "और " उनके हृदयों पर लिखता है यह इन दोनों वाचाओं के बीच में एक बड़े फर्क की ओर इशारा करता है पुराने नियम के अधीन में लोगों की सामाजिक नियमों के द्वारा आकार दिया गया आज के दिन के समान नियम हृदयों को नहीं बदलते हालांकि जब वहां

उसके परिणाम होते हैं वह एक व्यक्ति के निर्णयों को डालते हैं नई वाचा में विश्वासियों के हृदय में एक चौखा आत्मिक कार्य होता है मुद्दा यह नहीं कि आप किसी धार्मिक संस्था से जुड़े हैं या नहीं एक परिवर्तित हृदय में विश्वास निर्णय लेने वाला तत्व है। हम उस गहराई की बड़ी बढ़ोतरी को देख सकते हैं जो कि नए नियम के अधीन में संभव है परमेश्वर के नियम वह है जिसे एक विश्वासी चाहता है और उसके लिए इच्छा करता है यदि वह सचमुच परमेश्वर की आत्मा के द्वारा नया किया गया है।

एक निकटता की सहभागिता (इब्रानियों 8:9-1०)

पुराने नियम में इस्त्राइली लोग निरंतर रूप से जोर देने के द्वारा संगठित किए गए तथा वह इस्थिर वायदा जो निरंतर उनके सामने झूलता रहा, परंतु उसके बावजूद वह तुरंत उस आशीषों के दर्शन से भटक गए तथा और गंभीर चेतावनिया मार्ग में भेजी गई यदि परमेश्वर के नियमों ने उनकी सहायता की तब उसकी आज्ञा मानेंगे तथा बिल्कुल ऐसा उसके विपरीत भी नए नियम में है क्योंकि परमेश्वर हृदयों को प्रेरित करता है परमेश्वर की सेवा करना प्राथमिकता बन जाता है और हमारी इच्छाएं हमारे मकसद दूसरे स्थान पर आ जाते हैं और वास्तविक रुप में वह परिवर्तित होता और परमेश्वर में ढल जाते हैं यह अंदरूनी इच्छा गहरे और निकटता के संबंध को परमेश्वर और उसके लोगों के बीच में और ले जाता है "मैं उनका परमेश्वर करूंगा तथा वह मेरे लोग रहेंगे " (इब्रानियों 8:1०)

एक विस्तृत और गहरी संगति (इब्रानियों 8:11)

हर एक अपने देश वाले को और अपने भाई को यह शिक्षा न देगा, कि तू प्रभु को पहिचान क्योंकि छोटे से बड़े तक सब मुझे जान लेंगे। इब्रानियों 8:11

जो भी व्यक्ति परमेश्वर की उस समाज का भागी है वह परमेश्वर को जानता है यह व्यक्तिगत संबंध नई वाचा की नियम है पुराने नियम में हृदय परिवर्तन के लिए उपाय नहीं किया और इस कारण बाहरी परिस्थितियों द्वारा लोगों को प्रेरित किया गया इसका अर्थ यह नहीं कि कुछ समय में परमेश्वर की आत्मा ने पुराने नियम में हृदयों में काम नहीं किया क्योंकि हम देखते हैं कि परमेश्वर की आत्मा अलग-अलग व्यक्तियों के ऊपर आके ठहरा नियायियो3:1० ,1 इतिहास 12:18) हालांकि यह परमेश्वर का अपनी आत्मा के द्वारा हमारे हृदयों में वास करने से बहुत अलग है और पतरस ने उससे कहा

पतरस ने उन से कहा, मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे। क्योंकि यह प्रतिज्ञा तुम, और तुम्हारी सन्तानों, और उन सब दूर दूर के लोगों के लिये भी है जिन को प्रभु हमारा परमेश्वर अपने पास बुलाएगा। (प्रेरितों के काम 2:38-39)

जिस संगति को बढ़ाया गया ना केवल इस अभिप्राय से इस परमेश्वर के सभी लोग जवान से लेकर बूढ़े तक रुप से उस पवित्र आत्मा का दान प्राप्त करें परंतु जितने लोगों को प्रभु अपनी और बुलाता है उनके लिए भी शुभ समाचार की पहुंचे तथा आत्मा की पहुंच इस्त्राइली परिवारों से कहीं आगे इस पूरी दुनिया में बड़े रूप से जाती है

एक पूर्ण सेवकाई (इब्रानियों 8:12)

सच्ची शांति तथा मेल मिलाप तब आता है जब हम यह जानते हैं कि हमारे पाप पूर्ण रूप से क्षमा किए गए हैं "क्योंकि मैं उन के अधर्म के विषय मे दयावन्त हूंगा, और उन के पापों को फिर स्मरण न करूंगा।"(इब्रानियों 8:12) पुरानी वाचा इस प्रकार नहीं थी वह साल-दर-साल दिए जाने वाले बलिदानों पर निर्भर थी और साथ ही कई आज्ञाओं को पूरा करने के उपाय इससे आगे जाएं तो हम यह भी पाते हैं कि पुराने नियम के बलिदान कभी भी वास्तविक रूप से क्षमा को नहीं ला सकते थे वह केवल परमेश्वर को कुछ समय के लिए समर्थ करते थे कि वह लोगों के पास को को कुछ समय के लिए नजरअंदाज करें (इब्रानियों 9:11-14)

निष्कर्ष

जैसे हम इब्रानियों के पुस्तक को देखते जाते हैं हम यह पाते हैं कि यीशु तथा नई वाचा पुराने नियम में पाए जाने वाले जो मूसा द्वारा दी गयी थी उसमें पाए जाने वाले संबंधों की क्षमता से कहीं बढ़कर हैं यीशु ख्रीस्त पापो की शमा के लिए जो आवश्यक था वह परिधान बन गया (1 थीमोथियो 2:5-6) किस कारण से नए नियम के समय में परमेश्वर के लोग कहीं अधिक उसके करीब लाए गए जितने परमेश्वर के साथnपुराने नियम में लाए जाते

नए नियम की संगति

इब्रानियों की पुस्तक यह बताती है कि नयी वाचा ने पर्याप्त नीव को डाला परमेश्वर तथा मनुष्य के बीच में जो विश्वास के द्वारा यीशु मसीह में छुड़ाया गया वह बड़े संबंध के लिए मनुष्य तथा परमेश्वर के बीच में

सहभागिता वचन के कई भागो में प्रकट किए गए हैं तथा नए नियम के कई चित्रों में यह चित्रित किए गए हैं दो शक्तिशाली चित्रों को हम यहां देख सकते हैं जो हमारे परमेश्वर के उस खूबसूरत छुटकारे की योजना के दर्शन को बढ़ाएं जो हमें सक्षम करता है उस निकटता के संबंध को पाने के लिए जो कि हमें परमेश्वर की सेवा में जोड़ता है

दाखलता (यूहन्ना 15)

यूहन्ना 15 में यीशु मनुष्य के परमेश्वर के संबंध के विषय में हरेक उन पुराने विचारों को रद्द करता है परमेश्वर को एक तानाशाह के रूप में नहीं देखना है परंतु उस व्यक्ति के रूप में जो मनुष्य के साथ कार्य करने में प्रसन्न होता है । तुम मुझ में बने रहो, और मैं तुम में: जैसे डाली यदि दाखलता में बनी न रहे, तो अपने आप से नहीं फल सकती, वैसे ही तुम भी यदि मुझ में बने न रहो तो नहीं फल सकते। मैं दाखलता हूं: तुम डालियां हो; जो मुझ में बना रहता है, और मैं उस में, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते। (यूहन्ना 15:4-5)

ध्यान दें एक गहरी सहभागिता हम उसके वचन के सुनने के द्वारा हम उसका वचन सुन रहे हैं और उसके द्वारा जी रहे हैं वह हमें डाली गई है बिल्कुल वैसे जैसे हम उस पतन के पहले अदन की वाटिका में थे परंतु अब हम उसमें बने रहते हैं क्या गहरे संबंध की और कोई बेहतर चित्र हो सकता है।

पुराने नियम की श्रेष्ठ गीत उन पूरे वचनों में इशारा करता है। यह यहां निकटता का संबंध के चित्रण पर ही नहीं रुक जाता परंतु वह

हमें बताता है कि कैसे और कब मनुष्य प्रभु की सामर्थ और उद्देश्य से जुड़ सकता है जिससे बलवंत हो सके। यह पूरा दृश्य अतिवादी है परमेश्वर के साथ गहरे संबंध का परिणाम आज्ञाकारिता है जिसके परिणाम स्वरुप वह पल आते हैं जिनकी इच्छा परमेश्वर रखता है क्या वह मनुष्य के बिना किस को उत्पन्न कर सकता है इसमें कोई संदेह नहीं कि वह ऐसा कर सकता है परंतु जैसे वाटिका में परमेश्वर चाहता है कि कुछ कार्य को वह मनुष्य के साथ तथा मनुष्य के द्वारा पूर्ण करें

एक विवाह (इफिसियों 5:31-33)

विवाह की रीती में ,एक और सामर्थ्य चित्र जो कि परमेश्वर हमारे उसके साथ संबंध से क्या अपेक्षा रखता है एक अद्भुत चित्र प्रदान करती है पौलुस इफिसियों 5:31- 33 में इसका विवरण देता है यह भेद तो बड़ा है; पर मैं मसीह और कलीसिया के विषय में कहता हूं। (इफिसियों5:32)

यीशु में बने रहने वाले पूर्व चित्र के सामान यह करीबी संबंध है जो फलो को लाता है जैसे कि एक पति और पत्नी को शारीरिक निकटता में विवाह की वाचा में आते हैं तब वह संतान को उत्पन्न करते हैं और ऐसा ही आत्मिक रूप से भी है विवाह में एक होना हमारे मन में कुछ धार्मिक एकता के नक्शे के ऊपर मोहर को लगाता है ताकि हम के महान कार्य को कर सके परमेश्वर कहता है कि" दो एक बनजाये " यीशु मसीह मति 19: 3-6 में दोबारा इस बात को घोषित करता है

अंतिम लक्ष्य तक पहुंचना (प्रकाशितवाक्य 21:1-8)

फिर मैं ने पवित्र नगर नये यरूशलेम को स्वर्ग पर से परमेश्वर के पास से उतरते देखा, और वह उस दुल्हिन के समान थी, जो अपने पति के लिये सिंगार किए हो। फिर मैं ने सिंहासन में से किसी को ऊंचे शब्द से यह कहते सुना, कि देख, परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच में है; वह उन के साथ डेरा करेगा, और वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर आप उन के साथ रहेगा; और उन का परमेश्वर होगा। (प्रकाशितवाक्य 21:2-3)

कलीसिया के अंतिम दृष्टिकोण प्रकाशितवाक्य के अंत में देख सकते हैं । 21 वें अध्याय में कलीसिया यीशु की धार्मिकता में तैयार है जिसके विषय में यह कहा जाता है कि वह स्वर्ग से एक दुल्हन के समान अपने पति के लिए उतर आती है कलीसिया दुल्हन है परमेश्वर अपने लोगों के साथ एक होना चाहता है छुटकारे का लक्ष्य इस पुनर्स्थापना को पूर्ण रूप से पूरा होते हुए देखना चाहता है तीसरी आयत में आगे हम पाते हैं मनुष्य के बीच में परमेश्वर की उपस्थिति का खुशी से आह्वान होता है "यह देखो परमेश्वर का तंबू मनुष्य के बीच में है और वह उसके लोग होंगे और परमेश्वर खुद उनके मध्य में होगा" इन टिप्पणियों का अर्थ पुनः अदन की वाटिका के ऊपर विचार करना है जहां परमेश्वर मनुष्य के साथ था जो कि परमेश्वर की योजनाओं को उस नई सृष्टि में पूरा कर रहा था और पहली आयत में हम देख सकते हैं कि पहली पृथ्वी टल जाएगी और परमेश्वर एक नए स्वर्ग और पृथ्वी की रचना करेगा।

सारांश

मनुष्य ने पुराने नियम के परमेश्वर को गलत रीति से एक दुर्जन दुष्ट दुष्ट राक्षस के रूप में समझा जो किसी की चिंता नहीं करता साथ ही यीशु

को परमेश्वर के उस प्रेम की खूबसूरत चित्र में जो नए नियम में मिलता है हमें रहते हैं और यह परमेश्वर के वचन के लिए कितना विरोधाभासी है वह वास्तविक अदन की वाटिका के दृश्य से वर्तमान तक और उस अनंत तक हम परमेश्वर को देख सकते हैं वह कैसे मनुष्य के साथ एक करीबी संबंध को चाहता है दर्द और तकलीफों के बावजूद जीवन में फलवत्ता को देखने के लिए

कितना दुर्भाग्य है कि कई लोग परमेश्वर तथा उसकी लोगों को अपने करीब लाने की रेखाचित्र को के ऊपर भरोसा नहीं रखते परमेश्वर का उद्देश्य इतना साफ है कि उसने उत्पत्ति से इस बनावट का स्मरण कराया है उन तुलना उसे जो फलवंतता पेड़ो तथा पौधों की तथा स्वस्थ परिवारों में दिखाई देती है परमेश्वर हमें सुरक्षित रूप से स्वर्ग पहुंचने से कहीं अधिक चीजों की चाह करता है वह हमारे साथ एकनिकटता के संबंध को चाहता है ताकि हम उसके लोगों के बीच में और अधिक फलों को ला सकें तथा उसके अनुग्रह कारी कार्य को इस दुनिया में दिखा सके।

---

1. दुष्ट के प्रति आत्मिक बंधवाए अभी भी मौजूद है एक भौतिक चित्र हमारी सहायता करता है उस आत्मिक चित्र को समझने के लिए।

2. मसीही कलीसिया उस पुराणी वाचा की समस्याओं से पीड़ित होता है सभा में आने वाले कई बार मसीहत को एक धर्म के रूप में देते हैं जिससे वह व्यक्ति जुड़ा है बजाय इसके कि परमेश्वर उसके उद्धारकर्ता के साथ संबंध में है और इसी कारण से उनके द्वारा परमेश्वर के सत्य बड़ी

आसानी से दूर किए जाते हैं वह ना तो परमेश्वर से ना ही उनके नियमों से प्रेम रखते हैं।

3.मैंने यह पूरी पुस्तक उन बातों को दर्शाते हुए लिखी है जो परमेश्वर ने मुझे इसमें सिखाई, यीशु के साथ चलना।

#3 छुटकारे की घोषणा

सामाजिक संचार माध्यम जैसे फेसबुक इसलिए पनपते हैं क्योंकि मित्रों के पास यह मौका मिलता है कि एक दूसरे के साथ जुड़ सके परमेश्वर के हमारे प्रति प्रेम का मुख्य प्रगटीकरण जिस रीति से निरंतर रूप से अपने वचन के द्वारा तथा जीवन से तथा उसके लोगों के कार्यों के द्वारा हम से बात करता है मिलता है यह प्रगटीकरण हमें नियंत्रित करने या हमसे चालाकी से काम कराने के लिए नहीं है परंतु एक मित्र के रूप में एक पिता के रूप में तथा एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जो वास्तविक रुप से हमारे जीवन के लिए चिंतित होता है परमेश्वर इस बात में रुचि रखता है कि वह हमें सबसे उत्तम संभव जीवन अनुभव करने में सहायता करें इसकी बजाय कि वह हमसे कहीं दूर रहे था जैसे कई लोग ऐसा उसने ऐसा उसके विषय में विश्वास करते हैं कि वह झूठा परमेश्वर हमारे जीवन में हमारे संसार में शामिल है हम परमेश्वर की प्रेम को जिस रीति से वह हमसे बातचीत करता है हम जाने तथा इसके अद्भुत छुटकारे कि योजना को उसके वचन के द्वारा हमारे जीवन में लागू करें।

इस अध्याय में हम देखेंगे कि परमेश्वर किन तरीकों से हमसे बातचीत करता है तथा पुराने और नए नियम में विभिन्न परिस्थितियों में प्रभु ने कैसे बात करें मुख्यतः हमें यह देखना है कि जब हम परमेश्वर के वचन का प्रतिउत्तर देखते हैं तो क्या होता है ।

परमेश्वर जिस रीती से बात करता है

परमेश्वर हर एक व्यक्ति से अलग रूप से संबंध रखता है तथा फिर भी उसमें उसके विचारों की सोच और उसके योजना जो हमारे प्रति है इस संसार का संचार का अधिकतम भाग होता है यह खासतौर से जिस रीति से वो हमसे बात करता है उसमे दिखता है उसकी ओर से आया हर एक शब्द कुछ महत्वपूर्ण तरीकों की ओर जिसके द्वारा वह अपनी योजना को प्रकट कर रहा है पूरा कर रहा है इशारा करता है मुझे याद है कि जब मैं कॉलेज में था तो कितना अधिक मैं अपनी महिला मित्र जो कि आज मेरी पत्नी है उसकी चिट्ठियों को संजो के रखता था उनमें से कई आज भी मेरे पास है परमेश्वर हमसे कितना भी बात क्यों न करें वह उस तरह बात करता है जिसका तक हम उसके विचारों को समझते हैं और अपनाते हैं सत्य जो हमारे उसके साथ संबंध पर प्रभाव डालते हैं क्या होगा यदि मैं अपनी महिला मित्र के दस प्रतिशक ,पचास प्रतिशक या ज्यादातर चिट्ठियों को ना खोलो हो मेरी उसके साथ संचार में अरुचि हमारे संबंध को खराब कर देती यीशु मसीह के पीछे चलने की मूल बातों में धार्मिक क्रियाओं से बाहर है हमारे समर्पण की वास्तविक जांच हमारे हृदय कि उसकी वचन के सुनने तथा उसके प्रति उत्तर हमारे हृदय की सोच है ।

यह शब्द परमेश्वर का वचन विश्वासियों के बीच में आमतौर पर सुना जाता है हमें परमेश्वर के वचन से सुनना है पर हम में से कुछ ही लोगों ने इसके वास्तविक अर्थ के बारे में सोचा होगा परमेश्वर अपने वाचन को अपने अधिकार और अपने विचारों को हम तक पहुंचाने के लिए इस्तेमाल करता है वचन वह तरीका है जिसके द्वारा हम जान सकते हैं कि परमेश्वर क्या सोच रहा है और यह हमारे लिए भी है हम ज्यादातर अपने विचारों को या तो बोलने या शब्दों को लिखने के द्वारा संचार करते हैं परमेश्वर अपनी सामर्थी वचनों के द्वारा आकाश और पृथ्वी की रचना की "तब परमेश्वर ने कहा प्रकाश हो और प्रकाश हो गया " (उत्पत्ति 1:3) और जैसे-जैसे परमेश्वर बोलता गया यह पृथ्वी अस्तित्व में आ गई परमेश्वर के वचन ने भू भाग को बनाया और ढाला परमेश्वर का वचन जब हमें बोला जाता है तो सामर्थी कार्य करता है उत्पत्ति की शुरुआत में हम देख सकते हैं कि परमेश्वर अपने ही रूप में रची सृष्टि जो मनुष्य है बातचीत करता है जिन्हें उसके साथ विशेष रूप से संबंध रखने के लिए रचा गया था।

अगुवाई

परमेश्वर की ओर से शब्दों के रूप में बोले गए वचन से परमेश्वर अपने ज्ञान को देता है जो हमारे लिए दिशा अगुवाई और चेतावनी बन जाता आदम और हवा के लिए "तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को यह आज्ञा दी, कि तू वाटिका के सब वृक्षों का फल बिना खटके खा सकता है: पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खाना: क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाए उसी दिन अवश्य मर जाएगा"।। (उत्पत्ति 2:16-17)

एक बार परमेश्वर का वचन जब संचारित हो जाता है मनुष्य उस का प्रति उत्तर देने के लिए जिम्मेदार ठहरता है यदि उनको सुना जाता है तो वह हमारे जीवन को बनाने वाला बन जाता है उस वाटिका में हवा ने सर्प को कहा उत्पत्ति १:3 में बिल्कुल वह जो परमेश्वर ने उससे कहा था उसने सुना था परंतु उसने इन आवश्यक शब्दों को अपने अंतिम निर्णय को लेने के ऊपर प्रभाव डालने के लिए अनुमति नहीं दी

परिज्ञान

इन आगे के कदमों में हम देख सकते हैं कि परमेश्वर पुनः अपने विचारों को आदम पर संचालित कर रहा है फिर यहोवा परमेश्वर ने कहा, आदम का अकेला रहना अच्छा नहीं; मैं उसके लिये एक ऐसा सहायक बनाऊंगा जो उससे मेल खाए। "(उत्पत्ति 2:18) यहां पर जो यहोवा परमेश्वर कह रहा है उसका तात्पर्य अद्भुत है इससे पहले कि परमेश्वर अगुवाई करें अगुवाई कर रहा था परंतु यहां परमेश्वर मनुष्य के मन में उसके परिज्ञान को डाल रहा है परमेश्वर यहां बताता है कि उसने स्त्री और पुरुष को बनाया वह अलग है और वह चाहता है कि हम जाने उनके अलग-अलग उद्देश्यों को जिससे उनके कार्य उत्पन्न होते हैं और जिसके ऊपर यह विवाह का की विधि आधारित है परमेश्वर के वचन थोड़े थे परंतु बहुत महत्वपूर्ण वह हमारे परमेश्वर के प्रति दृष्टिकोण को डालते हैं समाज के प्रति एक दूसरे के प्रति जैसे हमारा समाज आधुनिकता के साथ छेड़छाड़ करता है वह परमेश्वर के वचन को ठुकराता है वह स्व केंद्रित तथा अपमान करने वाला तथा विकृत हो जाता है जो आगे जिसे हम सभ्यता कहते हैं यदि पश्चाताप ना करें तो नाश हो जाता है

समवाद

यूँ तो परमेश्वर सर्वज्ञानी और सर्वसमर्थी है तो भी वह बातचीत करता है कुछ पिता सोचते हैं की वह अधिकार मैं हैं तो उनके बच्चों को उनकी सुनना है परन्तु बहुत गंभीर अनाज्ञाकारिता के समय मैं भी उस वाटिका मैं परमेश्वर पुरुष और स्त्री से बोल रहा था और सुन रहा था तब यहोवा परमेश्वर ने पुकार कर आदम से पूछा, तू कहां है? उसने कहा, मैं तेरा शब्द बारी में सुन कर डर गया क्योंकि मैं नंगा था; इसलिये छिप गया। उसने कहा, किस ने तुझे चिताया कि तू नंगा है? जिस वृक्ष का फल खाने को मैं ने तुझे बर्जा था, क्या तू ने उसका फल खाया है? आदम ने कहा जिस स्त्री को तू ने मेरे संग रहने को दिया है उसी ने उस वृक्ष का फल मुझे दिया, और मैं ने खाया। तब यहोवा परमेश्वर ने स्त्री से कहा, तू ने यह क्या किया है? स्त्री ने कहा, सर्प ने मुझे बहका दिया तब मैं ने खाया। (उत्पत्ति 3: 9-13)

इस में कोई संध्ये नहीं की परमेश्वर जनता था की समस्या क्या है परन्तु उसने धैर्य के साथ आदम और हव्वा को ढूंढा और उनसे बातचीत की हम सरलता से ये कल्पना कर सकते है की यदि परमेश्वर उनके बलवे के समय उनसे बात कर सकता है तो निश्चित रूप से शांति के समय भी बात करेगा प्रभु पुनः अपने विचारो को संचार कर रहा था और उन्हें अपने पास बुला रहा था की वे अपने आप को समझ सके सुधार लाने के लिए उपयोग किये गए शब्द धयान देने योग्य हैं ।

परमेश्वर मनुष्य से न केवल जब वह निर्दोष हो बात करता है वरन उसके विद्रोह के समय तथा उसके बाद भी बात करता है समय दर समय परमेश्वर उनको अगुवाई के उदेश्य से तथा सहायता, चेतावनी,

फटकार तथा अन्य रूप से मानवजाति की सहायता करने के उद्देश्य से बातचित की 2 थीमुथियस 3:16 परमेश्वर सरे विचारो को अपने तक सिमित नहीं रखता परन्तु कुछ अपने बच्चों से भी उनकी उसके बचे के रूप में बढ़ने के लिए बाटता हैं यह मिसाल विशेष शब्दों के संचार के द्वारा छुटकारे की योजना की नीव को बनाता है तथा उसको समझ ने के लिए ताकि हम पूर्ण रूप से उसके साथ पुनर्स्थापित हो सके तथा जैसे पौलुस 2 थीमुथियस 3:17 में कहता हैं ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिये तत्पर हो जाए॥

पुराने नियम में परमेश्वर के वाचन के उद्धरण

पुराना नियम परमेश्वर और मनुष्य के बिच कई प्रकार के वार्तालापों से भरा है जैसे हमने पहले भी दर्शाया हर एक परिस्थिति न केवल पूर्व में से ज्ञान देती है वरन इस बात पर भी कैसे कई बार परमेश्वर हमारी सहायता के लिए हमारे जीवन से बात करता है आशापूर्वक हम इसका और प्रति उत्तर देने वाले बन सकते है उन लोगो की तुलना में जिन्होने अपने आपको परमेश्वर के वचन कठोर कर लिया है तथा सर्प के शब्दों को सुनना चुना।

उत्पत्ति 4 : परमेश्वर और कैन

उत्पति में एक नए संवाद को परमेश्वर की शुरुवात करता हैं एक चेतावनी दी

जाती है परमेश्वर जिस सावधनीपूर्वक रीती से बोलता हैं एक साधारण डाट से कई अधिक आगे जाता है परमेश्वर बोल रहा था और सुन रहा था प्रभु ने न केवल सवाल पूछे परन्तु उत्तर का इंतज़ार भी किया

तब यहोवा ने कैन से पूछा, तेरा भाई हाबिल कहां है? उसने कहा मालूम नहीं: क्या मैं अपने भाई का रखवाला हूं? उसने कहा, तू ने क्या किया है? तेरे भाई का लोहू भूमि में से मेरी ओर चिल्ला कर मेरी दोहाई दे रहा है! इसलिये अब भूमि जिसने तेरे भाई का लोहू तेरे हाथ से पीने के लिये अपना मुंह खोला है, उसकी

ओर से तू शापित है। चाहे तू भूमि पर खेती करे, तौभी उसकी पूरी उपज फिर तुझे न मिलेगी, और तू पृथ्वी पर बहेतू और भगोड़ा होगा। तब कैन ने यहोवा से कहा, मेरा दण्ड सहने से बाहर है। देख, तू ने आज के दिन मुझे भूमि पर से निकाला है और मैं तेरी दृष्टि की आड़ मे रहूंगा और पृथ्वी पर बहेतू और भगोड़ा रहूंगा; और जो कोई मुझे पाएगा, मुझे घात करेगा। इस कारण यहोवा ने उससे कहा, जो कोई कैन को घात करेगा उससे सात गुणा पलटा लिया जाएगा। और यहोवा ने कैन के लिये एक चिन्ह ठहराया ऐसा ने हो कि कोई उसे पाकर मार डाले॥ तब कैन यहोवा के सम्मुख से निकल गया, और नोद नाम देश में, जो अदन के पूर्व की ओर है, रहने लगा। (उत्पत्ति 4:9-16)

हम जो घट रहा है उसे चित्रित करने का प्रयास करें एक ओर परमेश्वर अभिभूत करने वाली समर्थ सृष्टि की रचन में दिखती है तत्त्व उसका प्रतिउत्तर देते है फिरभी परमेश्वर ये इच्छा रखता है की मनुष्य को बेहतर चुनाव के लिए सलाह दे। परमेश्वर व्यक्तिगत रूप से बात करता है जो हमारे अन्तःमान जिसे परमेश्वर ने हमे दिया है अलग है यह इन भागो के दवारा है की हम पुनः जान पते हैं बाइबिल आधारित सलाह के विषय में न केवल क्या कहा जा सकता हैं परन्तु कितना बेहतर कहा जा सकता हैं हलाकि मनुष्य समर्थ है की वह परमेश्वर के वचन को दोनों

अनदेखा तथा ठुकरा सकता है चेतावनी देने के बावजूद मनुष्य यह चुनता है की परमेश्वर के वाचां के विरूद्ध जीवन जिए कुछ ऐसा भी सोच सकते हैं की परमवश्वर कमज़ोर हैं क्यूंकि वह मनुष्य को अनुमति देता की वह उसके वचन को अनदेखा करे। यह तो केवल एक पूर्व लक्षण है वचन में और हमरी आज की दुनिया में दिखाई देगा परमेश्वर का वचन आज भी सामर्थी है परन्तु हमारी आंखे अंधी हो गयी है मनुष्य जाती के पास सुनने और प्रतिउत्तर देने में विश्वास की कमी है इस्पष्ट रीती से आदम और हवा को फसाने वाली शैतान का चाल ने उनके वंशजो के ज्ञान तक को अस्पष्ट कर दिया है मनुष्य जाती अब परमेश्वर की भली और सहायक सलाह पर भरोसा नहीं रखता हम जैसे परमेश्वर के वचन को प्रतिउत्तर देतें है वह परमेश्वर को प्रतिउत्तर देने के सामान है ।

आइये हम समय में आगे चले और देखें की मनुष्य ने कोसी विभिन परिस्तिथियों में परमेश्वर के वचन को सुना और उसका प्रतिउत्तर दिया

उत्पत्ति 12 परमेश्वर की अब्राहम से बात करता है

जल प्रलय के समय तथा बाबुल की मीनार पर मनुष्य का विद्रोह के साथ यह आश्चर्य की बात है की परमेश्वर फिर भी अब्राहम से बात करता है परन्तु वह केवल बात ही नहीं करता परन्तु उसे बुलाता भी है वह अब्राहम को उसके शब्दों का प्रतिउत्तर देने के लिए प्रेरित करता है ।

> यहोवा ने अब्राम से कहा, अपने देश, और अपनी जन्मभूमि, और अपने पिता के घर को छोड़कर उस देश में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊंगा। और मैं तुझ से एक बड़ी जाति बनाऊंगा, और तुझे आशीष दूंगा, और तेरा नाम बड़ा करूंगा, और तू आशीष का मूल

होगा। और जो तुझे आशीर्वाद दें, उन्हें मैं आशीष दूंगा; और जो तुझे कोसे, उसे मैं शाप दूंगा; और भूमण्डल के सारे कुल तेरे द्वारा आशीष पाएंगे। यहोवा के इस वचन के अनुसार अब्राम चला; और लूत भी उसके संग चला; और जब अब्राम हारान देश से निकला उस समय वह पचहत्तर वर्ष का था।

(उत्पत्ति १२:१-४)

अब परमेश्वर इब्राहिम को विश्वास की एक लंबी यात्रा पर जाने के लिए आमंत्रित करता है परमेश्वर से बड़ी बातों का वायदा करता है यदि वह उसके प्रति आज्ञाकारी रहे जैसे अंतिम अध्याय में इस बात का प्रगटीकरण होता है अब्राहम की गलतियों ने उसे साबित किया परंतु शुरुआती समय में वह कारी रहा तो अब्राहम ने जैसा प्रभु ने कहा था वैसा किया अब्राहम ने परमेश्वर की आवाज को सुना और परमेश्वर को प्रति उत्तर दिया परमेश्वर ने अपने वादों को प्रकट किया और अब्राहम को अपनी योजना में शामिल किया जिसने उस महान छुटकारे की योजना में एक मुख्य भाग को बनाया।

परमेश्वर अभी भी बातचीत कर रहा था और उसका वचन लोगों के जीवन को स्पष्ट करना आरंभ कर चुका था अब्राहम का विश्वास के प्रति उत्तर ने एक अनंत फर्क को लाया परमेश्वर के वचन के प्रति आज्ञाकारिता अंधकार भरे हुए कमरे के बड़े दरवाजे के जैसा है जो की रोशनी को प्रवेश करने के लिए अनुमति देता परमेश्वर शुन्य में से सब कुछ बनाता है यह कहना अद्भुत है हां यह सही है परंतु वह उससे भी अद्भुत करता है वह पापियों को संत बनता है "

-सोरेन कीर्केगार्द, जर्नल्स ऑफ़कीर्केगार्द

जैसे समय बीतता जाता है परमेश्वर का वचन उसके लोगों के साथ संबंध के द्वारा और अधिक इस दुनिया में प्रवेश करते जाता है जो मनुष्य के इस अंधकार में संसार में और अधिक रोशनी के प्रवेश की अनुमति देता है मनुष्य उस दुष्ट की बंधुआई में है परंतु परमेश्वर उसके समान ही बड़ी चतुराई से अपने वचन को भेजता है कि मनुष्य के हृदय को अपने वश में कर सकें।

भजन संहिता 19 प्रकाशन और परमेश्वर का वचन एक दृष्टिकोण को देता है -

भजन 19 एक विशेष भजन है जो हमारी इस समझ को गहरा करता है कि परमेश्वर कितना इच्छुक है कि मनुष्य उसका प्रत्युत्तर दें परमेश्वर का वचन सृष्टि के आरंभ से निरंतर रूप से अपने आप को प्रकट करता है "आकाश ईश्वर की महिमा वर्णन कर रहा है; और आकशमण्डल उसकी हस्तकला को प्रगट कर रहा है। दिन से दिन बातें करता है, और रात को रात ज्ञान सिखाती है।"(भजन संहिता 19: 1-2) ध्यान दें कि कैसे आकाश उसकी महिमा का वर्णन कर रहा है परमेश्वर अपनी सृष्टि के द्वारा बातचीत करता है और हर जगह स्त्री और पुरुषों को बुलाता है कि वह उसकी महानता तथा उसके ख्याल रखने को देखें।

सातवें पद से आरंभ होते हुए हालांकि भजनकार इस बात से आरंभ करता है कि कैसे परमेश्वर अपने हृदय को तथा उस योजना को जो उसकी विधि में प्रकट की गई है सामने लेकर आता है:"यहोवा की व्यवस्था खरी है, वह प्राण को बहाल कर देती है; यहोवा के नियम विश्वासयोग्य हैं, साधारण लोगों को बुद्धिमान बना देते हैं; "(भजन संहिता 19: 7) बाइबिल में बोलने के साथ परमेश्वर निरंतर रूप से इस

आमंत्रण को बाहर भेजता रहता है कि उसके प्रति तथा उसके वचन के प्रति प्रतिउत्तर आए जैसे पौलुस कहता है कि यह सब बातें उस समय के लोगों के लिए लिखी नहीं गई क्योंकि उस समय कुछ ही लोगों की पहुंच शास्त्रों तक थी परंतु उनके लिए लिखी गई जो बाद में आएंगे जिसमें हम भी शामिल हैं ताकि हम परमेश्वर के वचन को प्रतिउत्तर दे सकें हमारे ध्यान को आकर्षित करने का संघर्ष आज भी चलता है

इसे ही कारण से मनोरंजन का संसार इतना खतरनाक है वह हमारी क्षमता को कम करता है कि हम ध्यान पूर्वक सुने और परमेश्वर क्या प्रत्युत्तर दें ।

एक बड़ा अंतर : यहुशु तथा न्यायियों

निरंतर रूप से परमेश्वर का के वचन का मनुष्य के सन्मुख प्रगटीकरण पुराने नियम को एक बड़ा रुचिकर पुस्तक बनाता है मनुष्य कई प्रकरणों में परमेश्वर के वचन को नहीं सुनता परंतु जब वह वैसा करता है तब वह आशीषित होता है। (प्रकाशितवाक्य 1:3)

यहोशू की पुस्तक उन आशीषों पर रोशनी डालती है जो परमेश्वर के वचन के आज्ञाकारिता के पश्चात आती हैं यहुशु के बाद नियायियो की पुस्तक विनाश को दिखाता है जो परमेश्वर के वचन के प्रति अनगियाकारी होते हैं न्यायिक दो 110 यहोशू की पीढ़ी तथा उसके पश्चात की पीढ़ियों के बीच में बड़े अंतर को दिखाता है यह बड़ा अंतर क्या है।

परमेश्वर ने कहा यह समस्या नहीं थी मुख्य अंतर यह है कि कैसे मनुष्य उसके वचन के प्रति उत्तर देता है और नहीं देता है परंतु तुमने मेरे शब्द को नहीं सुना यह तुमने क्या किया (न्यायियो 2:2) हम जितना

आज्ञाकारी रहते हैं उतना ही परमेश्वर समर्थ होता है और इच्छुक होता है कि हमारे जीवन में प्रवेश करें और जो आवश्यक फेरबदल हमारे दृष्टिकोणों में हमारी सोच में और जीवन की प्राथमिकताओं में आवश्यक है उसको पूरा करें इसके द्वारा आज्ञाकारिता और आशीष से आती हैं ना केवल उस व्यक्ति के लिए परंतु उन लोगों के लिए भी जो उसके आसपास है ।**भजन संहिता और नीतिवचन**

पुराने नियम की पुस्तकें फूलपुर के लोगों की परमेश्वर के वचन के प्रति जीवन की वास्तविक परिस्थितियों में प्रतिउत्तर को प्रकट करती हैं हम एक्शन के लिए एक क्षण के लिए दाऊद के विषय में सोचे भजन सहिता परमेश्वर का वचन है परंतु वह दाऊद के भीतरी संघर्ष को कि जिस संसार में वह रहता है उस परमेश्वर के साथ जिसे वह अच्छे से जानता है मेल मिलाप करें

परमेश्वर अपने वचन का कमाल करता है कि हमें उत्साहित करें उसे समझने के लिए और अपने आत्मिक संघर्षों और आनंद को व्यक्त करने के लिए भजन संहिता 17 56 परमेश्वर ने दाऊद के हृदय को खोल दिया ताकि हम आगे को देख सकें और हमें उस में ला सकें दाऊद ने ना केवल परमेश्वर की आवाज को सुना परंतु उसके साथ बातचीत भी की और परमेश्वर यही चाहता है हर जगह हर लोगों से परंतु हमने अपने हृदय तथा मनु को कठोर कर लिया है

नीतिवचन उस किताब में उस बुद्धि का अभिलेख है और जो राजा सुलेमान ने परमेश्वर से प्राप्त किया है उस परिज्ञान की प्रस्तुति है यह पुस्तक हमसे विनती करती है कि हम उस बुद्धि के वचन को सुनें जोकि

परमेश्वर का वचन है "ईश्वर का एक एक वचन ताया हुआ है; वह अपने शरणागतों की ढाल ठहरा है। " (नीतिवचन 30:5)।

भविष्यवक्ता

भविष्यवक्ताओं ने सुना और परमेश्वर के वचन को आगे बढ़ाया झूठे भविष्यवक्ताओं ने यह दावा किया कि उनके पास परमेश्वर का वचन है परंतु उनके पास नहीं था वह ना तो परमेश्वर को जानते थे और ना ही उन्हें परमेश्वर के वचन की कोई चिंता थी सच्चे भविष्यवक्ता जो कि एक अद्भुत माध्यम बन गए जिसके द्वारा सर्व शक्तिमान परमेश्वर ने अपनी इच्छा अपनी योजनाओं तथा अपने उद्देश्यों को घोषित किया उसने यह भी स्पष्ट किया कि क्यों मनुष्य को दुख उठाना है:

> यहोवा यों कहता है, यह स्थान जिसके विषय तुम लोग कहते हो कि यह तो उजाड़ हो गया है, इस में न तो मनुष्य रह गया है और न पशु, अर्थात यहूदा देश के नगर और यरूशलेम की सड़कें जो ऐसी सुनसान पड़ी हैं कि उन में न तो कोई मनुष्य रहता है और न कोई पशु, इन्हीं में हर्ष और आनन्द का शब्द, दुल्हे-दुल्हिन का शब्द, और इस बात के कहने वालों का शब्द फिर सुनाईं पड़ेगा कि सेनाओं के यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि यहोवा भला है, और उसकी करुणा सदा की है। और यहोवा के भवन में धन्यवादबलि लाने वालों का भी शब्द सुनाईं देगा; क्योंकि मैं इस देश की दशा पहिले की नाईं ज्यों की त्यों कर दूंगा, यहोवा का यही वचन है। (यिर्मयाह 33:1० -11)

सब भविष्यवक्ता एक समान थे यद्यपि वह एक विशेष परिस्थिति और एक विशेष विभाग की ओर केंद्रित है वह परमेश्वर के वचन को लोगों के

पास उस भाषा के साथ ले गए है ताकि वह उसका प्रत्युत्तर दें और परमेश्वर अपने उस कठोर दंड को थोड़ा कम कर सके परमेश्वर ने उन्हें अपनी विधि में बताया था कि वह उसके प्रति आज्ञाकारी होंगे तो वह क्या करेगा कोई भी परमेश्वर को संचार की कमी का दोषी नहीं ठहरा सकते:यदि तू अपने परमेश्वर यहोवा की सब आज्ञाएं, जो मैं आज तुझे सुनाता हूं, चौकसी से पूरी करने का चित्त लगाकर उसकी सुने, तो वह तुझे पृथ्वी की सब जातियों में श्रेष्ट करेगा। फिर अपने परमेश्वर यहोवा की सुनने के कारण ये सब आर्शीवाद तुझ पर पूरे होंगे। (व्यवस्थाविवरण 28: 1-2) परन्तु यदि तू अपने परमेश्वर यहोवा की बात न सुने, और उसकी सारी आज्ञाओं और विधियों के पालने में जो मैं आज सुनाता हूं चौकसी नहीं करेगा, तो ये सब शाप तुझ पर आ पड़ेंगे। (व्यवस्थाविवरण 28: 15 से आगे)

विनियोग

यह कुछ अद्भुत माध्यम है जिसके द्वारा परमेश्वर आपसे बात करता है और आपको आमंत्रित करता है प्रतिउत्तर देने के लिए जैसे आप पुराने नियम को पढ़ते हैं आप निश्चय करें कि आप इस रीति से उसके वचन को देखेंगे:

- परमेश्वर क्या कहता है?
- परमेश्वर कैसे कहता है ?
- परमेश्वर मुझसे क्या कह रहा है?
- क्या मैं उसके वचनों का प्रत्युत्तर दे रहा हूं?

जैसे हम गंभीरता से परमेश्वर के वचन को सुनते हैं उस दुष्ट के द्वारा एक तनाव उत्पन्न होता है जो कि कई बार हमें चुनौती देता है कि क्या

परमेश्वर का वचन सत्य है और सहायक है यह परीक्षाएं हैं इन चीजों को प्रार्थना के द्वारा निष्कासित करें प्रार्थना जो इस बात की पुष्टि करता है कि जो उसकी आज्ञा मानेंगे उनके लिए आशीष है और जो उसकी आज्ञा नहीं मानेंगे उनकी अभागी स्थिति ।

नए नियम की कलीसिया में परमेश्वर के वचन के उदाहरण

परमेश्वर ने पुराने नियम की समाप्ति के समय लगभग 400 ईपू के समय से अपने भविष्यवक्ताओं के द्वारा बोलना बंद कर दिया था इसराइल देश में वापस आने के समय तथा उस विधि और यरूशलेम की दीवार को पुनः निर्माण करने के समय (जो कि नहेमिया) वह उस बड़ी प्रताड़ना के समय भी शांत रहा परमेश्वर ने बात की ओर लोगों के पास उसका वचन था लेकिन इजरायल ने अपने हृदय को कठोर कर लिया था यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के समय तक नहीं हुआ जो की एक महान भविष्यवक्ता उस मसीहा की आने के मार्ग को तैयार कर रहा था तब तक परमेश्वर ने दोबारा बात नहीं की यह नए नियम के आरंभिक दिन थे और नई वाचा जो उसके पुत्र यीशु ख्रीस्त के द्वारा बनाई गई बड़े ध्यानपूर्वक लिखे गए हैं।

(इब्रानियों 1:1-2)

"पूर्व युग में परमेश्वर ने बाप दादों से थोड़ा थोड़ा करके और भांति भांति से भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बातें कर के। इन दिनों के अन्त में हम से पुत्र के द्वारा बातें की, जिसे उस ने सारी वस्तुओं का वारिस ठहराया और उसी के द्वारा उस ने सारी सृष्टि रची है।" (इब्रानियों 1:1-2)

यूहन्ना उसी सत्य को अलग रूप से घोषित करता है की यीशु वह वचन था जो देहधारी हुआ: "आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था।" (यूहन्ना 1:1) हालांकि यह वक्तव्य हमारे पूरी समझ से कई परे जाता है परमेश्वर ने अपने आपको उन लोगों के प्रति समर्पित किया जो उसके भविष्यवक्ताओं कि नहीं सुन रहे थे उसने अपने वचन को यीशु के जीवन में साक्षात किया परमेश्वर अब अपने पुत्र के द्वारा बात कर रहा था जिसने विश्वास योगिता से उसको प्रतिबिंबित किया ।

दुर्भाग्यवश यहां पर भी उसके लोगों ने उसको ग्रहण नहीं किया(यूहन्ना 1:11) यहूदी लोगों ने इब्राहिम का परिवार,इसहाक तथा याकूब के वंशजों रूप में भी ने यीशु को मसीहा को ग्रहण नहीं किया परंतु कुछ लोग जिन्होंने उसके नाम पर विश्वास किया और यीशु के द्वारा परमेश्वर के संदेश के प्रति ग्रहणशील रहे वह परमेश्वर से उत्पन्न हो सके (यूहाना 1:13) जैसे विधि परमेश्वर के वचन के साथ एक आवाज में बात करती है परमेश्वर यीशु ख्रीस्त का वचन परमेश्वर की आवाज को दर्शाता है।

कलीसियाई युग

यीशु की मृत्यु तथा उसके अनुदान के पश्चात सारी जातियों और राष्ट्रों के लोग उसको जान सकें प्रेरितों के काम की पुस्तक से आगे परमेश्वर अपने प्रेतों से और उनके द्वारा बात करता है यह परिभाषिक शब्द भविष्यवक्ता धूमिल होता हुआ दिखता है एकमात्र भविष्यवक्ता यीशु के आगमन के कारण धूमिल हो जाता है। (इब्रानियों 1:1)

कलीसिया कई विवरणों को उपयोग करता है परमेश्वर का उसके लोगों के साथ घनिष्ठ संबंध को दिखाने के लिए परंतु सबसे अधिक महत्वपूर्ण बात जो कि यीशु मसीह की मृत्यु के द्वारा इस नए वाचा का आरम्भ हुआ परंतु यहां कई नाम है जो हमारे परमेश्वर के प्रति तथा उसकी अद्भुत योजना के प्रति हमारे दृष्टिकोण को डालती है ।

- मसीह सिर है, और परमेश्वर की लोग उसकी देह (इफिसियों 1:2०-23)
- मसीह दूल्हा है और कलीसिया उस की दुल्हन (इफिसियों :5:22-24)
- यीशु दाखलता है और उसके लोग उसकी डालियां है (यूहन्ना : 15:1-8)
- यीशु कोने का पत्थर है और कलीसिया जीवित पत्थर है(1 पतरस2:3-7)

यह करीबी संबंध के नमूने इस बात को दर्शाते हैं कि अब परमेश्वर के साथ करीबी सहभागिता संभव है परमेश्वर ने अपनी बातचीत को बंद नहीं किया परंतु उस को एक नए स्तर पर लेकर आया परमेश्वर अपने लोगों से सीधे बात करें तथा उनसे सुनें क्योंकि परमेश्वर का छुटकारे का कार्य जो यीशु के क्रूस के द्वारा है परमेश्वर के हृदय तथा उसके लोगों के बीच और अधिक मजबूत हो तथा और अधिक गहरे वार्तालाप में स्तुति प्रार्थना तथा परमेश्वर लोगों की विनतियों को बढ़ाएं।

प्रार्थना

एक क्षण ले और प्रार्थना के विषय में सोचे पुरानी नियम में प्रार्थना याजको का कार्य था परंतु नए नियम के युग में परमेश्वर के सारे लोग अलंकारिक रूप से याजक बन गए हैं वह एक शाही याजको का समाज

है (1पतरस 2:9) ना केवल उन्हें विश्वास करना है जो उनकी सहायता करती है सुनना के लिए तथा परमेश्वर के सत्य के अनुसार जीवन जीने के लिए परंतु अपने भाई और बहनों के लिए परमेश्वर के सामने मध्यस्थता करने के लिए भी जिम्मेदार हैं परमेश्वर के शस्त्रों के विषय में बात करने के पश्चात पौलुस परमेश्वर के लोगों से कहता है कि हर समय आत्मा में प्रार्थना करते रहो सारी प्रार्थनाओं के साथ और विनती यों के साथ (इफिसियों5:18) प्रार्थना परमेश्वर की इच्छा इस समय तथा विवेक को अपनाती है और सक्रिय रुप से इसको पूर्णता में लाने का प्रयास करती है प्रार्थना एक भीतरी और आत्मिक व्यायाम के बजाय परमेश्वर की योजना को पूरा करने के लिए महान माध्यम बन जाता है प्रार्थना परमेश्वर से बातचीत करना है परमेश्वर से वार्तालाप करना अत्यधिक महत्वपूर्ण है तथा हम इस शुभ कार्य के परिणामों को प्रार्थना के समय में देख पाते हैं

उद्घोषणा

परमेश्वर के लोगों के लिए परमेश्वर के वचन की उद्घोषणा उच्च प्राथमिकता पर है यह कई रीति से आकार को लेती है सुसमाचार प्रचार जिसका अर्थ परमेश्वर मसीही के बचाने वाले ज्ञान को बांटना प्रचार जो कि परमेश्वर के वचन को परमेश्वर के लोगों से कहना ताकि सुनने वाले परमेश्वर के वचन का प्रति उत्तर दे सके तथा शिक्षा जिसका अर्थ है परमेश्वर के वचन को इस रीति से समझाना हम लोग उसको समझ सकें और अपना सकें इफिसियों 4:11-13 यह बताता है कि परमेश्वर अपनी आत्मा के द्वारा अपने लोगों को बल देता है ताकि वह परमेश्वर के वचन

को लेकर परमेश्वर के लोगों की सहायता करें कि वह उसकी सेवा में मजबूत और प्रभावशाली खड़े रह सकें।

नए नियम के कुछ भाग हमारे मन के ऊपर एक गहरी छाप को छोड़ते हैं प्रेरितों के काम 2: 42-47 में हजारों विश्वासी उसने विश्वास में परमेश्वर के सामने इकट्ठे होते हैं उन्हें मंदिर में मिलने की आवश्यकता नहीं थी क्योंकि परमेश्वर उनमें रह रहा था जब वह मिलते थे तब वह परमेश्वर के मंदिर बन जाते जहां पर दो या तीन मसीह के नाम से मिलते परमेश्वर उनके बीच में होता परमेश्वर उनके जीवन में तथा उनके जीवन के द्वारा कार्य किया और सब लोगों के ऊपर बड़ा भय छा गया"और सब लोगों पर भय छा गया, और बहुत से अद्भुत काम और चिन्ह प्रेरितों के द्वारा प्रगट होते थे। ..."(प्रेरितों के काम 2:46)

परमेश्वर का वचन सत्य के रूप में

परमेश्वर के वचन के विषय में बहुत कुछ कहा जा सकता है पर यह जरूरी है कि हमारे जीवन में परमेश्वर के वचन के महत्वपूर्ण स्थान को समझना बाइबल हमारे जीवन के लिए परमेश्वर के वचन का खजाना है हम हमेशा परमेश्वर को विशेष रूप से बात करते ना सुने परंतु हम हमेशा उसके वचन की ओर मुड़ सकते हैं और उसे हम से बात करते हुए सुन सकते हैं पौलुस प्रेरित के हियाब को इन वचनों में देखें :हर एक पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिये लाभदायक है। ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिये तत्पर हो जाए॥(2 तीमोथियो 3:16-17)

रमेश्वर का वचन परमेश्वर द्वारा प्रेरित है जिसका अर्थ वह परमेश्वर की श्वाँस है यह परमेश्वर का वचन है ।

पौलुस चार सामर्थी तरीकों की पहचान करता है जिसके द्वारा परमेश्वर का वचन हमारे जीवन को परिवर्तित करता है। यह सब तरीके उन बातों से फर्क नहीं है जिन्हें हमें परमेश्वर द्वारा उत्पत्ति की पुस्तक में करते हुए देखा: शिक्षा (उस परिज्ञान को आगे बढ़ाना) फटकार (चेतावनी) सुधार (डांट तथा कड़े परिणामों का वक्तव्य) , धार्मिकता में प्रशिक्षण (हमें अच्छा कार्य करने के लिए प्रेरित करता है और अच्छे उदाहरणों तथा उसके वायदे किए हुए आशीषों को स्मरण दिलाते हुए)परमेश्वर के वचन को हमारे जीवन में प्रवेश करने तथा प्रभावित करने के तरीके।

परमेश्वर का वचन केवल हमारे जीवन में प्रवेश करने के लिए नहीं बनाया गया वह इसलिए भी बनाया गया कि हमारे जीवन में से आगे जाए ।

परमेश्वर क्या चाहता है कि हमारे जीवन के साथ हो? इसमें कोई शंका नहीं कि वह चाहता है कि हम उसके वचन की रोशनी के प्रतिउत्तर में अपने जीवन को जी ताकी हमारे वचन तथा हमारे मार्ग उसके निर्देशों अनुसार ढल सके और उसके इस तरह जीने के परिणाम स्वरुप वह हमारे जीवन में आशीषों को लाना चाहता है परमेश्वर चाहता है कि हम उसके वचन को लेकर हर जगह उसकी घोषणा करें: इसलिये तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्रआत्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें सब बातें जो मैं ने

तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ: और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं॥(मति 28:19-2०)

इस दौरान हमें परमेश्वर के वचन को ले जाने का कार्य को करना है जैसे हमें आज्ञा दी गई है कि जगत के छोर तक: और राज्य का यह सुसमाचार सारे जगत में प्रचार किया जाएगा, कि सब जातियों पर गवाही हो, तब अन्त आ जाएगा॥ (मत्ती 24:14) परमेश्वर का वचन अपने पास रखने का कोई राज नहीं है उसे जगत के छोर तक ले जाना है परमेश्वर के असीमित अनुग्रह को जरूरतमंद लोगों के बीच में बांटना है।

उसके छुटकारे की योजना से उसके मिशन का उद्देश्य बहता है परमेश्वर ने कहा उसका पत्र आया हमने विश्वास किया और अब हमें कर्मठता से प्रभु के साथ उसके बहुमूल्य वचन को दूसरों तक पहुंचाने में कार्य करना है ।

हम सारी पृथ्वी पर उसकी वचन को सारे लोगों में घोषित करते हैं हमें यह नहीं समझना है कि केवल यह सुसमाचार प्रचार का कार्य है परंतु एक महान आज्ञा जैसा की मत्ती 28:18- 2० हमें सिखाता है, कि उसमें सुसमाचार कार्य तथा आत्मिक उन्नति है ।

परमेश्वर के लोग केवल उसकी वचन को स्वागत नहीं कर सकते उन्हें परमेश्वर को उसका प्रति उत्तर भी देना है"क्योंकि प्रभु ने हमें यह आज्ञा दी है; कि मैने तुझे अन्याजातियों के लिये ज्योति ठहराया है; ताकि तू पृथ्वी की छोर तक उद्धार का द्वार हो। यह सुनकर अन्यजाति आनन्दित

हुए, और परमेश्वर के वचन की बड़ाई करने लगे: और जितने अनन्त जीवन के लिये ठहराए गए थे, उन्होंने विश्वास किया। (प्रेरितों के काम 13:47-48)

मिशन कलीसिया का अंतिम लक्ष्य नहीं है आराधना है मिशन समाप्त हो जाता है लेकिन आराधना नहीं आराधना परम है मिशन नहीं क्योंकि परमेश्वर परम है मनुष्य नहीं जब यह युग पूरा हो जाएगा तब असंख्य छुड़ाएं हुए लोग परमेश्वर के सिंहासन के सामने अपने मुंह के बल गिरेंगे तब मिशन नहीं रहेगा यह एक अस्थाई आवश्यकता है परंतु आराधना सदैव बनी रहती है इसीलिए आराधना मिशन का इंधन भी है और लक्ष्य भी यह मिशन का लक्ष्य है क्योंकि हमारा मुख्य उद्देश्य राष्ट्रों को परमेश्वर की उस श्वेत महिमा के आनंद में लाना है मिशन का लक्ष्य परमेश्वर की महानता में लोगों का आनंद है "यहोवा राजा हुआ है, पृथ्वी मगन हो*;* और द्वीप जो बहुतेरे हैं, वह भी आनन्द करें*!* " *(*भजन संहिता *97:1)* हे परमेश्वर, देश देश के लोग तेरा धन्यवाद करें*;* देश देश के सब लोग तेरा धन्यवाद करें।। राज्य राज्य के लोग आनन्द करें, और जयजयकार करें, क्योंकि तू देश देश के लोंगों का न्याय धर्म से करेगा, और पृथ्वी के राज्य राज्य के लोगों की अगुवाई करेगा।। *(* भजन संहिता *67: 3-4)*

परंतु आराधना मिशन का इंधन भी है आराधना में परमेश्वर के लिए जुनून सुसमाचार प्रचार के लिए परमेश्वर के प्रस्ताव से पहले हैंहम जिसको संजोते नहीं उसको सरहा भी नहीं सकते मिशनरी कभी भी यह पुकार कर नहीं कह सकते कि " मेरा ध्यान करना, उसको प्रिय लगे, क्योंकि मैं तो यहोवा के कारण आनन्दित रहूंगा।...मैं तेरे

कारण आनन्दित और प्रफुल्लित होऊंगा, हे परमप्रधान, मैं तेरे नाम का भजन गाऊंगा।। *(भजन संहिता 104: 34,9:2)* मिशन आराधना से शुरू होता है और आराधना में खत्म होता है

-जॉन पाइपर ; राष्ट्र आनंदित हो

निष्कर्ष

परमेश्वर का वचन पूरे चक्र में आता है परमेश्वर ने अधिकार में बोला परंतु उस दुष्ट की चालबाजी के द्वारा परमेश्वर की समानता में बनाए हुए लोगो ने परमेश्वर को छोड़ दिया तथा उस दूसरे के अधिकार में अपने आप को समर्पित कर दिया जोकि शैतान हैं और उन्होंने उस दुष्ट की समानता को अपने ऊपर ले लिया परमेश्वर ने बार-बार पुराने नियम में अपने लोगों के साथ बातचीत की यह दिखाते हुए की मनुष्य की परमेश्वर की स्वरूपता को पुनर्स्थापना के लिए एक गहरे कार्य की आवश्यकता पड़ेगी परमेश्वर ने यीशु ख्रीस्त के द्वारा दुबारा बोला और उसके लिए मार्ग को उपलब्ध कराया ताकि हम में वह कार्य कर सकें (यूहन्ना 1:13)ताकि हम अब्राहम के समान विश्वास करें और प्रभु यीशु ख्रीस्त द्वारा बोले गए वचनो से प्रभावित किए जाएं और उसके शास्त्रों द्वारा परमेश्वर के वचन को सुनना सुनने के द्वारा हम मसीह की समानता में ढलते जाते हैं (कुलूसियो 1:28-29) और परिणाम स्वरूप अपने पड़ोसियों तक और इस पूरे संसार तक हम परमेश्वर के वचन को ले जाते हैं परमेश्वर के लोग पुनर्स्थापित होते हैं और पुनः परमेश्वर के साथ इस संसार पर राज्य करने में पूर्ण रुप से क्रियाशील होते हैं तथा परमेश्वर का राज्य सरसों के बीज के समान बढ़ता जाता है ।

1. परमेश्वर का आमना-सामना करने का तरीका सलाहकारों तथा माता-पिता के लिए अनुसरण करने के लिए एक अद्भुत उदाहरण है !
2. बिना शंका के यह येशु के द्वारा 4००० तथा 4००० लोगो के खिलाये जाने के चमत्कार तथा चंगाई की नीव को रखता है ।
3. जे एडम्स इसे नोथेटिक सलहा बुलाते हैं ।
4. यह नेवता है या आज्ञा है ? निश्चित रूप से दोनों यह आज्ञा परिस्तिथि की महत्वता को बताता है दूसरी और परमेश्वर अभी चलने वाले सम्बन्ध का आरम्भ करता है परमेश्वर की सीधी पुकार विश्वास की रचना तथा प्रतिउत्तर का माध्यम बन जाता है, परमेश्वर के वचन के पीछे चलना हमेशा उत्तम है ।
5. हम यह सुझाव नहीं दे रहे है बाइबिल की पृष्ट्भूमि को न जांचे वह जाँच में खरा उत्तरता है इस विषय में और अधिक http;// foundationsforfreedom .net/topics/bible/ bible_origin.html में मिल सकता है ।

#4 छुटकारे का कार्यक्षेत्र

छुटकारे का फैलाव यह बताता है कि परमेश्वर शुरुआत से यह इच्छा रखता था कि असंख्य लोग उसके साथ संगति करें तथा उसके साथ सहयोग करें यह इच्छा परमेश्वर के बड़े परिवार के रूप में बलवंत पर जिसमें विभिन्न संस्कृतियों के लोग जो पूरी पृथ्वी पर फैले हैं इसमें शामिल है यह बड़ा परिवार परमेश्वर की कलीसिया है

परमेश्वर के परिवार की योजना का विस्तार

परमेश्वर अपने परिवार से प्रेम रखता है हालांकि आदम की असफलता से ऐसा लगा कि इस परिवार की सम्भावना खत्म हो गई है परमेश्वर का अद्भुत और सहनशीलता भरा कार्य जो उसने मानव जाति के साथ पूरे इतिहास में किया उसने उस परिवार की आशा को बयां कर दिया तथा एक बड़ी भीड़ को उसके राज्य के परिवार में लेकर आया जिनके साथ वह बड़ी उदारता से उसकी मूल्यवान आशीषों को बांटता है ।

छुटकारे कि योजना हमारी कल्पना से कहीं बढ़कर है इसकी शुरुआत समय से पहले हुई (छठा अध्याय देखें)और बिना रुके आगे बढ़ती गई जब मैं छोटा था (इतना छोटा भी नहीं) मुझे याद है की नदी और तालाब में जितना बड़ा संभव पत्थर हो उसे फेंकनाऔर उस पत्थर के फेंके जाने से जो लहरें उठती थी उससे मैं बड़ा मंत्रमुग्ध होता था परमेश्वर के छुटकारे की योजना इसी लहरों के प्रभाव के समान है

इसकी शुरुआत छोटी होती है पर समय दर समय यह बढ़ती और फैलती जाती है।

कई बार यह शब्द बढ़ोतरी मसीही जीवन का विवरण देने के लिए उपयोग

किया जाता है क्योंकि यह हमें तारों मैं समझने की में सहायता करता है और यह दूसरे जीवित प्राणियों में भी पाई जाती है एक बीज छोटे रूप में शुरुवात करता है परंतु यह बढ़ता है और अपने डीएनए कोड के अनुसार बढ़ता है । सुसमाचार के

साथ भी ऐसा ही है यह हम तक पहुंचता है हमें परिवर्तित करता है तथा अंततः हमारे द्वारा दूसरों के जीवन तक पहुंचता है ।

मुझे एक बार एक रिपोर्ट एक अगुवे से जो भारत में बंगालियों के बीच में कार्य कर रहा था , आयी और उसकी रिपोर्ट में उसने इस प्रकार से लिखा था मेरे कई पड़ोसी जो हमें कभी बाहरी जाति का मानते थे उन्होंने हमारे आमंत्रण को स्वीकार किया और क्रिसमस पर हमारे साथ भोजन किया उस क्रिसमस के भोज के लिए 600 से अधिक लोग शामिल हुए उसी प्रकार सुसमाचार दुनिया के सब दरारों में बोया जाता है तथा जड़ पकड़ता जाता है ।

यह सत्र हमें बताता है कि कैसे इस कुंड में उठी लहरों के समान परमेश्वर की योजना की एक छोटी शुरुवात हुई परंतु वह पूरे विश्व में फैल गई तथा नाना प्रकार के प्रकार के सुसमाचार तथा मिशन कार्य के जोर से काफी प्रेम के व्यवहारिक कदम परमेश्वर के प्रयोजन से सीधे जुड़े हुए हैं कलीसिया यदि इस बढ़ोतरी के नक्शे को ठुकराती है तो वह मृत है ।

जिन पर परमेश्वर ने प्रगट करना चाहा, कि उन्हें ज्ञात हो कि अन्यजातियों में उस भेद की महिमा का मूल्य क्या है और वह यह है, कि मसीह जो महिमा की आशा है तुम में रहता है। *(कुलूसियो १:27)*

फलवन्त हो और बढ़ते जाओ

परमेश्वर ने शुरूआत से ही अपने महंगे योजना को बताया है यह शब्द फलवन्त का पुराने नियम में बार-बार दोहराया जाना इस बात को बताता है कि परमेश्वर ने अपने छुटकारे की योजना को के पूरे संसार में भरने को निश्चित किया है

अदन की वाटिका

परमेश्वर ने मनुष्य को आज्ञा दी बलवंत हो और बढ़ते जाओ यह एक से

> अधिक बार कहा :फिर परमेश्वर ने कहा, हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं; और वे समुद्र की मछलियों, और आकाश के पक्षियों, और घरेलू पशुओं, और सारी पृथ्वी पर, और सब रेंगने वाले जन्तुओं पर जो पृथ्वी पर रेंगते हैं, अधिकार रखें। तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया, नर और नारी करके उसने मनुष्यों की सृष्टि की। और परमेश्वर ने उन को आशीष दी: और उन से कहा, फूलो-फलो, और पृथ्वी में भर जाओ, और उसको अपने वश में कर लो; और समुद्र की मछलियों, तथा आकाश के पक्षियों, और पृथ्वी पर रेंगने वाले सब जन्तुओ पर अधिकार रखो। (उत्पत्ति १:२६-२८)

परमेश्वर ने अपनी योजना को महान होने के लिए रचा आदमी और स्त्री को शादी के द्वारा तथा बच्चों को उत्पन्न करने के द्वारा अनेक प्रकार के

मानव कुल होने के लिए रचा। वह परमेश्वर के अद्भुत प्रेम तथा जहां भी जाएं उसकी स्तुति लाने के लिए रूपांकित किए गए पूरी पृथ्वी को अदन की वाटिका बनना था।

परमेश्वर नहीं चाहता था कि हम पूरे चित्र को खोए वह इन शब्दों को डालता है कि "पृथ्वी पर भर जाओ" जो उसके उद्देश्य को बताता है वह पृथ्वी पर अत्यधिक लोगो की चाह रखता है परमेश्वर की योजना वास्तविक रूप से महान थी पृथ्वी पर पर जाने का आदेश तथा परमेश्वर के छुटकारे की योजना को एक समान नहीं देखना है यद्यपि वे दोनों एक समान दृष्टिकोण तथा आशा की बात करते हैं।

अदन की वाटिका के समय के हर एक चीज जैसे परमेश्वर ने योजना बनाई थी वैसी थी वहां पर कोई छुटकारे की आवश्यकता नहीं थी हालांकि जब एक बार मनुष्य जाति का विद्रोह हुआ परमेश्वर की छुटकारे की योजना सामने आने लगी छुटकारे की योजना वाटिका के समय से कहीं आगे जाती है और उस पतित मानव जाति को जो पूरे विश्व में फैली है अपनाती है और यह नूह के द्वारा प्रदर्शित किया जाता है।

नूह

हम में से से कई लोगों को सिद्ध लोगों के बढ़ती हुई आबादी को उत्साहित करने में कोई समस्या नहीं होगी कोई युद्ध नहीं कोई बीमारी नहीं कोई दर्द नहीं कोई स्वकेन्द्रितता नहीं इत्यादि ! उत्पत्ति है हमें बताती है अच्छे लोगों के बढ़ने को बताती है कि जब मनुष्य इस पृथ्वी पर बढ़ने लगा हालांकि परमेश्वर की इच्छा से यह योजना मेल नहीं रखती।

मनुष्य के पतित स्थिति के कारण उसके पाप का स्वभाव तीव्र गति से बड़ा तथा दुष्टता की अभिलाषा आम हो गई यह उत्पत्ति 6, का प्रस्तावना है जो कि इस बात को प्रकट करता है कि क्यों परमेश्वर जल प्रलय को लेकर आया :और यहोवा पृथ्वी पर मनुष्य को बनाने से पछताया, और वह मन में अति खेदित हुआ।(उत्पत्ति 6:7) इस निरक्षण के साथ हम इस जल प्रलय को समझ सकते हैं मैंने कभी कागज के टुकड़ों को लेकर अपने विचारों से भरा है परंतु उनको निरीक्षण करने के पश्चात उनको मोड़ कर फेंक दिया इस निष्कर्ष के बाद कि यह अब मेरे उद्देश्यों में सहायक नहीं इसी समान हम मनुष्यों के ऊपर आए उस जल प्रलय के समय के न्याय को समझ सकते हैं संसार परमेश्वर का वह मुड़ा हुआ कागज है परंतु परमेश्वर ने बड़े ध्यानपूर्वक यह निर्णय लिया कि उस पुरे टुकड़े को फेंक दें।

> फिर परमेश्वर ने नूह और उसके पुत्रों को आशीष दी और उन से कहा कि फूलो-फलो, और बढ़ो, और पृथ्वी में भर जाओ। .....जो कोई मनुष्य का लोहू बहाएगा उसका लोहू मनुष्य ही से बहाया जाएगा क्योंकि परमेश्वर ने मनुष्य को अपने ही स्वरूप के अनुसार बनाया है। और तुम तो फूलो-फलो, और बढ़ो, और पृथ्वी में बहुत बच्चे जन्मा के उस में भर जाओ॥ (उत्पत्ति 9:1 , 6-7)

ना केवल परमेश्वर ने नूह को बिल्कुल वैसी ही आज्ञा दी जैसे उसने आदम को दी थी की फलवन्त हो बढ़ते जाओ और पूरी पृथ्वी पर फैल जाओ परंतु उसने स्पष्ट किया मनुष्य के उस पवित्र स्वभाव के विषय में तथा मनुष्य को कहा कि दूसरे मनुष्य की हत्या न करना क्योंकि वह भी

परमेश्वर के स्वरूप में बनाए गए हैं यह 2 आगियाएँ कि तुम जीवन को लेकर आओ तथा दूसरे मनुष्य को के जीवन को लेने में कोई भागीदारी ना हो वह शब्द बन गए जिससे परमेश्वर के लोगों की उस जल प्रलय मैं बचे नई पीढ़ी को डाला।

प्रश्न यह है की क्यों प्रभु नूह को यह आज्ञा देगा जो अपने पूर्वजों आदम और हवा के समान आपके स्वभाव का है कि पृथ्वी पर भर जाए खासतौर से दुष्टता को बड़ी तेजी से बढ़ने को ध्यान में रखते हुए परमेश्वर ने मनुष्य के प्रथम नक्शे को कमजोर नहीं कर दिया परंतु उसने चुना कि उसके साथ कार्य करें इस बात को निश्चय जानने के लिए परमेश्वर ने नूह को एक धर्मी व्यक्ति पाया एक ऐसा व्यक्ति जो परमेश्वर का खोजी था परंतु तब भी एक महत्वपूर्ण प्रश्न मन में आता है:

"कि क्या परमेश्वर मनुष्य की दुष्टता के प्रति प्रवृत्ति के विषय में अज्ञान है?"

"क्यों दोषपूर्ण लोगों से पृथ्वी को भरे जाने की शुरुआत की जाए ?"

परमेश्वर बिल्कुल नई शुरुआत कर सकता था परंतु उसने ऐसा नहीं किया परमेश्वर किसी भी चीज से बाधित नहीं था परंतु जिसकी उसने इच्छा करें नूह को दी गई आज्ञा इस बात का पहला चिंन्ह है कि परमेश्वर के मन में एक बड़ी योजना है एक छुटकारे की योजना छूट कार्य की योजना का अर्थ है कि जो उपलब्ध है वहां उसके साथ कार्य कर सकता है और कुछ भी कर चीजों को सही कर सकता है हालांकि उत्पत्ति में इस समय यह विवरण छुपा हुआ है ।

मनुष्य जाति को पूर्ण रुप से समाप्त करने के बजाय हम इस बात से अचंभित होते हैं कि परमेश्वर नूह को आज्ञा देता है कि वह उस जहाज में पापी लोगों को भरे उन्हें आज्ञा दी गई कि वह बच्चा जनने के द्वारा इस पृथ्वी पर फैल जाएं फलवन्त हो तथा बढ़ती जाए उनके बच्चों के बच्चे उन्हें यह आज्ञा दी गई कि वह पृथ्वी पर भर जाए परंतु जल प्रलय के तुरंत पश्चात मनुष्य फैल नहीं रहा था परंतु एक झुंड में रहकर बड़े शहरों का निर्माण कर रहा था

बाबुल की मीनार

हम मनुष्य जाति की बढ़ोतरी से धोखा ना खाए मनुष्य उस विश्वव्यापी जल प्रलय के तुरंत पश्चात दुष्टता की ओर मुड़ गया उत्पत्ति 6-1० वह भाग है जो नूह   और जल प्रलय का विवरण देता है उत्पत्ति 11(में विवरण के तुरंत पश्चात कई साल बीत गए इसमें कोई शंका नहीं) घटनाएं जैसे परमेश्वर चाहता था वैसे नहीं घटी इस पृथ्वी पर धर्मी स्त्री और पुरुष के फैलने की बजाए मनुष्य मूर्ति पूजा तथा लालच में पड़ गया यह उस पाप पर आधारित समाजों की स्थापना का पूर्व उदाहरण है

मनुष्य जाति को पुनह नाश करने के बजाय उनकी बड़ी दुष्टता के बाद भी परमेश्वर मनुष्य जाति के संरचना में एक मोड़ को लेकर आता है परमेश्वर एक ऐसी घटना को लेकर आता है जिसे हम बहुत अच्छी रीती से जानते हैं विदेशी भाषाएं परमेश्वर ने कहा:इसलिये आओ, हम उतर के उनकी भाषा में बड़ी गड़बड़ी डालें, कि वे एक दूसरे की बोली को न समझ सकें। (उत्पत्ति 11 :7)

विदेशी भाषाओं की रचना ने मनुष्य को मनुष्य से विभाजित कर दिया तथा एक सामाजिक सुनामी को लेकर आया चतुराई से लाए गए इस पारस्परिक समझ से बाहर भाषाओं में परमेश्वर को समर्पित किया ताकि उसे समय मिल सके अपने छुटकारे की योजना को क्रियाशील करने के लिए:

- मनुष्य शीघ्रता से रिश्ता के हसीन कार्यों के लिए एकत्रित नहीं हो सकता (उत्पत्ति 11:6) ।
- परमेश्वर का क्रोध इतनी जल्दी भड़क नहीं सकता जिसके द्वारा उसके कार्य के लिए समय होता उत्पत्ति 11:5।
- मनुष्य पूरी पृथ्वी पर फैल सकता है फैल उत्पत्ति उत्पत्ति 11:8।
- मनुष्य एक दूसरे से अलग हो जाएगा ताकि उसकी संस्कृति और भाषाओं के द्वारा दूसरों के द्वारा लाए गए उत्पीड़न से बचा रहेगा।

बाबुल की मीनार की गड़बड़ी के द्वारा परमेश्वर ने समय तथा परिस्थिति को ऐसा रचा जिसकी उसे अपने छुटकारे की योजना को लागू करने के लिए आवश्यक था इस तरीके से जो उसे चाहिए था वह उसके पास आया हालांकि इनसे दूसरी समस्या उत्पन्न होती हर एक भाषा परमेश्वर के वचन को सुनने के लिए एक बाधा के रूप में कार्य करती परंतु समय की प्राप्ति बड़ी प्राथमिकता दी परमेश्वर के पास हमेशा तरीके थे कि उन रुकावटों को लांघ सके जो की अनगिनत भाषाओं के द्वारा उत्पन्न हुई जिसे उसने प्रेरित पौलुस की बुलाहट के द्वारा दर्शाया सबसे महत्वपूर्ण बात यह कि दुष्टता को तीव्रता से बढ़ने के लिए रोका गया और यह समय था कि वह अपने कार्य की योजना को लागू कर सकें

अब्राहम ने सुना!

अगले बार बाइबल में यह शब्द फलवन्त होना अब्राहम के साथ इस्तेमाल किया गया परमेश्वर के द्वारा अबराम को ऊर से बुलाए जाने के कई समय बाद हजीरा के साथ उसके उलझे हुए संबंध तथा इस्माइल की पैदाइश के बाद परमेश्वर ने अबराम से जो 99 वर्ष का था ।

> देख, मेरी वाचा तेरे साथ बन्धी रहेगी, इसलिये तू जातियों के समूह का मूलपिता हो जाएगा। सो अब से तेरा नाम अब्राम न रहेगा परन्तु तेरा नाम इब्राहीम होगा क्योंकि मैं ने तुझे जातियों के समूह का मूलपिता ठहरा दिया है। और मैं तुझे अत्यन्त ही फुलाऊं फलाऊंगा, और तुझ को जाति जाति का मूल बना दूंगा, और तेरे वंश में राजा उत्पन्न होंगे। और मैं तेरे साथ, और तेरे पश्चात पीढ़ी पीढ़ी तक तेरे वंश के साथ भी इस आशय की युग युग की वाचा बान्धता हूं, कि मैं तेरा और तेरे पश्चात तेरे वंश का भी परमेश्वर रहूंगा। (उत्पत्ति 17:4-7)

परमेश्वर ने नूह के साथ वाचा बांधी परंतु उसने अबराम के साथ भी एकवाचा बांधी हम पुनः देखते हैं कि परमेश्वर पापी मनुष्य के साथ वाचा बांधने में असीम अनुग्रहकारी रहा और इस समय से आगे परमेश्वर की रणनीतिक जी छुटकारे की योजना और अधिक स्पस्ट हो गयी नूह को छुड़ाने के साथ यह साबित हो गया कि परमेश्वर मनुष्य जाति के साथ कार्य को निरंतर रखने का इच्छुक है परंतु उस वाचा के साथ जो उसने अबराम के साथ बाँधी परमेश्वर एक परिवार एक मनुष्य जिसने विश्वास के द्वारा प्रभु की आज्ञा मानी कार्य करने के लिए अपने केंद्र को और ठीक किया हम यहां देख सकते हैं कि पहले के समान जोर

इस बात पर है कि फलवन्त तथा पृथ्वी पर पर फैल जाए उसने अब्राहम को यह आज्ञा नहीं दी कि वह फलवन्त हो परंतु वह उससे कहता है कि मैं तुझे अत्याधिक फलवन्त करूंगा उत्पत्ति 17:6 आज्ञा मानने का चुनाव धीरे से हटा लिया गया परंतु परमेश्वर पर्दे के पीछे कार्यकर्ता रहेगा ।

इस बात को अनिश्चित करने के लिए कि ऐसा हो अबराम का नया नाम अब्राहम रखा गया जिसका शाब्दिक अर्थ राष्ट्रों का पिता है इस बात को प्रकट करता है यह परमेश्वर की एक महान योजना और फायदे हैं तू कई जातियों का पिता होगा (उत्पत्ति 17:5) मैं तुझसे कई राष्ट्रों को उत्पन्न करूंगा इन शब्दों ने उसको स्मरण दिलाया और हमें निर्देश देता है कि परमेश्वर आज भी उन मनुष्य जाति के साथ कार्य कर रहा है जो की अपेक्षा के विपरीत है

अब्राहम के वंशजों के साथ सम्मिलित होने का वायदा परस्पर महत्वपूर्ण है परमेश्वर ने इस सहमति की शुरुवात खतने की आवश्यकता देखी जो कि अब्राहम के परिवार के पुरुषों के लिए यह पीड़ादायक सैलरी चिकित्सा तब हुई जब लड़के 8 दिन के थे उत्पत्ति 17: 12- 14 यह नया वर्क करने वाला चिन्ह दूसरों से अब्राहम के परिवार को अलग करेगा । परमेश्वर पुनः अपने लोगों को अलग करता है ना केवल भाषा के द्वारा परंतु सांस्कृतिक कार्यों के द्वारा भी ।उदाहरण के तौर पर याकूब के पुत्र उत्पत्ति 34 में इस बात पर जोर डालते हैं कि दिनाह को उन लोगों को नहीं दिया जा सकता जब तक वह उनके समान खतना ना कराएं ।

अब्राहम के पास एक बड़ा संघर्ष था परमेश्वर के फायदे को लेकर कि वह उसको पल बंद करेगा जब उससे 2 वर्ष की उम्र में पुत्र का वायदा किया गया तो वह अपने हृदय में फंसा वह शायद इस्माइल तेरे सामने जीवन जिएगा उत्पत्ति 17:18 शादी के इन

लंबी सालों में अब्राहम के पास सहारा के द्वारा कोई पुत्र या पुत्री नहीं था यह केवल एक लंबे संघर्ष के पश्चात् एक पुत्र को प्राप्त करेगा जहां इसहाक हालांकि परमेश्वर इस बात पर लज्जित नहीं हुआ यह वायदा करने के लिए कि वह उसको बहुत आए से बढ़ाएगा उत्पत्ति 17:20 उत्पत्ति 15 में प्रभु ने उससे कहा उत्पत्ति 17: 5 इस बात के बावजूद कितना इस बात का कोई प्रतिच्छाया नहीं थी परमेश्वर अब्राहम की आशा को निश्चित कर रहा था और बना रहा था।

इस जहां के पास भी केवल दो पुत्र थे एहसास एहसास तथा याकूब विशिष्ट रूप से खास तरीकों से याकूब के पास 12 पुत्र है और यह इसराइल के याकूब के जिसका नाम इसराइल भी था 12 गोत्र होंगे उत्पत्ति 46:8-27 ध्यानपूर्वक याकूब तथा उसके पौधों के विषय में विवरण देता है कनान देश से 70 लोग यूसुफ से मिस्त्र में मिलने आए परमेश्वर पुणे पुनः जल्दबाजी में नहीं है अपनी योजना को पूरा करने के लिए परमेश्वर के लोग 430 वर्ष तक मिस्त्र में रहेंगे निर्गमन 12: 40- 41 उस भूमि पर नहीं जिसका वायदा परमेश्वर ने उसे का किया परंतु हम मिJ में क्या पाते हैं एक सिद्ध जगह कि इसराइल के परिवार को वहां रख सके जहां सब उपलब्ध हो और वह अलग है मिश्री जिस बात से

घृणा करते थे वह उस व्यवसाय को जो की भीड़ चलाना था करते थे इसी स्थान पर हम पुनः इस शब्द बढ़ोतरी को देखते"(निर्गमन 1:7)

परमेश्वर असंख्य लोगों से प्रेम करता है असंख्य परंतु खासतौर से उन से प्रेम करता है जो उसकी सुनने से प्रीति रखते हैं दुष्ट उसकी योजनाओं का विरोध करता है एक नई बड़ी समस्या आ गई जब गर्भनिरोधक उपकरण लाए गए स्त्री और पुरुष निंबड़ी परिवारों के दर्शन को छोड़ दिया तथा नियंत्रित किए जा सकने वाले छोटे परिवारों की ओर मुड़ गए जहां केवल एक या दो संतान होती हैइस कारण से परिवारों पर एक युद्ध है राष्ट्र उस बदलाव के तरसे स्तर से सिकुड़ते जा रहे हैं सिक्योर ना केवल बुजुर्गों के बिलो को चुकता करने के लिए अपर्याप्त युवा हैं परंतु पूरा राष्ट्र खत्म होते जा रहा है यह अनुमान है कि यूरो 2050 तक अपने सांस्कृतिक राष्ट्र को खोदेगा क्योंकि बड़ी साधारण सी बात है कि वह अपने लोगों को बदल नहीं रहे हैं।

परमेश्वर के छुटकारे की योजना परमेश्वर के सृष्टि की योजना के साथ-साथ चलती है वह इच्छा रखता है कि कई राष्ट्रों के विश्वासियों को अपने परिवार में सम्मिलित करें सम्मलित करें छुटकारे की कार्य का यह दृष्टिकोण कैसे कार्य करता है वह अगले मुख्य ठंड में बताया जाएगा खंड

छुटकारे के योजना को पुराने नियम की नजर से देखना

एक बीच जो छोटा है और सुरक्षित है उसकी संरचना इसलिए की गई कि वह बड़े और फल लेकर आए उसकी संरचना पत्तियों भोजन फूल तथा फल लाने के लिए हुई है यह शब्द बीच-बीच धार्मिक ज्ञान का एक महत्वपूर्ण विचार बन जाता है जो परमेश्वर के छुटकारे का भी पूर्ण रीति

से विकसित होता है समय के दौरान वह उसकी महिमा में महिमा मैं तथा कुशलता से बनाए गए योजना को प्रकट करता है।

मसीही में वायदा किया हुआ बीज उत्पत्ति 22:17- 18 ग़लतियों 3: 13- 18

यह शब्द बीच उत्पति 3 में दोबारा हमारे सामने आता है जब उस लड़ाई का पहला अंदेशा होता है सब को साबित करने के समय परमेश्वर कहता है उत्पत्ति 3:15 कई अर्थ कार इस बात पर सहमत होते हैं सुसमाचार के उस वायदे के विषय में है “जहां पर मसीह की एड़ी पर काटा जाएगा तथा उस दुष्ट का सर कुचला जाएगा।“

यह सब सुसमाचार का पहला विवरण है इसी कारण वर्ष कई बार इसे मूल सुसमाचार कहा जाता है परमेश्वर उत्सव की सर को काटने से इंकार करता है जब मनुष्य को अनुमति देता है कि वह परमेश्वर की आज्ञा ना मानने के लिए परीक्षा में पड़े परमेश्वर की महान योजना का एक और संकेत जो उस सर के उस भविष्य की ओर संकेत करता है श्री का यह भी न्याय को लेकर आएगा परंतु परमेश्वर के छुटकारे की योजना के पूर्ण होने के पश्चात इस पद्यांश की पूरी समझ को प्राप्त करने के लिए हमें कुछ हजार वर्ष आगे जाना पड़ेगा उत्पत्ति 22 में जहां पर यह शब्द बीज अब्राहम के विषय में पुनः इस्तेमाल किया जाता है।

उत्पत्ति 22 तथा बीज

उत्पत्ति 22 में यहोवा ने अब्राहम से कहा उसके पुत्र की भेंट चढ़ाने के पश्चात इराक इजहाd उत्पत्ति 22:18

अब्राहम की सारी आशा उसके पुत्र इजहाd पर थी परंतु जब प्रभु ने अब्राहम से कहा कि वह उस को भेंट चढ़ाएं तब उसने आज्ञा मानी एक विषय जिसे आगे 10 अध्याय में भी बताया गया है परमेश्वर अब्राहम को किए हुए आशीषों के वायदे को बढ़ाता है उसकी परमेश्वर के प्रति आज्ञा मानने की इच्छा के कारण तथा अपने ही एकमात्र बीज को वेट में दे प्रभु कहता है उत्पत्ति 22:17 इस प्रकार के वायदे पहले भी किए गए और हम इस बात से अचंभित नहीं की प्रभु उन्हें बार-बार दोहराता है परंतु इससे यह प्रतीत होता है कि प्रभु कुछ गहरा कार्य में लेकर आ रहा है।

इससे क्या फर्क पड़ता है यह परमेश्वर ने इन वायदों को किया प्रभु कहता है कि वह इन वायदों को पूरा करेगा तथा यह मनुष्य पर निर्भर नहीं है परमेश्वर पर्दे के पीछे कार्य करेगा अपने छुटकारे की योजना को पूर्ण करने के लिए यह वायदे प्रभु के छुटकारे की योजना के गुणों को प्रकट करते हैं:

- पहला इसका बड़ा फैलाव है यह सारे देशों में प्रभाव को डालेगा और यह लिखा भी गया है।
- दूसरा परमेश्वर अपनी योजना को लागू करेगा इसका अर्थ यह नहीं कि इसमें मनुष्य शामिल नहीं परंतु इसका अर्थ है कि परमेश्वर इस्पात का निश्चय करता है कि यह पूरा हो ।
- तीसरा यह योजना अब्राहम के बीच पर निर्भर करती है यह योजना के परिणाम स्वरुप राष्ट्रों में आशीष से आएंगी क्योंकि अबराम ने परमेश्वर की आवाज को के प्रति आज्ञाकारी रहा जिसे आदम और हव्वा ने नकार दिया था ।

इस समय में हमें और स्पष्टीकरण देने की आवश्यकता पड़ेगी।

अब्राहम का शारीरिक तथा आत्मिक बीच

हमने पहले देखा था कि कैसे प्रभु इस बात को जोर देकर कहता है कि आशीष है इस्माइल के वंश से नहीं आएंगी परंतु इस जहां से उत्पत्ति 17: 18 -19 यह शब्द बीच साधारण रुप से बच्चे की ओर संकेत करता है जो सारे और अब्राहम से उत्पन्न होगा बीच का यह संदेश के दो अर्थ हैं: (1) इस्त्रायल एक देश के रूप में शारीरिक तथा (2) इस्त्रायल परमेश्वर के लोगों के रूप में हाथ में यह दो शब्द भी कुछ लोगों के लिए एक समान जैसे होते हैं परंतु आशा करता हूं कि उसका अंतर हम नीचे लिखी हुए भाग में देख सकते हैं।

शारीरिक va’k% इस्त्रायल एक राष्ट्र के रूप में

इन आशीषों का प्रत्यक्ष समझ इसहाक याकूब राय तथा अन्य की एक बड़ी वंशावली में मिलता है यह इसराइल राष्ट्र है जिसे राष्ट्रों की ज्योति के रूप में ठहराया गया वह परमेश्वर के जन थे और इसी कारण से इन दोनों समूह में एक समानता है।

यदि लोगों को उनकी सृष्टिकर्ता परमेश्वर को जानना है उन्हें यहूदी बनना पड़ता तथा खतना करवाना पड़ता तथा मूसा के द्वारा दिए गए नियम का पालन करना पड़ता परमेश्वर की यह मनोरथ नहीं थी कि साहिल राष्ट्र परमेश्वर के वचन और उनकी आशीषों को अपने ही तक रखे हालांकि भविष्य वक्ता इस बात का हमें स्वर्ण दिलाते हैं यह “राष्ट्र तेरी ज्योति esa आएंगे ,तथा राजा तेरे उठने की ओर यशायाह 60:3 जूना एक सामाजिक फटकार का विषय बना क्योंकि जिस प्रकार से उसने परमेश्वर के अनुग्रह को दूसरे लोगों तक पहुंचाने के विषय में विरोध दिखाया।

इजरायल के पास परमेश्वर की महिमा कि वह गलत थी जब दाऊद और सुलेमान एक धर्मी राजा के रूप में चाहिए इसने अपर्याप्त रुप से जो परमेश्वर की मंशा थी उसका को दर्शाया (2 राजा 23:13) इन महान लोगों ने पाप किया और अपने पति के स्वभाव को दिखायावचन बार-बार किस विषय में संकेत देता है कि हमें ना भूलने वाले चित्र को प्रदान कर सके जिसमें परमेश्वर इसराइल की अविश्वासियों योग्यता में भी विश्वास की योग्यता दिखाता है । इस्त्रायल को उस न्याय से होकर गुजरना पड़ा परमेश्वर के कारण से नहीं परंतु उन्होंने उस त्वचा को तोड़ा था बादशाह को तोड़ा था स्टोरी और बेबी लोनी ने उत्तरी और दक्षिणी राज्यों पर कब्जा कर लिया था जब इसराइली होने बाद में मस्ती का इनकार किया एक और न्याय 70 ईशा पश्चात रोमियो के द्वारा पुल पर आया जिसे जो शपथ ध्यानपूर्वक अभिलेख करता है जो अपने समय का एक मान्यता प्राप्त इतिहासकार था।

एक व्यक्ति ऐसा सोच सकता है कि वह जल प्रलय के समान परमेश्वर को फिर से सब कुछ शुरू करना पड़ेगा इस बार प्रभु छुपे रूप से एक दूसरी योजना को पूरी कर रहा था उस महान पूर्णता की ओर धीरे-धीरे कार्य करते हुए उस मनुष्य मसीहा में जो यीशु मसीह यीशु मसीह है।

आत्मिक वंश : इजरायल परमेश्वर के लोगों के रूप में

इन सारे प्रगटीकरण होती ऐसा लगता है कि छुटकारे की आशा उस भाषा से जो परमेश्वर ने इस्त्राइल के साथ एक देश के रूप में बांधी थी आएगी उनके पास मंदिर था या जत्थे याजक विधि अन्यथा मूसा द्वारा

दी गई व्यवस्था अपर्याप्त (दूसरा अध्याय देखें) इजराइल एक राष्ट्र के रूप में इन नियमों का पालन नहीं कर पाया और असफलता में परमेश्वर अपनी योजना को प्रकट करता है कि वह योजना कैसे बढ़ेगी और कल्पना से भी परे कई ज्यादा अद्भुत होगी इजराइल के ऊपर एक देश के रूप में निर्भर करने के बजाए छुटकारे के वायदे इस वायदे की वजह यीशु मसीह पर निर्भर थे किस भाग में देखें दो तीन बार यह सब बीच उपयोग किया जाता है। (उत्पत्ति 22:16-18)

अब तक हम यह सोचते रहे हैं अब्राहम के अनगिनत शारीरिक वंशजों के विषय में फॉलो इस बात को भूलो पहुंच इस बात को ग़लतियों 6:15-16 में समायोजित करता है स्वस्थ रुप से पौलुस कलीसिया को परमेश्वर का इजराइल बुला रहा है ।

ग़लतियों 3:16 तथा बीच

हमें इस बात पर ध्यान देना है जिस तरह से परमेश्वर ने अब्राहम के साथ कार्य किया और उसे कई दशकों तक उस पुत्र के लिए इंतजार कराया और जय कि परमेश्वर अपेक्षा से अलग कार्य करता है समय के एक महान ज्ञानी के समान परमेश्वर ध्यानपूर्वक इस पूरे महान योजना को अभिनय करता है ikWy इन बातों को ग़लतियों में समझाता है ।

पोलिस ध्यानपूर्वक छुटकारे की योजना को मसीह के साथ संबंध अनुरोध करता है अनुरोध अनुरोध करता है ग़लतियों 3: 16 से जो उत्पत्ति 22 में मिलता है जैसे कई लोग इजरायल राष्ट्र के विषय में सोचते हैं कि वह परमेश्वर का आधार है बचाने के लिए अपने आप को नहीं बचा सका तो दूसरों को क्या बचाएगा प्रेरित पुराने नियम के वायदों को लेकर हमारे लिए विस्तृत रुप से बताते हैं।

अब यह वायदे अबराम से किए गए थे और उसके बीज से और वह यह नहीं कहता कि बीजों से जो कईयों के विषय में दर्शाता है परंतु एक के विषय में और तुम्हारे बीच को जो कि मसीही मसीही है मसीह है परमेश्वर क्या फायदा परमेश्वर का वायदा बीजों के द्वारा नहीं परंतु बीच के द्वारा पूरा होना था हालांकि इसराइल का राष्ट है अपने खोए हुए को और दूसरों को बचाने की समस्या को अपनाता नहीं है योना की आत्मा के समान परमेश्वर इसको स्पष्ट करता है कि उसकी छुटकारे की योजना की आशा एक व्यक्ति में थी इसके बजाय कि पूरे राष्ट्र में समय की आवश्यकता थी कि यह सब बातें पूरी हो।

वास्तव में क्या हमने कभी सोचा है कि क्यों परमेश्वर इस पापी जाति को सहता है यह इसलिए कि उसके छुटकारे की योजना का पूर्ण रूप से पूर्ण होना इस संसार से बाहर नहीं गया है रुसतम इस्तेमाल करते हैं परमेश्वर के लोग यह शंभू है परंतु वह वह वह उधार नहीं है जिसके द्वारा दूसरे बचाएं जाएं वायदा किया वह जन्म पुराने नियम में निरंतर रूप से किस की ओर इशारा किया जाता है जो वह वायदा किया हुआ बीच होगा जिसके द्वारा जो पहले मरा हुआ था जो बीच के समान बोया है वह उठेगा और बहुतायत से फल लेकर आएगा यशायाह 53:11 बात पर गौर से कि कैसे परमेश्वर के सेवक के दुख उठाने के द्वारा कई लोग घर में ठहराए जाएंगे।

वायदे ग़लतियों 3:16

अंत में यह सब फायदे हैं ikWy यहां पर जोj देता है की व्यवस्था जो 430 साल बाद ही उसने इस वायदे को खारिज नहीं किया वायदा व्यवस्था के पहले आया तथा वह आज भी सक्रिय है जिसके

द्वारा ikWy यह सिद्ध करता है कि वायदा व्यवस्था से बड़ा है और उसके अधीन नहीं है दूसरे शब्दों में हमें इस बात पर ध्यान नहीं लगाना है की व्यवस्था को पूरी करना है परंतु हम उस वेदों की ज्योति में जी सकते हैं इसीलिए यह महत्वपूर्ण है कि हम मसीही में हूं जो मसीह है। ग़लतियों 3:16

परमेश्वर की छुटकारे के योजना पूर्ण रुप से मसीह के द्वारा पहचानी जाती है मसीहा वह छुड़ाने वाला है क्योंकि उसने हमें व्यवस्था के सांपो से छुड़ाया है इसके विषय में हम आने वाले अध्याय में चर्चा करेंगे परंतु यह आवश्यक है कि इस बात को देखें कि यीशु मसीह चुराने वाला है क्योंकि उसके द्वारा जो उसने उस पर किया।

मlhg मे

यह वाक्यांश नए नियम में 88 बार mi;ksx किया गया है और जिस कारण

से हमें इन ok;nksa का अनुभव मिलना है हमें मसीह में होना जरूरी है हम शारीरिक रूप से परमेश्वर के राज्य में जन्म नहीं लेते परंतु हमें आत्मिक रूप से परमेश्वर के राज्य में जन्म लेना है (यहqUना 1:12-13) हमारी आशा यीशु मसीह से एक होने पर आधारित है जैसे हम उसके साथ जुड़ते हैं हम उसके साथ पहचाने जाते हैं ।

हम उसके मिशन वह आधा ही समझ पाएंगे अगर हम यह सारांश निकालें कि उसने हमें छुड़ाया तथा हमें अर्थात किया कि हम अपनी आजादी में कार्य करें हम मसीह पर विश्वास रखते हैं और हम उससे बंद जाते हैं रोमियो 6:11 क्या आप इन दो शब्दों को मसीही में यहां पर देख सकते हैं।

कई आत्मिक महत्वपूर्ण शिक्षाएं इस बात से निकलकर आती हैं उस आदमी की एकता से जो परमेश्वर के लोग उस मसीह के साथ रखते हैं उदाहरण के तौर पर मसीही कलीसिया का सर है तथा कलीसिया मसीह की दे रोमियो 12 :5 पतरस कहता है 1ihVj 5:14 विवाह की विधि को दुल्हन जो कलीसिया है उसका मसीह के साथ जो दूल्हा है एक होना एक होने को उदाहरण के रूप में किया गया है इफिसियों 5:22-33). सामान्य वाक्यांश आत्मिक एकता को भी बताता है Krrish 3(इफिसियों 3:21) ।

जो वायदे मसीही में पूर्ण होते हैं अब्राहम की सारी आशीष हैं मसीही की है परंतु हम मसीही में है इसीलिए हम उन आशीषों के भागी हैं सो कलीसिया जिसमें कई है वह मसीह हैं ।

छुटकारे का नए नियम अनुसार चित्र हम मसीह में हैं

वह हम में हैं हम उन सारी आशीषों की बारिश हैं जो परमेश्वर के ok;ns से आती है जिसमें उन सारे देशों में बड़ी पूर्णता भी शामिल है व्यवस्था हमें परमेश्वर के साथ नहीं जुड़ती परंतु मसीह तथा इसी कारण परमेश्वर के वायदे के फायदे हमें अपने कब्जे में लेते हैं ताकि हम अपने केंद्र को संसार के छोड़ तक लगाएं ताकि यह आशीषें सारे राष्ट्रों तक जा सकें।

यहूदी यह सोचते थे कि अन्य जाती शाब्दिक रूप से जाती उन्हें इससे पहले कि वह परमेश्वर के लोग बने और उसके वायदों को प्राप्त करें यहूदी बनना है परंतु पौलुस तथा अन्य इस बात पर जोर देते हैं कि यह यहूदी बनने के द्वारा नहीं परंतु मसीह पर विश्वास के द्वारा परमेश्वर तक इंसान की पहुंच होती है

रीति-रिवाज और व्यवस्था के काम बचा नहीं सकते क्षमा तथा उसके सारे वायदे किए हुए आशीष है मसीह में विश्वास के द्वारा हमें बचाते हैं चाहे एक व्यक्ति यहूदी हो या नहीं वह स्त्री पुरुष उन पर पूरा शिशु में मसीह पर विश्वास के द्वारा प्रवेश प्राप्त करता है। पर इस बात को समझ आता है रोमियों 11: 11-12

सब खोए नहीं है परंतु प्रभु को जानने पाए हैं यह प्रतीत होता है कि कोई और उस को जानने पाएंगे रोमियो 11: 25-26 हालांकि जब यहूदियों ने मसीह को ठुकराया तो एक प्राकृतिक बल ने सारे राष्ट्र तक पहुंचने के लिए कार्य किया अन्य जाति मसीह के सुसमाचार के द्वारा और हम देखते हैं परमेश्वर के उद्देश्य को इस सारे संसार में पहुंचने के लिए।

संसार

प्रेरितों के काम में मिशन यात्राएं इस बात पर जोर देती हैं कि किस प्रकार से

परमेश्वर की आत्मा कि वह तीव्र आवश्यकता कि उसके लोगों की अगुवाई करें कि बलिदान करते हुए सारे राष्ट्रों तक पहुंचे सर्वशक्तिमान से अधिकार प्राप्त करके यीशु अपने चेलों को सुसमाचार के साथ आगे भेजता है ना केवल यहूदियों के लिए परंतु जाति समूह के लिए eRrh 28%19&20 यीशु ने उन्हें पौलुस को राष्ट्रों के लिए प्रेरित कर कर नियुक्त किया रोमियो 11: 13 यीशु ने उसे यह निर्देश दिया कि पृथ्वी के छोर तक सुसमाचार को लेकर जाए और इसी बात को हम नए नियम में घटित होते हुए देखते हैं तथा हमारे समय में भी होते हुए।

प्रेरितों के काम की पुस्तक

हम प्रेतों के काम में उस के दूसरे अध्याय में परमेश्वर के कार्य को पढ़ते हुए देखते हैं जहां परमेश्वर से भय रखने वाले अन्य जाती जिन्होंने अपने आपको यहूदी धर्म के साथ जोड़ा था यरूशलेम से दूर स्थानों पर एकत्रित होते थे उस पर प्रकोष्ठ संस्कृत बनते बनते को के कारण उन्होंने यह पाया स्थानीय जन्मदिन यहूदी लोग अपनी स्थानीय भाषा में बात कर रहे हैं जो कि बाबुल का विपरीत प्रभाव है जो उत्पत्ति 11 में मिलता है तथा उसने मसीह के देखो विश्वास के द्वारा जोड़ दिया हम जब आठवें अध्याय पर पहुंचते हैं हम देख सकते हैं कि परमेश्वर फिलिप उस की अगुवाई करता है हम देखते हैं कि परमेश्वर फिलिपस की अगुवाई करता है उस खोजे के पास जाने के लिए तथा उस सावरी के पास जाने के लिए जिससे यहूदी लोग अधूरे जन्मे के रूप में तिरस्कृत करते थे 2 राजा 17:24 वह प्रभु के द्वारा पूर्ण रूप से अपनाए जाते हैं।

दसवां अध्याय परमेश्वर के द्वारा पतरस को दिए गए प्रकाशन को दोहराते हुए आरंभ होता है तथा वह अन्य जातियों को अशुभ नहीं परंतु शुद्ध देखें यहूदी उनके साथ कोई संबंध नहीं रखते थे परंतु परमेश्वर ने चुना उनसे प्रेम करना जब हमने मसीह पर विश्वास किया उन्हें मसीह यीशु के द्वारा परमेश्वर तक समान प्रवेश मिला प्रेरितों के काम 10 :47-48 परमेश्वर यहूदियों के साथ सुसमाचार की महिमा को बांट रहा था ।

यह केवल एक सामाजिक बाधा नहीं थी परंतु आध्यात्मिक भी थी परमेश्वर के कार्य राष्ट्रों में जो दिल राष्ट्रों के दिलों में जो हुआ इस बात को प्रमाणित करती है कि जो वायदा अब्राहम से किया गया वह उन में पूरा हुआ जिन्होंने उस वायदे किए हुए बीच पर विश्वास किया।

रचनात्मक मिशन

प्रेरितों के काम तेरा में हम पौलुस की प्रथम मिशनरी यात्रा : के विषय में पढ़ते हैं प्रेरितों के काम 13

अन्ताकिया की कलीसिया में कितने भविष्यद्वक्ता और उपदेशक थे; अर्थात बरनबास और शमौन जो नीगर कहलाता है; और लूकियुस कुरेनी, और देश की चौथाई के राजा हेरोदेस का दूधभाई मनाहेम और-शाऊल। जब वे उपवास सहित प्रभु की उपासना कर रहे था, तो पवित्र आत्मा ने कहा; मेरे निमित्त बरनबास और शाऊल को उस काम के लिये अलग करो जिस के लिये मैं ने उन्हें बुलाया है। तब उन्होंने उपवास और प्रार्थना कर के और उन पर हाथ रखकर उन्हें विदा किया सो वे पवित्र आत्मा के भेजे हुए सिलूकिया को गए; और वहां से जहाज पर चढ़कर कुप्रुस को चले। प्रेरितों के काम 13:1-4

पवित्र आत्मा कलीसिया का सक्रिय रुप से दिशा निर्देशन कर रही थी और उसकी प्रथम मिश्री यात्रा और उसकी रोग में अंतिम यात्रा दोनों मध्य सागर पर केंद्रित थे हर एक पड़ाव एक बड़े बदलाव को उनके लिए लेकर आया जिन्होंने मसीह पर विश्वास किया उसमें से कुछ यहूदी थे बट गई जो यहूदी नहीं थे। पौलुस को उन यहूदियों के साथ संघर्ष करना पड़ा जो अभी भी इसी आधार पर कार्य कर रहे थे कि लोगों को परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के लिए यहूदी बनना आवश्यक है यह यहूदी बनाने वाले लोग बड़ा प्रयत्न करते थे कि कैसे उन प्रारंभिक विश्वासियों को असमंजसता में ला सकें इन असमंजसता तथा दिशा भ्रमित करने वाली प्रयासों के बावजूद लोग प्रभु को हजारों की नीति में जान सके प्रेरितों के काम 2: 41 प्रेरितों के काम 4:4 प्रेरितों के काम 12: 24 सारी पथरिया

छुट्टियां हैं जो संसार के विभिन्न भागों में कई विश्वासियों कोई वादा पूरा किया गया आज भी वह बढ़ता जाता है।

अनछुए लोग

हाल ही के वर्षों में यह वाक्यांश लोग इनके पास अभी तक पहुंचा नहीं जा सका उन लोगों के लिए लागू होता है जो मसीह के सुसमाचार की पहुंच से बाहर है ऐसे कई समूह अब छोटे होते चले जा रहे हैं जैसे कि कई मिशन हृदय रखने वाले समूह इन हजारों खोए हुए लोगों के समूह तक पहुंच पहुंचने के लिए केंद्रित है की पूरे विश्व में मसीह यीशु के संदेश को पहुंचा सके।

यह मिशन आंदोलन eसीहत में वास्तविक रुप से अपनी जड़ों को अब्राहम की उदासियों में रखता है यह सारे देशों को वहां सूचित करें क्या आप देख सकते हैं परमेश्वर की छूट कार्य के उद्देश्य तथा यहां पर उसके जुनून को वह इसराइल को अनुमति नहीं देगा कि उसकी योजना को खराब करें ना ही वह अनुमति देगा कलीसिया की ढलाई को किस समाचार को संसार के अंत तक पहुंचने से रोक सके कुछ भी इस छुटकारे की प्रक्रिया को रोक नहीं सकता परमेश्वर सारे मिशन के ऊपर नजरों को रखता है और हम बहुत ही उत्तेजना से भरे युग में रह रहे हैं कई लाख लोग मसीह की ओर आ रहे हैं कुछ तो सालों पहले अफ्रीका का छोटा सा भाग मसीह को अपनाया था परंतु अब कलीसिया एक आम जगह बन गई है।

एक बड़ा फैलाव प्रकाशितवाक्य 5:9- 14

परमेश्वर के पास आराम से ही एक बड़ी योजना है जो उस वायदे में बंधी हुई है हम यहां प्रकाशितवाक्य में हो स्वर्ग से एक चित्र को प्राप्त करते हैं :

तब उन प्राचीनों में से एक ने मुझे से कहा, मत रो; देख, यहूदा के गोत्र का वह सिंह, जो दाऊद का मूल है, उस पुस्तक को खोलने और उसकी सातों मुहरें तोड़ने के लिये जयवन्त हुआ है। और मैं ने उस सिंहासन और चारों प्राणियों और उन प्राचीनों के बीच में, मानों एक वध किया हुआ मेम्ना खड़ा देखाउसके सात सींग और सात आंखे थीं :; ये परमेश्वर की सातों आत्माएं हैं, जो सारी पृथ्वी पर भेजी गई हैं। उस ने आ कर उसके दाहिने हाथ से जो सिंहासन पर बैठा था, वह पुस्तक ले ली, और जब उस ने पुस्तक ले ली, तो वे चारों प्राणी और चौबीसों प्राचीन उस मेम्ने के साम्हने गिर पड़े; और हर एक के हाथ में वीणा और धूप से भरे हुए सोने के कटोरे थे, ये तो पवित्र लोगों की प्रार्थनाएं हैं। और वे यह नया गीत गाने लगे, कि तू इस पुस्तक के लेने, और उसकी मुहरें खोलने के योग्य है; क्योंकि तू ने वध हो कर अपने लोहू से हर एक कुल, और भाषा, और लोग, और जाति में से परमेश्वर के लिये लोगों को मोल लिया है। और उन्हें हमारे परमेश्वर के लिये एक राज्य और याजक बनाया; और वे पृथ्वी पर राज्य करते हैं। और जब मै ने देखा, तो उस सिंहासन और उन प्राणियों और उन प्राचीनों के चारों ओर बहुत से स्वर्गदूतों का शब्द सुना, जिन की गिनती लाखों और करोड़ों की थी। और वे ऊंचे शब्द से कहते थे, कि वध किया हुआ मेम्ना ही सामर्थ, और धन, और ज्ञान, और शक्ति, और आदर, और महिमा, और धन्यवाद के योग्य है। फिर मैं ने स्वर्ग में, और पृथ्वी पर, और पृथ्वी के नीचे, और

समुद्र की सब सृजी हुई वस्तुओं को, और सब कुछ को जो उन में हैं, यह कहते सुना, कि जो सिंहासन पर बैठा है, उसका, और मेम्ने का धन्यवाद, और आदर, और महिमा, और राज्य, युगानुयुग रहे। और चारों प्राणियों ने आमीन कहा, और प्राचीनों ने गिरकर दण्डवत् किया।।

(प्रकाशितवाक्य 5:5 -14)

छुटकारे का पूरा फैलाव को हम इस वर्गीय द्वार से देख सकते हैं और वे यह नया गीत गाने लगे, कि तू इस पुस्तक के लेने, और उसकी मुहरें खोलने के योग्य है; क्योंकि तू ने वध हो कर अपने लोहू से हर एक कुल, और भाषा, और लोग, और जाति में से परमेश्वर के लिये लोगों को मोल लिया है।

प्रकाशितवाक्य 5:9

यह मुख्य शब्द खरीदा हुआ यहां पर इस्तेमाल किया जाता है कीमत को यीशु की मृत्यु और उसके लहू के द्वारा चुकता किया गया उसके छुड़ाने वाले कार्य के द्वारा परमेश्वर को जानने के लिए जो द्वार है वह पूर्ण खोला गया केवल यहूदियों के लिए नहीं प्रकाशितवाक्य 5:9

बाबुल की मीनार एक विभाजन तथा एक अलगाव को लेकर आए लोग एक दूसरे से अलग किए गए क्योंकि उनकी भाषाएं विदेशी थी इस विभाजन ने राष्ट्रों की स्थापना की और जातीय समूह विश्वभर में फैल गए अब सुसमाचार को इन सांस्कृतिक आप सुसमाचार को एवं सांस्कृतिक सीमाओं से पार जाकर प्रचार होना है तथा हर एक भाषा में इसका अनुवाद होना है मुझे स्मरण आता है एक बार भारत के पूर्वी पहाड़ों के छोर पर मैं किसानों का उनके खेतों में वापस आने का इंतजार कर रहा था जब गांव के लोग अपने खेतों से अपने घरों को लौटे तो सूर्य

उस क्षेत्र से नीचे आना आरंभ कर चुका था मैंने परमेश्वर के वचन को एक भाषा में प्रचार किया तब दूसरा व्यक्ति उसे अनुवाद कर कर दूसरी भाषा में बताता था और साथ ही एक और अनुवाद करने वाला उस समाचार की संदेश को पूर्ण गांव वालों की खुद की भाषा में अनुवाद करता था सबसे ज्यादा जाति समूह दिन तक सुसमाचार नहीं पहुंचा है वह भारत में है वाक्यांश के बाद वाक्यांश उस भाषा में अनुवाद किए गए जिससे गांव के लोग समझ सकते थे।

इस बात को देखें कि परमेश्वर ने किस बात की कल्पना की एक बड़ी भीड़ सारी भाषाओं से और पृथ्वी के सारी संस्कृतियों से प्रभु की आराधना तथा स्तुति करती है उसने इस बात की योजना मनुष्य के पतन से पहले बनाएं उसके महान ज्ञानी मनुष्य के विद्रोह तथा शैतान की चतुराई इजरायल की कठोरता तथा उसकी विश्वास योग्यता को एक सम्मिलित कर दिया ।

इतिहास तब उसकी कहानी बन गया यह छुटकारे की प्रक्रिया धीरे-धीरे इन हजारों वर्षों में खुलती चली गई परमेश्वर सदैव से लोगों की अनगिनत भीड़ को चाहता था और यह हो रहा है जैसे कई लाखों लोग अलग-अलग भाषाओं से और संस्कृतियों से आ रहे हैं यह एक आसान योजना नहीं थी क्योंकि इसके लिए बड़ी कीमत को चुकता किया गया परंतु लक्ष्य बड़ा सांप था स्पष्ट था परमेश्वर इन महान लोगों को चाहता था कि बाहर जाकर इसको पूरा करें और मधु लोकेश पाठक कलीसिया के विरोध में प्रबल नहीं हो सकी eRrh 16: 18।

आज परमेश्वर अपने लोगों के साथ बना रहता है ताकि उन बचे हुए लोगों तक पहुंच सके समय कम है कार्य पड़ा है हर एक रिसिया

परिवार और व्यक्ति के पास इस महंगे मिशन का दर्शन होना है जो उनकी प्राथमिकताएं तथा आरामदायक जीवनशैली को डाल सके जो कुछ हमारे पास है वह अस्थाई है परंतु जो कुछ वर्तमान में हो रहा है उसका अनंत प्रभाव है परमेश्वर के कार्य में सहभागिता हमारी सबसे मुख्य प्राथमिकता बनी रहती है।

- आओ हम भी एक परमेश्वर के तीन व्यक्तियों की ओर संकेत करता है हम इसके झलक को पुराने नियम में भी देख सकते हैं।
- यह शब्द हम ईश्वरत्व में एक इशारे को करता है तथा उस मूर्खतापूर्ण विचार को खारिज करता है कि परमेश्वर ने मनुष्य की रचना इसलिए की क्योंकि वह अकेला था यह संसार की संस्कृति का खतरा है व्यक्त के द्वारा व्यक्त w e v के द्वारा दृश्यता जंगल की आग के समान फैल रही है संस्कृतियां अपने आप में कल्पना से बढ़कर तीव्र गति से आपस में मिल रही हैं यह हालांकि एक कुंजी के समान कोई विरोधी संस्कृतियों को सुसमाचार को सुनने के लिए बोल रही खोल रही है।
- स्वास्थ्य का दृष्टिकोण यह है उपयुक्त समय था कि उस अंग की चमड़ी को काटा जाए क्योंकि उस समय संक्रमण का कम खतरा होता है ।
- 12 गोत्र याकूब के 12 पुत्रों के समानार्थी नहीं है कुछ कारणों से।

#5 छुटकारे की योजना

हालांकि यह नजरों से कई बार छुपा रहता है परंतु छुटकारे के मूल तत्व में से एक का संबंध अधिकार को खोने और पाने से हैं हमने अपने अधिकार को उस दुष्ट को दे दिया तथा एक गुलाम दास बन गया और उसे उसका बंधु भाई से आवश्यक कि आज बनवाई से बंधवाई से आज़ादी की आवश्यकता से छुटकारे की योजना बताती है कि कैसे दूसरे आदम मशीनें अधिकार को पुनः प्राप्त किया तथा मनुष्य को समर्थ किया कि परमेश्वर की ओर तथा मस्ती में उस अधिकार की ओर मुड़ सके यह एक प्रसिद्ध परमेश्वर के राज्य के नमूने के आधार को बनाता है। bfQflvUl में पौलुस परमेश्वर के छुटकारे की योजना को विस्तृत रुप से बताता है हम इस बात को ध्यान दें परमेश्वर के उस महान उद्देश्य को जो उसका उसके लोगों के लिए gSA कि उस ने अपनी इच्छा का भेद उस सुमति के अनुसार हमें बताया जिसे उस ने अपने आप में ठान लिया था। कि समयों के पूरे होने का ऐसा प्रबन्ध हो कि जो कुछ स्वर्ग में है, और जो कुछ पृथ्वी पर है, सब कुछ वह मसीह में एकत्र करे। bfQfl;ksa 1:9 -10

- परमेश्वर नए नियम के युग में अपनी इच्छा को हमें प्रकट करता है तथा वह वर्तमान युग में भी ऐसा कर रहा है अब वो रहस्य रहस्य

नहीं रहा परमेश्वर ने अपनी इच्छा के रहस्य को हम पर प्रकट किया। bfQfl;ksa 1:9

- mlhg उस महान योजना का केंद्र है जिसे उसने समय के पूर्ण होने के समय मस्ती में उसको एक योजना किराया उस छुटकारे की योजना में सारे खास बातें मसीह यीशु के व्यक्तित्व पर केंद्रित है और यही कारण है की छुटकारे की योजना यीशु मसीह को केंद्र बनाती हैं ना कि दूसरे धार्मिक समूहों को इस अध्याय में हम और अधिक गहरी रूप में देखेंगे यह कैसे परमेश्वर का नियंत्रण मसीह के द्वारा पुनः स्थापित किया जाता।
- प्रभु हम सब चीजों को पृथ्वी की तथा स्वर्ग की चीजों से उसने एक करेगा मार्टिन लॉयर जॉन इस बात पर जोर देते हैं कि पुनः एक होना सही अनुवाद है इसके बजाय कि केवल एक होना संदर्भ हालांकि इसकी मांग करता है पतन के बाद अपने हाथों से बाहर चली गई मशीन के द्वारा जैसे कार्य की योजना प्रकट करती है कि हर बातें सब चीजें हैं और इस नए राज्य में सब बातें पूर्णतय तथा शुद्धता के साथ कार्य में लाई जाए ताकि स्वरूप मनुष्य जाति जीव जंतु तथा बाकी सारी सृष्टि उसकी महिमा को प्रकट करें।

आदम का अधिकार शैतान के पास चला जाता है

- पहले अध्याय में हमने संक्षिप्त रूप में इस बात का परिचय दिया उस वतन के पश्चात विपत्ति का उत्पत्ति 3:00 से प्रकाश देने वाला दृश्य केवल इस फल को खाने उस पल को किसी और के पेड़ के खाने की व्यक्तिगत चुनाव के विषय में ही नहीं ही नहीं वरन मनुष्य के परमेश्वर के विरुद्ध बलवे के विषय में भी बात करता है पलवा पलवी ध्यानपूर्वक रखे हुए जाल शैतान की दुष्ट योजना की कुंजी बन गया जिसके द्वारा उसने आदम और हव्वा का अधिकार तथा

निष्ठा चुरा ली और इस धोखे की सफलता ने पूरी मनुष्य जाति को उत्कृष्ट के नियंत्रण में ला दिया।

सृष्टिकर्ता परमेश्वर जो असली मालिक है उसने अब्राहम आदम और हव्वा को इस पृथ्वी के ऊपर राजा और रानी करके नियुक्त किया था हालांकि उत्पत्ति में यह सही शब्द इस्तेमाल नहीं किए गए परंतु निश्चित रुप से इस्तेमाल किए जा सकते थे जैसे कि परमेश्वर द्वारा नियुक्त की गई अधिकार ना केवल मनुष्य जाति के ऊपर परंतु पृथ्वी पर भी जब उन्होंने उसकी आज्ञा को माना उन्होंने अपने निष्ठा को प्रभु परमेश्वर से हटाकर जिसने उन्हें बड़े अनुग्रह से समर्थ बनाया और नियुक्त किया उसको वह दे दियाA

उत्कृष्ट को दुष्ट को दे दिया और सारा अधिकार उस दुष्ट का हो गया अधिकार का यह नामकरण मRrh 4 में यीशु की उत्कृष्ट के द्वारा परीक्षा के तरीके का ध्यान देकर समझा जा सकता है इस बात का लालच देकर की पूरे संसार पर वह बिना कार्य बिना पसीना बहाए बिना मेहनत जिसके लिए परमेश्वर की योजना की आवश्यकता हो वह नियंत्रण कर सकता है शैतान ने यीशु के सामने यह प्रस्ताव रखा कि बिना पुरुष के वह राजा बन सकता हैSA

जोकि अपने लोगों के छुटकारे को प्राप्त किए बिना इस बात को देखें कि कैसे यह सुने उस दुष्ट के अधिकार से विचार-विमर्श नहीं किया जो उसे इस पृथ्वी का अधिकार या राज्य दे रहा था मRrh 4:8- 10

शैतान ने सुरुवात में इस अधिकार को चुरा लिया था सत्य है कि शैतान ने छल का इस्तेमाल किया इन सब चीजों को पाने के लिए परंतु

उसे तब भी इस पृथ्वी का अधिकार मिला तथा उसके लोगों का इस समय शैतान यह प्रयास कर रहा था कि यीशु की निष्ठा उसे मिल जाए संसार के सारे राज्यों को उसके सन्मुख रखने के द्वारा हवा के साथ उसके पास कुछ नहीं देने को था केवल वह झूठा सूचना यहां पर हालांकि शैतान यीशु को विस्तार का अधिकार

यहां पर हालांकि शैतान यीशु को संसार के अधिकार का प्रस्ताव देता है तथा ढिठाई से यह कह सकता है कि मेरे सामने गिर कर मेरी आराधना करें तो मैं यह सारी चीजें तुझे दे दूंगा शैतान यीशु से क्या प्राप्त करना चाह रहा था उसकी निष्ठा एक बार जब व्यक्ति उस दुष्ट को अपनी वफादारी भी देता है तो सारे साधन भी उसके अधीन में आ जाते हैं ।

अंधकार का कार्य क्षेत्र

जहां धर्म ज्ञान से भरे हुए व्यक्तव्य को समझाता है dqyqfLl;ksa 1:13-14 खुशियों के यह मानता है कि वह दुष्ट के पास अंधकार का कार्यक्षेत्र है सारे लोग जिन्हे परमेश्वर ने रचा उस दुष्ट की बनवाई में है पौलुस कहता है 2192

जो होना 319 में यह शुभ शैतान के प्रति मनुष्य की दुष्ट निष्ठा को इंगित करता है मनुष्य कई बार उस भयानक परिणाम को नहीं समझ पाता जोकर तूने उसे वर्जित फल को खाने पर रखा था परिणाम स्वरुप मौत इस छोटे से अपराध दिखने वाले जो उस फल खाने के द्वारा आज्ञाकारिता है काफी बड़ी सजा लगती है एक बार जो हम कई बार नहीं जान पाते हैं वह यह कि पर्दे के पीछे एक बड़ा आत्मिक युद्ध चल रहा है पृथ्वी और मनुष्य पर नियंत्रण पाने के लिए उस दुष्ट ने अपने आप को एकाधिकार के रूप में मनुष्य कार्यक्षेत्र में लेके आया उसको परीक्षा

में डालती तथा आदम और हवा को परमेश्वर के प्रति अनार्य कार्य होने के लिए तथा शैतान के शब्दकोश में उसके पीछे चलने का चुनाव।

सेब का बगीचा

मैं एक उदाहरण के द्वारा जिसको चित्रित करना चाहूंगा एक सेब का बगीचा था जो जॉन का था जॉन उसमें कुछ भी कर सकता था जो वह चाहता था क्योंकि उस पर किसी का स्वामित्व उसी के पास था उस ने निर्णय लिया कि इस रिश्ता मत पर को स्वामित्व को किसी और व्यक्ति तथा संस्था को दे दे परंतु परिणाम स्वरूप उसने अपने नियंत्रण को बगीचे पर खो दिया है ठीक है कि वह उस बगीचे की देखरेख करने के लिए अपनी स्वयं सेवा दे सकता है परंतु दूसरे को उसका स्वामित्व देने के लिए यह जॉन को जरूरी था यह नए मालिक को उस पुरे बगीचे को दे दे ।

इसी प्रकार आदम और हवा ने अपने स्वामित्व को शैतान के हवाले कर दिया केवल एक ही अंतर है जॉन और आदम और हवा में ही शैतान ने उसके अधिकार का दुरुपयोग किया और परिणाम स्वरूप मनुष्य का हृदय और विश्वास से भ्रष्ट हो गया और उन्होंने इस पृथ्वी पर सारा अधिकार खो दिया शैतान ने उसको अपने विकृत विकृत उद्देश्यों के लिए इस्तेमाल किया

जब vkne us शैतान के सुझाव को सुनने का चुनाव किया कि वह उस वर्जित फल को खाएं उसने अपनी निष्ठा को परमेश्वर की सेवा से अलग कर शैतान की सेवा करने के लिए लगा दिया और इस निष्ठा के परिवर्तन से शैतान ने आदम के उस पुरे सेब के बगीचे पर अधिकार कर लिया उसने यह चुनाव की परमेश्वर के वचन से ज्यादा वह

उत्कृष्ट के शब्दों पर विश्वास करें अब पीछे मुड़ने का कोई रास्ता नहीं था उसने उसके सारे अधिकार को उससे आदम से छीन लिया ताकि अपने दुख योजनाओं को वह हासिल कर सके परमेश्वर ने मनुष्य को चेतावनी दी थी मृत्यु है परंतु उसने उसकी ना सुनी पृथ्वी का राज्य शैतान के पूर्ण नियंत्रण में आ गया ताकि वह अपने धोखे भरी योजनाओं को पूरा कर सके इसी कारण से मनुष्य युद्ध करता है लड़ता है दूसरों से हर एक समाज के हर स्तर पर परिवारों में उत्पत्ति 4 शादियों में जाति-धर्म तथा राष्ट्रीय आदान प्रदान में।

स्वामी और दास

नए नियम स्वामी और द्वार दास जैसे शब्दों का इस्तेमाल कर उस भयावह परिणाम को विस्तृत रूप से बताता है जो मूल अधिकार के स्थांतरण के द्वारा आया पर्व उदाहरण के तौर पर पाउली बड़े शब्दों में यह अंगीकार करता है मनुष्य की दुर्दशा के विषय में रोमियो के बीच मनुष्य जाति दास्वत्व में पड़ गई अब वह परमेश्वर की सेवा और उपायों से नहीं कर पा रहा परंतु अब वह बाधित है कि वह दुष्ट की सेवा करें उसने चुना की प्रभु के बजाए कुछ देश की सेवा करें पति को जानने से पहले हम सब अंधकार के इस क्षेत्र के भागी थी जहां से बचने के लिए हमें सहायता की आवश्यकता थी ।

हम शैतान की सामर्थ को अपने आप नहीं त्याग सकते और ना ही हम स्वाभाविक रूप से पीछा करते हैं बदलने के लिए या परमेश्वर के मार्ग के लिए रोमियो 8:3-4 हमारी प्रकृति में दुष्ट की प्रकृति को ले लिया जिसने परमेश्वर पर शक किया। यह आत्मिक अंधकार को मृत्युदंड का भाग था छुटकारा केवल परमेश्वर के पुत्र के द्वारा ही आ

सकता था जैसा की dqyqfl;ksa 1:13 में लिखा है परमेश्वर के पास खुद एक गुप्त योजना थी जिसके द्वारा वह पुनः अपने प्रिय लोगों का अधिकार प्राप्त कर सके तथा पतित मनुष्य जाति को शैतान के नियंत्रण से चुरा सके।

सारांश में परमेश्वर ने आदम को उसके स्त्रोतों पर जिससे उसकी योजनाओं को वह पूरा कर सके भंडारी ठहराया था परंतु आदरणीय यह चुना कि अपने आपको को दुष्ट के अनुसार बनाए जिसने पश्चात परमेश्वर के शत्रु के रुप में अपने आप को दिखाया और अपने दोस्त योजनाओं के लिए उन सारे प्रयोजनों को चुरा लिया परिणाम स्वरुप मनुष्य ने इस पृथ्वी पर अपने अधिकार को खो दिया अपने परमेश्वर के साथ एकता को खो दिया उसकी इच्छा और उसकी काबिलियत कि वह परमेश्वर की महान योजना को पूरा कर सके खो दिया परिणाम स्वरुप मानव जाति को जरूर तानाशाह के अधीन आ गई जिसने परमेश्वर के विपरीत उनको चलाया और जिसका परमेश्वर के न्याय में विनाश निश्चित है।

- मनुष्य ने इन बातों को खो दिया पृथ्वी पर अपने अधिकार को
- परमेश्वर के साथ एकता को
- परमेश्वर की महान योजना को पूर्ण करने की काबिलियत हो
- उसकी परमेश्वर को प्रसन्न करने की अभिलाषा को

यह कहानी उस राजा के विषय में है जो अपने आपको जबरन होता है और यह साथ में मिलने वाले परमेश्वर की महान छुटकारे की योजना के संदर्भ को बताता है जो भ्रष्टाचार हम सरकारों में आज देखते हैं जो इस पृथ्वी पर राज कर रहा है वह परमेश्वर से अलग जीवन के दुखद कहानी को दर्शाता है जैसे मैं दुनिया भर में यात्रा करता हूं यह भ्रष्टाचार बड़ा साफ दिखता है एक राष्ट्र के लोगों के बीच में जहां मैंने हाल ही में गया वह पूर्व राष्ट्रपति के विषय में अच्छा बात करते हैं जिसने इस देश की सहायता करें परंतु वह भ्रष्टाचार के कारण से आज भी बंदी ग्रह में हैं

हर एक अच्छे राजा की इच्छा रखता है परंतु जब एक बार उस राजा को समर्थ मिल जाती है वह आमतौर पर केंद्रित होकर अपनी ही योजनाओं को पूरा करता है मनुष्य की परमेश्वर तथा उसके लोगों की सेवा करने का जुनून जा चुका है लोगों को बनाने के बजाय उनकी चिंता करने की बजाय वह अंधकार के नियमों का पालन करता है और मौका ढूंढता है उन्हें नाश करने का पुराना नियम आज के समय चलने वाले तनाव का फर्स्ट चित्र है लोग अंधकार से भरे हुए शासकों के अधीन हैं और आशा करते हैं एक छुड़ाने वाले की एक अच्छे राजा की जो आए और उनकी सहायता करें।

पुरानी नियम के राजाओं से पहले

परमेश्वर ने पुराने नियम की व्यवस्था को स्थापित किया जिसके द्वारा वह अपनी सामर्थ्य महिमा तथा आशीषों को इस संसार में ला सकें यदि लोग आज्ञाकारी रहे तब परमेश्वर इस बात का निश्चय करता था कि कुछ आशीषें इन लोगों पर आएं यह आवश्यक है कि हम इस सिद्धांत

को समझाए आगे का रिश्ता आशीषों को लेकर आती है और पाप परमेश्वर की भलाई से हमें मोहताज करती हैं शारीरिक मनुष्य जैसा आप उसके पास यह हृदय नहीं इस परमेश्वर को खोजें परंतु व्यवस्था ने एक अनुशासन भरे जीवन के तरीके को स्थापित किया जिससे मनुष्य को लालच दिया कि वह उन आशीषों के विषय में जो आगे कविता लिखी आती है आज्ञा मानो और तुम प्राप्त करोगे।

व्यवस्था ने ऐसे समाज को भी डाला जो बाहरी विचारों के प्रति कम प्रमुखता उन्मुक्त आधुनिक शहर को बंद संस्कृति के बिल्कुल विपरीत है बाहरी ज्ञान के प्रति उसके खुलेपन ने बिना सोचे समझे अंदर लेने की प्रवृत्ति को रच दिया है जिस कारण से शहरी दृश्य अपने आपको परमेश्वर के वचन के प्रति बंद करता है जो वास्तविक रुप से सच्ची संपनता को लाने वाला है आंकड़े बताते हैं कि कैसे शहरी लोग बच्चन के मार्गों को थामे नहीं रहते हालांकि आज्ञाकारिता विनाश को लेकर आता है परमेश्वर का समाज दुनिया की प्रभाव से सुरक्षित किया गया है।

पुराने नियम के हर एक राजा के पास चुनाव था कि वह लोगों की अगुवाई करें आगे कार्य था तथा आशीषों में जापान आज्ञाकारिता और साफ होने आशीषें तथा श्राप उन पांच पुस्तकों में लिखी गई है और बाल पर्वत पर घोषित की गई जहां यह तूने उस भूमि पर कब्जा किया जो याहू 8:30-35 जैसे राजा प्रत्येक वर्ष उस व्यवस्था को पढ़ते थे वह परमेश्वर के नियम तथा तृतीय से आज्ञाकारिता के पीछे आशीषें आती हैं याद दिलाया जाता था।

कई लोग पुराने नियम के परमेश्वर को रुढ़िवादी रीति से एक निर्दई और हिंसक परमेश्वर के रूप में देखते हैं परंतु उसका विपरीत सच

है परमेश्वर ने पुरानी व मैम को पुराने नियम को बनाया तथा उसे प्रकट किया था कि वह इस्राएलियों को तथा दुनिया को अपनी आशीषों में ले जा सके उसने चेतावनियों का इस्तेमाल किया ताकि अनुग्रह से वह लोगों को अपनी और पुनः भुला सके उस नुकसान से दूर अपनी भलाई में।

शमूएल भविष्यवक्ता

एक राजा तभी राज्य कर सकता है यदि वह परमेश्वर को एक राजा के रूप में आदर दे तथा उसकी अगुवाई में चले जब राजा तथा उसके साथ उसके लोग परमेश्वर के अधिकार को मानते हैं तब बड़ी आशीष से आती हैं हम इस प्रक्रिया के उदाहरण को फिलिस्तीनियों के विरुद्ध युद्ध में देख सकते हैं शमूएल एक राजा नहीं था परंतु उसने अपने लोगों की पश्चाताप में अगुआई करें एक परिधान को चढ़ाया और अपने शत्रुओं के विरुद्ध परमेश्वर की सहायता को खोजा ।

जब पलिश्तियों ने सुना कि इस्राएली मिस्पा में इकट्ठे हुए हैं, तब उनके सरदारों ने इस्राएलियों पर चढ़ाई की। यह सुनकर इस्राएली पलिश्तियों से भयभीत हुए। और इस्राएलियों ने शमूएल से कहा, हमारे लिये हमारे परमेश्वर यहोवा की दोहाई देना न छोड़, जिस से वह हम को पलिश्तियों के हाथ से बचाए। तब शमूएल ने एक दूधपिउवा मेम्ना ले सर्वांग होमबलि करके यहोवा को चढ़ाया; और शमूएल ने इस्राएलियों के लिये यहोवा की दोहाई दी, और यहोवा ने उसकी सुन ली। और जिस समय शमूएल होमबलि हो चढ़ा रहा था उस समय पलिश्ती इस्राएलियों के संग युद्ध करने के लिये निकट आ गए, तब उसी दिन यहोवा ने पलिश्तियों के ऊपर बादल को बड़े कड़क के साथ गरजाकर उन्हें घबरा दिया; और वे इस्राएलियों से हार गए। तब इस्राएली पुरुषों ने मिस्पा से

निकलकर पलिश्तियों को खदेड़ा, और उन्हें बेतकर के नीचे तक मारते चले गए। तब शमूएल ने एक पत्थर ले कर मिस्पा और शेन के बीच में खड़ा किया, और यह कहकर उसका नाम एबेनेज़ेर रखा, कि यहां तक यहोवा ने हमारी सहायता की है। 1शमूएल 7:7-12

यह आने वाली पुराने नियम के राजाओं की घड़ी के पीछे की पृष्ठभूमि है परमेश्वर ने उनको दिखाया कि बिना कोई शारीरिक सर अधिकार के वह उनका उनको संभाल सकता है परंतु लोगों ने सोमवार को देखा था जो मृत्यु शैया पर था तथा उसके पुत्र भ्रष्ट थे और दूसरों के राष्ट्रों के समान वह एक राजा को चाह रहे थे वह यह नहीं देख पा रहे थे कि परमेश्वर उनकी सहायता है और उनकी आवश्यकताओं का हल उनकी आज्ञाकारिता में है।

परन्तु जो बात उन्होंने कही, कि हम पर न्याय करने के लिये हमारे ऊपर राजा नियुक्त कर दे, यह बात शमूएल को बुरी लगी। और शमूएल ने यहोवा से प्रार्थना की। और यहोवा ने शमूएल से कहा, वे लोग जो कुछ तुझ से कहें उसे मान ले; क्योंकि उन्होंने तुझ को नहीं परन्तु मुझी को निकम्मा जाना है, कि मैं उनका राजा न रहूं। जैसे जैसे काम वे उस दिन से, जब से मैं उन्हें मिस्र से निकाल लाया, आज के दिन तक करते आए हैं, कि मुझ को त्यागकर पराए, देवताओं की उपासना करते आए हैं, वैसे ही वे तुझ से भी करते हैं। 1शमूएल 8:6-8

परमेश्वर ने उनकी दुनियावी तरीकों पर विश्वास को एक और चीन के समान लिया कि उन्होंने उसको छोड़ दिया तथा दूसरों की सेवा करने को चुना परमेश्वर उनके चुनाव को देख बलवे के रूप में लेता है

और यह आदम और हवा के द्वारा व्यक्ति गए किए गए चुनाव से अलग नहीं है। परमेश्वर ने उनको वह सब

दिया था जिसकी उन्हें आवश्यकता थी तभी भी धोखे में पढ़े और इच्छुक थे इस बात पर विश्वास करने के लिए किया से बढ़कर कुछ है वह परमेश्वर पर भरोसा रखना नहीं चाहते थे परमेश्वर पर भरोसा नहीं रखना हमेशा दूसरों दूसरे ईश्वरों की के दायित्व में ले जाता है परमेश्वर ने उनकी इस बड़ी कुछ

विनती को ध्यान दिया तथा उनके द्वारा मांगे गए राजा को ने दे दिया और तब राज्यवाद के युग का आरंभ हुआ वह एकत्रित साम्राज्य के साथ तथा 120 वर्ष बाद वह विभाजित साम्राज्य के साथ प्रभु ने उनको अपने लोगों को बताया कि वह कैसे उनको सुरक्षित रख सकता है परंतु उन्होंने उस पर भरोसा रखने से इंकार किया मनुष्य स्वभाव से परमेश्वर पर भरोसा नहीं रखता और प्राणी रामस्वरूप परिणाम स्वरुप दूसरे तरीकों को खोजता है अपनी आवष्यकताओं को पूरी करने के लिए परमेश्वर ने इस्राएलियों को माननीय राजा दिए मानवीय राजा दिए परंतु उसने उनकी उस गहरी समस्या को जो भरोसा नहीं रखना था हल नहीं किया उनकी आशीषें सीमित थी और जितना अच्छे से आज्ञा पालन करते थे उसी अनुसार आशीष से आती थी।

पुराने नियम के राजा

इसराइल के कई राजा थे पहले तीन राजा को एकत्र साम्राज्य के थे राजा चावल दाऊद तथा सुलेमान सुलेमान के राज्य के अंत के समय इस्राइल दो भागों में उत्तरी तथा दक्षिणी राज्यों में इजरायल और यहूदा

के रूप में विभाजित हो गया विभाजन के बावजूद परमेश्वर के वायदे बने रहें जो राजा राय का जीवन जीता है जिससे उसके लिए आएंगी तथा अन आज्ञाकारिता के द्वारा श्राप आएंगे।

हालांकि याद रखें कि धार्मिक और अधार्मिक के वर्गीकरण को बहुत ज्यादा अलग नहीं करें कुछ धार्मिक राजा थे दाऊद के समान जिसने बच्ची के साथ व्यभिचार का पाप किया तथा हत्या का इस्तेमाल किया कि अपने व्यभिचार के पाप को छुपाए भजन संहिता 51 सुलेमान राजा की व्यवस्था के विरुद्ध आज्ञाकारिता जिसने अन्य जाति पत्नियों से शादी की और उन्हें लेकर आया और दूसरों को मूर्ति पूजा में।

अधर्मी राजा

2 'kew,y राजाओं की पुस्तक तथा इतिहास की पुस्तक को पढ़ना थकाने

वाला हो सकता है क्योंकि हम बार-बार इजराइली राजाओं की राजा के अधीनता में रहने की असमर्थता को देखते हैं उन्होंने यह वह को उन्होंने यहोवा की उपेक्षा की उसके भविष्यवक्ताओं की और उसकी व्यवस्था की और हर एक प्रकरण में एक भयावह परिणाम को हम पढ़ते हैं दक्षिणी राजा आमतौर पर ज्यादा विश्वास योग्य है इसीलिए वह ज्यादा समय तक राज कर सके परंतु पूर्ण रूप से देखने पर केवल कुछ ही राजा थे जिन्होंने पूरे मन से परमेश्वर प्रभु को खोजा यह किताबें आज्ञाकारी राजाओं की सूची को प्रदान करता है जो हमें निरंतर यह याद स्मरण दिलाते रहे कि अधार्मिक जीवन विनाशकारी परिणाम को लेकर आता है ।

इसलिये अहाब ने ओबद्याह को जो उसके घराने का दीवान था बुलवाया। ओबद्याह तो यहोवा का भय यहां तक मानता था कि जब ईज़ेबेल यहोवा के नबियों को नाश करती थी, तब ओबद्याह ने एक सौ नबियों को ले कर पचासपचास करके गुफाओं में छिपा रखा-; और अन्न जल देकर उनका पालन1 पोषण करता रहा।-राजा18:3-4

यहूदा के राजा आसा के अड़तीसवें वर्ष में ओम्री का पुत्र अहाब इस्त्राएल पर राज्य करने लगा, और इस्त्राएल पर शोमरोन में बाईस वर्ष तक राज्य करता रहा। और उसने बाल का एक भवन शोमरोन में बनाकर उस में बाल की एक वेदी बनाईं। और अहाब ने एक अशेरा भी बनाया, वरन उसने उन सब इस्त्राएली राजाओं से बढ़ कर जो उस से पहिले थे इस्त्राएल के परमेश्वर यहोवा को क्रोध दिलाने के काम किए।1राजा 16 :29, 32 -33

परमेश्वर के अधिकार में लोगों की अगुवाई करने के बजाय उन्होंने स्वकेंद्र जीवन को जिया और वह ज्यादातर झूठे देवी देवताओं से प्रभावित हुए तथा मूर्ति पूजा मूर्तियों की आराधना की जय राजा उस दुष्ट के प्रभाव में जीवन जी रहे थे।

धर्मी राजा

सौभाग्यवश कुछ ऐसे राजा थे जिन्होंने परमेश्वर को प्रसन्न करने का प्रयास किया हम दाऊद के विषय में सोचते हैं सुलेमान की प्रारंभिक जीवन के विषय में तथा शमशाबाद उसके भी प्रारंभिक वर्षों में जब राजा यस या पार्क में इजराइल के राजा के रूप में कार्यभार लिया उसने इस बात पर दबाव दिया कि परमेश्वर की भविष्यवक्ताओं में से सुना जाए । फिर यहोशापात ने इस्त्राएल के राजा से कहा, परन्तु यहोशापात ने पूछा,

क्या यहां यहोवा का और भी कोई नबी नहीं है जिस से हम पूछ लें? (1राजा 22:5,7)

धर्मी राजाओं ने हालांकि उन्होंने पवित्र जीवन को दिया परंतु पूर्ण रूप से वह निराशाजनक से दाऊद ने पुलिया की हत्या की सुलेमान अन्य जाती पत्नियों को लेकर आया है और जरुरत पाक की शुरुआती विश्वास की विजय जिसमें गीत गाने वाले युद्ध में पहले गए और परमेश्वर की सामर्थ्य विजय को जो उस बड़ी सेना पर हुई उसके गवाह बने 2 इतिहास 20:1-30 उसने अपने आप को उत्तरी राज्य के समान परमेश्वर के विपरीत दिशा में ले लिया। तब दोदावाह के पुत्र मारेशावासी एलीआजर ने यहोशापात के विरुद्ध यह नबूवत कही, कि तू ने जो अहज्याह से मेल किया, इस कारण यहोवा तेरी बनवाई हुई वस्तुओं को तोड़ डालेगा। सो जहाज टूट गए और तर्शीश को न जा सके।

(2 इतिहास 20 37)

पुरानी नियम के राजा दूसरे राजा तथा राष्ट्रपतियों के साथ जो इस पृथ्वी के थे वर्षों से इस बात को बताते हैं उनका राज भ्रष्टाचार और लालच दे अप्रभावित नहीं है । अधर्मी अगुआ के कारण यह होता है कि जिन पर वह राज करते हैं वह आशा से आगे देखते हैं कि कोई बेहतर राजा उन पर राज करेगा प्रभु ने लोगों का विरोध किया उन्हें अनुमति देखकर कि दूसरे राजाओं के समान उनके ऊपर भी एक राजा हूं इस निर्णय में इस बात को सिद्ध किया कि वह परमेश्वर को अपने ऊपर राजा के रूप में नहीं चाहते राज्य के बाद राज एक असफलता के बाद दूसरी असफलता काफी थी इस बात की ओर इशारा करने के लिए कि मनुष्य ऐसे राजा को नहीं ला सकता जो पाप से उन्मुक्त हो।

यह राजा आखिर कर बिना अच्छे नियम के हम कुछ अंकुश की कृतियों के समान है कठपुतली कठपुतली के समान थे उन्होंने उत्कृष्ट के उद्देश्यों को पूरा किया कोई भी धर्मनिरपेक्ष सरकार नहीं पर एक शासक को यह चुनना था कि वह परमेश्वर के रास्ते पर चलें या उस देश की रूपरेखा के अधीन हो जाए

कोई व्यक्ति लोकतंत्र को अधिकारों के ऊपर जोर देने के साथ या तकनीकी की बढ़ोतरी जिसके द्वारा मनुष्य के जीवन की घटनाएं कम हो जाए इस प्रकार से कल्पना कर सकता है परंतु हम यह कहते हैं कि इस पोस्ट को थोड़ा इस समय लगता है कि उस प्रणाली में चुपके से पुस्तकें और हमारे जीवन में जहर घोल सके तब बहुत दर्द बढ़ जाएगा।

व्यवस्था ने सरकारों में भ्रष्टाचार की शुरूवात नहीं करें यह भ्रष्टाचार आसानी से उत्पत्ति की शुरुवात में उन शहरों में देखी जा सकती है जिसको पहले द्वारा नाश किया जाना था जल प्रलय के बाद शहर के राज्य स्वर्गीय राजा को चुनौती देने वाले स्थान बन गए । (उत्पत्ति 11:1-9)

हमने देखा कि इसराइल का देश और उसकी समस्या से उन्मुक्त नहीं था परमेश्वर ने लोगों को चेतावनी दी एक राजा अनावश्यक मुझको लोगों पर लेकर आएगा यह लगभग भले राजा के साथ भी होगा (1शमूएल 8 :10- 20) ऊंचे स्थानों पर भ्रष्टाचार देश को उसके अधीन में तोड़ देता है परमेश्वर को आवश्यक होता है कि वह इस को हाथ में लेगा तब ले और अपने लोगों पर राज्य करें ताकि एक लंबे समय की सहायता उन्हें मिल सके परमेश्वर ने यह अपने पुत्र को भेजकर किया एक सच्चा छुड़ाने वाला उसको इस संसार में ।

यीशु मसीह एक राजा के रूप में

नया नियम प्रभु यीशु मसीह के अद्भुत परिचय से आरंभ होता है परमेश्वर मनुष्य बना हर एक समाचार उसको एक विशेष रूप से प्रस्तुत करता है यीशु का परिचय उस राजकीय वंश चर्च वंशज के रूप में किया जाता है जिस राजा का वायदा किया था जो अपने ही लोगों को थोड़ा आएगा उसका नाम यह जिसका शाब्दिक अर्थ है छुड़ाने वाला या बचाने वाला इसी कारण से यह सुखी दो वंशावली दिखाती है कि वह दाऊद की संतान दो अलग-अलग मनचलों से आती है मस्ती और लूट का में यह अभिलेख है ।

दाऊद एक नियुक्त किया गया राजा था परंतु पारंपरिक रुप से कई राजा राजवंश होने के कारण से राजा बनते हैं परंतु यीशु दाऊद के सारे वंशजों में से सबसे बढ़कर था लुक्का 1:35 अभिषेक जिसका अर्थ है मसीह यीशु जो दाऊद से वायदे किए गए थे उनको प्राप्त करने वाला बना 2 शमूएल 7:12-13 उसकी में का अनुभव तथा निम्नलिखित कृत्य उसके राजकीय अभिषेक को बताते हैं । जब तेरी आयु पूरी हो जाएगी, और तू अपने पुरखाओं के संग सो जाएगा, तब मैं तेरे निज वंश को तेरे पीछे खड़ा करके उसके राज्य को स्थिर करूंगा। मेरे नाम का घर वही बनवाएगा, और मैं उसकी राजगद्दी को सदैव स्थिर रखूंगा। 2 शमूएल 7:12-13

हमारा सबसे उत्तम उपहार वह राजा था जो स्वर्ग से आया और जो उस पाक के स्वभाव से संक्रमित नहीं था बाइबिल इस हद तक जाती है कि हम जान पाते यीशु एक वारि से जन्मा भक्ति और नौका देखें

आपका स्वभाव पिता से होकर बहता है और इसलिए कि यीशु का कोई भी पृथ्वी का शारीरिक firk नहीं था इसीलिए उस वह पाप में मानवीय स्वभाव का भागी नहीं हुआ परमेश्वर की योजना एक राजा के लिए शुरुआत से देखी जा सकती है उसे एक राजा की जरूरत थी जो राजा आदम का स्थान ले और शुरुआत से ही उसके पास योजना थी उसकी जगह दूसरे को रखने की।

पहला फायदा जो प्रभु ने मनुष्य जाति से किया जिस कारण से उसे एक को भेजना पड़ा कि जो मनुष्य को पाप की बनवाई से निकाल सके यह हमें उत्पत्ति 3:15 में मिलता है यह सुसमाचार का प्रकार है यह है हालांकि बड़े संक्षिप्त रूप से यहां पर प्रकट किया है परमेश्वर के महान छुटकारे की योजना का एक महत्वपूर्ण पहला चिन्ह बन गया उसकी योजना व स्त्री के द्वारा दिखाई जाएगी जिसके द्वारा वह छुड़ाने वाला आएगा पौलुस इस वायदे को चिन्हांकित करता है xykfr;ksa 4:4-5 यह पुत्र जो उस व्यवस्था के द्वारा दोषी ठहराए गए हैं उनको छुड़ाने में एक मुख्य औजार रहेगा परमेश्वर ने मनुष्य के अंदर दोनों आशा का बीज बोया है तथा इस बात का निश्चय किया है कि परमेश्वर अपने अनुभव को मनुष्य के लिए लेकर आएगा अनुग्रह को मनुष्य के लिए लेकर आएगा यह मनुष्य की हाल ही की असफलता के लिए बहुत महत्वपूर्ण था ।

परमेश्वर का राज्य

यह शब्द राज्य शाही अधिपत्य की ओर संकेत करता है हर एक राज्य को एक राजा की आवश्यकता होती है इस बात को कहकर कि परमेश्वर का राज्य निकट है और यहां पर है यह शिव अपने श्रोताओं को

यह जानकारी दे रहा है कि एक नया राजा है। और जिस नगर में जाओ, और वहां के लोग तुम्हें उतारें, तो जो कुछ तुम्हारे साम्हने रखा जाए वही खाओ। वहां के बीमारों को चंगा करोऔर उन से कहो :, कि परमेश्वर का राज्य तुम्हारे निकट आ पहुंचा है। YkwDdk 10:8-9

इस बात पर ध्यान दें कि यह वाक्य परमेश्वर राज्य बार-बार दोहराया जाता है यह राज्य जिसके विषय में यह शिव बात कर रहा है यह सीमाओं से बात राज नहीं है या इस पृथ्वी पर कोई खास राष्ट्र किया था परंतु एक जिस पर परमेश्वर के अधिकार की विशेषताएं हैं स्वर्गीय राज का विचार पुराने नियम में पहली बार कब स्थापित होता है जब इजरायल एक पवित्र राष्ट्र था। और तुम मेरी दृष्टि में याजकों का राज्य और पवित्र जाति ठहरोगे। जो बातें तुझे इस्त्राएलियों से कहनी हैं वे ये ही हैं। निर्गमन 19:6

परमेश्वर के राज्य का मूल विचार पूर्ण चक्र से आता है जब परमेश्वर खेलो जो वर्तमान में पूरी पृथ्वी पर पहले हैं एक थे परमेश्वर की उपस्थिति में मसीह के द्वारा एक ये गए पर इस बात को स्पष्ट करता है परमेश्वर के लोगों को कलीसिया बुलाकर और ;ktdksa का समाज कहकर जहां भी परमेश्वर के लोग रह रहे हैं वहां परमेश्वर का राज्य है । 1 पतरस 2:9 , प्रकाशितवाक्य 5:10

यह घोषणा का वक्तव्य जो प्रकाशितवाक्य में है अब और तब की ओर इशारा करता है जो नई पृथ्वी और नए आकाश में पूर्ण होगी कलीसिया परमेश्वर का राज्य है तथा उसमें सब पवित्र लोग सम्मिलित हैं दूसरे शब्दों में हम परमेश्वर के लोग की रीति से अपने सामर्थ्य और

प्रेमी परमेश्वर की उपस्थिति में रह पाते हैं पाएंगे जब वह हमें उस अंतिम न्याय के पश्चात एकत्र करेगा।

यह वाक्य वाक्यांश परमेश्वर का राT; नए नियम में 65 बार इस्तेमाल किया गया है यह महत्वपूर्ण है क्योंकि यह परमेश्वर के अधिकार और सामर्थ्य की घोषणा करता है तथा तथा यह क्षेत्र हमारे मध्य में है यह वह नहीं जो भविष्य में आएगा अपनी ijh{kk के दौरान यीशु मैं इस बात को कहा कि उसका राज्य इन संसार का नहीं यह कहने से यीशु अपने लिए उस राज्य के ऊपर अधिकार का दावा कर रहा है और यह कह रहा है कि सारे राष्ट्र उस अधिकार के अधीन हैं एक नजर परमेश्वर के राज्य के विषय में कुछ पदों को देखें :

और वह याकूब के घराने पर सदा राज्य करेगा; और उसके राज्य का अन्त न होगा। (लुक्का 1:33)

परन्तु उस ने उन से कहा; मुझे और और नगरों में भी परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाना अवश्य है, क्योंकि मैं इसी लिये भेजा गया हूं। (लुक्का 4:43)

तब उस ने अपने चेलों की ओर देखकर कहा; धन्य हो तुम, जो दीन हो, क्योंकि परमेश्वर का राज्य तुम्हारा है। (लुक्का 6:20)

इस के बाद वह नगर नगर और गांव गांव प्रचार करता हुआ, और परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाता हुआ, फिरने लगा। (लुक्का 8:1)

और उन्हें परमेश्वर के राज्य का प्रचार करने, और बिमारों को अच्छा करने के लिये भेजा। (लुक्का 9:2)

मैं तुम से सच कहता हूं, कि जो यहां खड़े हैं, उन में से कोई कोई ऐसे हैं कि जब तक परमेश्वर का राज्य न देख लें, तब तक मृत्यु का स्वाद न चखेंगे। (लुक्का का 9:27)

समाज प्रभु यीशु मसीह के सामर्थी राज्य के अधीन रह रहे हैं और उसका राज्य है जो यह वायदा करता है आशा का वायदा करता है कि हम हम पृथ्वी की सरकारों को जो पार्क के भ्रष्टाचार के अधीन है उसे विपरीत में विश्वास रख सकें क्योंकि सरकारी विश्वासियों कि नहीं कि उन लोगों को सुरक्षा प्रदान कर सके जिनके ऊपर उनका अधिकार है अनैतिकता बढ़ती जाती है और सामाजिक हालत खराब होती जाती है ।

अमेरिका के संविधान में भी यह egRo है कि लोगों के हितों का की सुरक्षा करना है क्यों यह आसान है क्योंकि कोई भी उस अधिकार पर भरोसा नहीं रख सकता जब वह इतनी सांभर में आते हैं आप कल्पना कीजिए क्या होगा जब आप यूं ही एक राजा पर भरोसे को रखते हैं अधिकारी पर तथा उसके सारे अधिकारियों पर शासक पर वह आपके लिए हमेशा वही करेगा जो आपके लिए उत्तम है वह सच्चे रूप में आपकी सारी जरूरतों का ख्याल रखेगा तथा उस रास्ते में तमाम दूसरी जरूरतों के बारे में भी वह जानकारी रखेगा यह एक अद्भुत राज्य होगा हमें इसकी आशा नहीं करनी इच्छा नहीं करनी कि ऐसा राज्य हो क्योंकि ऐसा राज्य पहले से ही है क्योंकि परमेश्वर का राज्य एक राजा के द्वारा चलाया जाता है जिस पर भरोसा किया जा सकता है

एक सेवक राजा

कुछ प्रमुख सत्य को बताता है किस बात को विस्तृत रुप से बताते हुए कि परमेश्वर का पुत्र जो इस संसार में आया उसने परमेश्वर की महिमा

को त्याग दिया तथा एक मनुष्य का रूप धारण किया परमेश्वर मनुष्य बना एक साथ हम इस बात को मानते हैं कि परमेश्वर ने एक छुड़ाने वाले को भेजा परमेश्वर खुद आया एक मनुष्य का स्वरूप धारण करने के द्वारा वह मनुष्य था तथा वह आदम और वर्तमान मनुष्य को एक बेदाग आदम को के स्थान पर आकर मनुष्य को अपने द्वारा एक बेदाग सृष्टि के रूप में प्रस्तुत करें A

पौलुस इस पूरी यात्रा का सारांश देता है । सिaaहासन से सियासत तक जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो। जिस ने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। वरन अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया। और मनुष्य के रूप में प्रगट होकर अपने आप को दीन किया, और यहां तक आज्ञाकारी रहा, कि मृत्यु, हां, क्रूस की मृत्यु भी सह ली।इस कारण परमेश्वर ने उस को अति महान भी किया, और उस को वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है। कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और जो पृथ्वी के नीचे है; वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें। और परमेश्वर पिता की महिमा के लिये हर एक जीभ अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है।। फिलीपीन 25

इस भाग में कुछ मुख्य बिंदु हैं जिन्हें रेखांकित करना है

- वह परमेश्वर के स्वरूप में था (6)जो हमें यह स्मरण दिलाता है कि यीशु के उत्साही स्थान के विषय में जिस पर वह पृथ्वी पर आने से पहले था A

- उसने अपने आप को खाली कर दिया (7)साथ हमें सिखाता है उस रास्ते के विषय में जिससे येशु अपने सिहासन से उतरा और अपने आपको उस nSfo;s की सामर्थ से अलग कियाA
- वह मनुष्य के समान बन गया था (7) यह आदम जाति में एक मुख्य कदम थाA
- उसने अपने आप को uez कर दिया यहां तक कि उसने मृत्यु की सहेली (8) इस बात की ओर इशारा करता है कि किन तरीकों को परमेश्वर ने मनुष्य को छुड़ाने के लिए इस्तेमाल किए तथा यीशु के साथ पहचाने जाएं आदम के नहींA
- परमेश्वर ने उसको अति महान किया और उसे वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है और जो इशू नाम से हर एक घुटना टिकेगा (9-10) मसीह की नई चाहिए नेतृत्व को जो सब पर है प्रकट करता हैA

छुटकारे के कार्य में यीशु का मनुष्य बनना एक मुख्य कदम था वह मनुष्य बना ताकि वह हमारे लिए मर सके और इसलिए कि उसका बलिदान एक प्रभावशाली स्थानापन्न है छुटकारे का आदान-प्रदान मनुष्य के लिए मनुष्य के बदले मनुष्य होना जरूरी है विश्व की विश्वास योग्य सेवा मैं उसको पहले से और बेहतर स्थान पर ले गए एक राजाओं के राजा के रूप में इस प्रक्रिया को हम और अधिक विस्तृत रूप से देख सकते हैं आदमख़ोर एक प्रकार के रूप में समझने के द्वाराA

दूसरा आदम रोमियो (5:12-21)

आदम और दूसरा आदम मौलिक सिद्धांत है जो छुटकारे के विषय को जो पुराने और नए नियम के वचनों को जोड़ती है जब परमेश्वर ने मनुष्य का रूप धारण किया यहqUना 1:14 , वह मानवता के जूतों में अपने

कदम रखेA यीशु ने कई बार अपने आप को ना केवल परमेश्वर के पुत्र के रुप में बुलाया परंतु मनुष्य के पुत्र के रुप में यीशु को उसके मानवीय जीवन को धारण करने की रोशनी में तथा एक राजा के किरदार में आमतौर पर दूसरे आदम आदम के तौर पर लिया जाता है यीशु का विचार पहले आदम की असफलताओं पर बना है मानव जाति का प्रतिनिधि तथा एक शासक भीA

यह वाक्य शास्त्रों में इस्तेमाल नहीं किया गया है परंतु यह धर्म ज्ञान का विचार वचन कि कई पदों से समर्थित है रोमियो 5:14 में हम पढ़ते हैं आदमखोर एक अगुआ के समान एक प्रतिनिधि एक मध्यस्थ एक सहायक अन्यथा अन्यथा भी है हम पहले ग्रंथियों में इस किरदार को देख सकते हैं जहां पौलुस लिखता है की आदम में हम सब मरते हैं और elhg में हम सब जलाए जाते हैं 1 कुरिंथियों 15:22 उसके पश्चात वह यह कहता है यह भी लिखा है ऐसा ही लिखा भी है, कि प्रथम मनुष्य, अर्थात आदम, जीवित प्राणी बना और अन्तिम आदम, जीवनदायक आत्मा बना। 1 कुरिंथियों 15:45

रोमियो 5:11-21 दो मुख्य विषयों को का परिचय देते हैं

1. मनुष्य जाति आदम के अधीन तथा उसके पश्चात उसके पतन का जोड़ इसलिये जैसा एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई, और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, इसलिये कि सब ने पाप किया। रोमियो 5:12

2.विश्वासियों का दूसरे आदम के स्वामित्व के अधीन परमेश्वर के परिवार में स्थांतरण क्योंकि जब एक मनुष्य के अपराध के कराण मृत्यु ने उस एक ही के द्वारा राज्य किया, तो जो लोग अनुग्रह और धर्म रूपी

वरदान बहुतायत से पाते हैं वे एक मनुष्य के, अर्थात यीशु मसीह के द्वारा अवश्य ही अनन्त जीवन में राज्य करेंगे। रोमियो 5:17 लोगों का प्रतिनिधित्व उनके राजा के द्वारा होता है यदि आदम ने एक बेहतर चुनाव किया होता तो हम सब संपन्न होते परंतु इसके

बजाय हम सब ने उसके साथ पानी उठाई परंतु पुनः हम परमेश्वर की गुन्हा शिशु को प्राप्त कर सकते हैं इस चुनाव के साथ कि हम विश्वास के द्वारा उस दूसरे आदमी के साथA

यह योजना आसान नहीं थी कि अपने पुत्र को इस संसार में राज्य करने भेजें लोगों के लिए केवल एक राजा के अधीन में रहना उनको कुछ बेहतर नहीं दे सकती थी यह इसलिए कि वह अब भी उस शैतान की सामर्थ के अधीन रह रहे थे जिसने आदम से उस अधिकार को छीन लिया था ताकि उसके वंशज उस मृत्यु के अधीन हो जाए तो समाचारों में इस्त्राइली लोगों ने कोशिश करें कि यीशु को राजा के रूप में स्थापित करें यह सोचते हुए कि इस रीति से सब कुछ ठीक हो जाएगा परंतु एक चीज जो वह नहीं समझ पाए वह यह कि एक नए राजा से बढ़कर कुछ और ही आवश्यकता थी एक राजा अच्छे से राज्य कर सकता है परंतु उनकी विषम सिद्धि को एक तारणहार राजा की आवश्यकता थी जो उन्हें समर्थ करें कि अपने पूर्व अधिकारी के प्रति अपनी निष्ठा को छोड़ जीवन के राज्य जो एक नए-नए नेतृत्व की अधीर है शामिल होA

एक तारणहार राजा येशु राजा और मेमना

पूरे शास्त्रों में एक राजा का विषय दिखता है परंतु उसी के साथ-साथ छुटकारे का विषय भी है मनुष्य को एक मार्ग की आवश्यकता थी ताकि

वह परमेश्वर के राज्य में स्थानांतरित हो सके परमेश्वर ऐसे लोगों को चाहता था जो लोग को का हृदय उसके लिए हो परंतु उन्हें शमा की आवश्यकता थी हमारी उन्हें हृदय परिवर्तन की आवश्यकता थी उन्हें वरिष्ठ की अधिकता से आज़ाद होने की आवश्यकता थी और यह तभी संभव था एक प्रभु के द्वारा कि वह एक छुटकारे देने वाले तथा एक वायदा किया हुआ राजा के रूप में कार्य करें एक जो उनके मनुष्य जाति के पापों के कीमत को चुकता करें चुकता करें वह अपने लोगों को बचा सके और साथ ही साथ वह उसके अधिकार में भी आ सकें

यह शुभ का एक सिंह तथा एक मिलने के रूप में वर्णन है प्रकाशितवाक्य 21 :9,21:14, 21: 22- 23, 27, 22 :1,3 सिंह प्राकृतिक रूप से यीशु के राजा होने को बताता है तथा मेमना उसके उस क्रूस पर बलिदान को यह शिव एक राजा भी है तथा उसमें राज्य में प्रवेश करने का एक माध्यम भी कितना अद्भुत तारणहार यीशु हैA

निष्कर्ष

5000 लोगों को खिलाने के पश्चात लोगों ने चाहा के सुखों राजा बनाएंaaA यह यीशु के जीवन का एक मुख्य समय था हम पाते हैं कि अपनी महानता की बड़ाई को ना सुन सुना परंतु पिता के साथ समय बिताने की खोज में रहा यह एक धर्मी राजा का चित्र है जो अपने लोगों के लिए आशीष से लेकर आता है जो एक आशा का मजबूत हिना है जो जीवन को लेकर आता है उस समय जब यीशु के आगमन से पहले इजरायल अत्याचारी प्रशासन के अधीन था यह सर यीशु के राज्य की ओर संकेत देते हैं जिसके द्वारा उसके लोगों पर बड़ी आशीषें आएंगीA

भजन संहिता 72: 1-8 यूनानी शब्द से पहले आना आता है जिसका अर्थ है पुनः परमेश्वर की सर्वश्रेष्ठ योजना संकरण एक मार्टिन लॉयर डांस द्वारा इफिसियों की पथरी पर टिका पथरी पर टिका हालांकि हवा ने धोखा खाया परंतु अधिकार आदम का था उसने बिना धोखा खाए यह चुना कि परमेश्वर के विरोध में जाए आदम को हवा को आदम के सहायक के रूप में रचा गया था A देखें freqfFk;l 2:13-14

परमेश्वर के छुटकारे की योजना के साधन (6-10)

“मैंने इसके लिए भुगतान किया”

#6 छुटकारे की रुपरेखा

योजना के माध्यम से मैंने उसकी कीमत को चुकता किया छुटकारे का नक्शा छुटकारे की योजना समय के आरंभ से पहले हुई परमेश्वर की भविष्यवाणी को अपने भाइयों तथा आशा को अपने ही लोगों के मन में बोने के लिए माध्यम के रुप से इस्तेमाल किया उसकी योजना की ओर इशारा करते हुए तथा उन्हें स्मरण दिलाते हुए कि वह अकेले नहीं कई हजार भविष्यवाणियां है परमेश्वर इंसान प्रकाशनों इस्तेमाल करता है कि हमारे कौतूहल को तीव्र करें तथा मनुष्य की परमेश्वर के लक्ष्य तक अपने आप पहुंचने में असमर्थता को प्रकाश में लेकर आए यह शब्द इसलिए भी दिए गए कि हमारे रिश्ते को उभारे उसकी मसीह के रूप में भेंट की सराहना में ;gqUuk 3:16 fQलिlियों 38

परमेश्वर की बाहरी योजना अपने लोगों को बचाने पर बनी है क्योंकि संसार की शुरुवात से पहले इस का अस्तित्व था किसी एक में परमेश्वर की विशेष चुनाव को हम पौलुस द्वारा दिए गए विस्तृत विवरण में देख सकते हैं कि हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो, कि उस ने हमें मसीह में स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार की आशीष दी है। जैसा उस ने हमें जगत की उत्पति से पहिले उस में चुन

लिया, कि हम उसके निकट प्रेम में पवित्र और निर्दोष हों। इफिसियों 1:3-4

यह निष्कर्ष निकालना गलत होगा कि छुटकारे की योजना दूसरे दर्जे की योजना थी मानव की मनुष्य का पतन की जानकारी पहले से नहीं है तथा वह एक गलती थी यह काफी विपरीत है छुटकारे की योजना आरंभ से ही थी यह वाक्य पृथ्वी की न्यू पश्च रूप से जिस भौतिक संस्कार संस्कार को हम देखते हैं उसकी रचना के विषय में बताता है जो कि पृथ्वी आकाश तथा यह ब्रह्मांड जो भी समय योर में होता है उस से छुटकारे की योजना का पूरा पूरा लेना-देना है और यह इतिहास के मंच पर एक सामान्य विषय बन जाता है हालांकि छुटकारे की योजना सृष्टि की योजना के बाद समय में आता है छूट कार्य की योजना की रूपरेखा सृष्टि की अनंत योजना के पहले या उसके साथ बनाई गई

इन शब्दों के अर्थ कुछ लोगों को परेशान कर सकते हैं कि क्यों परमेश्वर विकसित सृष्टि को बढ़ने की अनुमति दे सकता है यदि परमेश्वर ikप और बलवा पसंद नहीं करता तो क्यों उसने ऐसी संसार की रचना की थी यह चीजें उसमें पनप सके A

दूसरे इस बात से चिंतित होते हैं कि क्यों परमेश्वर सबको नहीं लेकिन कुछ लोगों को चिंता है वह उन पर ध्यान लगाते हैं जिन्हें नहीं चुना किया इसके बजाय कि उन पर जिन्हें चुना गया है कई इस बात को सोचते हैं कि क्यों यीशु मसीह पर केंद्रित परमेश्वर के छुटकारे की योजना है जो कि तीसरे पद में उस में वर्णन है वह सोचते हैं कि क्या कई और रास्ते हैं A

परमेश्वर तक पहुंचने के लिए परमेश्वर अपनी योजना से प्रसन्न है वह उसकी पूर्णता की आशा रखता है वह इसे आवश्यक समझता है परंतु केवल इसीलिए कि उसने इन परिस्थितियों को उठने की अनुमति दे जो इस कविता को ला सके परमेश्वर की योजना ऐसी नहीं कि केवल बाहरी रुप से कार्य करें वह इस योजना में मुख्य खिलाड़ी है और चाहता है कि इस योजना में वह भागी हो और यह सब चीजें हम हमारी तरफ से एक पति उत्तर की मांग करती है यह रहस्यमयA

भविष्यवाणी जो पूरी हुई

पुराने नियम तथा नए नियम को पूरा देखने पर हम देख सकते हैं कि कैसे सारी भविष्यवाणियां पूरी हुई हम कई बार उनकी महिमा को देख नहीं पाते हम कई बार परमेश्वर के कार्य करने के तरीके को अपनाने में हिचकिचाते हैं हम उसे नीचे भी समझते हैं परमेश्वर हालांकि अपनी योजना के ऊपर घमंड करता है तथा बड़े उद्देश्य बड़े विस्तृत रूप से उद्देश्य से तथा जुनून से इनको पूरा करता है

इससे पहले कि हम आगे बढ़ें हम कुछ निष्कर्षों को छुटकारे की योजना के विषय में निकालेंगे :

- छुटकारे की योजना दूसरी सरदर्दी की योजना नहीं परंतु उत्तम योजना है A
- मसीही कि केवल परमेश्वर के तक एक मार्ग है A
- परमेश्वर अपने छुटकारे की योजना पर घमंड करता हैA

इस बिंदु पर हम शायद हर सवाल का जवाब ना दे पाए परंतु आगे इसके विषय में हम चर्चा करेंगे इस इंदु पर यह महत्वपूर्ण है कि विश्वास के द्वारा हम परमेश्वर की योजना को एक महिमा मैं योजना के

रूप में अपनाएं केवल जब हम परमेश्वर की योजना को अद्भुत योजना के रूप में अपनाते हैं वह हमें हम दूसरे मुख्य विचारों को समझना आरंभ करेंगे यदि हम सोचे कि हमारे विचार उत्तम है तथा आदर्श हैंतब हम अपने आप को दार्शनिक रूप से परमेश्वर के विरुद्ध पाएंगे जो हमे शंका शक तथा कम धर्मनिष्ठा में लेकर जाएगा यदि खुला या छुपा परमेश्वर के विरुद्ध नभि हो तोA

भविष्यवक्ता

यह अध्याय उस चुटकाले के इतिहास के चरणों को एक बार देखता है जो हम परमेश्वर के विषय में जानते हैं उस कारण से हमारा हृदय मसीह यीशु में आनंदित होना चाहिए तथा जिसके द्वारा हम छुड़ाए गए A

मसीह के विषय में भविष्यवाणियां

यह वाक्यांश यहां या उस आने वाले व्यक्ति तथा मसीह के कार्य के विषय में इशारे भविष्यवाणियां कहलाती है क्योंकि यह समय से पहले लिखी गई घटनाओं के होने से पूर्व अरे भविष्यवाणी परमेश्वर की योजना को परिभाषित करती है तथा स्पष्ट करती है तथा हमें यह स्मj.k दिलाती है कि परमेश्वर के मन में कितने व्यवस्थित हैं परमेश्वर अपनी योजना को किसी सड़क में नहीं बना रहा थाA सृष्टि से पहले पूर्ण रूप से व्यवस्थित की गई वह केवल सही समय का इंतजार कर रहा था A इतिहास में इन भविष्यवाणियों को बोलने के लिए बाइबल का इतिहास वास्तविक इतिहास है हर एक भाग का उसके समय तथा संदर्भ से नाता है परंतु वहां आने वाली घटनाओं के विषय में भी लुभाने वाली

भविष्यवाणी में जोड़ता है irjl भविष्यवाणियों के विषय में यह कहता है A

इसी उद्धार के विषय में उन भविष्यद्वक्ताओं ने बहुत ढूंढ़ढांढ़ और-पड़ताल की-जांच, जिन्हों ने उस अनुग्रह के विषय में जो तुम पर होने को था, भविष्यद्वाणी की थी। उन्होंने इस बात की खोज की कि मसीह का आत्मा जो उन में था, और पहिले ही से मसीह के दुखों की और उन के बाद होने वाली महिमा की गवाही देता था, वह कौन से और कैसे समय की ओर संकेत करता था। उन पर यह प्रगट किया गया, कि वे अपनी नहीं वरन तुम्हारी सेवा के लिये ये बातें कहा करते थे, जिन का समाचार अब तुम्हें उन के द्वारा मिला जिन्हों ने पवित्र आत्मा के द्वारा जो स्वर्ग से भेजा गयातुम्हें सुसमाचार सुनाया :, और इन बातों को स्वर्गदूत भी ध्यान से देखने की लालसा रखते हैं।। 1 irjl 1:10-12

परमेश्वर का इतिहास के प्रति दृष्टिकोण छुटकारे की योजना को प्रकट करता है जो केवल पुराने और नए नियम पवित्र शास्त्र में मिलता है रोमियो (1:19-20) हमने मसीह की भविष्यवाणी को के अध्ययन को चार वर्गों में बांटा है मसीह का जन्म मृत्यु पुनरुत्थान तथा राज्य यह बात जानना जरूरी है कि कई बार यह वर्ग आपस में मिलते हैंA

मसीह के जन्म के विषय में भविष्यवाणियां

मसीह के जन्म की भविष्यवाणियां सबसे अधिक जाने वाली है क्योंकि यह क्रिसमस के गीत तो के कारण तथा बार-बार दोहराए जाने वाले पद क्रिसमस के दौरान हर 1 वर्ष क्रिसमस के गीत केरल केरल केरल मक्खी के जन्म के विषय में बार-बार गाए तथा सुने जाते हैं एक पिता के रूप में मैंने अपने परिवार को इस बात में अगुवाई की कि मसीह के आने की

भविष्यवाणियों में महत्वपूर्ण बातों को जानने के लिए इस प्रकार के प्रश्न पूछना है मसीह का जन्म कहां हुआ या मसीह के जन्म में क्या खास बात हैमसीह के जन्म के विषय में कई भविष्यवाणियां जैसे बच्चा जनने वाली माता के चिन्ह भविष्यवाणियों के पूर्ण होने की तरफ इशारा करता है पुत्र को इस पृथ्वी पर आने के विषय में आलोकिक आलोकिक एक मनुष्य बना हम जितना इन भविष्यवाणियों के विषय में पढ़ते हैं उतनी ही जानकारियां हम मसीह के व्यक्तित्व तथा उसके कार्यों के विषय में पाते हैं इसमें से कुछ नीचे लिखी हुई है

मसीह के जन्म का स्थान (मhdk की 5:2)

हे बेतलेहेम एप्राता, यदि तू ऐसा छोटा है कि यहूदा के हजारों में गिना नहीं जाता, तौभी तुझ में से मेरे लिये एक पुरूष निकलेगा, जो इस्राएलियों में प्रभुता करने वाला होगा; और उसका निकलना प्राचीन काल से, वरन अनादि काल से होता आया है। (मhdk की 5:2)

सुंदर पत्र पद जो कि एक युद्ध के दृश्य में जुड़ा हुआ है जो हमें इस भीषण युद्ध से आने वाले समय के भविष्य में ले जाता है जब एक सेनापति उस युद्ध की के प्रभाव को खत्म कर देता है इस पद में विशेष जानकारी आने वाले शासक की जन्म स्थान बदले में प्रातः को बताता है वह एक छोटा सा गांव थाA जैसे इस पद में लिखा है नया नियम इस बात की पुष्टि करता

भविष्यवाणियों का उद्देश्य

- परमेश्वर हमारी जिज्ञासा को तीव्र करने के लिए उनका उपयोग करता हैA
- परमेश्वर की छुटकारे की योजना को स्पष्ट और परिभाषित करता हैA
- हमें परमेश्वर की अनन्त योजना की याद दिलाता हैA
- मनुष्य की अपनी शर्तों पर परमेश्वर के लक्ष्यों तक पहुँचने की क्षमता की अपर्याप्तता की घोषणा करनाA
- मसीह के अपने उपहार की पूर्ण प्रशंसा में जीने के लिए अपने दिल को हिलाओA

है A सो यूसुफ भी इसलिये कि वह दाऊद के घराने और वंश का था, गलील के नासरत नगर से यहूदिया में दाऊद के नगर बैतलहम को गया।

लुका 2:4 मैंने कभी नहीं सुना किसी को यह कहते हैं कि यीशु cSतलाम में पैदा नहीं हुआ 4 सुसमाचार यीशु के जन्म की कथा को मसीह के जन्म की कथा को बताते हैं परंतु सब इन भविष्यवाणियों की जो परमेश्वर की मसीहा की योजना के लिए थी पुष्टि करते हैं A एक शासक के कर की कर के द्वारा यूसुफ और मरियम दलील से बैतलहम की ओर धकेल ले गए पर यह परमेश्वर के समय के अनुसार था कि परमेश्वर ने चुना कि उस जोड़े को मसीह के जन्म के लिए बदले हमें लेकर आए A

एक कुंवारी के द्वारा उत्पन्न हुआ (यशायाह 7:14)

आहाज ने कहा, मैं नहीं मांगने का, और मैं यहोवा की परीक्षा नहीं करूंगा। तब उसने कहा, हे दाऊद के घराने सुनोक्या तुम मनुष्यों को ! उकता देना छोटी बात समझकर अब मेरे परमेश्वर को भी उकता दोगे? इस कारण प्रभु आप ही तुम को एक चिन्ह देगा। सुनो, एक

कुमारी गर्भवती होगी और पुत्र जनेगी, और उसका नाम इम्मानूएल रखेगी A यशायाह 7:14-12

यीशु मसीह का जन्म न केवल उस छोटे तुझ गांव बेतलेहेम में हुआ वह एक कुंवारी से भी जन्मा हालांकि मसीह के जन्म के स्थान की भविष्यवाणी काफी स्पष्ट थी कुंवारी से जन्म की भविष्यवाणी से महर्षि उत्पन्न होता है कैसे एक व्यक्ति कुमारी से जन्म ले सकता है यदि परमेश्वर का हाथ ना हो तो यह बिलकुल संभव हैA यह निश्चित रुप से वही बात है जिसे कुंवारी द्वारा जन्म से परमेश्वर सिद्ध कर रहा है एक स्त्री जो कभी भी किसी पुरुष के साथ नहीं रही गर्भवती थी मरियम और स्वर्गदूत के बीच में वार्तालाप जोलो का एक में मिलता है समझाता है लुक्का 13435 मरियम अपनी पहचान एक कुंवारी के रूप में देती है और उसका मंगेतर यूसुफ जब उसे मालूम चलता है उसे त्याग देने के लिए तैयार है उसका मंगेतर इस बात से हैरान होकर कि वह गर्भवती है और जैसे ही उसे मालूम चलता है वह तैयार है कि उसे त्याग दें परंतु यह मनुष्य का दृष्टिकोण है जो जनसाधारण की पुष्टि करता है स्वरूप एक विश्वसनीय अनुवाद को यह कहकर देता है कि ना केवल कैसे मरियम पवित्र आत्मा के द्वारा गर्भवती होगी तथा परमेश्वर सर्वशक्तिमान की सामर्थ के द्वारा परंतु यह भी कहता है कि उसमें परमेश्वर का स्वभाव होगा और वह परमेश्वर का पुत्र कहलायेगा A

कुंवारी स्त्री से जन्म की बात में मसीह के सभाओं का वास्तविक अर्थ के विषय में काफी मतभेद उत्पन्न हुआ आलोकिक मनुष्य या दोनों यह मत भेज काफी कुछ कालसी डोंकी महासभा हमें हल हुआ जिसने यह पुष्टि की की मसि यीशु मनुष्य तथा आलोकिक दोनों एक साथ था कुछ

सवाल हमारे मन में उड़ते हैं जब हम इन भविष्यवाणियों को तथा उनके पूर्ण होने को देखते हैं यह चीजें क्यों हो रही हैं वह क्या है जिसे जरूरत है कि परमेश्वर समय से पहले कुछ बात को हमें दिखाएं तथा समझाए प्रभु ना केवल उसके लोगों को लोगों के विश्वास को जो आने वाला है उस और दिखाने के द्वारा बढ़ाता है जैसा की प्रशंसक विधियां में इन भविष्यवाणियों का स्तेमाल परंतु साथ ही छुपे रूप से उसके छुटकारे की योजना को भी प्रकट करता है A

दाउद का tUe ¼2 शमूएल 7:12-13)

> जब तेरी आयु पूरी हो जाएगी, और तू अपने पुरखाओं के संग सो जाएगा, तब मैं तेरे निज वंश को तेरे पीछे खड़ा करके उसके राज्य को स्थिर करूंगा। मेरे नाम का घर वही बनवाएगा, और मैं उसकी राजगद्दी को सदैव स्थिर रखूंगा। ¼2 शमूएल 7:12-13)

आधुनिक मनुष्य अपने आप को बाध्य महसूस करता है कि अपने विश्वास को उल्लू के साथ जोड़ के आसपास है मिलादे इसके बजाय कि उनके पूर्वजों के विश्वास पर ध्यान केंद्रित करें यह बात मुख्यता इसलिए है कि ज्ञान तथा यात्रा गज्जक का चक्र बढ़ते जा रहा है ऐसा हम इससे पहले जो लोग हैं A उनके साथ नहीं था इतिहास में वंशावली एक मुख्य स्थान को रखती हैA

दूसरे शमूएल की भविष्यवाणी मर्जी के पहचान दाऊद के घराने के वंश से करती है प्रभु ने दाऊद से वायदा किया था 18वी आयत में दाऊद परमेश्वर के अचंभित करने वाले अनुग्रह के विषय में कहता है मसीह के आने कब आएगा दाऊद के परिवार में से था तथा यह वायदा पूर्ण हुआA

जब हम नए नियम को देखते हैं तो हम पाते हैं केशव दाऊद के वर्ष तथा अपने माता तथा पिता दोनों की तरफ से मस्ती उसके पिता की वशावली को बताता है यूसुफ केवल एक नैतिक पिता था परंतु शारीरिक पिता नहीं थाA मRrh 1:16 यह सार्वजनिक कानूनी कानूनी वंशावली है A सुलेमान के द्वारा नहीं परंतु नाथन के द्वारा दाऊद का एक और पुत्र और उसकी मरियम के साथ अनुवांशिक रिश्ताA

जब यीशु आप उपदेश करने लगा, जो लगभग तीस वर्ष की आयु का था और जैसा समझा) जाता थायूसुफ का पुत्र था (; और वह एली का। और वह मत्तात का, और वह लेवी का, और वह मलकी का, और वह यन्ना का, और वह यूसुफ का। लुक्का 3:23-24)

आप जैसे याकूब युसूफ का वास्तविक पिता था हेली मरियम का पिता यूसुफ का ससुर था कानूनी पिता यह बेहतर होगा कि हम रूका द्वारा दी गई वंशावली के द्वारा उस अंतर को समझा सके जैसे हम मसीह के पूर्वजों को मरियम के द्वारा देखते हैं और जैसे मस्ती उस वंशावली को उस राजकीय वंश को जो मसीह का है YouTube के द्वारा देखती है किसी भी प्रकरण में हालांकि कुछ मतभेद हैं इन दो वंशावलियों के सही अनुवाद की जो परमेश्वर के अद्भुत छुटकारे की योजना को और अधिक रहस्यमय बनाती है वह निश्चित रूप से इस वायदे को जोदा उसे किया की मशीन निश्चित रूप से उसके वर्ष से उत्पन्न होगा पूरा करता है ऐसे ही दो मार्गों से हुआ तरीकों से हुआ जो कि दो अलग-अलग पुत्रों के द्वारा सुलेमान तथा नाथनA

सारांश

यीशु मसीह का जन्म उस की शुरुवात का कोई आम तथ्य नहीं यह सुनियोजित था वायदा किया गया था तथा इसके विषय में भविष्यवाणी की गई थी इसका एक बड़ा छुटकारे का अर्थ है जैसे वह एक शब्द मनुष्य बनेगा जो उसके लोगों की जगह मारे जाने के लिए यीशु का जन्म हुआ जैसा वायदा किया गया था नेताओं के घर आने से तथा वह परमेश्वर के लोगों के ऊपर राज्य करेंगे यह बात है रोज के है रोज-रोज के परमेश्वर यीशु के जन्म के समय की सचेतता को दिखाता है समझाता है को समझाता हैA

धर्म ज्ञान की ओर से देखें यीशु का जन्म की शुरुआत एक रहस्यमय रूप से हुई यीशु का आलोकिक स्वभाव मनुष्य के दाग आप के दाग तथा आप को उपेक्षित करेगा जो मनुष्य के मानवीय प्रथाओं के द्वारा आया था और उसको एक धर्मिक द्वितीय आदम बनाएगा और उसे समर्थ करेगा किमती के लिए एक निर्दोष बलिदान बन सके के रूप में चढ़ा सके कई भविष्यवाणियां है जो मसीह यीशु के जन्म के चारों ओर है परंतु हम आगे बढ़ेंगे तो उसकी मृत्यु के विषय में हैं जो मसीह के जीवन के विषय में एक और पहलू।

यीशु की मृत्यु के विषय में भविष्यवाणियां

यीशु की जन्म के विषय में भविष्यवाणियों की पूर्णता ने मसीह के जीवन तथा उसके क्रूस पर कार्य को एक रूपरेखा प्रदान की मसीह का कार्य मुख्यतः उसके क्रूस के साथ पहचाना जाता है परंतु उसका धर्मी जीवन उसके शिक्षाएं संघीय तथा उसकी सेवाओं को अनदेखा नहीं करना है यह दृष्टिकोण इसीलिए आता है क्योंकि वशीकरण वशीकरण क्रूस पर

चढ़ाया जाना बहुत मुश्किल है तथा धर्म ज्ञान के अनुसार बहुत महत्वपूर्ण सुसमाचार भी वहां थोड़ा रुकते हैं तथा किताबों के एक बड़े भाग को उन घटनाओं के विषय में जो क्रूस तक ले जाती हैं समय बिताती हैं A यीशु की शिक्षाएं उसका प्रेम चंद आया तथा इत्यादि

उसके कार्य से जुड़े चीजें तथा भविष्यवाणी थी जो इसकी पुष्टि करता है कि यीशु कहां पूर्व अध्यक्ष हुआ पुनरुद्धार हुआA यशायाह 9:1 और उसकी चंगाई की सेवकाई यह यशायाह 35: 5- 10 यह बातें और

भविष्यवाणी के साथ जो मसीह के राज को बताती हैं मिलती है परंतु यीशु की मृत्यु बिना किसी संख्या के सबसे महत्वपूर्ण बना रहता है क्योंकि उस छुटकारे की योजना की शुरुआत में अहम भूमिका निभाने के लिए तथा परमेश्वर के लोगों को उनकी बदहाली से जो उस दुष्ट के प्रति भी आजाद करने में

यीशु की क्रूर मृत्यु (भजन संहिता 22:1, 14-18)

हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया? तू मेरी पुकार से और मेरी सहायता करने से क्यों दूर रहता है? मेरा उद्धार कहां है? मैं जल की नाईं बह गया, और मेरी सब हड्डियों के जोड़ उखड़ गए: मेरा हृदय मोम हो गया, वह मेरी देह के भीतर पिघल गया। मेरा बल टूट गया, मैं ठीकरा हो गया; और मेरी जीभ मेरे तालू से चिपक गई; और तू मुझे मारकर मिट्टी में मिला देता है। क्योंकि कुत्तों ने मुझे घेर लिया है; कुकर्मियों की मण्डली मेरी चारों ओर मुझे घेरे हुए है; वह मेरे हाथ और मेरे पैर छेदते हैं। मैं अपनी सब हड्डियां गिन सकता हूं; वे मुझे देखते और निहारते हैं; वे मेरे वस्त्र आपस में बांटते हैं, और मेरे पहिरावे पर चिट्ठी डालते हैं। (भजन संहिता 22:1, 14-18)

कोई भी जो तू समाचारों से परिचित है यीशु के मृत्यु के विषय में असंख्य विवरणों की सूची को यहां पर देखकर अचंभित होगा भजन संहिता 22 यीशु के खुद के शब्दों को बताते हुए शुरू होता है हे मेरे परमेश्वर हे मेरे परमेश्वर तूने मुझे क्यों छोड़ दिया जो उसके दर तथा उस समय जब परमेश्वर ने उसकी मृत्यु के समय उसको छोड़ दिया था उसके प्रति उत्तर को का सार है eRrh 27 :46 क्यों यह भावनात्मक प्रतिउत्तर कालिका जाना का लिखा जाना महत्वपूर्ण है शायद जिस विधि से यह पाठक के ध्यान को आकर्षित करता है तथा उसको यह सोचने की ओर ले जाता है की क्या चीज है जो इतनी पीड़ा को लाता हैA

हालांकि भजन संहिता 22 क्रूस का जिक्र नहीं करता 14 पद में यीशु के कुछ भयावह मौत को तो उसे खुश क्रूस पर सही वह सारे चिन्ह मिलते हैं यीशु क्रूस पर टंगा हुआ था तैर के जख्मों के बावजूद वह अपने शरीर को ऊपर खींच कर सांस लेने की कोशिश कर रहा था परंतु उन पैरों पर कुछ दबाव देने की आवश्यकता ने दर्द को और बढ़ाया उन जख्मों के कारण जो उसके हाथों में थे यीशु उनसे जो खुश पर लटकाए जाते हैं कुछ समय पहले मर गया उसके हृदय के फूटने के कारण यहqUना 19:34

आयत यीशु के Nsns जाने के विषय में बताती है परन्तु सिपाहियों में से एक ने बरछे से उसका पंजर बेधा और उस में से तुरन्त लोहू और पानी निकला। यहqUना 19:34 सैनिकों द्वारा उसके वस्त्रों के ऊपर चिट्ठियों का डालना उस अपेक्षा किए हुए दृश्य दृश्य को बताता है A

जिस के विषय में वह सैनिक नहीं जानते थे जो कई सौ साल पहले दाऊद के समय भविष्यवाणी की गई थी उन्होंने मेरे वस्त्र को अपने बीच में भाग लिया और उस पर चिट्ठियां डाली जब सिपाही यीशु को क्रूस पर चढ़ा चुके, तो उसके कपड़े लेकर चार भाग किए, हर सिपाही के लिये एक भाग और कुरता भी लिया, परन्तु कुरता बिन सीअन ऊपर से नीचे तक बुना हुआ थाइसलिये उन्होंने आपस में कहा :, हम इस को न फाडें, परन्तु इस पर चिट्ठी डालें कि वह किस का होगा। यह इसलिये हुआ, कि पवित्र शास्त्र की बात पूरी हो कि उन्होंने मेरे कपड़े आपस में बांट लिये और मेरे वस्त्र पर चिट्ठी डालीसो सिपाहियों ने ऐसा ही : किया। यूहन्ना 19 :23-24

कई में से कुछ छोटे विवरण है जिसे एक ही भाग से लिया गया है जो elhg के दर्दनाक और शर्मनाक मृत्यु का वर्णन करते हैं उस दर्द और बेइज्जती के बावजूद elhg परमेश्वर की महिमा की तथा उस दुष्ट के ऊपर जीत का दावा किया यीशु की आकस्मिक मृत्यु को परमेश्वर की योजना की पूर्णता के रूप में सोचा जाना चाहिए इसके बजाय कि यह मनुष्य की योजना की पूर्णता

यीशु की बलिदानी मृत्यु (यशायाह 53)

निश्चय उसने हमारे रोगों को सह लिया और हमारे ही दुखों को उठा: लिया; तौभी हम ने उसे परमेश्वर का माराकूटा और दुर्दशा में पड़ा हुआ- समझा। परन्तु वह हमारे ही अपराधो के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के हेतु कुचला गया; हमारी ही शान्ति के लिये उस पर ताड़ना पड़ी कि उसके कोड़े खाने से हम चंगे हो जाएं। हम तो सब के सब भेड़ों की नाईं भटक गए थे; हम में से हर एक ने अपना अपना

मार्ग लिया; और यहोवा ने हम सभों के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया।। यशायाह 53:4-6

यह भाग भजन संहिता 22 के समान उस संपूर्ण भविष्यवाणी का छोटा सा भाग है जैसे भविष्य भजन संहिता भाई इस विषय में जानकारी देता है जो मसीह की मृत्यु पर घटित हुआ यशायाह 53 (;g यशायाह 52:13 से आरंभ होता है) एक महत्वपूर्ण विस्तृत सेवक का गीत जो मसीह की मृत्यु के अर्थ को बताता है यह जानना तथा विश्वास करना कि मस्ती उस ग्रुप पर एक चीज के लिए मारा गया यह उस से बिल्कुल अलग है कि यह समझना उसके मृत्यु का कारण क्या था यह जानना और विश्वास करना की यीशु उस पर मरा एक बात है परंतु यह समझना कि उसकी मृत्यु का कारण क्या है बिल्कुल अलग बात है यह महत्वपूर्ण है की विश्वास के साथ-साथ समझ भी होना चाहिए इसी कारण बचन का यह भाग उत्कृष्ट है तथा नए नियम के भागों में इसकी चर्चा है A

> वह गाली सुन कर गाली नहीं देता था, और दुख उठा कर किसी को भी धमकी नहीं देता था, पर अपने आप को सच्चे न्यायी के हाथ में सौपता था। वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिए हुए क्रूस पर चढ़ गया जिस से हम पापों के लिये मर कर के धामिर्कता के लिये जीवन बिताएंउसी के मार खाने से तुम चंगे : हुए। क्योंकि तुम पहिले भटकी हुई भेड़ों की नाईं थे, पर अब अपने प्राणों के रखवाले और अध्यक्ष के पास फिर आ गए हो। 1पतरस 2:23-25 ।

जैसा या मसीहा की वेदना और दर्द के ऊपर वक्तव्य देता है परंतु इस पर भी कैसे परमेश्वर के लोगों की जगह उसने अपने ऊपर इन बातों

को ले लिया यशायाह 53:4-5 वह ना केवल हमारे पापा के लिए मारा और कुछ लग गया परंतु उसने यह है हमारी जगह को ले लिया किसी और के स्थान पर प्रयाश्चित करना जैसा से बुलाया जाता है मसीह के उसको उस पर कार्य को समझने में एक महत्वपूर्ण कुंजी है यीशु हमारे लिए केवल ऐसे ही नहीं मर गया एक खास तरीके से उसने परमेश्वर के उस क्रोध को जो मनुष्य के विरोध में था उसके पाप के कारण से उसे शांत किया परमेश्वर से उसके लोगों का मेल मिलाप करने के लिए मृत्यु वह कीमत थी जिसे चुकाना था छुटकारे का यह विषय शास्त्रों में हर जगह देखा जा सकता ।

छटवा पद खासतौर से मसीह के क्रूस पर हमारे पापों के साथ कार्य को जोड़ता है उसी की मृत्यु एक दुर्घटना नहीं थी उसने चुना कि वह हमारे लिए बलिदान दे तथा हमारे लिए वह पापा की शमा के लिए पश्चाताप इवेंट बन जाए पाप का यह पहलू हमें यह शौक कि उस क्रूस पर मृत्यु के कारण को ध्यान में रखने के लिए स्मरण दिलाता है दसवा पद और भी अधिक स्पष्ट चित्रण को देता हैA

तौभी यहोवा को यही भाया कि उसे कुचले; उसी ने उसको रोगी कर दिया; जब तू उसका प्राण दोषबलि करे, तब वह अपना वंश देखने पाएगा, वह बहुत दिन जीवित रहेगा; उसके हाथ से यहोवा की इच्छा पूरी हो जाएगी। यशायाह 53:10 यहां मसीह की मृत्यु का एक पूरा नया आयाम देखने को मिलता है परमेश्वर मसीह को कुचलता है तथा मसीह की मृत्यु एक दोष बली के रूप में देखी जाती है इसके बजाय कि ऐसे ही बड़ी भीड़ का कृत्य है मसीह की मृत्यु सुनियोजित समायोजित सुनियोजित थी तथा परमेश्वर के छुटकारे की योजना के 1 मुख्य भाग

को वह पूरी करती है धर्म ज्ञान की रूप से इन बातों के महत्व को आनेवाले अध्याय में स्पष्ट किया जाएगा हालांकि यहां पर पुराने नियम की भविष्यवाणियों में स्पष्ट तौर से लिखा हुआ हैA

यीशु की महान अदला-बदली (जकरिया 11: 12- 13)

तब मैं ने उन से कहा, यदि तुम को अच्छा लगे तो मेरी मजदूरी दो, और नहीं तो मत दो। तब उन्होंने मेरी मजदूरी में चान्दी के तीस टुकड़े तौल दिए। तब यहोवा ने मुझ से कहा, इन्हें कुम्हार के आगे फेंक दे, यह क्या ही भारी दाम है जो उन्होंने मेरा ठहराया है? तब मैं ने चान्दी के उन तीस टुकड़ों को ले कर यहोवा के घर में कुम्हार के आगे फेंक दिया। (जकरिया 11: 12- 13)

यह भविष्यवाणियां मुख्यता पहली छुटकारे के विषय में एक नए विचार का स्मरण हमें दिलाती है यह आसान है इस्कॉन विचार को याद रखना मसीह के मृत्यु के द्वारा उसके बचाने के कार्यक्रम परंतु उसकी मृत्यु का एकदम जाना-पहचाना पहलू है जिसमें छुटकारे की खरीदारी है इन दोनों बातों का मसीह के जीवन के मूल्य से लेना देना है जिसे फरिश्तों ने एक गुलाम की कीमत के रूप में रखा था 30 चांदी के सिक्केA (निर्गमन21:32)

यदि मैं उसे तुम्हारे हाथ पकड़वा दूं, तो मुझे क्या दोगे? उन्होंने उसे तीस चान्दी के सिक्के तौलकर दे दिए। मRrh 26:15 इस मूल्य को कब्र की ज़मीन के लिए इस्तेमाल किया गया क्योंकि यहूदा कृतियों ने यहूदा उसको रोती होने अंत में इसको लेने से इनकार कर दिया थाA

तब जो वचन यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया था वह पूरा हुआ; कि उन्होंने वे तीस सिक्के अर्थात उस ठहराए हुए मूल्य को

ले लिए। (जिसे इस्त्राएल की सन्तान में से कितनों ने ठहराया था) और जैसे प्रभु ने मुझे आज्ञा दी थी वैसे ही उन्हें कुम्हार के खेत के मूल्य में दे दिया।। मRrh 27:9-10

यीशु की मृत्यु के पहले एक ऐसा कृत्य था जिसने यीशु क और अधिक हमारे समान बना दिया एक दास के रूप में वरन अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया। (फिलीfli;ksa 2:7) यूसुफ के समान हो उसे उसके भाइयों के द्वारा भेजा गया 20 चांदी के सिक्कों के लिए जो दांतों को देने का उस समय मैं मूल्य था एक बार जब पैसों का आदान-प्रदान हो जाता युसूफ उन दासों की खरीद फरोख्त करने वालों का हो जाता इसी समान यीशु की उस दास की कीमत पर बेचा गया गुलामी में बेचा गया तथा उसने हमारा स्थान लिया एक बार जब कीमत को दे दिया गया तो यह शुभ वास्तविक रूप से मनुष्य के समान बन गया फिलीपींस 28 कहता है यह आदान प्रदान काफी था जब मसीह का जीवन दिया गया तब परमेश्वर के लोग शैतान की बंधवाई से आजाद किए गएA

सारांश

उस समय से यीशु अपने चेलों को बताने लगा, कि मुझे अवश्य है, कि यरूशलेम को जाऊं, और पुरनियों और महायाजकों और शास्त्रियों के हाथ से बहुत दुख उठाऊं; और मार डाला जाऊं; और तीसरे दिन जी उठूं।

इस पर पतरस उसे अलग ले जाकर झिड़कने लगा कि हे प्रभु, परमेश्वर न करे; तुझ पर ऐसा कभी न होगा। उस ने फिरकर पतरस से कहा, हे शैतान, मेरे साम्हने से दूर होतू मेरे लिये ठोकर का का :रण है;

क्योंकि तू परमेश्वर की बातें नहीं, पर मनुष्यों की बातों पर मन लगाता है। eRrh 16% 21- 23

जब यीशु ने अपनी मृत्यु के विषय में बोलना आरंभ किया पतरस ने यीशु को फटकारा यह इस बात को जाना की पतरस परमेश्वर की इच्छा पर ध्यान को नहीं लगा रहा परंतु उस पर जो उसे ठीक लगता है A

इसके बावजूद केवल भविष्यवाणियां अनगिनत है तथा बहुत स्पष्ट है पत्थर और दूसरे इस बात को नहीं समझ पाते क्यों मसीह की मृत्यु आवश्यक है यीशु देख सकता था यह मार्ग उसे कहां ले जा रहा है हमारे पास केवल यही अनदेखे नहीं करती है परंतु मसीह के जीवन के द्वारा उसकी कीमत को चुकाया भी गया इसी कारण से कई मसीही गीत क्रूस पर केंद्रित होते हैं तथा क्यों सुसमाचार थोड़ा रुककर अधिक समय ग्रुप के पहले तथा उसके पश्चात की घटनाओं का विवरण देने पर बिताते हैंA

यीशु के पुनरुत्थान की भविष्यवाणियां

जैसे मसीह की मृत्यु उसको उस पर छुटकारे की योजना में अहम भूमिका को निभाता है वही पुनरुत्थान सुसमाचार का एक अहम् भाग बना रहता है पुणे मृत्यु यह मसीह की मृत्यु के समान शास्त्र के कई भाग मसीह के मुर्दों में से जी उठने की भविष्यवाणी को करते हैं पुनरुत्थान मसीह की सामर्थ हो उस मृत्यु पर दिखाती है तथा उस उद्देश्य को जो वह हमारे जीवन के द्वारा पूरी करेगा बिना पुनरुत्थान कोई प्रभु यीशु नहीं है उसका जीवन हमें एक नए स्वभाव को बंद करता है और हमें समर्थ करता है कि अपने कमजोर और पाप में शरीर के द्वारा एक नए जीवन को जी सकें पहला पतरस 1377 मसीह की धार्मिकता भी महत्वपूर्ण है

जो विश्वास के द्वारा हमारे जीवन पर आती है पुनः यदि कोई पूर्व ध्यान नहीं तो हम मसीह में नहीं उसने मसीह के साथ हमें जलाया अनुग्रह के द्वारा तुम बचाए गए तथा उसी के साथ हम जलाए गए और स्वर्गीय स्थानों में बस्ती में हम बिठाए गए बिठाए गए एपिसोड 256

यीशु का प्रभुत्व (भजन संहिता) 22:22

मैं अपने भाइयों के साम्हने तेरे नाम का प्रचार करूंगा; सभा के बीच में तेरी प्रशंसा करूंगा। (भजन संहिता) 22:22

भजन संहिता 22 ना केवल मसीह की मृत्यु की बदसूरत तथ्यों की भविष्यवाणी करता है परंतु उस आने वाले पुनरुत्थान की ओर भी इशारा करता है उस मृत्यु के धूल से आशा जीवित हुए प्राणियों का लेखक दूसरे अध्याय में इसको विस्तृत रूप से बताता है A

क्योंकि पवित्र करने वाला और जो पवित्र किए जाते हैं, सब एक ही मूल से हैंइसी कारण वह उन्हें भाई कहने से : नहीं लजाता। पर कहता है, कि मैं तेरा नाम अपने भाइयों को सुनाऊंगा, सभा के बीच में मैं तेरा भजन गाऊंगा। इब्रानियों 2:11-12

लेख कहता है कि हमारा छुड़ाने वाला हमारा शुद्ध करने वाला तथा हम उस के शुद्ध किए हुए लोग सब एक पिता से हैं हम सब उसकी आत्मा के द्वारा जीते हैं तथा परमेश्वर के साथ संगति रखते हैं इस पद में लेखक लिखता है मेरे भाइयों जो भजन संहिता 22:22 से है यह हमें स्वर्ण दिलाने के लिए है कि हम सब येशु के साथ तथा एक पिता के साथ एक परिवार में है यीशु अपनी सेवकाई को हमारे मध्य में कर रहा है तथा उसकी आत्मा के द्वारा हमसे संचार करता है प्रभु के सक्रिय रुप से उसके लोगों के साथ के ऊपर कार्य करें बिना कैसे उसकी सेवकाई आगे

बढ़ सकती है सच यह है कि ऐसा नहीं हो सकता हालांकि ऐसा नहीं है जहां दो या तीन मेरे नाम से इकट्ठे होते हैं मैं उनके बीच में उपस्थित होता हूं A मRrh 18:20 यीशु जीवित है तथा ठीक है अपने लोगों की अगुवाई करते हुए तथा उनसे प्रेम रखते हुएA

यीशु का पुनरुत्थान एक प्रमाण

इसलिये परमेश्वर आज्ञानता के समयों में अनाकानी करके, अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है। क्योंकि उस ने एक दिन ठहराया है, जिस में वह उस मनुष्य के द्वारा धर्म से जगत का न्याय करेगा, जिसे उस ने ठहराया है और उसे मरे हुओं में से जिलाकर, यह बात सब पर प्रामाणित कर दी हैA izsfjr 17%30-31

यीशु का पुनरुत्थान बस रूट से परमेश्वर की सामर्थ मसीह में होने का प्रमाण है वह मारा गया परंतु 3 दिन पश्चात वह पुनः जीवित हुआ यीशु का पुनरुत्थान एक केंद्र बिंदु बन गया जिसके आधार पर लोगों को यह आवाज दिया गया किसी समाचार के संदेश के इस सत्य का प्रत्युत्तर दें केवल ऋषि की मृत्यु को मान लेना हमारे उद्धार के लिए अपर्याप्त हैं वह जीवित है और चाहता है कि हम उसके मार्ग में उसके पीछे चलें हमें अपने पापों से पश्चाताप करना है और उसकी ओर मुड़ना है यीशु भूत काल का कोई याद नहीं परंतु एक पुलकित न्याई है जिसे मानना है तथा एक बचाने वाला जो वास्तविक रूप से हमें बचा सकता हैA

यीशु का पुनरुत्थान तथा योना

यहोवा ने एक बड़ा सा मगरमच्छ ठहराया था कि योना को निगल ले; और योना उस मगरमच्छ के पेट में तीन दिन और तीन रात पड़ा रहा॥ योना 1:17

परमेश्वर का छूट कार्य की योजना पूर्ण हुई इसमें मसीह की मृत्यु सम्मिलित थी क्योंकि इस तरीके से परमेश्वर के लोगों को पापों की शमा तथा शैतान के चंगुल से आजादी मिली परंतु मसीह की मृत्यु केवल 3 दिन तक रहे मृत्यु को भी के ऊपर की विजय को प्राप्त करना था तथा जूना की कथा इस बात को चित्रित करती है यीशु ने खुद यह कहा 32164 जिस ही आपके साथ प्रेरित आगे बढ़े जो इस बात के निश्चय पर आधारित था कि यह जीवित है वह नित्य नहीं है और योना के समान जैसे 3 दिन में वह वापस आया यह भी यीशु भी वापस आयाA

मौत को मात देना भजन संहिता 16: 10

इस पद का इसके अलावा क्या अर्थ होगा की मशीन मारा जाए तथा उसका शरीर खराब ना हो परमेश्वर इसकी अनुमति नहीं देगा यीशु का पुनरुत्थान परमेश्वर कि उस योजना के लिए जिसके द्वारा वह परमेश्वर के लोगों के साथ गरीबी संबंध को बनाएंमहत्वपूर्ण है तथा अनुरूप है क्योंकि यह सहभागिता तब ही आ सकती है जब एक उधारकर्ता निरंतर रूप से उनके लिए मचलता करें पक्ष समर्थक संदेश इस बात को सदर बनाता है सदर मजबूत बनाता है फ्री चुके काम परन्तु परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया। और वह उन्हें जो उसके साथ गलील से यरूशलेम आए थे, बहुत दिनों तक दिखाई देता रहा; लोगों के साम्हने अब वे भी उसके गवाह हैं। और हम तुम्हें उस प्रतिज्ञा के विषय में, जो बाप दादों से की गई थी, यह सुसमाचार सुनाते हैं। कि परमेश्वर ने यीशु

को जिलाकर, वही प्रतिज्ञा हमारी सन्तान के लिये पूरी की, जैसा दूसरे भजन में भी लिखा है, कि तू मेरा पुत्र है; आज मैं ही ने तुझे जन्माया है। और उसके इस रीति से मरे हुओं में से जिलाने के विषय में भी, कि वह कभी न सड़े, उस ने यों कहा है; कि मैं दाऊद पर की पवित्र और अचल कृपा तुम पर करूंगा। इसलिये उस ने एक और भजन में भी कहा है; कि तू अपने पवित्र जन को सड़ने न देगा। izsfjr 13% 30-35

इस पत्र को यीशु के प्रधान की महिमा पर जोर देने के लिएजब हम पौलुस के संदेशों का आकलन करते हैं हम यह बातें हैं कि वह पुराने नियम की भविष्यवाणियों से भरी हैं वह भजन संहिता 27 को भी लिखता है पुनरुत्थान क्या शिशु को राजा बनाने में से पूरा पूरा संबंध है प्रेरितों के काम 13:30

धर्म ज्ञान के रूप से पुनरुत्थान इसलिए हुआ की मृत्यु उसको रोकना सके उसने एक धर्मी जीवन जिया और उसका पुनरुत्थान उसकी धार्मिकता को सिद्ध करता है जो कि महत्वपूर्ण है क्योंकि उसके छुटकारे तथा किसी और की जगह हमारे जाने मारा जाना धर्मी को पापी के स्थान पर मारे जाने पर आधारित था जय प्रभावशाली नहीं होता यदि वह व्यक्ति अधर्मी होता यदि मसीही पूर्ण रुप से धर्मी नहीं होता तब उसने केवल खुद के लिए उस मृत्यु के दर्द को उठाया होता कुछ उसको उसके विषय में प्रचार करते हैं प्रेरित और अधिक इस विषय में प्रचार करते हैं उन्होंने मस्तिष्क यीशु की मृत्यु तथा उसकी प्रस्थान की सामर्थ के विषय में बोला 1 irjl 1:3 फिलीfli;ksa 3:10 परमेश्वर के लोगों को मसीह की उस मृत्यु पर जो हमारी जगह पर दी गई विश्वास करना है परंतु

मसीह के पीछे भी चलना है वह हमारा जीवन है जिसके द्वारा हम आलोकिक मसीही जीवन जी सकते हैंA

मसीह के राज्य के विषय में भविष्यवाणियां

सारी भविष्यवाणियों का केंद्र बिंदु मसीह के राज्य की महिमा है कुछ भविष्यवाणियां इस बात को बताती हैं कि कैसे यह शुभ वह अपनी वर्तमान अधिकार की गद्दी को हासिल करेगा परंतु इन प्रियांशु में भी क्योंकि वह मसीह के राज के विषय में घोषणा करते हैं हम उसकी वर्तमान महिमा का उत्सव मना सकते हैं तथा उसकी सामर्थ्य में जी सकते हैं पद्यांश हो के बात पद्यांश मसीह की राज्य के विषय में तथा उसके पीछे चलने वालों के ऊपर प्रभाव के विषय में बात करती है यीशु के पुनरुत्थान के बाद उसका राज्य है पड़ोसियों एक 15 16 क्योंकि जीवन में दुबारा आने के बिना कोई राज्य नहीं होताA

खजूर का इतवार जकरिया 9:9

हे सिय्योन बहुत ही मगन हो। हे यरूशलेम जयजयकार करक्योंकि ! तेरा राजा तेरे पास आएगा; वह धर्मी और उद्धार पाया हुआ है, वह दीन है, और गदहे पर वरन गदही के बच्चे पर चढ़ा हुआ आएगा। जकरिया 9:9

हममें से कई लोग लोगों को यह स्मरण है ईस्टर से पहले के रविवार पर मसीह का वह उत्सव जब वहां एक गधे के बच्चे पर सवार होता है जैसे प्रभु ने उसके पुत्र को तैयार किया वैसे ही उसने उस गली के

बच्चे को तैयार किया और यदि कोई तुम से पूछे, कि क्यों खोलते हो, तो यह कह देना, कि प्रभु को इस का प्रयोजन है। लुक्का 19:31

यह प्रतीकात्मक इन सब के पीछे सामर्थ्य रूप से पुराने नियम की भविष्यवाणियों में मुहूर्त थी छिपी थी नम्र और उस गधे के बच्चे पर सवार वह जरूर चले में प्रवेश कर रहा था वह एक राजा जो उनके पास आ रहा था परंतु हम यह भी जानते हैं कि उसे हसन पर पहुंचने से पहले यीशु को मारा जाना था इससे पहले कि वह लोगों पर राज्य करें उसे उनकी सेवा करनी थी शैतानी यीशु की परीक्षा की कि इस नम्र सेवा तथा मृत्यु के बिना वह उस राज्य पद को हासिल कर सके परंतु उसने शैतान का सामना किया तथा केवल उसके पिता की जो स्वर्ग में है बात को सुना

उसके राज्य का कोई अंत नहीं है ;'kk;kg 9%-67

क्योंकि हमारे लिये एक बालक उत्पन्न हुआ, हमें एक पुत्र दिया गया है; और प्रभुता उसके कांधे पर होगी, और उसका नाम अद्भुत, युक्ति करने वाला, पराक्रमी परमेश्वर, अनन्तकाल का पिता, और शान्ति का राजकुमार रखा जाएगा। उसकी प्रभुता सर्वदा बढ़ती रहेगी, और उसकी शान्ति का अन्त न होगा, इसलिये वे उसको दाऊद की राजगद्दी पर इस समय से ले कर सर्वदा के लिये न्याय और धर्म के द्वारा स्थिर किए ओर संभाले रहेगा। सेनाओं के यहोवा की धुन के द्वारा यह हो जाएगा॥ ;'kk;kg 9%6-7

जकरिया 9:9 उस आने वाले राज्य के विषय में कहता है वह उसके राज्य के विषय में कुछ नहीं कहता जैसा ;'kk;kg 9%6-7

और वाक्यांशों को देता है जो इस बात की ओर संकेत करते हैं कि उसका राज्य कैसा होगा

- अधिपत्य उसके कंधों पर होगा

यह बालक एक बड़ा शासक बनेगा वह धार्मिकता से अपने लोगों पर राज्य करेगा जो बिल्कुल उन राजाओं के विपरीत है जो आप पर्याप्त इतिहास के उन राजाओं से बिल्कुल विपरीत है जो अपर्याप्त और अव्यवस्थित शासक थेA

- वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर कहलायेगा

यीशु केवल एक मनुष्य नहीं वह परमेश्वर से जन्मा था और उसमें परमेश्वर का ही स्वभाव था एक बालक के रूप से अपने माता पिता के जैसा स्वभाव और परिणाम स्वरुप यीशु एक सामर्थी परमेश्वर है हमें शायद यह समझना बड़ा कठिन लगे परंतु हमें इस सत्य पर शंका नहीं करनी वरन इसकी वजह हमारा जीवन मस्जिद की सामर्थ से बहुतायत से मसीह की सामर्थ सेबहुतायत से प्रभावित होना है तथा हम जो भी करें उसमें मसीह की महिमा होने पाए A dqyqfLl;ksa 3%17A

- उसके राज्य तथा उसकी शांति का कोई अंत नहीं होगाA

मसीह का राज्य एक आम राज्य के समान अंत नहीं होगा इसीलिए उसकी शांतिपूर्ण राज्य पर भी कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा और जैसे समय बीतेगा परमेश्वर का राज्य अपने आकार में तथा अपनी महिमा में बढ़ेगा हर एक व्यक्ति चाहता है शांति को परंतु उस पाप के बलवान जोर के कारण इस मूल इच्छा को देखने में कठिनाई होती है

- दाऊद के सिंहासन पर तथा उसके राज्य पर यीशु दाऊद की संतान के रूप में उस राज्य अधिकार को प्राप्त किया तथा परमेश्वर के द्वारा अभिशप्त हुआ वह पहले से ही नियुक्त उत्तराधिकारी था A

इन भविष्यवाणियों का पूरा होना मनुष्य पर या उसके भाग्य पर आधारित नहीं था परंतु सेनाओं के यहोवा के जुनून पर था और बिल्कुल ऐसे ही हम कई भविष्यवाणियों को मसीह यीशु के व्यक्तित्व तथा उसके कार्यों में अभिसरण होते हुए देखते हैं जो मनुष्य के साथ असंभव है परमेश्वर के साथ संभव हैA

परमेश्वर द्वारा नियुक्त किया जाना (भजन संहिता 2:6-7)

मैं तो अपने ठहराए हुए राजा को अपने पवित्र पर्वत सिय्योन की राजगद्दी पर

बैठा चुका हूं। मैं उस वचन का प्रचार करूंगाजो यहोवा ने मुझ से कहा :, तू मेरा पुत्रा है, आज तू मुझ से उत्पन्न हुआ। भजन संहिता 2:6-7

;'kk;kg 9%7 में हम देखते हैं परमेश्वर मसीह का एक राजा के रूप में नियुक्त किए जाने को का दावा करता है और वह अपने इकलौते पुत्र को नियुक्त करता है इब्रानियों 11:17, 1 ygqUuk 4:9 स्वर्गदूत इस रहस्यमय प्रक्रिया को विस्तार से बताते हैंA स्वर्गदूत ने उस को उत्तर दिया; कि पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगा, और परमप्रधान की सामर्थ तुझ पर छाया करेगी इसलिये वह पवित्र जो उत्पन्न होनेवाला है, परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा। लुका 1:35

और देखो, यह आकाशवाणी हुई, कि यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिस से मैं अत्यन्त प्रसन्न हूं।। eRrh3%17 क्या यह प्रतिपद हमें परमेश्वर के फोन दो स्वर्गीय घोषणाओं को नहीं स्मरण दिलाते हैं यीशु की उसके भक्त इसमें के समय सेवकाई की शुरुआत मैं स्वर्ग से एक आवाज वह बोल ही रहा था, कि देखो, एक उजले बादल ने उन्हें छा लिया, और देखो; उस बादल में से यह शब्द निकला, कि यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिस से मैं प्रसन्न हूंइस की सुनो। : (eRrh17%5½

जिस बात को परमेश्वर स्थापित करता है कोई भी व्यक्ति उसको बदल नहीं सकताA

सारांश

यीशु राजा है यीशु प्रभु है यह वाक्य में कई बार उपयोग किया जाता है परंतु इसके अर्थ को बहुत कम समझा जाता है इसके विपरीत मस्ती इस बात पर झगड़ा करते हैं की मशीन प्रभु है या केवल एक उद्धारकर्ता इन पर ध्यान शो को जो हम जानते हैंA eRrh 28: 17-18 निश्चित रूप से इस अध्याय को समाप्त करने का सही स्थान हैA

> सो जब वे इकट्ठे हुए, तो पीलातुस ने उन से कहा; तुम किस को चाहते हो, कि मैं तुम्हारे लिये छोड़ दूं? बरअब्बा को, या यीशु को जो मसीह कहलाता है? क्योंकि वह जानता था कि उन्होंने उसे डाह से पकड़वाया है। eRrh 28: 17-18

राजा का पूरा अधिकार यीशु मसीह को उसकी इस पृथ्वी पर विश्वास योग्यता से सेवा के पश्चात प्रदान किया गया जोकि जहां पर उसकी पूर्ण सामर्थ तथा अधिकार छुपी हुई थी फिल्म फिल्म 23 11 पीलीभीत परंतु अब कुरुक्षेत्र जीवित तथा इस पृथ्वी पर अपने कार्य को

पूर्ण करने के साथ कुछ भी उसे अपने राज्य को स्थापित करने से रोक नहीं सकती

कुछ लोग इस बात पर कीमत से पुनः इस पृथ्वी पर राज करेगा वादविवाद करती हैं परंतु यह सही तरीका नहीं इन पदों की रोशनी में हम कैसे मसीह को वर्तमान में राज करते हुए देख नहीं सकते क्या हम प्रेरितों के काम में नहीं देते जहां पर कैसे मसीह परमेश्वर की आत्मा के द्वारा हमारे जीवन में के द्वारा इस पृथ्वी पर पर अपने बढ़ते हुए अधिकार को उपयोग में लेकर आता है अब यह समय है कि हम उसके सामने घुटने टेके उसके क्रूस को अपने पर ले और उस राजा के पीछे चलें और अनुमति दें उसकी सामर्थ्य कि हमारे जीवन ओके द्वारा वह चमके हम यह कल्पना करने का प्रयास करें क्या होगा जब इस दुनिया भर में परमेश्वर के लोग ना केवल elhg एक राजा के रूप में अपने गीतों में गाय परंतु ऐसे जीवन को जिए जो उसके प्रभुत्व को साबित करें कलीसिया एक संकटकालीन स्थिति में है जहां पर वह तैयार नहीं कि मसीह की अगुआई तथा इसके प्रभुत्व में पूर्ण विश्वास के साथ चाहिए बेदारी तब आती है जब कलीसिया मसीह के वर्तमान राज्य के विषय में सचेत होती है ऐसा हो की कलीसिया इस वचन पर विश्वास करें जो बड़ी स्पष्ट रूप से कहता है यीशु राजा हैA हे इस्त्राएलियों, ये बातें सुनो: कि यीशु नासरी एक मनुष्य था जिस का परमेश्वर की ओर से होने का प्रमाण उन सामर्थ के कामों और आश्चर्य के कामों और चिन्हों से प्रगट है, जो परमेश्वर ने तुम्हारे बीच उसके द्वारा कर दिखलाए जिसे तुम आप ही जानते हो। उसी को, जब वह परमेश्वर की ठहराई हुई मनसा और होनहार के ज्ञान के अनुसार पकड़वाया गया, तो तुम ने अधर्मियों के हाथ से उसे क्रूस पर चढ़वा कर मार डाला। परन्तु उसी को परमेश्वर ने मृत्यु

के बन्धनों से छुड़ाकर जिलाया: क्योंकि यह अनहोना था कि वह उसके वश में रहता। क्योंकि दाऊद उसके विषय में कहता है, कि मैं प्रभु को सर्वदा अपने साम्हने देखता रहा क्योंकि वह मेरी दाहिनी ओर है, ताकि मैं डिग न जाऊं। इसी कारण मेरा मन आनन्द हुआ, और मेरी जीभ मगन हुई; वरन मेरा शरीर भी आशा में बसा रहेगा। प्रेरितों के काम 2:22-26

24 बार यह वाक्यांश आया है कि यह लिखा है तथा 32 बार यह शब्द की पूर्ण हुआ उपयोग किया गया है यीशु खुद इस बात की घोषणा करता है A भविष्यद्वक्ताओं के लेखों में यह लिखा है, कि वे सब परमेश्वर की ओर से सिखाए हुए होंगे। जिस किसी ने पिता से सुना और सीखा है, वह मेरे पास आता है। यूहन्ना 6:45

भविष्यवाणी के यह संदेश जो मसीह के हजारों हजार साल पहले लिखे गए उसमें पूर्ण हुए इस्लाम के पास ऐसा कोई छुटकारे की योजना नहीं है उनके भविष्यवक्ता वायदे किए हुए भविष्यवक्ता नहीं केवल यीशु ही परमेश्वर के छुटकारे की योजना को पूर्ण कर सकता है तथा परमेश्वर प्रभु के जुनून में इस बात को पूरा किया तथा मसीह को उस सिंहासन पर विराजमान किया और जैसे उसने हमें चेतावनी दी हैA भजन संहिता 2:12

हालांकि हमने कुछ ही भविष्यवाणियों की चर्चा यहां पर की है इस बात को निश्चित जाने की पुराना नियम उन से भरा हुआ है तथा जिसके द्वारा उस समय के लोग मसीह के आने की ओर देख रहे थे और हमारे लिए कि हम पीछे उस ग्रुप तथा पुनरुत्थान की ओर देखें और उसके राज्य की पूर्ण रोशनी में अपने जीवन को जी आइए हम मसीह यीशु पर विश्वास करें तथा उसके पीछे चलें

कुछ ऐसी झूठी शिक्षा के समूह जोइन लिखे हुए पुराने नजरियों से बाहर निकलेंगे परंतु वह थोड़े ही हैं यहोवा विटनेस मसीह के ईश्वरत्व को का इनकार करते हैं और वही मोर मंत्र यीशु को एक मनुष्य से आलोकिक की और बनते हुए के रूप में दर्शाते हैं उसे भी गंभीर एक बड़ा शंभू है समूह है जो अपने आपको मसीही कहता है परंतु उस आश्चर्यजनक चमत्कारी कुंवारी के जन्म से जन्म का इंकार करता है जो इसके साथ-साथ बच्चन की गवाई के विरुद्ध मसीह के आलोकिक स्वभाव का इनकार करता है

7 नुकसान जिससे

शक्ति जिस से छुटकारे की आवश्यकता पड़ी बिना पाप के उद्धार की कोई आवश्यकता नहीं और बिना पतन के छुटकारे की योजना की आवश्यकता नहीं है हालांकि कुछ लोगों को अपने प्रति समर्पित करने के द्वारा ऐसा प्रतीत होता है कि मानो कुछ समय तक शैतान ने परमेश्वर की योजना को असफल किया परमेश्वर परमेश्वर एक सर्वव्यापक छुटकारे की योजना जो उसकी महिमा को लेकर आता है तथा शैतान के षडयंत्र को असफल करता है पदार्पण करता हैA

नीव

कई मसीही बिना एक नीव रखें सुसमाचार का प्रचार करते हैं जो बातें शायद मनुष्य के परमेश्वर के तथा सृष्टि के प्रति ज्ञान की के विषय में कल्पना की जाती थी अब वह अब उन्हें अब उन चीजों के कल्पना करने की आवश्यकता नहीं संस्कृति ने लोगों के बाइबल के ज्ञान पर काफी काम किया हैA

मनुष्य का पतन एक सिर्फ उदाहरण है उसके ज्ञान की कमी के कारण बताने का पतन का यदि मनुष्य इस बात को समझे कि कैसे एक मनुष्य को अच्छा और धर्मी बनाया गया था जो परमेश्वर से दूर चला गया तथा परमेश्वर के न्याय को प्राप्त करा तब इन व्यक्तियों से

वार्तालाप सत्य की इन बातों पर बनाया जा सकता है इसके बिना हालांकि दुष्टता पाप परमेश्वर सृष्टि और दूसरी सारी चीज़ें जो सुसमाचार के संदेश की कुंजियां हैं A एक साथ धूमिल हो जाती हैं कुछ धर्मों का बाप के प्रति एक अलग दृष्टिकोण है जैसे कर्म परंतु कर्म पाप से बहुत अलग है जबकि पा परमेश्वर के विरुद्ध बलवा है हिंदुत्व में कोई भी अनंत सृष्टिकर्ता परमेश्वर नहीं तथा इसीलिए कर्म एक बिल्कुल भिन्न अर्थ को ले लेता है जिसमें शुद्धता के लिए मनुष्य का नियंत्रण निरंतर प्रयास आत्मा सही के विरोध में इसके बजाय यह उस धर्मी जन के विरुद्ध जिस ने हम सब को बनाया एक अपराध है A

भाई हम इस बात से थोड़ा मजबूत करें कि मनुष्य के पतन के समय वास्तविक रूप से क्या हुआ तब ही हम पूर्ण रुप से इस बात को समझ सकते हैं कि परमेश्वर के छुटकारे की योजना का क्या अर्थ है एक सवाल को हल करने के लिए यह जरूरी है कि पहले उसको समझा जाएA

वाटिका से मरुस्थल

यहोवा परमेश्वर ने जितने बनैले पशु बनाए थे, उन सब में सर्प धूर्त था, और उसने स्त्री से कहा, क्या सच है, कि परमेश्वर ने कहा, कि तुम इस बाटिका के किसी वृक्ष का फल न खाना? स्त्री ने सर्प से कहा, इस बाटिका के वृक्षों के फल हम खा सकते हैं। पर जो वृक्ष बाटिका के बीच में है, उसके फल के विषय में परमेश्वर ने कहा है कि न तो तुम उसको खाना और न उसको छूना, नहीं तो मर जाओगे। तब सर्प ने स्त्री से कहा, तुम निश्चय न मरोगे,वरन परमेश्वर आप जानता है, कि जिस दिन तुम उसका फल खाओगे उसी दिन तुम्हारी आंखें खुल जाएंगी, और तुम भले

बुरे का ज्ञान पाकर परमेश्वर के तुल्य हो जाओगे। सो जब स्त्री ने देखा कि उस वृक्ष का फल खाने में अच्छा, और देखने में मनभाऊ, और बुद्धि देने के लिये चाहने योग्य भी है, तब उसने उस में से तोड़कर खाया; और अपने पति को भी दिया, और उसने भी खाया। तब उन दोनों की आंखे खुल गई, और उन को मालूम हुआ कि वे नंगे है; सो उन्होंने अंजीर के पत्ते जोड़ जोड़ कर लंगोट बना लिये। उत्पत्ति 3:1-7

बिना इस दृश्य को जहां सर्च उस परीक्षा को लेकर आता है सम्मिलित किए बिना हमें परमेश्वर के छुट कार्य की योजना को समझने में कठिनाई होगी हम मनुष्य आदमी और स्त्री के चित्र को उसकी शुद्धता में देखते हैं परंतु तब अचानक से यह देखते हैं कि वह काफी विनाशकारी चीजों को करते हैं और कोई तरीका नहीं होगा इस बात को समझाने के लिए मनुष्य के वरिष्ठता में जाने के विषय में दुष्टता और सारांश शायद यही होगा इस बात पर समाप्त करेगा कि परमेश्वर ने बुराई की परमेश्वर ने मनुष्य को बुरा बनाया और शायद अपने समान यदि हम समझे कि मनुष्य प्राकृतिक रूप से स्व केंद्रित है हम इस निष्कर्ष को भी निकाल सकते हैं कि परमेश्वर भी ऐसा ही है क्योंकि परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप का और समानता में रखा A उत्पत्ति 1:26-27

हालांकि परमेश्वर प्रेम है और वह मनुष्य है जिसने अपने गुण को खो दिया उत्पत्ति 3 का दृश्य कई ऐसे बिंदुओं को लेकर आता है जो हमारी सहायता करता है परमेश्वर के छुटकारे की योजना को पाने तथा उस को सरहाने की जिन्हें इन निम्नलिखित सूची में धार के रुप में प्रस्तुत किया गया है:

- मनुष्य की एक काबिलियत कि वह अपनी इच्छा को दिखा सकता है उसके लिए एक संवेदनशील स्थान बन जाता हैA
- परमेश्वर ने मनुष्य को बताया कि सबसे अच्छा संभव जीने के लिए उसे कैसे अपनी इच्छा शक्ति को इस्तेमाल करना है A
- सर्प ने स्त्री को यह सोचने पर लेकर आया कि उसकी सलाह बेहतर है A
- सर शैतान का उद्देश्य यह था कि वह स्त्री को परमेश्वर के ज्ञान पर शंका पैदा करें तथा उन आज्ञाकारिता करें A
- पूर्ण चलाकी कारगर रही आदम और हवा दोनों ने उस पल को जो वर्जित था परमेश्वर के वचन के विरुद्ध खाया A
- उनके फल खाने के पश्चात कुछ महत्वपूर्ण हुआ उनकी आंखें खुल गईA
- परमेश्वर की महिमा के चले जाने से वह अपनी नग्नता को के विषय में सचेत हो गए A
- आदम और हवा जो मानव जाति का प्रतिनिधित्व करते हैं उनकी आज्ञाकारिता के द्वारा अपनी निष्ठा को परमेश्वर से हटाकर शैतान के प्रति कर दी A

मनुष्य निर्दोषता से परीक्षा की ओर गया तथा परीक्षा से असमंजसता की ओर धोखा खाने से साथ में होने की वह आप मैं उनका पाप परीक्षा में पढ़ना नहीं था परंतु परमेश्वर के वचन के विरुद्ध जाना था इस स्थान पर मनुष्य अपनी इच्छा शक्ति को परमेश्वर के विरुद्ध रखता है A मनुष्य ने अपनी स्वतंत्रता ली और उस निर्णय को लिया जो परमेश्वर की योजना के विपरीत है A

और जो इस के तुरंत पश्चात हुआ वह वहीं था जिसके विषय में परमेश्वर ने चेतावनी दी थी मृत्यु यह शारीरिक मृत्यु तुरंत नहीं थी

जिसके वह योग्य थे आत्मिक मृत्यु हालांकि तुरंत ही परमेश्वर ने उन्हें दोषी तथा नग्न छोड़ दिया उस आत्मिक मृत्यु के परिणाम स्वरुप जो बंजर था आई उसका विवरण बाइबिल में कई थानों में है जिसमें भविष्यवक्ता की पुस्तकें भी हैं

बंजर ता का दृश्य

इस कारण जैसे अग्नि की लौ से खूंटी भस्म होती है और सूखी घास जल कर बैठ जाती है, वैसे ही उनकी जड़ सड़ जाएगी और उनके फूल धूल हो कर उड़ जाएंगे; क्योंकि उन्होंने सेनाओं के यहोवा की व्यवस्था को निकम्मी जाना, और इस्राएल के पवित्र के वचन को तुच्छ जाना है। इस कारण यहोवा का क्रोध अपनी प्रजा पर भड़का है, और उसने उनके विरुद्ध हाथ बढ़ा कर उन को मारा है, और पहाड़ कांप उठे; और लोगों की लोथें सड़कों के बीच कूड़ा सी पड़ी हैं। इतने पर भी उसका क्रोध शान्त नहीं हुआ और उसका हाथ अब तक बढ़ा हुआ है॥ यशायाह 5:24-25

इस पद्यांश में हम कई बातों को देख सकते हैं जो उत्पत्ति 3:00 में दिखता है उसके जैसी हैं A

बंजर ता का विवरण (यशायाह 5:24)

iki इस पृथ्वी पर Jki को लेकर आता है तथा उस पर लोगों पर भी शराब के ऊपर शराब शराब के ऊपर शराब और अंत में वह ऊंचाई होने से उपजाऊ होने से इंकार कर दे परंतु जड़े अपने आप पर नहीं जाएंगे बंजरता यह दृश्य 25 पद में और बढ़ता है तब परमेश्वर का क्रोध उसकी लोगों के विरोध में उनके पापों के कारण से Hkड़कता है इस बात को कहकर उस का क्रोध पूरा नहीं हुआ हम देखते हैं कि आने वाला

न्याय सर दर्द पर बढ़ता जाता है और हम आशा करते हैं किसी एक दर पर वह पश्चाताप करें और पुनः उसकी ओर लौटें परंतु अगर ऐसा नहीं करते तो उसका क्रोध और गंभीर न्याय का रूप लेगा परमेश्वर विलम्भ से क्रोध करने वाला है तथा वह नहीं चाहता कि कोई भी नाश होA

बंजरता का कारण (यशायाह 5:24)

यशायाह बंजरता के दो कारणों को बताता है यह उन्होंने 1.सेनाओं के यहोवा की व्यवस्था को त्याग दिया A 2- इसराइल के पवित्र जन के वचन को तुच्छ जानाA हालांकि यह दोनों समान हैं लेकिन दोनों में कुछ अंतर हैA

पहला कारण यह दावा करता है कि प्रभु ने जो नियम उनके लिए रखी थी की उसके पीछे चलें उसे उन्होंने ठुकरा दिया यहां पर ध्यान आज्ञाकारिता पर है A इस शब्द शुक्राना से हम समझते हैं कि वह उन मार्गों में चलते रहें जो मार्ग उन्हें अच्छे लगते थे और जो सृष्टि कर्ता के मार्गों को ठुकराए जाने को बताता है

दूसरा कारण इस बात पर ध्यान करता है कृपया ijes’oj के वचन के प्रति उनकी प्रगति कैसी थी प्रगति प्रवृत्ति कैसी थी उन्होंने उसे तुच्छ जाना परमेश्वर का वचन नियमों से ज्यादा है उसमें हर प्रकार के संदेश जो मित्रता में जोड़ते हैं मित्रता चित आते हैं फटकार लगाते हैं तथा विश्वास में उत्साहित करते हैं जब वे उसके वचन को तुच्छ जानते हैं वह यह बताते हैं कि वह उस पर विश्वास नहीं करते तथा इस कारण से उनसे उन्हें लाभ नहीं पहुंचता उनके हृदय अंधकार में हो गए हैं इस कारण से वह परमेश्वर के प्रेम को जो उनकी सहायता करने की कोशिश करता

है नहीं देख पाते वह उस परमेश्वर को ठुकरा देते हैं जिसने उनके साथ मित्रता की तथा उनकी राष्ट्र को बचाया A

सारांश में उन्होंने सृष्टि कर्ता के अच्छे व्यवस्था को ठुकरा दिया तथा उनके उद्धारकर्ता की कोमल शब्दों को और उनके द्वारा ठुकराए जाने से उन्होंने कष्ट भोगाA

पाप तथा उसके परिणाम का विवरण

और नित्य अपनी प्रार्थनाओं में बिनती करता हूं, कि किसी रीति से अब भी तुम्हारे पास आने को मेरी यात्रा परमेश्वर की इच्छा से सुफल हो। क्योंकि मैं तुम से मिलने की लालसा करता हूं, कि मैं तुम्हें कोई आत्मिक वरदान दूं जिस से तुम स्थिर हो जाओ। अर्थात यह, कि मैं तुम्हारे बीच में होकर तुम्हारे साथ उस विश्वास के द्वारा जो मुझ में, और तुम में है, शान्ति पाउं। रोमियो 3: 10 -12

कई रुढ़िवादी एवं ने हमारी क्षमता को हल्का कर दिया है कि हम सही रूप में आपको समझ सके लोगों में स्वर धार्मिकता है मैं सोचता हूं कि मैं पापी हूं क्या मैं हूं साथ ही साथ अपने पक्ष की सुरक्षा भी करते हैं मैं समझता हूं किधर मुझे आपके समान होना लोग बड़े इच्छुक होते हैं कि दूसरों की गलती को देखें कई बार बड़ी क्रूरता से परंतु जब खुद के पाप को मानने की बात आती है तब बेचैनी होने लगती है दुर्भावनादोष भावना एक धोखे की के छिलके को बनाती है जोकि हमारे पापों का वास्तविक दृष्टिकोण हमसे हमारे मनो से दूर रखता है रोमियो इस धोखा देने वाली परत को हटा देती है तथा हमें समझ करती है कि हम उस चित्र को स्पष्ट देखें कि कैसे आप हमारे जीवन को प्रभावित करती है

पाप जाति और संस्कृति से भेदभाव नहीं रखता रोमियो 3:10

हालांकि पक्षपातपूर्ण लोग रहते हैं परंतु एक जाती है दूसरी जाति से अधिक पापी नहीं हर एक बाकी है कई बार हम यह सोच सकते हैं कि धनी व्यक्ति अच्छे हैं तथा बाकी सब एक बाकी है हॉलीवुड इस विचार को हटाता है कि कुछ दूसरों से अधिक धर्मी है “जैसा लिखा है, कि कोई धर्मी नहीं, एक भी नहीं”। रोमियो 3:10 यहूदी लोगों के पास परमेश्वर का वचन था परंतु उन्होंने उस प्रकार जीवन नहीं दिया दोनों संस्कृतियों में पाप था परंतु उसने उनके जीवन को अलग झूठ से प्रभावित कियाA

पाप नहीं हम सब को दूषित किया रोमियो 3:11

अधार्मिक आप आप पाप एक और धार्मिक चाल चलन तथा विचार हैं जो कि परमेश्वर द्वारा तथा उसके पवित्र स्वभाव द्वारा निर्धारित किए गए हैं व्यवस्था विशेष क्रियाओं को चिन्हांकित करती है तथा नियम ताकि लोग सही और गलत के बीच में अंतर को कर सकें शुभम यह सोचते हैं कि पाप केवल कुछ नियमों को तोड़ना ही है पाप जोकि हमारी सोच में गहरे रूप से जल को पकड़े हुए हैं और उस समय इस पुराने नियम केअपराध को बताता है कोई भी धehZ नहीं एक भी नहीं A

यह पर्याप्त होगा कहना कि कोई भी सिद्ध नहीं वह ऐसा कहने में सही होंगे परंतु दूसरों से तुलना करने के द्वारा हम पापी नहीं हो जाते सिद्धि एक उत्तम शब्द नहीं है इस्तेमाल करने के लिए क्योंकि वह चरित्र से कई अधिक बढ़कर कुछ बताता है जैसे कि कोर्स और एटीट्यूड में धार्मिकता जोकि एक सही चाल चलन में जीवन जीने की ओर केंद्रित है तथा सही निर्णय को लेना A

पाप इस कैंसर के सेल के समान आदिम जाति में प्रवेश किया था जिससे हम भला कर सकते हैं उसे विकृत किया विकृत 5:00 तक

साधारण नहीं है जैसे धर्मनिरपेक्ष वादी दावा करते हैं तथा विकासपरक सोच को का समर्थन करते हैं इस बात को कहते हुए कि जैसा हम आज के दिन में देखते हैं वह मनुष्य का प्राकृतिक स्वभाव है और जिसके आधार पर कहीं इस बात का दावा करते हैं कि मनुष्य द्वारा बनाया गया नियम मनुष्य के पूर्ण स्वभाव को अंकुश लगाने के द्वारा बाधित करता है जींद राकेश ब्राउज़र दार्शनिक मनुष्य कीमनुष्य की स्वार्थी अभिलाषाओं में उसे और धार्मिकता की ओर ले गया यहां तक की उसके अच्छे प्रयास कि अपने प्रेम तथा सभी को सुखी सुधी को दिखा सके वह भी स्वार्थी और घमंड से भरी भावनाओं से प्रेरित है

पाप हमारी अभिलाषाओं को विकृत करता है

पाप की समस्या हमारी परमेश्वर के प्रति सोच में अपनी जड़ को रखती है कैसे हो सकता है कि हम अपने रचने वाले अपने प्रेमी अपने सभी रखने वाले अपने चंगा करने वाले सलाहकार सहायक दिलासा देने वाले को की अवहेलना कर सकते हैं यह अविश्वसनीय है केवल उत्पत्ति तिनका हमें सहायता करता है इस बात को समझने के लिए कैसे आपने हमारे परमेश्वर के साथ संबंध को प्रभावित किया है पौलुस इसको पुणे संक्षिप्त रूप से बचा बताता है पुराने नियम से इस बात को कह कर कि कोई भी परमेश्वर की खोज नहीं करता A

हम एक कदम पीछे लें तथा परमेश्वर के छुटकारे की योजना को ध्यान में रखते हुए हम परमेश्वर को खोजने की अनिच्छा को समझने की कोशिश करें परमेश्वर का मनुष्य को बढ़ाने मैं क्या उद्देश्य था क्या यह नहीं कि परमेश्वर मनुष्य के साथ संगति करें तथा गरीबी रूप से एक साथ कार्य करें मनुष्य क्या किया कि परमेश्वर के लाभदायक

प्रतिक्रियाओं को अस्वीकार किया आज भी मनुष्य निरंतर रूप से परमेश्वर को सक्रिय रूप से खोजने से बचता है परंतु इसके बावजूद परमेश्वर आज भी मनुष्य को खोजता है एक बड़ी कीमत के साथ परमेश्वर अपने छुटकारे की योजना को इस बात से प्रकट करता है जिसके द्वारा वहां हठीले तथा और धन्यवादी लोगों को अपनी और लाता हैA

एक ऐसा iki का क्षेत्र एक विश्वासी और अविश्वासी दोनों पर एक समान रूप से हावी रहता है वहां यह प्रकृति यह सोचने की प्रकृति कि वह परमेश्वर की प्रेम तथा अनुकृति योग्य है अनुग्रह के योग्य हैं जो बाइबल के अनुसार बिल्कुल विपरीत है बाइबल का संदेश उत्पत्ति से लेकर प्रकाशितवाक्य तक यह सिखाता है कि मनुष्य किसी भी भली वस्तु के योग्य नहीं तब भी जब प्रभु इतना अनुग्रह कारी कि अपनी दया को उसकी और बढ़ाएं मनुष्य परमेश्वर के मुंह पर थूकता हुआ नजर आता है मनुष्य में कोई भी प्राकृतिक लगाओ परमेश्वर के प्रति नहीं है परमेश्वर अपने साथ एक करीबी भागीदारी को चाहता है परंतु हमारे कार्य तथा हमारे विचार परमेश्वर की और जोड़ने वाले कदमों के विपरीत कार्य करते हैंA

अन्यथा आप अपने हृदय में यह कह सकते हैंA न्याय करते समय किसी का पक्ष न करना; जैसे बड़े की वैसे ही छोटे मनुष्य की भी सुनना; किसी का मुँह देखकर न डरना, क्योंकि न्याय परमेश्वर का काम है; और जो मुकद्दमा तुम्हारे लिये कठिन हो, वह मेरे पास ले आना, और मैं उसे सुनूंगा। और मैं ने उसी समय तुम्हारे सारे कर्त्तव्य कर्म तुम को बता दिए।। और हम होरेब से कूच करके अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा के

अनुसार उस सारे बड़े और भयानक जंगल में हो कर चले, जिसे तुम ने एमोरियों के पहाड़ी देश के मार्ग में देखा, और हम कादेशबर्ने तक आए। व्यवस्थाविवरण 8:17- 19

पाप हमारे खोए हुए होने को बताता है रोमियो 3: 12

सब भटक गए हैं, सब के सब निकम्मे बन गए, कोई भलाई करने वाला नहीं, एक भी नहीं। रोमियो 3: 12

मनुष्य अपने विषय में बड़ा सोचता है परंतु प्रभु यह कहता है कि उसके बिना वह किसी काम के नहीं रहे इसके बजाय कि वह परमेश्वर के प्रेम को इस पृथ्वी की रचना को तथा इस संसार को की देखभाल करें दिखाएं लोग अपने लिए जीवन जीते हैं तथा अपने स्वार्थी निर्णय के द्वारा इस संसार का नाश कर रहे हैं हर एक मनुष्य प्राकृतिक रूप से भलाई दिखाने से इंकार करता है इससे फर्क नहीं पड़ता कि बच्चे कितने प्यारे क्यों ना हो वह तब भी पाप मैं स्वभाव को दिखाते हैं हमारे कठोर हृदय हमारे धन्यवादी पर तथा हमारी अयोग्यता पर दौड़ते हुए की योजना की पृष्ठभूमि को रखता है इस चित्र को नहीं देख पाते हैं तो हम शायद यह सोचना आरंभ कर सकते हैं कि हम परमेश्वर की भलाई तथा उद्धार के योग्य हैं बाप कितना धोखा देने वाला बन गया है तुम केवल मनुष्य की खुद की असफलता इन अभागे विचारों को अनुमति दे सकता हैA

मनुष्य की पूरी फसल खराब हो गई मनुष्य भटक गया तथा परमेश्वर के प्रीति या आदर के भाव को प्रकट नहीं करता इसराइल के समान जम्मू हसीना पर्वत से सुनाएं दस आज्ञाओं के साथ नीचे आया यह अनोखे नोहा के समय के समान हम परमेश्वर के क्रोध के योग्य हैं उसकी करुणा और दया के नहींA

षड्यंत्र और अधिक उलझता जाता है

इफिसियों की पुस्तक परमेश्वर के छुटकारे की योजना के मुख्य आंखों की रूपरेखा देता है पहला स्तर मनुष्य के पतन के पहले की स्थिति को बताता है

तथा परमेश्वर के द्वारा आदम और हवा के रचे जाने को यह केवल शुरुआत है परंतु पतन में हर बात को बदल दिया और हम इसे एक बड़ी निराशा के रूप में कह सकते हैं इफिसियों 11 में जब पौलुस परमेश्वर के लोगों को संत करके बुलाता है तो वह एक बड़े परिवर्तन की ओर इशारा करता है प्रारंभिक स्तर पर यह सत्य है परंतु मसीह के कारण सब कुछ बदल गया पौलुस बिना हिचक यह कहता है A जैसा उस ने हमें जगत की उत्पति से पहिले उस में चुन लिया, कि हम उसके निकट प्रेम में पवित्र और निर्दोष हों। इफिसियों 1:4

नीचे दिए गए भाग में हम इफिसियों 2: 1-3 इस्तेमाल करेंगे दूसरे और तीसरे स्तर को जिसे हम ऊपर दिए गए रेखाचित्र में देख सकते हैं चिन्हांकित करेंगे चिन्हांकित करनी है दूसरा स्तर मनुष्य के पत्र पतित स्थिति को बताता है तथा तीसरा स्टार स्तर उत्तर नई सृष्टि को

मनुष्य की पतित स्थिति इफिसियों 2: 13

पौलुस उत्पत्ति 3 के पद्यांश कि यहां पर चर्चा नहीं कर रहा परंतु मनुष्य के दूसरे स्तर को इफिसियों 2 में के ऊपर ध्यान दे रहा है :इफिसियों दो 13 मनुष्य स्तर पर प्रमाणिक तौर पर पतित स्थिति में है इफिसियों 2:1-3 और उस ने तुम्हें भी जिलाया, जो अपने अपराधों और पापों के कारण मरे हुए थे। जिन में तुम पहिले इस संसार की रीति पर, और आकाश के अधिकार के हाकिम अर्थात उस आत्मा के अनुसार चलते थे,

जो अब भी आज्ञा न मानने वालों में कार्य करता है। इन में हम भी सब के सब पहिले अपने शरीर की लालसाओं में दिन बिताते थे, और शरीर, और मन की मनसाएं पूरी करते थे, और और लोगों के समान स्वभाव ही से क्रोध की सन्तान थे। इफिसियों 2:1-3

मरा हुआ कोई चापलूसी करने वाला शब्द नहीं हालांकि यह मनुष्य की स्थिति को पूर्ण तरह बताता है कोई भी व्यक्ति आधा मरा हुआ नहीं होता है प्रभु को इस बात से कोई समस्या नहीं यह कहने में कि हम मर जाएंगे और ऐसा ही है परंतु पौलुस आत्मिक मृत्यु की बात कर रहा है यह जरूरी है देखना इन दो प्रकार की मृत्यु के बीच का अंतर कोA

कुछ समूह में एक व्यक्ति की आत्मिक बातों में रुचि के विषय में बातचीत करना बड़ा लोकप्रिय है पौलुस हालांकि कहता है कि हमारी आत्मा के ऊपर वह दुष्ट राज्य करता है यदि एक व्यक्ति परमेश्वर प्रभु के अधीन नहीं है तब वह स्त्री या पुरुष आकाशप्रकाश के सामर्थ्य के हातिम की किम के अधीन हैं इफिसियों 2:1-3 उत्पत्ति 3 में चित्र पर निर्माण करता है यह कितना भी घातक क्यों ना लगे अन आज्ञाकारी पुत्रों में कार्य करना सामर्थ्य आकृति तथा प्रकृति के प्रति आत्मिक संवेदनशीलता शैतान के मुखौटे हैं वह हमारे जीवन में पर्दे के पीछे कार्य करता है इससे पहले कि हम मशीन के ऊपर विश्वास को लाएं तथा जब हम अपने पापों तथा अपराधों में मरे हुए हैंA

पौलुस मlhg से अलग जीवन के विवरण को इस प्रकार समाप्त करता है यह कहकर कि हम स्वभाव से क्रोध की संतान हैं दूसरे शब्दों में ऐसा कोई भी स्वभाविक झुकाव नहीं है जो हमें परमेश्वर की ओर ना

सके हम बहुत दूर जा चुके हैं हम मरे हुए हैं तथा हमें योग्यता नहीं कि परमेश्वर की बुलाहट का प्रत्युत्तर दे सकें उसके पश्चात यीशु के वह वचन है यह नया जन्म प्राप्त करने की आवश्यकता है के विषय में धर्म जिसमें नसीहत भी आती है नसीहत नसीहत हमारी सहायता नहीं कर सकती कुछ भी नहीं हमें मसीह की अति आवश्यकता है कि वह हमारे हृदयों में कार्य करेंA

मनुष्य की छुटकारे की स्थिति इफिसियों 2: 4-7

परन्तु परमेश्वर ने जो दया का धनी है; अपने उस बड़े प्रेम के कारण, जिस से उस ने हम से प्रेम किया। जब हम अपराधों के कारण मरे हुए थे, तो हमें मसीह के साथ जिलाया; (अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धारहुआहै।(और मसीह यीशु में उसके साथ उठाया, और स्वर्गीय स्थानों में उसके साथ बैठाया । कि वह अपनी उस कृपा से जो मसीह यीशु में हम पर है, आने वाले समयों में अपने अनुग्रह का असीम धन दिखाए। इफिसियों 2: 4-7

परमेश्वर का अद्भुत छुटकारे की योजना जीवित जीवंत हो जाती है जब हम दूसरे स्तर से तीसरे स्तर तक जाते हैं दूसरे स्तर पर हम अपने आपको असहाय तथा अयोग्य पाते हैं अयोग्य पापी दुष्ट दुष्ट की चंगुल में है चौथे पद से शुरू करते हुए हम परमेश्वर के अनुग्रह की महिमा को पाते हैं इस बात की ओर ध्यान दें कि कितनी बार यह शब्द दया और अनुग्रह इन पदों में उपयोग किया गया है परमेश्वर ने हमें केवल दया ही नहीं दी परंतु दया में धनी अत्यंत दया तथा केवल प्रेम नहीं परंतु महान प्रेम जिसके हम बिल्कुल योग्य नहीं हे

पोलिस अपने विचारों को   एकत्रित कर इन तीन आए तो मैं कही हुई बातों का सारांश देता है हालांकि हम अपने अपराधों में मरे हुए थे यह हालांकि इस बात को बताता है A कि कैसे मनुष्य

परमेश्वर की भले कार्य के योग्य नहीं क्या हम देख सकते हैं किस प्रकार और उस परमेश्वर की अनुग्रह की मिठास को बढ़ाता है हमारी आयोग की परिस्थिति को बताने के द्वारा 13 पद में यहां धर्म या मनुष्य कार्य नहीं कर रहा परंतु परमेश्वर परमेश्वर हमारे जीवन में बड़े अद्भुत रुप से हस्तक्षेप करता है A

वह कहता है कि उसने हमें मसीह के साथ जलाया हमें उसके साथ जिला या जोकि मसीह है और हमें मसीह यीशु के साथ स्वर्गीय स्थानों में बैठा हैपरमेश्वर के उद्धार की योजना पापा के शमा से कहीं अधिक आगे जाती है पहला भाग नए जीवन के साथ हमारे पास आता है जो हमें जीवित करता है हमने परमेश्वर को नहीं खोजा वर्ण उसने हस्तक्षेप किया परंतु अब जब उसने ऐसा किया तब हम उसे खोजते हैं एक नए स्वभाव के साथ पवित्र आत्मा से जन्मे हुए मनुष्य अब मसीही की संतान के रूप में उसे खोज सकता है दूसरा भाग हमें यह बताता है कि कैसे उसने हमें मसीह के साथ मिलाया यह जीवन की उस सामर्थ्य के विषय में बताता है जो अब हम में रहती है यह सीधा-सीधा उस मृत्यु के विपरीत है जो हम में कभी रहती थी अंत में हमारा एक नया स्थान है हम उसके साथ स्वर्गीय स्थान में बिठाए गए हैं यह सब इसलिए होता है क्योंकि हम मसीही में हैA यह वाक्यांश मसीही में अब्राहम को वायदा किए हुए

बीज की ओर इशारा करता है यीशु मसीह वह बीज है तथा नया आदम है जब हम नया जन्म प्राप्त करते हैं हम एक नए परिवार में जन्म लेते हैं यह ना एक बार आ जिसका एक धर्मी

अगुआ है जो परमेश्वर प्रसन्न करता है तथा इस कारण हम परमेश्वर में बहुतायत रूप से आशीषित है यह परमेश्वर के छुटकारे की योजना है कि मनुष्य को उसके पूर्व की स्थिति मैं परमेश्वर की उपस्थिति में पुनः स्थापित करें परंतु पौलुस एक और अत्यंत महत्वपूर्ण विषय में बात करता हैA

परमेश्वर की महिमा

परमेश्वर महिमा में है माया हमारा भला परमेश्वर के अपने आपको महिमा देने के उद्देश्य पर आधारित है 7 पद में प्रेरित परमेश्वर के छुटकारे की योजना के कारणों को बतलाता है इफिसियों 1:7 परमेश्वर अपने लोगों के द्वारा इस पृथ्वी पर अपने अनुग्रह की महिमा को दिखाना चाहता है सर दोनों के समान प्राणी जो कभी पतित नहीं हुए उनके पास उसकी अनुग्रह और दया को दिखाने का मौका नहीं है वह केवल उस की भलाई को जानते हैं परंतु अतिथि मनुष्य के साथ परमेश्वर कार्य कर सकता है कि उनके द्वारा अपने अनुग्रह को दिखाएं बिल्कुल अचंभित करने वाले आतिशबाजी के समान जब तक उन्हें छोड़ा नहीं जाता तथा प्रदर्शित नहीं किया जाता कोई भी उसका आनंद उठा नहीं पाता परमेश्वर ने अपने महिमा में कार्यों को प्रकट किया परमेश्वर हमेशा अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण रहा है समस्या यह है कि दूसरे उसके इस स्वभाव को समझ नहीं पाते क्योंकि पाप के कारण से वह अंधे हो गए हैंA

यह प्रश्न कि परमेश्वर ने हमें क्यों बचाया इसको देखना अति आवश्यक है यदि हम एक खोज उत्तर को नहीं बनाते हैं तो परमेश्वर तथा खुद के विषय में गलत निष्कर्षों को निष्कर्ष उत्पन्न होने लगेंगे उदाहरण के तौर पर लोक कह सकते हैं कि परमेश्वर ने हमें इसलिए बचाया क्योंकि हम उसके लिए बहुमूल्य है तथा हालांकि हम उसके रूप में रखे गए हैं हमें इस बात को जानना है कि हमें ऐसा कुछ मूल्यवान नहीं जो परमेश्वर की क्रोध को हमारे ऊपर आने से रोक सके इसी कारण से परमेश्वर के छुटकारे की योजना का कारण यह नहीं था परमेश्वर ने बड़ी आसानी से नई सृष्टि की रचना कर सकता था जो उसे प्रेम रखती हम स्वभाविक रुप से ना तो परमेश्वर के मित्र बनना चाहते हैं A यार उसको खोजना चाहते हैं इफिसियों 2:1-3 को पढ़ें रोमियों 3:11-15 सरकारी योजना का लेना देना परमेश्वर की महिमा का प्रगटीकरण तथा उस आनंद के विषय में है जो उसे हमारे साथ अपनी महिमा बांटने से मिलता है परमेश्वर असंतुष्ट किया अकेला नहीं था परमेश्वर अपनी पूर्व से छुपी हुई गुणों को प्रकट करना चाहता था हम उसके लोग इस्लाम को प्राप्त करने वाले हैं उसने चुना कि अपने अनुग्रह की महानता को प्रकट करें मसीह में हम से प्रेम करने के द्वारा

परमेश्वर के छुटकारे की योजना किसी अनदेखे घटना क्रम के कारण उत्पन्न नहीं हुई परंतु इसके विपरीत परमेश्वर अपनी महिमा में दया तथा अनुग्रह को प्रकट करने के तरीके को ढूंढ रहा था तथा उसने मनुष्य को बनाया अपने अनुग्रह की वस्तु के रूप में A

मूल्य के द्वारा खरीदे गए

हमने इस विषय में चर्चा की कि किन कारणों से परमेश्वर ने इश्क महंगे छुटकारे की योजना का कार्य किया जो अब हमें इस बात पर ध्यान देना है कि किन तरीकों से उसने हमें बताया प्रेरित पौलुस कहता है A क्योंकि दाम देकर मोल लिये गए हो, इसलिये अपनी देह के द्वारा परमेश्वर की महिमा करो॥

1 कुरिंथियों 6:20

छुटकारे का शाब्दिक अर्थ है किसी चीज को खरीदना या कीमत को देना यहां पर एक कीमत है मनुष्य उस दुष्ट का गुलाम था सथाई पेशियों 213 एक कठोर चित्र को प्रकट करती है प्रश्न यह है तब कैसे परमेश्वर हमारी सहायता कर सकता है जब हम शैतान के अधिकार के अधीन रह रहे हैं जो बात मनुष्य की दुर्दशा को और खराब करती है वह तथ्य है कि उसने किसे चुना इस बात को जानते हुए कि परमेश्वर ने एक खास क्षेत्र में आज्ञाकारिता की आज्ञा दी थी

पौलुस हमें स्मरण दिलाता है कि हम एक कीमत के द्वारा खरीदे गए हैं एक वस्तु की कीमत उसके योगिता के द्वारा नापी जाती है और एक वस्तु की योग्यता उस कीमत में दिखती है जिसे एक व्यक्ति उसके लिए चुकाना चाहता है जब पौलुस कहता है कि हम एक कीमत के द्वारा खरीदे गए हैं वह इस तथ्य को सामने लेकर आता है कि हमारा जीवन इसलिए बहुमूल्य है कि परमेश्वर ने एक बड़ी कीमत हो चुकाया है ताकि हमें अपने लिए ले सकें A

जिस समस्या के विषय में ऊपर बताया गया वह यह है कि हमारा मूल्य हमारे अंदर की बधाई की भलाई पर आधारित है यह हम परमेश्वर

को क्या दे सकते हैं यह सत्य नहीं है हम उसके बड़े क्रोध के योग्य है हमारा मूल्य उसके उस प्रेम से जो उसने हमारे जीवन ऊपर बहुतायत से दिया प्राप्त करते हैं उसने हमें अपना एक बहुमूल्य खजाना बनाया पूरे अनंत काल में दूसरी प्राणी तथा स्वर्गदूत परमेश्वर के लोगों की पहचान इस रूप में करते हैं जिनके लिए मसीह यीशु मारा गया प्रकार की फिल्म तथा उसके पति सृष्टि के प्रति समर्पण की कल्पना करना बहुत कठिन है केवल परमेश्वर का प्रेम ही है जो हमें बचा सकता है A

खरीद

यीशु मसीह हमें खरीदने के लिए मारा गया केवल मसीह की मृत्यु के द्वारा ही हम पापों की शमा को प्राप्त कर सकते हैं और अधर्मी योग के लिए धार्मिकता छुटकारे काया चित्र हम पूरे शास्त्रों में देख सकते यूसुफ को उसके भाइयों द्वारा एक कीमत पर दास के रूप में बेचा गया 20 चांदी के सिक्कों में उत्पत्ति 37 'kkafr मसीह यीशु का मूल्य को जबरदस्ती नहीं ठहराया तथा जिसके लिए यीशु को धोखा देने के लिए तैयार था चांदी के सिक्के 30 जैसा की भविष्यवाणियां की गई थी लेन देन अवस्था को बदल देता है।

हमने पहले अध्याय में देखा था कि कैसे यहूदियों ने यहूदी शर्मिंदा हुए थे जब यीशु ने उसे कहा था कि उन्हें स्वतंत्रता की खोज करनी है जो होना 8:33 उन्होंने विश्व की उस बात को पकड़ा जब उसने दास तत्वों के विषय में उनसे कहा जिस सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा यीशु ने उन्हें उत्तर दियाAयीशु ने उन को उत्तर दिया; मैं तुम से सच सच कहता हूं कि जो कोई पाप करता है, वह पाप का दास है। यूहन्ना 8:34

एक कीमत को चुकाया जाना आवश्यक है क्योंकि हम सब उस दुष्ट के वासतव में है जो उसके अधिकार के अधीन है एक डांस को स्वतंत्र करने के लिए एक व्यक्ति को उस बाजार की कीमत को देखकर उसे प्राप्त करना है तब वह मनुष्य आपका दास बन जाता है इसी कारण से पौलुस कई बार अपने आपको परमेश्वर का दास बताता है कृपया 11 फिलीपीन नए नियम के दिनों में तथा युग में लोग आमतौर पर सेवकों को रखते थेA

सारांश :परमेश्वर का सामर्थी प्रेम (इफिसियों 2:8- 10)

लोग जिस चीज को वह चाहते हैं और जिसकी उनको आवश्यकता होती है वह उसे खरीदते हैं परमेश्वर के छुटकारे की खरीदारी उसके लोगों की मैं उसको समर्थ किया कि जिस मनुष्य जाति को किसने बनाया उनकी संगति का आनंद उठा सकेंA इसी बात को हम इफिसियों 2:7-10 में देखते हैं

क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन परमेश्वर का दान है। और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे। क्योंकि हम उसके बनाए हुए हैं; और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिये सृजे गए जिन्हें परमेश्वर ने पहिले से हमारे करने के लिये तैयार किया॥ इफिसियों 2:8-10

उनको उस अनुग्रहित के विषय में स्मरण दिलाने के पश्चात जिसके द्वारा वह बचाए गए हैं तथा यह कहने कर की विश्वास के द्वारा ना की खुद के कार्यों के द्वारा प्रेरित आंखें बढ़ता है तथा हमारे जीवन के लक्ष्य का विवरण देता है A

हम उसकी कारीगरी है परमेश्वर ने हमें इस प्रकार बनाया तथा हमारी रूपरेखा बनाएं ताकि हम उस को प्रसन्न कर सकें और उसके महान प्रेम की जय चिन्ह बन सके परमेश्वर शरीफ व्यक्ति में सारी आवश्यक व्यक्तिगत तथा आत्मिक वरदानों को जिनकी आवशयकता उसके भले कार्य को पूरा करने के लिए लगती है डाला है उन कार्यों को जो उसने सृष्टि की रचना से पहले तैयार कीA

तब उद्धार का केवल पापों की शमा प्राप्त करना से कहीं अधिक बढ़ कर अर्थ को रखता है चाहे वह कितनी भी बहुमूल्य क्यों ना हो हमारे छुटकारे में वह सब कुछ है जिसका संबंध सहभागिता तथा उन कार्यों से है जो परमेश्वर हमारे द्वारा करना चाहता है हमारे बचाए जाने के पश्चात हमारे अच्छे कार्य हमारे उधार के ऊपर कभी भी अलग रूप से नहीं देखे जाते परंतु उसके एक भाग के रूप में देखे जाते हैं एक पैकेज डे के समान हमें इस तथ्य को लेकर उत्साहित होना है कि परमेश्वर एक सिद्ध समर्थ करने वाला है तथा वह एक अगुआ है जो इस बात का निश्चय करता है कि हमारे पास वह हो जिसकी आवश्यकता हमें उस कार्य को पूरा करने के लिए होगी जिसे उसने हमारे लिए रखा हैA

---

1. इस बात को देखें कि पौलुस यह नहीं कहता कि हमारे अपराधों तथा पापों के कारण परंतु हमारे अपराधों में यह इसलिए कि हम पहले से ही आदम में मरे हुए हैं रोमियों 5:11-21 हमारा खुद का व्यक्तिगत पा उस घातक मिशन मिश्रण में जुड़ता है जिस कारण से जब हम मसीही से अलग होते हैं एक और अधिक न्याय को लेकर आता है

2. eसीहत एक धार्मिक प्रतिष्ठान के रूप में किसी को बचा नहीं सकता हालांकि अपने सारे सूत्रों में स्त्रोतों में वह उधार के सुसमाचार को रखता है हम पूर्व की चीजों की बात करते हैं उदाहरण के तौर पर कि आप एक अच्छे मसीही होने के कारण से बचाएं नहीं जाते परंतु मस्ती को खोजने के द्वारा हम परमेश्वर के बचाने वाले हस्तक्षेप की आवश्यकता है ना की धर्म के द्वारा आपके पीठ थपथपाने के द्वारा

3. इन पदों के ऊपर की इफिसियों की सामग्री को देखें

#8 छुटकारा देने वाला छुटकारे को लेकर आता है

इस संसार को एक तारणहार की अति आवश्यकता है जीवन हमसे यह चाहता है कि हम समस्याओं का समाधान करें उसमें से कुछ दूसरों से आसान होती हैं हालांकि कुछ ऐसा समय भी आता है जब ऐसी परिस्थितियों में पड़ जाते हैं जो हमारे नियंत्रण से बाहर होती है हम उनको हल नहीं कर पाते परंतु हम ऐसे हार भी नहीं मान सकते अपनी असफलताओं तथा कमजोरियों को छुपाना केवल अस्थाई सुधार है कुछ समय बाद हर चीज है सामने आ जाती हैं जीवन की हरसंभव परिस्थितियां इसीलिए बनाई गई है कि वह हमें हमारे तारणहार की ओर ले जाएं तारणहार हमें मुश्किल परिस्थितियों से बचाता है

परिभाषा के अनुसार एक तारणहार एक जरूरतमंद की सुधि उन चीजों को अपने ऊपर लेने के द्वारा जरूरतमंद को पुनः स्थापित करने के लिए उसके लिए दुख उठाएं अनावश्यक परिणामों को अपने ऊपर लेकर यीशु मसीह एक सच्चा तारणहार है वह एक बड़े अक्षर वह उस बड़े अक्षर के साथ तारणहार है नायको सहायकों तारणहारा तथा बचाने वालों के सारे चित्र जो इस संसार में हमें मिलते हैं वह उस सिद्ध तारणहार यीशु मसीह की ओर संकेत करते हैं हमारी असंभव परिस्थितियां हमें उन तरीकों की सराहना कर सकें जिसके द्वारा परमेश्वर

हस्तक्षेप करता है तथा मनुष्य कि उसकी समस्या के साथ सहायता करता शैतान का लक्ष्य हमें धोखा देना वह चाहता है कि हमारी उस छुड़ाने वाली की आवश्यकता की अभिशंसा को कम करें यदि वह हमारी सबसे मुख्य आवश्यकता के प्रति हमें दृष्टिहीन कर दें तब हम हमारे तारणहार यीशु मसीह को नहीं पुकार पाएंगे दूसरी और प्रभु अपनी व्यवस्था को इस्तेमाल करता है मनुष्य का अंतःकरण तथा दूसरा तरीका की मशीन की आवश्यकता के प्रति हमें प्रतीति कराए यहां कारण स्पष्ट है केवल हमारे उधारकर्ता की आवश्यकता को प्रगट करने के द्वारा वहां हस्तक्षेप कर सकता है तथा हमें बचा सकता है प्रभु चाहता है कि हम अपनी उसकी जग उसके लिए जरूरत को पहचाने वह इंतजार करता है कि इस बात को हम जाने तथा अपनी उस आवश्यकता को प्रकट करें वचन में हर जगह हम यह पाते हैं कि लोग अलग-अलग प्रकार की परेशानियों में परिस्थितियों में पर से जो प्रभु के नाम को पुकारते तथा सहायता पाते हैंA

छुटकारा

उस समय हेरोदेस राजा ने कलीसिया के कई एक व्यक्तियों को दुख देने के लिये उन पर हाथ डाले। उस ने यूहन्ना के भाई याकूब को तलवार से मरवा डाला। और जब उस ने देखा, कि यहूदी लोग इस से आनन्दित होते हैं, तो उस ने पतरस को भी पकड़ लियावे दिन अखमीरी रोटी के : दिन थे। और उस ने उसे पकड़ के बन्दीगृह में डाला, और रखवाली के लिये, चार चार सिपाहियों के चार पहरों में रखाइस मनसा से कि : फसह के बाद उसे लोगों के साम्हने लाए। सो बन्दीगृह में पतरस की रखवाली हो रही थी; परन्तु कलीसिया उसके लिये लौ लगाकर परमेश्वर

से प्रार्थना कर रही थी। और जब हेरोदेस उसे उन के साम्हने लाने को था, तो उसी रात पतरस दो जंजीरों से बन्धा हुआ, दो सिपाहियों के बीच में सो रहा थाऔर पहरूए द्वार पर बन्दीगृह की रखवाली कर रहे थे। : प्रेरितों के काम 1216

पतरस अपने आप को एक मुश्किल परिस्थिति में पाता है याकूब की तलवार द्वारा मारे जाने के पश्चात हेरोद राजा ने देखा कि इस बात ने यहूदियों को प्रसन्न ने किया तब उसने पत्थर को पकड़वाया तथा अगले दिन उसको मारने की तैयारी की परमेश्वर के लोगों ने हालांकि प्रभु को पुकार रहे थे कि वह पतरस को छुड़ाए सो बन्दीगृह में पतरस की रखवाली हो रही थी; परन्तु कलीसिया उसके लिये लौ लगाकर परमेश्वर से प्रार्थना कर रही थी। (प्रेरितों के काम 12:5)

हालांकि हमें इस प्रकार के जीवन संकट की परिस्थितियों का अनुभव नहीं है बतरस के समान लोगों के पास फिर भी एक महत्वपूर्ण जरूरत है एक तारणहार की तथा परमेश्वर की दया के द्वारा उसने एक को हमारे लिए उपलब्ध कराएं आदम के प्रारंभिक आपने हममें से प्रत्येक को उस आदमी की मृत्यु की कब्र में डाल दिया एक ऐसी कब्र जिसे केवल प्रभु ही तथा वही एक तरीके के द्वारा इसको खोल सकता तथा जीवन दे सकता लोग कई बार अपनी परिस्थितियों के सत्य को समझ नहीं पाते तथा परिणाम स्वरुप वह दूसरों को उन समस्याओं का दोषी ठहराते हैं परमेश्वर इंतजार करता है कि हम उसकी और पुकारे उस सहायता के लिए जो उस आवश्यक हस्तक्षेप को लेकर आएगाA

हेजकीया पुकारता है

यहूदा का राजा हेजकीया को यह मालूम चला कि वह मरने पर है वह इस बात को अपनाने के लिए तैयार नहीं था तथा चीजों को अपने मरने से पहले ठीक करने के लिए परंतु इसके बजाय वह प्रभु की ओर पुकारता है

उन दिनों में हिजकिय्याह ऐसा रोगी हुआ कि वह मरने पर था। और आमोस के पुत्र यशायाह नबी ने उसके पास जा कर कहा, यहोवा यों कहता है, अपने घराने के विषय जो आज्ञा देनी हो वह दे, क्योंकि तू न बचेगा मर ही जाएगा। तब हिजकिय्याह ने भीत की ओर मुंह फेर कर यहोवा से प्रार्थना कर के कहा; हे यहोवा, मैं बिनती करता हूं, स्मरण कर कि मैं सच्चाई और खरे मन से अपने को तेरे सम्मुख जानकर चलता आया हूं और जो तेरी दृष्टि में उचित था वही करता आया हूं। और हिजकिय्याह बिलक बिलककर रोने लगा। यशायाह 38:1-3

हेजकीया राजा ने परमेश्वर के अनुग्रह को ढूंढा अपने इस असंभव परिस्थिति के लिए उसने प्रभु के साथ तर्कसंगत किया 2-3 तथा खूब रोया 3- 5 आयत में हम यह बातें हैं कि प्रभु ने उसकी पुकार को सुना तथा उसे जंग आई थी परमेश्वर ने यशायाह को निर्देश दिया कि जा और हिचकिया से कह जा कर हिजकिय्याह से कह कि तेरे मूलपुरुष दाऊद का परमेश्वर यहोवा यों कहता है, मैं ने तेरी प्रार्थना सुनी और तेरे आंसू देखे हैं; सुन, मैं तेरी आयु पन्द्रह वर्ष और बढ़ा दूंगा।

परमेश्वर के अनुग्रह को तब तक नहीं ढूंढा जाता जब तक एक व्यक्ति जिन्हें नहीं जानता कि परमेश्वर की सहायता के बिना यह कितना है कितना जरूरतमंद है परमेश्वर को खोजने तथा उसके अनुसार की

कुंजी इस बात के बिल्कुल विपरीत है जो कई विश्वास करते हैं परमेश्वर का अनुग्रह अपने पैसे देने के द्वारा या एक के बाद एक 5 बार कलीसिया में जाकर या दूसरी धार्मिक तथा नाना प्रकार की कार्यों को करने के द्वारा नहीं आता यह सब इस बात पर निर्भर करता है कि अपनी आवश्यकता को पहचाने तथा परमेश्वर की ओर सहायता के लिए पुकारेA

अनुग्रह तब आता है जब हम अपनी अजय आवश्यकता को समझ पाते हैं तथा परमेश्वर को खोजने के द्वारा का प्रति उत्तर देते हैं तथा उसकी ओर सहायता के लिए पुकारते हैं यीशु उस पहाड़ी संदेश की शुरुआत प्रसिद्ध पहाड़ी संदेश की शुरुआत इस बात विषय के द्वारा आरंभ करता है मस्ती 534 अपनी वास्तविक आवष्यकताओं के प्रति जागृत हमारी आत्मा की गरीबी हमारे हृदय वह के नवीन की नवीनीकरण का पहला कदम है।

आशा को पाने का शास्त्र परमेश्वर के उन महान पुरुषों तथा स्त्रियों से भरे पड़े हैं जिन्होंने परमेश्वर की ओर सहायता के लिए पुकारा मूसा जरूरी यहोशू नीम आया खन्ना इत्यादि महानता बड़े कार्यो को पूरा करने से नहीं आती परंतु खुद की कमियों को जानना तथा परमेश्वर को हस्तक्षेप के लिए पुकारना है वह वह है जो अपने लोगों को छुड़ाने से प्रीति रखता है प्रीति तथा अपने राम को उन व्यक्तियों पर तथा राष्ट्रों पर जो उसको पुकारते हैं महान ठहराता है पवित्र शास्त्र ना केवल मुस्कुराने वाले को जो हमारी अत्यंत भीषण आवष्यकताओं के बावजूद हमारी सहायता कर सकता है परंतु परमेश्वर के साथ टूटे हुए संबंध सदस्यों के साथ टूटे हुए संबंध की ओर इशारा करता है तथा कैसे उसका अद्भुत

अनुग्रह उंडेल आ जाता है उनके लिए जो हमारे भले परमेश्वर को पुकारते हैं।

आने वाला तारनहार

तारणहार की ओर छुपे हुए तथा घोषित किए हुए इशारे शास्त्रों में बिखरे पड़े हैं यह अनुवादित शब्द तारणहार 18 बार n a s b अनुवाद में आता है तथा पुनः 13 बार 1 रिश्तेदारों के रूप में अनुवाद किया गया है प्रभु रिश्तेदार तारणहार नियम को उपयोग करता है ताकि इस बात को इस्राइलियों के मन में स्थापित कर सके रिश्तेदार चुराने वाला इस बात के लिए जिम्मेदार था कि वहां अपने भाई की विधवा से शादी कर उसके लिए बच्चों को उत्पन्न करें और इस प्रक्रिया के द्वारा संपत्ति उसके भाई के परिवार में बनी रहेगी रिश्तेदार तारणहार को कुछ नहीं मिलेगा इस शब्द को बाद में एक बड़ा अर्थ मिलेगा जब यह एक तारणहार के रूप में अनुवादित होता है इसका अर्थ है की एक कीमत को चुकाने के द्वारा फिरौती के द्वारा यहां तक कि बचाने के द्वारा छुड़ाए यद्यपि कई रिश्तेदार तारणहार है परंतु एक ही सच्चा तारणहार होगा यीशु मसीह उसका नाम यीशु का शाब्दिक अर्थ बचाने वाला है ।

यह शुभ एक वायदा किए हुए मसीही तथा तारणहार के रूप में पहचाना जाने जाना सुसमाचार के संदेशों की मुख्य भाग को बनाता है सार्वजनिक रुप से सही प्रचार यीशु मसीह के रूप में पुष्टि करता है अपोलो एक उदाहरण है। प्रेरितों के काम 18:28

रूत तथा एक तारणहार

हालांकि हम उसे चुराने वाले पर अपने ध्यान को लगा रहे हैं बाइबिल में ऐसे समय है जब रिश्तेदार तारणहार कहा ना आने वाले उद्धार कर्ता की

ओर इशारा करती हैं यह बड़े स्पष्ट नीति से हमें रूट की पुस्तक में दिखता है नवमी ने विवाह किया तथा उसके दो पुत्र उत्पन्न हुए जो अपने विवाहों के पश्चात मर गए बिना कोई पुत्र के रूत 1:5 कोई भी नहीं था कि उनकी संपत्ति तथा नाम को बढ़ाएं संपत्ति केवल पुत्र के द्वारा ही आगे बढ़ती वह आज उसका करीबी संबंधी उस रिश्तेदार की जिम्मेदारी को लेता है नवमी से विवाह करके नहीं जो बुरी थी परंतु उसकी बहू रूप से रूत 4:13 एक तेरा संपत्ति बोअज हीं परंतु उनके पुत्र ओबेद को मिलेगी फिर बोअज ने कहा, जब तू उस भूमि को नाओमी के हाथ से मोल ले, तब उसे रूत मोआबिन के हाथ से भी जो मरे हुए की स्त्री है इस मनसा से मोल लेना पड़ेगा, कि मरे हुए का नाम उसके भाग में स्थिर कर दे। तब बोअज ने वृद्ध लोगों और सब लोगों से कहा, तुम आज इस बात के साक्षी हो कि जो कुछ एलीमेलेक का और जो कुछ किल्योन और महलोन का था, वह सब मैं नाओमी के हाथ से मोल लेता हूं। फिर महलोन की स्त्री रूत मोआबिन को भी मैं अपनी पत्नी करने के लिये इस मनसा से मोल लेता हूं, कि मरे हुए का नाम उसके निज भाग पर स्थिर करूं, कहीं ऐसा न हो कि मरे हुए का नाम उसके भाइयों में से और उसके स्थान के फाटक से मिट जाए; तुम लोग आज साक्षी ठहरे हो। तब फाटक के पास जितने लोग थे उन्होंने और वृद्ध लोगों ने कहा, हम साक्षी हैं। यह जो स्त्री तेरे घर में आती है उसको यहोवा इस्राएल के (रूत 4:5 ,4:9 -11) ।

बोअज विश्वास योग्यता के साथ नवमी की परिवार की सेवा की तथा परिणाम स्वरुप पुत्र जिसे नवमी ने पाला उत्पन्न हुआ तब स्त्रियों ने नाओमी से कहा, यहोवा धन्य है, जिसने तुझे आज छुड़ाने वाले

कुटुम्बी के बिना नहीं छोड़ा; इस्त्राएल में इसका बड़ा नाम हो। रूत 4:14 था वह बड़ा प्रसिद्ध हो गया और उसकी पड़ोसिनों ने यह कहकर, कि नाओमी के एक बेटा उत्पन्न हुआ है, लड़के का नाम ओबेद रखा। यिशै का पिता और दाऊद का दादा वही हुआ॥ रूत 4:17 ओबेद ने दाऊद की उस घड़ी में मुख्य रिक्त स्थान को भर दिया तथा मसीहा की कितना रुचिकर है कि परमेश्वर ने रूत की कोख को तब तक नहीं खुला जब तक उसने बोअज से शादी नहीं करनी।

परमेश्वर ने सारी परिस्थितियों का उपयोग किया कि वह इसराइल के लिए आने वाले तारणहार की आशा को मजबूत करें बुआज एक रिश्तेदार तारणहार था तथा क्योंकि उसके कारण एक महान जन इस संसार में आएगा जो इस संसार का तारणहार बनेगा यीशु मसीह दाऊद की संतान तथा ओबेद कापौ=।

यहूदा से एक राज्य दंड

जब तक शीलो न आए तब तक न तो यहूदा से राजदण्ड छूटेगा, न उसके वंश से व्यवस्था देनेवाला अलग होगा; और राज्य राज्य के लोग उसके आधीन हो जाएंगे॥ उत्पत्ति 49:10

इस पद के कुछ अलग अलग अनुवाद है परंतु यह मुख्यता परमेश्वर द्वारा दी गई भविष्यवाणी के रूप में कार्य करती है कि हमें इस बात का स्मरण दिलाएं कि हम एक तारणहार की राह देखें हेलो हेलो हेलो हेलो मसीहा के साथ तारणहार के रूप में पहचाना जाता है जो लोगों में एक नई आत्मा को उत्पन्न करेगा सिलो का वायदा किया गया कि वह आएगा तथा यहूदा का राज्य लेगा और उसे और अधिक ऊंचे

स्थान पर लेकर जाएगा मसीहा वह अंतिम राजा होगा जो ना केवल याकूब के वंशजों पर प्रभाव को डालेगा परंतु सारे राष्ट्रों में भी यह शब्द लोग बहू आरती है इस बात की ओर इशारा करता है कि वह सब लोगों की सहायता करेगा केवल यहूदियों की नहीं परंतु अन्य जातियों की भी।

जैसे हमने पूर्व के अध्यायों में देखा मसीहा तथा तारणहार यहूदा के गोत्र से आएगा मीका 52 यहूदा चौथे स्थान पर जन्मा था परंतु उसके बड़े भाइयों में बुरी तथा क्रूर विद्यार्थी प्रभातियां थी पर्वतीय थी उन्हें परमेश्वर के लोगों के नेतृत्व से अस्वीकृत कर दिया गया

यहूदा गया आदर कीजिए उसका एक वंशज किलो होगा एक वायदा किया हुआ छुड़ाने वाला जो सबके लिए यह एक अद्भुत उद्धार करता है जो यहूदा गोत्र से उत्पन्न हुआ दाऊद के घराने से जखई यह ना बपतिस्मा देने वाले का पता उस तारणहार के विषय में कहता है जिसके लिए उसका पुत्र मार्ग को तैयार करेगा ।

> और उसका पिता जकरयाह पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गया, और भविष्यद्ववाणी करने लगा। कि प्रभु इस्राएल का परमेश्वर धन्य हो, कि उस ने अपने लोगों पर दृष्टि की और उन का छुटकारा किया है। और अपने सेवक दाऊद के घराने में हमारे लिये एक उद्धार का सींग निकाला। जैसे उस ने अपने पवित्र भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा जो जगत के आदि से होते आए हैं, कहा था। अर्थात हमारे शत्रुओं से, और हमारे सब बैरियों के हाथ से हमारा उद्धार किया है। कि हमारे बापदादों पर दया करके अपनी-पवित्र वाचा का स्मरण करे। और वह शपथ जो उस ने हमारे पिता इब्राहीम से खाई थी। कि वह हमें यह देगा, कि हम अपने

शत्रुओं के हाथ से छुटकर। उसके साम्हने पवित्रता और धामिर्कता से जीवन भर निडर रहकर उस की सेवा करते रहें। और तू हे बालक, परमप्रधान का भविष्यद्वक्ता कहलाएगा, क्योंकि तू प्रभु के मार्ग तैयार करने के लिये उसके आगे आगे चलेगा, कि उसके लोगों को उद्धार का ज्ञान दे, जो उन के पापों की क्षमा से प्राप्त होता है। यह हमारे परमेश्वर की उसी बड़ी करूणा से होगा; जिस के कारण ऊपर से हम पर भोर का प्रकाश उदय होगा। कि अन्धकार और मृत्यु की छाया में बैठने वालों को ज्योति दे, और हमारे पांवों को कुशल के मार्ग में सीधे चलाए।। लुका 1: 67- 79

flyks; उस अद्भुत भविष्य के अगुआ को दर्शाता है और यह दर्शन परमेश्वर के लोगों में यह शिव के समय तक पूर्ण होगा यह जानने योग्य बात है कि 70 ईशा पश्चात यहूदी परिवार की जानकारियां के द्वारा रोमियो के द्वारा यरूशलेम की तबाही के समय नाश कर दी गई flyks; यहूदा के घराने में पैदा हुआ उसे इस समय से पहले जन्म लेना था बाद में नहीं ताकि अपनी पहचान को सिद्ध कर सकेA

एक बार जब यीशु जो सिलो है आया हम देख सकते हैं कि यहूदी सर्वाधिकार तथा पारीक पारीक जानकारियां ले ली गई छीन ली गई हालांकि ऐसा लगता है की इन बातों ने इस राय की महिमा को उससे छीन लिया

भविष्यवाणियां यीशु मसीह की ओर ध्यान को ले जाती है तथा उसके लोगों के लिए उस छुटकारे की ओर जो पूर्ण हुआ एक बेहतर राज्य इसलिए कलीसिया को परमेश्वर के राज्य के विषय में ऐसा मजबूत

विचार रखना है जिसके विषय में यीशु ने कहा पर यदि मैं परमेश्वर के आत्मा की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूं, तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे पास आ पहुंचा है। मत्ती 12: 28

पुराने नियम में भविष्यवाणी की गई तारणहार के विषय में

ऊपर हमने तारणहार के कुछ संदर्भों का विश्लेषण किया परंतु हमें यह समझना है की तारणहार का विषय मजबूत है तथा पुराने नियम के साहित्य में रेखांकित किया गया है तथा इस बात को चित्रित करता है कि तारनहार के लिए आशा परमेश्वर के लोगों के लिए क्या बन गई है नीचे हम तारणहार के विषय को कविताओं तथा भविष्यवाणी की पुस्तकों में देखेंगे।

अयूब की पुस्तक में तारणहार परमेश्वर के शुरुवाती लोगों में से है जो एक तारणहार की आशा को रखता है यह शब्द काफी जाने माने तथा कई बार कमाल किए जाते हैं । मुझे तो निश्चय है, कि मेरा छुड़ाने वाला जीवित है, और वह अन्त में पृथ्वी पर खड़ा होगा। अयूब 19:25

अयूब इस बात से परेशान था जिससे उस दुष्ट ने उसके जीवन को तबाह कर दिया था जो भी हनी उसने उठाए उसे वह समझ नहीं पा रहा था खासतौर से उसके धर्मी जीवन की रोशनी में वह निश्चित रूप से सिद्ध नहीं था परंतु परमेश्वर के द्वारा उसे खरा घोषित किया गया था अयूब 1:1,8 2:3) हालांकि जो कुछ उसके पास था उसने शब्बा की हानि उठाई उसके बच्चों समेत अयूब की आशा हालांकि उसकी धार्मिकता पर केंद्रित नहीं थी परंतु उस छुड़ाने वाले पर जिसके ऊपर उसने विश्वास किया कि वह आएगा और सब बातों को ठीक करेगा।

तारणहार भजन संहिता तथा नीतिवचन में

जय शब्द तारणहार जैसे जैसे समय बीतता गया और वैसे और उपयोग किया गया हरिद्वार हर एक बार इस शब्द का थोड़ा सा अलग संदर्भ है

- मेरे मुंह के वचन और मेरे हृदय का ध्यान तेरे सम्मुख ग्रहण योग्य हों, हे यहोवा परमेश्वर, मेरी चट्टान और मेरे उद्धार करने वाले! भजन संहिता 19:14

भजन संहिता 19:14 में जो तारणहार है वह व्यक्तिगत है मेरा चुराने वाला मेरा छुड़ाने वाला मेरा तारणहार यह व्यक्तिगत रूप से बुलाया जाना इसीलिए इस्तेमाल किया गया कि परमेश्वर के प्रति धन्यवाद को प्रकट कर सकें कि किस प्रकार से परमेश्वर ने पूर्व में उसकी सहायता की और उसे और अधिक भक्ति तथा समर्पण के स्थान पर लेकर आया दाऊद उन्हीं शब्दों तथा विचारों तथा अपने आप को सीमित करें करने की चाह कर रहा था जो परमेश्वर को भावतीA

- और उन को स्मरण होता था कि परमेश्वर हमारी चट्टान है, और परमप्रधान ईश्वर हमारा छुड़ाने वाला है। भजन संहिता 78:35

भजन संहिता 78:35 में भजन कार सारे परमेश्वर के लोगों के विषय में बात करता हूं उनका तारणहार मेरे तारणहार से जो व्यक्तिगत है काफी अलग है परमेश्वर अपने सारे लोगों के लिए कार्य करता है ना कि केवल एक व्यक्ति के लिए जब परमेश्वर के लोग यह समझ पाए यह कैसे परमेश्वर उनकी चिंता करता है वह अपने प्रतिउत्तर को उसके प्रति बदलेंगेA

- कि उनका छुड़ाने वाला सामर्थी है; उनका मुकद्दमा तेरे संग वही लड़ेगा। नीतिवचन 23:11

अंत में नीतिवचन में हम यह देखते हैं कि तारणहार अपने लोगों के ऊपर देख-रेख करने वाला है वह ना केवल उनको एक भला नियम देता है परंतु उन नियमों को लागू भी करता है परमेश्वर किलर केवल एक न्याई नहीं परंतु जिनके साथ गलत व्यवहार होता है वहां उनकी उनका बचाने वाला की है

मसीहा का समानार्थी बन जाता है परंतु इसका और अधिक मजबूतजोर उस व्यक्ति के रूप में दिया जाता है जो चीजों को जैसी होना चाहिए उस रूप में पुनर्स्थापित करने वाली के रूप में यह शब्द बचाने वाला इसी समान पुराने तथा नए नियमों में उपयोग किया गया है यह तकरीबन समान बार इस्तेमाल किया गया है परंतु वह छुटकारे पर छोड़ देता है जोर देता है तारणहार उस कीमत की ओर इशारा करता है जिसे वह इस बचाने के कार्यक्रम में अपने ऊपर लेकर चलता हैA

तारणहार यशायाह तथा भविष्यवक्ताओं

पुस्तक में यह रुचिकर बात है कि हम यह पाते हैं तारणहार का विषय यशायाह के दूसरे भाग में काफी मजबूत है यह है उन लोगों में आशा को लाता है जो अपनी मातृभूमि यरूशलेम से काफी दूर निर्वासित व्यक्ति थे इन कपड़ों में प्रकरणों में इन प्रकरणों में परमेश्वर अपने आप को एक तारणहार के रूप में घोषित करता है और इस समय परमेश्वर के लोग दुश्मनों के हाथ बेचे गए तथा उनके पास अपने आप को बचाने का कोई तरीका नहीं था यह प्रभु ने कहा कि वह एक छुड़ाने वाले तारणहार के रूप में कार्य करेगा तथा अपने लोगों को आजाद करेगाA

- हे कीड़े सरीखे याकूब, हे इस्राएल के मनुष्यों, मत डरोयहोवा की ! यह वाणी है, मैं तेरी सहयता करूंगा; इस्राएल का पवित्र तेरा छुड़ाने वाला है।

 यशायाह 41:14

- तुम्हारा छुड़ाने वाला और इस्राएल का पवित्र यहोवा यों कहता है, तुम्हारे निमित्त मैं ने बाबुल को भेजा है, और उसके सब रहने वालों को भगोड़ों की दशा में और कसदियों को भी उन्हीं के जहाजों पर चढ़ाकर ले आऊंगा जिन के विषय वे बड़ा बोल बोलते हैं।

 यशायाह 43:14

- यहोवा, तेरा उद्धारकर्त्ता, जो तुझे गर्भ ही से बनाता आया है, यों कहता है, मैं यहोवा ही सब का बनाने वाला हूं जिसने अकेले ही आकाश को ताना और पृथ्वी को अपनी ही शक्ति से फैलाया है।

यशायाह 44:24

- क्रोध के झकोरे में आकर मैं ने पल भर के लिये तुझ से मुंह छिपाया था, परन्तु अब अनन्त करूणा से मैं तुझ पर दया करूंगा, तेरे छुड़ाने वाले यहोवा का यही वचन है।

यशायाह 54:8

- और याकूब में जो अपराध से मन फिराते हैं उनके लिये सिय्योन में एक छुड़ाने वाला आएगा, यहोवा की यही वाणी है।

यशायाह 59:20

- उनका छुड़ाने वाला सामर्थी है; सेनाओं का यहोवा, यही उसका नाम है। वह उनका मुक़द्दमा भली भांति लड़ेगा कि पृथ्वी को चैन दे परन्तु बाबुल के निवासियों व्याकुल करे।

यिर्मयाह 50:34

प्रभु अपनी पहचान खुद समय दर समय समय दर्द समय एक तारणहार के रूप में करता है यशायाह 41:14, 43:14, 48:17) वह परमेश्वर है जिसने उन्हें बनाया यशायाह 44:24 वहां उनका ख्याल रखेगा तथा उन्हें उनके शत्रुओं से बचाएगा यशायाह 41:14, 54:8, 59:20 यिर्मयाह 50:34)परमेश्वर उनको बचाने में समर्थ है यशायाह 41:14 यिर्मयाह 50:34 वह तैयार है कि अपने अनुग्रह तथा अपनी दया को उनके लिए दिखाएं यशायाह 54:8) ।

जिस कारण से तारनहार बचाने वाले का समानार्थी बन गया तथा परमेश्वर का वह इसलिए कि जितनी बार वह एक चुराने वाले के रूप में अपने आप को एक तारणहार के रूप में पहचान देता है छुटकारा यहां पर इस्राइलियों का बंधवाई से बचना है परंतु वह एक बड़ी बंधवाई की ओर इशारा करता है एक आत्मिक बंधवाई जो मनुष्य जाति को आत्मिक शत्रु से बांधती है यशायाह में दूसरे पद तथा दूसरे स्थानों में एक बड़ी कीमत के विषय में बात करते हैं जिसे केवल प्रभु ही चुकता कर सकता है तथा वह इसके लिए तैयार है । यशायाह 53 में प्रकट करता है

मनुष्य की संकट अवस्था प्रकट होती है :एक तारणहार की आवश्यकता

हमें उत्पत्ति की किताब की शुरुआत में कुछ पहेलीनुमा शब्द मिलते हैं तब उन दोनों की आंखे खुल गई, और उन को मालूम हुआ कि वे नंगे है; सो उन्होंने अंजीर के पत्ते जोड़ जोड़ कर लंगोट बना लिये। उत्पत्ति 3:7

खोज

आंखों का खुल जाना का अर्थ भले और बुरे के प्रति नई चेतना की ओर इशारा करता है परंतु इस बात की ओर भी इशारा करता है पत्र स्थिति पतित चिति की प्रकाशन की ओर यह तथ्य कि उन्होंने अंजीर की वृक्ष की पत्तियों कोशिश कर पत्तियों को सिलकर सिलचर उड़ने के को उनकी नग्नता तथा उसी स्थिति में रहने मैं असुविधा को भी बताता है खून की तुरंत प्रतिक्रिया उनकी शरणम तथा दूर भावना को प्रकट करता है जो उनकी परमेश्वर सृष्टिकर्ता के विरुद्ध आज्ञाकारिता के परिणाम स्वरुप हुई उसने कहा, किस ने तुझे चिताया कि तू नंगा है? जिस वृक्ष का फल खाने को मैं ने तुझे बर्जा था, क्या तू ने उसका फल खाया है? उत्पत्ति 3:11 और उन्होंने वर्जित फल को खाया A

समाजशास्त्र तथा मनोविज्ञान के क्षेत्र में स्पष्ट रुप से सिखाया जाता है कि मनुष्य एक जटिल प्राणी है शारीरिक तथा भावनात्मक तत्वों के साथ जो उसके संबंधों पर प्रभाव को डालते हैं यह शर्म की बात है कि यह चित्र मनुष्य के आत्मिक व्यक्तित्व को अनदेखा तथा तोर में उड़ता है आदम और हवा के द्वारा हाल ही की खोज जो उनकी नग्नता है तथा उनके शारीरिक स्थिति को देखने से उनकी गहरी आत्मिक और शारीरिक आभार प्रकट होता है आघात मैं इस बात से निश्चित हूं कि परमेश्वर की महिमा जो ज्योति के रूप में दिखती है वह मनुष्य से तब ले ली गई जब उन्होंने पाप किया तथा परिणाम स्वरुप उन्होंने अपने नग्न शरीर को पाया उनकी नग्नता ने उनकी शर्म को उजागर किया हालांकि उन्होंने तुरंत अपने आप को झांक लिया वहां अपर्याप्त थाA

इस बात को खोजने के पश्चात आदम और हवा ने अंजीर की पत्तियों से बुनकर अपने आपको ढाका ढाका अलंकारिक रूप में यह

मनुष्य के तरीके को बताता है अपने दूज भावना तथा शर्म को छुपाने की प्रयास को कुछ धर्म को एक वस्त्र के रूप में इस्तेमाल करते हैं वह सोचते हैं कि वह आत्मिक है क्योंकि वह आराधना सभा में जाते हैं तथा समाज में स्वयंसेवक हैं दूसरे अपनी दोष भावना को देने या तपस्या में भागने की कोशिश करते हैं झांकने की और कुछ और मनुष्य द्वारा बनाए गए आराधना के रीति-रिवाज जैसे योगा पूर्व के देशों में कई लोग यह नहीं समझ पाते यह आत्मिक आज़ादी की इच्छा से जुड़ा है हालांकि यह सारी चीजें शायद खराब ना हो परंतु परमेश्वर के पास उस संतोष भावना और शर्म को जिसे हम अनुभव करते हैं एक बेहतर भूल है हमारा तरीका अपने आप को ढकने के लिए जो अपर्याप्त अंजीर की पत्तियों से दिखता है वह उस कार्य को नहीं कर पाता

परमेश्वर का हल :स्थाई तथा अस्थाई

परमेश्वर ने उनके लिए एक स्थाई वस्त्र को बनाया उन्हें उसकी सहायता की जरूरत थी उत्पत्ति 3:21 इन वस्तुओं को बनाने में कुछ मेहनत लगी जब जानवरों की चमड़ी से आई जिसका अर्थ यह है उन जानवरों को मरना पड़ा क्योंकि मृत्यु एकमात्र तरीका था उनकी चमड़ी को वस्त्र के रूप में प्राप्त करने के लिए लहू जो की मृत्यु है उस उड़ने के लिए आवश्यक थी A

हालांकि उस ओढनी ने मनुष्य के शरीर को डांप दिया वह एक स्थाई तरीका था परमेश्वर की क्रोध को उन पर तुरंत आने से रोकने के लिए यह लंबे समय तक कार्य नहीं करेगा मनुष्य को एक बेहतर ओढ़नी की आवश्यकता थी और यह अगर दशहरा में हमें छोटे रूप में मिलता हैA

मैं यहोवा के कारण अति आनन्दित होऊंगा, मेरा प्राण परमेश्वर के कारण मगन रहेगा; क्योंकि उसने मुझे उद्धार के वस्त्र पहिनाए, और धर्म की चद्दर ऐसे ओढ़ा दी है जैसे दूल्हा फूलों की माला से अपने आप को सजाता और दुल्हिन अपने गहनों से अपना सिंगार करती है। यशायाह 61:10

शास्त्रों में बाद में उधार के द्वारा एक विशेष स्वस्थ रहना कपड़े मनुष्य को सुरक्षित करेंगे जैसे दुल्हन अपने आप को उस विवाह के दिन के लिए सुसज्जित करती है इस बात को प्रकाशितवाक्य 3:18 इसी लिये मैं तुझे सम्मति देता हूं, कि आग में ताया हुआ सोना मुझ से मोल ले, कि धनी हो जाए; और श्वेत वस्त्र ले ले कि पहिन कर तुझे अपने नंगेपन की लज्ज़ा न हो; और अपनी आंखों में लगाने के लिये सुर्मा ले, कि तू देखने लगे। में प्रमाणित किया गया

मसीह के वस्त्रों के बिना हमारे पास परमेश्वर के सामने खुले हैं जो न्याय को अपनी और आकर्षित करती है हम सब समान विषम परिस्थिति का सामना करते हैं जहां हमारे पास परमेश्वर के सामने भी पड़ता है तथा केवल परमेश्वर ही हमारी सहायता करता है यदि हम मसीह पर विश्वास करते हैं और उसकी धार्मिकता की खोज करते हैं A

प्रभु ने ध्यानपूर्वक इन चित्रों को शास्त्रों में बोया है ताकि हम अपनी आवश्यकता के अर्थ को जान सके तथा उसका प्रतिउत्तर उसके हल को अपनाने तथा अपने जीवन में लागू करने के द्वारा दे सकें परमेश्वर का आदम और हवा के लिए वस्त्रों का उपाय इस ओर इशारा करता है कि उनकी परमेश्वर से ओढ़नी की आवश्यकता थी जो उन्हें उनके पापों से ढक सके जानवरों का लहू का बलिदान मनुष्य जाति के

पापों को वास्तविक रुप से माफ नहीं कर सकती इब्रानियों 10: 4 हम आने वाले अध्याय में अनावश्यक पूर्णिया के विषय में बात करेंगे ओढ़नी परंतु यहां पर हमारे उद्देश्य के लिए हम तारणहार पर ध्यान को केंद्रित करेंगे उसके कार्यों के बजाय मनुष्य तथा उसके सारे पापों के साथ उसे एक मध्यस्थ की आवश्यकता थी यहां महाराजकी जो उनके स्थान पर उनके लिए बोल सकेA

महायाजक एक तारणहार के रूप में

एक महायाचक तथा एक तारणहार के बीच का संबंध तारणहार के मध्य मध्यस्ता के कार्य का परिणाम है इशू एक महायज्ञ के रूप में परमेश्वर के सामने विनती करता है तथा पिता के सामने अपने लोगों का प्रतिनिधित्व करता है इसी के द्वारा हम बचाए जाते हैं हम उस अंत से केवल इसीलिए बचाए जाते हैं क्योंकि हम निरंतर मसीह के द्वारा मसीही में परमेश्वर के सामने प्रस्तुत किए जाए इसी कारण से यह इतना आवश्यक है कि हम अपने विश्वास को अनिरुद्ध उन लोग अनुरोधित शिशु के रखें सर और पृथ्वी में कोई और नाम नहीं दिया गया जिसके द्वारा मनुष्य बचाया जा सके प्रेरितों के काम 4:12)

मेल्कीसेदेक परमेश्वर के लोगों की विनती करता

मलकी सदैव सर्वशक्तिमान परमेश्वर की ओर से एक राजा महायाजक था यह पूरा चित्र बड़ा पहले पहेलीनुमा है तथा हो सकता है की बड़ी आसानी से इसको भुलाया जा सकता है केवल उन भागों को छोड़ जो बाद में शास्त्रों में मिलते हैं

जब शालेम का राजा मेल्कीसेदेक, जो परमप्रधान ईश्वर का याजक था, रोटी और दाखमधु ले आया। और उसने अब्राम को यह आशीर्वाद दिया, कि परमप्रधान ईश्वर की ओर से, जो आकाश और पृथ्वी का अधिकारी है, तू धन्य हो।और धन्य है परमप्रधान ईश्वर, जिसने तेरे द्रोहियों को तेरे वश में कर दिया है। तब अब्राम ने उसको सब का दशमांश दिया। उत्पत्ति 14 :18-20

यह शब्द तारणहार मेल्कीसेदेक से नहीं जोड़ा परंतु यह आसानी से उस से जुड़ सकता है केवल इसलिए कि मन की सदी के कार्य के द्वारा अबराम 5 राजाओं को हरा सके तथा लूट और उसके परिवार को छुड़ाने करें उत्पत्ति 14:18 मलकीसर को एक राजा सलीम के राजा के रूप में इसका अर्थ है शांति तथा परमेश्वर की परमेश्वर महान के याचक के रूप में दर्शाता है यह स्पष्ट है किस सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने अब्राहम को विजय दी क्योंकि उसने उसके साथ प्रतिज्ञा की थी और इसीलिए विमल की सभी अब्राहम की जगह पर उसके लिए एक मध्यस्ता करने वाला या जत्था अब्राहम उसको दशमांश देने का आभारी रहाA

मनुष्य सीधे परमेश्वर के पास अपने पाप के कारण से नहीं जा सकता परमेश्वर अपरिमित तथा पवित्र है मनुष्य को एक याजक की आवश्यकता है जो उसके और परमेश्वर के बीच में मध्यस्ता करें मेल्कीसेदेक सदैव वहां जाकर था वहां अब्राहम के लिए मध्यस्ता कर सका जब अब्राहम ने चाहा कि परमेश्वर के सामने एक विनती को ले कर आए वहां मन की सदी के पास लेकर आया

जिसने उसे परमेश्वर के सामने रखा परमेश्वर ने अब्राहम की सहायता के लिए पुकार को सुना तथा उस महाराजा की प्रार्थना को तथा आलोकिक सहायता को जिसकी अब्राहम को आवश्यकता थी की एक बड़ी जीत को हासिल करें संगठित की हो सकता है मन की सदी की सेनाओं के द्वारा भीA

मलिक की शादी का अर्थ भजन संहिता 110

एक सामर्थ्य अनुवाद है उस विषय का जो उत्पत्ति 14 में हुआ इसमें सबसे महत्वपूर्ण बात मेल्कीसेदेक सदैव को वायदा किए हुए मसीह के साथ पहचाना जाना है उसकी सामर्थ्य तथा उसके राज्य के साथA

मेरे प्रभु से यहोवा की वाणी यह है, कि तू मेरे दाहिने हाथ बैठ, जब तक मैं तेरे शत्रुओं को तेरे चरणों की चौकी न कर दूं॥ तेरे पराक्रम का राजदण्ड यहोवा सिय्योन से बढ़ाएगा। तू अपने शत्रुओं के बीच में शासन कर। तेरी प्रजा के लोग तेरे पराक्रम के दिन स्वेच्छाबलि बनते हैं; तेरे जवान लोग पवित्रता से शोभायमान, और भोर के गर्भ से जन्मी हुई ओस के समान तेरे पास हैं। यहोवा ने शपथ खाई और न पछताएगा, कि तू मेल्कीसेदेक की रीति पर सर्वदा का याजक है॥ प्रभु तेरी दाहिनी ओर होकर अपने क्रोध के दिन राजाओं को चूर कर देगा। भजन संहिता 110:1-5

यीशु ने अपनी बातचीत को इशू नहीं अपने संवाद को मसीही की पहचान पर केंद्रित कियाA

कि मसीह के विषय में तुम क्या समझते हो? वह किस का सन्तान है? उन्होंने उस से कहा, दाऊद का। स ने उन से पूछा, तो दाऊद आत्मा में होकर

उसे प्रभु क्यों कहता है? कि प्रभु ने, मेरे प्रभु से कहा; मेरे दाहिने बैठ, जब तक कि मैं तेरे बैरियों को तेरे पांवों के नीचे न कर दूं। भला, जब दाऊद उसे प्रभु कहता है, तो वह उसका पुत्र क्योंकर ठहरा? मत्ती 22 :42- 45

वह ;hशू का उत्तर नहीं दे पाए परंतु वह अपनी और दाऊद की संतान के रूप में इशारा कर रहा था तथा उस राजकीय याजक का राज कोमल किस देख कि जीती से आने वाला है

उसकी ओर सूर्य महान प्रतापी राजा महा याजक अब्राहम की सहायता के लिए खड़ा हुआ तथा दूसरों की सहायता के लिए जिस छुटकारे कि उसे आवश्यकता थी उसे दी हालांकि यह सब तारणहार यहां पर या इब्रानी 5:7 में इस्तेमाल नहीं किया गया तारणहार क्या चित्रण बचाने वाली के साथ मिलने को निश्चित रुप से मसीही में पूर्ण होता हुआ देखते हैं जहां यीशु मलिकिसिदक की रीति पर सदा काल का महायाजक बन कर, हमारे लिये अगुआ की रीति पर प्रवेश हुआ है।। इब्रानियों 6:20

पुराने नियम में महा याचक

एक तारणहार का चित्र निश्चित रुप से स्वभाविक रुप से तारणहार के कार्यों से जुड़ा है हालांकि यह सब तारण हां पहली बार शास्त्रों में तारनहार रिश्तेदार के से जुड़ा हुआ उपयोग किया गया है यह और ज्यादा इस्तेमाल किया गया नए नियम में उदाहरण के तौर पर लुक्का की सुसमाचार की शुरुवात में हम एक घोषणा को देखते हैं कि प्रभु इस्राएल का परमेश्वर धन्य हो, कि उस ने अपने लोगों पर दृष्टि की और उन का छुटकारा किया है। लुका 1: 68 यहां पर केवल तारणहार कार्य का आत्मिक अर्थ दिखाया गया है परंतु यह आत्मिक परंतु यह आत्मिक अर्थ

इस शब्द का पुरानी नियम के समय बना विशेषकर भजन संहिता के समय A

- उसने अपनी प्रजा का उद्धार किया है; उसने अपनी वाचा को सदा के लिये ठहराया है। उसका नाम पवित्र और भय योग्य है। भजन संहिता 111:9
- इस्त्राएल यहोवा पर आशा लगाए रहेक्योंकि यहोवा करूणा करने ! वाला और पूरा छुटकारा देने वाला है। भजन संहिता 130:7

ऐसा भी समय था जब राष्ट्रीय आजादी का अर्थ तारणहार के कार्य से जोड़ा गया यह भजन संहिता में नहीं दिखाया गया होगा क्योंकि उस समय राष्ट्र अपनी सर्वव्यापकता में था परंतु बंधवाई के समय तथा मसीह के जन्म के पश्चात छुटकारा बड़ी मजबूत रीति से मसीह के साथ जोड़ा गया यह प्रतीत होता है कि यह उडाने यीशु को इसीलिए धोखा दिया क्योंकि उसकी कट्टरपंथी दृष्टिकोण मसीह की मृत्यु के विषय में चर्चा के द्वारा हतोत्साहित हुआ होगा यीशु एक बड़े राज्य की आशा को जो यहूदियों की अपेक्षा से कई बढ़कर था लेकर आया जो केवल यहूदियों के लिए राज्य था हालांकि यह चाहता था कि सारी दुनिया के लोगों को उस में सम्मिलित करें जो उस पर यीशु पर मसीह के रूप से विश्वास करेंA

पुराने नियम के याचक

पुराना नियम कई अध्याय को कमाल करता है महा याचक के पहनावे पर समझाने को निर्गमन 38:39 तथा उनके पवित्र किए जाने को लेवीव्यवस्था 8 हारून जो पहला महा याचक था और मूसा का बड़ा भाई

अपने विस्तृत पहनावे के द्वारा इस बात को प्रकट करता है कि उसे परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश करने के लिए कितना सावधान रहना है हालांकि वह प्रत्येक दिनवह मंदिर में प्रवेश करता था और साल में एक बार वह अति पवित्र स्थान में प्रवेश करता था 7 मुख्य चीजें इस पोशाक में आवश्यकता थी जिसे माया जग को पहनना था कि अपने आप को परमेश्वर की और गहरी उपस्थिति में झांक सकेA

- स्तन का टुकड़ा
- एक लूट
- चेकर के काम का एक अंगरखा
- ixM+h
- कमरबंद
- शुद्ध सोने की प्लेट (निर्गमन 28:36)

अंग रखें के कारण से वह प्रभु के सामने सेवा टहल कर सकें परमेश्वर ने खुद कुछ विशेष लोगों को समर्थ किया अपनी बुद्धि की आत्मा के द्वारा कि वह उन वस्त्रों को उस निर्देश अनुसार बना सकें एक महा याजक लोगों के पापा को छुपाने से बढ़कर और कुछ कार्य नहीं कर सकता था जो शमा के विपरीत है जिसके कारण से हरजन ऐसी माया जग की आशा इंतजार करने लगा जो उनको पापों की शमा प्रदान कर सके A

राजकीय स्थान एक राज्यकीय याद किया स्थान से अलग किया गया मलकी रितिक की रीति से बिल्कुल अलग किसने मनुष्य को सुरक्षित किया एक व्यक्ति में अत्यधिक अधिकार देने से इसने इस बात को भी दिखाया एक माह आयोजक तथा एक राजा की असमर्थता को भी दिखाया कि जो वह अत्यधिक चाहते हैं उसको नहीं कर पाए इस कारण से व्यवस्था की अपर्याप्तता इन लोगों में इस बात को डाला कि वह एक महान तथा अति शक्तिशाली वाचक की ओर देखें नए नियम की ओर नई वाचा की और यिर्मयाह 13:31 दूसरे अध्याय को देखें

यीशु मसीह में याजक तथा राजा का स्थान यह किया गया ताकि वह सब कुछ कर सकें जिसकी उसे लोगों के तारणहार के रूप में आवश्यकता थी भजन संहिता 110: 1-4 कल किसकी कृति हैA

यीशु एक महाराजा के रूप में

जब हम नए नियम के समय में प्रवेश करते हैं यह शिव के प्रधान के पश्चात हम यह पाते हैं कि यीशु उस महाराज की कार्य को करता है A

सो हे पवित्र भाइयों तुम जो स्वर्गीय बुलाहट में भागी हो, उस प्रेरित और महायाजक यीशु पर जिसे हम अंगीकार करते हैं ध्यान करो। इब्रानियों 3:1

सो जब हमारा ऐसा बड़ा महायाजक है, जो स्वर्गों से होकर गया है, अर्थात परमेश्वर का पुत्र यीशु; तो आओ, हम अपने अंगीकार को दृढ़ता से थामें रहे। क्योंकि हमारा ऐसा महायाजक नहीं, जो हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दुखी न हो सके; वरन वह सब बातों में हमारी नाईं परखा तो गया, तौभी निष्पाप निकला। इब्रानियों 4 :14- 15

यह रुचिकर है यह संज्ञा शब्द तारणहार हर बार नए नियम इस्तेमाल नहीं किया गया यह मुख्यता कलीसिया की प्रार्थना की रीति तथा आराधना मैं इन गीतों के रूप में जैसे कि कि मैं अपने तारणहार के विषय में गाऊंगा इस्तेमाल किया गया हालांकि यह संज्ञा शब्दकोश इस्तेमाल नहीं किया गया लोगों ने उद्धार को ऐसे ही समझो समाचारों के अंत में चले इससे पहले कि वह पूर्व तटीय ;h’kq से मिले कहां परन्तु हमें आशा थी, कि यही इस्त्राएल को छुटकारा देगा, और इन सब बातों के सिवाय इस घटना को हुए तीसरा दिन है। लुक्का 24:21 यह वाक्य अंत कि वह इसराइल को छुड़ाने वाला है दर्शाता है कि लोग यीशु की ओर तारणहार के रूप में देख रहे थे जो सब बातों को ठीक कर देगा A

बड़े स्पष्ट रूप से हम यह पाते हैं कि कई पद यीशु के द्वारा उसके लोगों के छुटकारे के विषय में कह रहे हैं यदि वह उन्हें छोड़ आता है तब निश्चित रूप से वहां तारणहार है A

मसीह ने जो हमारे लिये श्रापित बना, हमें मोल लेकर व्यवस्था के श्राप से छुड़ाया क्योंकि लिखा है, जो कोई काठ पर लटकाया जाता है वह श्रापित है। ग़लतियों 3:13

परन्तु उसके अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में है, सेंत मेंत धर्मी ठहराए जाते हैं। रोमियों 3:24

मसीही ने छुड़ाया तथा मसीह यीशु में उस छुटकारे के द्वारा यह दोनों यीशु मसीह को एक सच्चे तारणहार की रूप में इंगित करते हैं कई शब्दों को यीशु के विषय में इस्तेमाल किया गया तथा क्योंकि यह शब्द प्रभु और उद्धारकर्ता आम रुप से इस्तेमाल किए गए उन्हें अत्यधिक इस्तेमाल किया गया हालांकि तारणहार एक उपयुक्त शीर्षक है क्योंकि हम यीशु मसीह को एक तारणहार के संपूर्ण कार्य को पूरा करते हुए देखते हैं पुराने नियम के याजक के समान नहीं जो वह जानवरों के लहू के द्वारा उस वेदी पर पापों को डांटते थे परंतु जैसे नया नियम हमें सिखाता है कि अपने लहू के द्वारा पापों की पूर्ण शमा के कार्य के द्वारा।

परमेश्वर के सम्मुख मध्यस्थ

यीशु मसीह मनुष्य का परमेश्वर के सामने मध्यस्थ है हम में से कई लोगों के लिए एक मध्यस्थ का कार्य आसानी से समझा जा सकता है उस महायाजक के कार्य की अपेक्षा में क्योंकि यह शब्द मध्यस्थ दुनियावी जिम्मेदारियों में कमाल किया जाता है ।

क्योंकि परमेश्वर एक ही हैऔर परमेश्वर और मनुष्यों के बीच : में भी एक ही बिचवई है, अर्थात मसीह यीशु जो मनुष्य है। 1तिमोथी 2:5

इस पद को समझने के लिए हमें यह जानना है यह मध्यस्थ केशव का स्तेमाल दो व्यक्तियों के न्यायिक मतभेद तथा व्यापार के विषय में नहीं परंतु सृष्टिकर्ता तथा मनुष्य जाति के बीच में है यह वाक्यांश जो 1तिमोथी 2:5 में है इस बात की पुष्टि करता है जिसे यह

दुनिया भी समाज अपने सामर्थ्य मीडिया से क्रूरतापूर्ण इनकार करता है A

एक बातचीत को प्रोत्साहन देने के लिए सर्वशक्तिमान परमेश्वर सृष्टिकर्ता तथा मनुष्य जाति के बीच में एक मध्यस्थ की आवश्यकता है कोई भी यूं ही परमेश्वर की उपस्थिति में नहीं जा सकता परमेश्वर की पवित्रता विमुख के सामने हमारा पाप हमें नाश कर देगाA

ऐसे कई धर्म है तथा तत्वज्ञान है जो यह प्रचार करता है कि उद्धार कई तरीकों से मिल सकता है हालांकि केवल एक ही सच्चा मध्यस्थ है जो हमारे परमेश्वर के साथ संबंध को पुनर्स्थापित कर सकता है और वह यीशु मसीह है A

इब्रानियों की पुस्तक भी इस मध्यस्थ के संबंध को बताती है तथा उसे छुटकारे के साथ जोड़ती है वह उसके बचाने का कार्य है जो उसे एक महा नायक के रूप में परिवर्तित करती है और जिन्हें अनंत जीवन मिलता है वह उसमे आनंदित होते हैं A

और इसी कारण वह नई वाचा का मध्यस्थ है, ताकि उस मृत्यु के द्वारा जो पहिली वाचा के समय के अपराधों से छुटकारा पाने के लिये हुई है, बुलाए हुए लोग प्रतिज्ञा के अनुसार अनन्त मीरास को प्राप्त करें। इब्रानियों 9:15

अंतिम छुटकारा

हम इस शब्द छुटकारे को दो रीति से देख सकते हैं दो प्रकार से देख सकते हैं ऊपर लिखी हुई पद के द्वारा हम यह पाते हैं कि छुटकारा पूर्ण हुआ परंतु दूसरी आयतों को अगर हम संक्षिप्त रूप से देखें एक बड़ा

छुटकारे का परिवर्तन उनके लिए इंतजार कर रहा है जो उसकी खोज करते हैं A

जब ये बातें होने लगें, तो सीधे होकर अपने सिर ऊपर उठाना; क्योंकि तुम्हारा छुटकारा निकट होगा।। लुक्का 21:28

और केवल वही नहीं पर हम भी जिन के पास आत्मा का पहिला फल है, आप ही अपने में कराहते हैं; और लेपालक होने की, अर्थात अपनी देह के छुटकारे की बाट जोहते हैं। रोमियो 8:23

एक बड़ी आजादी तथा एक परिवर्तन उनके सामने है जो इस पृथ्वी पर जी रहे हैं हमारा छुटकारा मसीह के उस क्रूस पर पूर्ण किए गए कार्य में सुरक्षित है परमेश्वर के पास हालांकि एक और बड़ी योजना है ना केवल हमारे लिए परंतु संपूर्ण सृष्टि के लिए कि अपने मूल योजना के अनुसार सब बातों को पुनर्स्थापित करें छुटकारा अपनी पूर्णता में इसीलिए भविष्य में आने वाले हमारे जीवन में का परिवर्तन तथा संस्था का परिवर्तन के रूप में समझा जाता है और आंसू नहीं और दर्द नहीं और उदासी नहीं परंतु आनंद आशा उद्देश्य तथा मसीही में संपूर्ण पूर्णता

यह वह आरंभिक इशारा है उस रहस्य की ओर जिसके विषय में पौलुस नए नियम जैसे इफिसियों 3:8 -10 में कहता है हम उन वस्त्रों की तुलना करें जो परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश करने कि यह है उन वस्त्रों के साथ जिसे परमेश्वर ने मनुष्य को दिया कि वह उस पृथ्वी पर जीना जारी रखें यह वस्त्र ऊपरी थे परंतु मनुष्य के पापों को ढकने के कार्य को उसने किया A

9 छुटकारे का दाम

शिशु को क्यों आवश्यकता पड़ी कि वह अपनी जान को दें यह कैसे हो सकता है कि क्रोध सुसमाचार के संदेश का केंद्र बन जाए इसके बजाय कि यीशु का अच्छा जीवन और उसकी शिक्षाएं क्या उसका पुनरुत्थान इस बात को सिद्ध नहीं करता कि उसकी योजना यह थी कि मनुष्य जाति जिए यह कुछ मुख्य मुद्दे हैं जिन्हें समझना आवश्यक है फिर भी उन्हें कई बार गलत समझा जाता है तथा इसके खतरनाक परिणाम होते हैं

इस अध्याय में हम छुटकारे के लिए मूल्य का विश्लेषण करेंगे तथा उन कारणों को देखेंगे की क्यों यीशु की मृत्यु जो उस क्रूस पर हुई उस पर विश्वास एक मात्र चीज है जो हमारे पापों को हर सकता हैA

दूसरे धर्म बलिदान बचाने वाले या अच्छे कार्य हमें नहीं बचा सकते यीशु ने उनसे कहा “यीशु ने उस से कहा, मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता। यूहन्ना 14 :6

यहां पर कुछ मुख्य शब्द है जो हमें अपने दिमाग में रखनी है जैसे हम इस अध्याय में आगे जाते हैं मृत्यु लहू लहू बलिदान कीमत चुकता करना क्रोध क्रूस मृत्यु यीशु मसीह जीवन इस बात को समझने के लिए यह कैसे मसीह में हमें जीवन को पाना है हमें पहले उस मृत्यु के शोक को जानना है तथा उसके परिणामों कोA

मृत्यु परमेश्वर की मूल रचना का भाग नहीं था मृत्यु के भयानकता को किस बात से अनुमान लगा सकते हैं यह कैसे लोग या तो मृत्यु शैया पर दुख मनाते हैं यह जिससे वह नफरत करते हैं उसकी मृत्यु पर वह आनंदित होते हैं परमेश्वर ने मनुष्य को जीवन दिया “और यहोवा परमेश्वर ने आदम को भूमि की मिट्टी से रचा और उसके नथनों में जीवन का श्वास फूंक दिया; और आदम जीवता प्राणी बन गया। उत्पत्ति 2:7 मृत्यु उससे आपके श्राप के रूप में आया हमारे जीवन पर पाप हमारे पाप के कारण ।

मृत्यु का श्राप

हम सब मृत्यु के योग्य हैं उस पाप के कारण जो हमें अपने पूर्वजों से मिला है तथा हमारे खुद के व्यक्तिगत और आज्ञाकारिता के कारण:

> तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को यह आज्ञा दी, कि तू वाटिका के सब वृक्षों का फल बिना खटके खा सकता है: पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खानाक्योंकि : जिस दिन तू उसका फल खाए उसी दिन अवश्य मर जाएगा।। उत्पत्ति 2:16-17

मृत्यु मनुष्य की आज्ञाकारिता के बड़ी नजदीक चलता है परमेश्वर ने मनुष्य को इस बात की चेतावनी दी थी कि उसकी अन आज्ञाकारिता के क्या परिणाम होंगे तुम निश्चित मर जाओगे हवा नहीं भी इस बात को माना और इस बात का अंगीकार किया कि आजम ने उसे इस आज्ञा के विषय में बताया हैA

> स्त्री ने सर्प से कहा, इस बाटिका के वृक्षों के फल हम खा सकते हैं। पर जो वृक्ष बाटिका के बीच में है, उसके फल के विषय में

परमेश्वर ने कहा है कि न तो तुम उसको खाना और न उसको छूना, नहीं तो मर जाओगे। उत्पत्ति 3:2-3

परमेश्वर की चेतावनी

सृष्टि कर्ता के रूप में परमेश्वर आज्ञाकारिता के विनाशकारी परिणामों को जानता था तथा प्रेम में उसने उन्हें चेतावनी दी कि उस वर्जित वृक्ष के फल को ना खाएं पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खानाक्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाए उसी दिन अवश्य : मर जाएगा॥ उत्पत्ति 2:17 परमेश्वर ने कोशिश करें उन्हें उस मूर्खतापूर्ण निर्णय से दूर लेकर जाए बिल्कुल एक माता पिता के समान जो अपने बच्चे को चेतावनी देते हैं की गरम चूल्हे चूल्हे को ना छुए या सर्व के नजदीक ना जाए A प्रभु अपनी प्रतिज्ञा के विषय में देर नहीं करता, जैसी देर कितने लोग समझते हैं; पर तुम्हारे विषय में धीरज धरता है, और नहीं चाहता, कि कोई नाश हो; वरन यह कि सब को मन फिराव का अवसर मिले। 2 पतरस 3:9

जैसे समय गवाही देता है आदम और हवा परमेश्वर की अगुवाई करने वाले शब्द के विरोध में गए उन्होंने अपने आप को उस वर्जित फल को खाने से नहीं रोका और उन्होंने मृत्यु के बुरे परिणाम को भोगाA

उपयोग

लोग परमेश्वर के चेतावनी तथा नियमों केवल एक उद्देश्य पर शक करने की बहुत जल्दी करते हैं क्या आप परमेश्वर के नियमों तथा आपके जीवन में उसकी अगुवाई के लाभों के विषय में अपने हृदय में शंका को रखे हुए हैंA

मृत्यु की समानता

इस कारण से की मृत्यु हमारे जीवन में एक बड़े स्थान को रखती है हम में से कई इसको प्राकृतिक या आवश्यक कहते हैं मृत्यु आम है परंतु यह प्राकृतिक नहीं किंग जेम्स बाइबल के अनुवाद में मृत्यु का अनुवाद 424 पर मरने सबसे हुआ है तथा मृत शब्द 130 बार आता है निश्चित रूप से आदम और हवा हाबिल की अचानक मृत्यु से भयातुर हो गए थे जब उसके भाई बहन ने वास्तविक रुप से उसे मार डाला जिसका अर्थ है हत्या करना उत्पत्ति 4 में A

हम ऐसे कुछ लोग हैं जिनके जीवन मृत्यु के जान द्वारा बहुत ज्यादा प्रभावित नहीं हुए हैं मेरे पिता 92 वर्ष की उम्र में भी जीवित हैं तथा कई कहते हैं कि कितना अद्भुत है जब हम इस बात को जानते हैं कि हर एक जन्म उत्सव पर परिवार और मित्रगण इस बात को जानते हैं कि मृत्यु नजदीक आती जा रही है मेरे पिता की इस पुस्तक के संपादन स्तर पर मृत्यु हुई ।

मृत्यु को रोका नहीं जा सकता और वह हमारे जीवन की योजनाओं को तोड़ने में सक्षम है यह एक व्यक्ति की मित्रता को चुरा लेता है उसके योगदान को तथा हमारे जीवन में उसकी महत्वपूर्णता को तथा एक खाली स्थान को हमारे जीवन में छोड़ जाता है हम पूरे जीवन भर कठिन परिश्रम करते हैं परंतु हम अपनी चीजों को अपने साथ नहीं ले जा सकते हम मृत्यु शैया पर दुख बनाते हैं क्योंकि जो लोग हमारे लिए बहुमूल्य थे वह हमसे छीन लिए गए लोग चाहते हैं कि जो गए जो मर गए हैं उन्हें किसी समय दोबारा देखें मृत्यु आम है परंतु प्राकृतिक नहीं।

मृत्यु का श्राप

मृत्यु का एक दूसरा पहलू है जिसे हम कई बार भूल जाते हैं जो आपका अग्रदूत है मृत्यु इसीलिए है क्योंकि बाप पाप है क्या यह कारण नहीं कि हम सब मरते हैं यह रुचिकर है कि कैसे वह अंतिम यात्रा वह समय है कि हम सब उन लोगों के विषय में जो कभी जीवित है भली यादों को संचय करने की कोशिश करते हैं परमेश्वर हालांकि मृत्यु को काफी अलग रोशनी में देता है।

मृत्यु मनुष्य के पाप का आपके लिए न्याय के प्रभाव का चरम चरम है अपने बाप को बर्फ के गोले के समान देखें जो जैसे-जैसे गति को पकड़ता है वैसे-वैसे और बर्फ को अपने ऊपर लेते जाता है और उस पहाड़ के नीचे वह लुढ़कता चला जाता है हमारी दुष्टता की बड़ी गेम निश्चित रुप से विनाश की ओर जाएगी शारिक मृत्यु एक प्रकार का न्याय है जिसके हम सब योग्य हैं क्योंकि हम सब ने पाप किया है और पाप की मजदूरी मृत्यु है । रोमियो 6:23

परमेश्वर की महिमा में छुटकारे की योजना को पूर्ण रुप से सरहाने के लिए हमें अपने मृत्यु के अभिप्राय को बढ़ाने की आवश्यकता है

शारीरिक मृत्यु

शारिक मृत्यु उस पूर्ण जाएगा एक भाग है उसके पश्चात एक दूसरी मृत्यु भी है मृत्यु की तीव्र वेदना अनंत काल की अग्नि की झील में बनी रहेगी उनके लिए जो विश्वास नहीं करते ।

फिर मैं ने छोटे बड़े सब मरे हुओं को सिंहासन के साम्हने खड़े हुए देखा, और पुस्तकें खोली गईं; और फिर एक और पुस्तक खोली गई; और फिर

एक और पुस्तक खोली गई, अर्थात जीवन की पुस्तक; और जैसे उन पुस्तकों में लिखा हुआ था, उन के कामों के अनुसार मरे हुओं का न्याय किया गया।

और समुद्र ने उन मरे हुओं को जो उस में थे दे दिया, और मृत्यु और अधोलोक ने उन मरे हुओं को जो उन में थे दे दिया; और उन में से हर एक के कामों के अनुसार उन का न्याय किया गया। और मृत्यु और अधोलोक भी आग की झील में डाले गए; यह आग की झील तो दूसरी मृत्यु है।

प्रकाशितवाक्य 20:12- 14

आत्मिक मृत्यु

अनंत काल का न्याय शारीरिक मृत्यु से कहीं आगे जाता है क्योंकि एक आत्मिक मृत्यु भी हुई है A मत्ती 15: 8 आदम द्वारा उस वर्जित फल को खाने का वह समय था जब उसने परमेश्वर की प्रति अपनी प्रीति को किसी और चीज पर रखा आत्मिक वह में हम सबको प्रभावित किया मनुष्य परमेश्वर को नहीं खोजताA

वे प्रभु के साम्हने से, और उसकी शक्ति के तेज से दूर होकर अनन्त विनाश का दण्ड पाएंगे। 2 थिस्सलुनीकियों 1:9

पूर्ण छुटकारा ना केवल हमारे शरीरों को मृत्यु के हिसाब से बचाता है हमारे शहीदों के पुनरुत्थान के द्वारा परंतु हमारी परमेश्वर को प्रेम करने की योग्यता को भी वह पुनर्स्थापित करता है तथा उसके मार्गों से पृथ्वी रखने के लिए ताकि परमेश्वर की योजना जो हमारे जीवन के लिए है पूरी की जाएA

क्या आप उन वक्तव्य को सुनना स्मरण करते हैं जो आप एक जवान व्यक्ति की मृत्यु के आसपास सुनते हैं कितने शर्म की बात है कि वह इतनी कम उम्र में मर गया वास्तविकता यह है कि हम सब जल्दी मर जाते हैं परमेश्वर के पास हमारे जीवन के लिए कितना कुछ है परमेश्वर की छुटकारे की रोशनी तब ना केवल हमारे पापों की क्षमा करता है परंतु हमें एक नया शरीर नया वस्त्र जो उसकी महिमा में रोशनी से है तथा अनंत जीवन की पुष्टि अद्भुत उद्देश्य को हम पूरा कर सकेंA

मनुष्य जाति का दोष

इसलिये जैसा एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई, और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, इसलिये कि सब ने पाप किया। रोमियो 5:12

पूल के अधिकारों में हमें किस बात की ओर इशारा किया था की आदम में हम सब मर गए” रोमियो 5:12-21 आदम हमारा प्रतिनिधित्व परमेश्वर के विरुद्ध उसने बलवा किया तथा उसने शाब्दिक रूप से मिट्टी को खाया जब उसने वर्जित फल को खाया पौलुस का जन्म ज्ञान आधारित तक जो रोमियो 5 में मिलता है इस समीक्षात्मक तर को बढ़ाकर दिखाता है सारी मनुष्य जाति यहूदियों के साथ तथा भले धार्मिक लोगों के साथ आदम के पाप के कारण मृत्यु के योग्य है दोषी

ठहराए गए हैं आराम से ही मृत्यु के द्वारा मनुष्य जाति ग्रसित है बाबुल की मीनार से भी पहले हम सबको पापी के रूप में समझा जाता है धनी निर्धन उनके जन्म से ही इसका अर्थ यह नहीं कि हम व्यक्तिगत रूप से पाप नहीं करते हमारे व्यक्तिगत पाप आदम के सार्वजनिक दोष के ऊपर इकट्ठे होते जाते हैंA

मेरे पास एक दाखलता है ऐसा प्रतीत होता है कि यह पौधा अच्छे से बढ़ रहा है परंतु उस डाक के अंदर एक काला निशान है और पूर्व के अनुभवों के कारण मैंने यह जाना कि यह कोई कीड़ा या कोई बीमारी है जिससे यह पौधा प्रभावित है और जिस समय तक यह फल बढ़ता है वहां पूर्ण रूप से विकृत और खराब हो जाएगा पत्तियां और फल शुरुवात में ठीक दिखते हैं परंतु वह आगे जाकर रुक जाएंगे तथा यह दाखिल था एक निराशाजनक रूप से बर्बाद हो जाएगी मनुष्य जाति उस बीमारी द्वारा प्रभावित दास लता के समान है क्योंकि हम पाप और मृत्यु से संक्रमित है लोग जो लोकतांत्रिक समाजों में रह रहे हैं उन्हें यह पसंद नहीं कि उनके चुनाव किसी और के चुनाव द्वारा डाली जाए परंतु यही हमारे पाप के प्रभाव में हुआ आदम के निर्णय के कारण सारी मानव जाति उस पतित मानव स्वभाव का भागी है तथा पाप का भागी है तथा वह मृत्यु को प्राप्त करेंगे क्योंकि वह आदम के वंशज हैं इसे पतu कहा जाता है A

कठघरे में

इस विषय को कानूनी शब्दों के इस्तेमाल के द्वारा समझने में आसानी होगी जो आदम ने किया उस कारण से लोगों को दोषी ठहराया गया उसने वहां वर्जित फल को खाया तथा इस कारण से आदम उसके वंशजों के साथ विद्रोह

का दोषी घोषित किया गया मनुष्य को मृत्यु का दंड मिला इसी कारण से और उसका jkseu 5 मिलता है अति सामंतशाही है और उसका दर्द जब हम इस बात का घमंड करें 80 या 90 प्रतिशत भी भले हैं तथा धार्मिक रूप से समर्पित है यह तब भी काफी नहीं कि हमारे इस देश को हटा सकें यह वह दोषी करार खुली के समान है खूनी के समान है जो उस आदेश से बाहर निकलने की कोशिश करता है क्योंकि उसने अपने जेब के चिल्लर जेल आते समय एक भिखारी को दे दिए मृत्यु हमारा गवाह है मैं जानता हूं कुछ लोग वाकई में बड़े अच्छे लोग हैं परंतु वह भी दूसरों के समान मृत्यु को प्राप्त करेंगे मृत्यु इस बात को सिद्ध करती है जो पौलुस स्पष्ट रूप से कहता है वहां हमारा दोषी करार किया जाना हैA

बुढ़ापा मृत्यु की ओर इशारा करता है तथा पाप पाप पाप हमें दोषी ठहराता है परमेश्वर का अंतिम न्याय हमारे पापों का अंतिम सबूत होगा इसी कारण से यीशु को एक कुंवारी से जन्म लेना पड़ा तथा एक शारीरिक पिता से नहीं ywका 1:3- 35 ताकि मनुष्य जाति को श्राप उस पर ना पहुंचे यीशु का जन्म परमेश्वर की आत्मा के द्वारा हुआ और उसका धर्मी स्वभाव उसके खरीद जीवन के साथ इस बात को दिखाता है कि वह आदम कि दोषी ठहराए जाने में उसका कोई भाग रहीA

यीशु ने खुद का तुम में से कौन मुझे पापी ठहराता है? और यदि मैं सच बोलता हूं, तो तुम मेरी प्रतीति क्यों नहीं करते? यूहन्ना 8:46 और irjl उस को आगे ले जाता है और तुम इसी के लिये बुलाए भी गए हो क्योंकि मसीह भी तुम्हारे लिये दुख उठा कर, तुम्हें एक आदर्श दे गया है, कि तुम भी उसके चिन्ह पर चलो। न तो उस ने पाप किया, और न उसके मुंह से छल की कोई बात निकली। 1 पतरस 2:21-22 क्योंकि हमारा ऐसा महायाजक नहीं, जो हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दुखी न हो सके; वरन वह सब बातों में हमारी नाईं परखा तो गया, तौभी निष्पाप निकला। इब्रानियों 4:15

यीशु मारा गया परंतु ना तो वहां उस पाप के स्वभाव के कारण से जो उसे आदम से प्राप्त हुआ उससे और ना ही उसके व्यक्तिगत पाप के कारण से यह शभ हमारे पापों के कारण से मारा गया उसकी मृत्यु हमारे स्थान पर हुई क्योंकि

और वह हमारी क्षमा का सुरूर बन गया A

दोष भावना को शांत करना

यह आवश्यक है कि हम दुर्भावना वह कानूनी दोषी करार होने से अंतर करें आधुनिक मनुष्य और अधिक अपनी भावनाओं से परिचित है हम कई बार दोष भावना या दोषी महसूस करने के विषय में बात करते हैं समस्याएं हैं यह है आत्मा कर्क है इसका वास्तविक दोष भावना से कुछ भी लेना देना नहीं आधुनिक उन तथ्यों पर के विषय में ध्यान नहीं देता तथा खुले रुप से उसको नजरअंदाज करता है आदरणीय दार्शनिक इस बार की कोशिश करते हैं कि हमें इस बात का विश्वास दिलाएं कि कोई भी नियम नहीं इस कारण से कोई भी वास्तविक दुर्भावना नहीं हो

सकती दोष भावना क्योंकि यहां पर कोई नियम को तोड़ा नहीं जा रहा इसीलिए हमने यह दूज भावना नहीं होना चाहिएA

हालांकि हमने उन भक्तों की दोष भावना हो सकती है उसने हमें क्या है यह हमने नहीं भी किया हमने निश्चित रूप से गलत किया है तथा इस दोष भावना के योग्य हैं भावनाएं हालांकि हमारे उस कानूनी दोष भावना को निर्धारित नहीं करती यह तथ्य कि क्या हम परमेश्वर के मार्गों के विरुद्ध गए हैं या नहीं हमें दोषी ठहराता है या नहीं हम अपने आप को बचा नहीं सकते आदम पर सारी जिम्मेदारी डालने के द्वारा हो यह तो आदम का निर्णय था मेरा नहीं मैं ऐसा नहीं करता हमारा तीव्र से आता हुआ है मृत्युदंड हमारी दोष भावनाओं को बताता है मनुष्य हो सकता है कि अपने दोस्त दोष का इनकार कर दे परंतु यह उसके दोषी ठहराए जाने को बदल नहीं सकताA

यह ज्यादा बेहतर होगा कि एक व्यक्ति खुद के उस सामान्य दोस्त को आदम के साथ जो मनुष्य जाति का प्रतिनिधित्व करता है अपना लें हर एक व्यक्तिगत निर्णय पाप करने का या नियमों को तोड़ मरोड़ ने का हमारे दोष भावना का की अभिव्यक्ति है हम आदम के साथी इस फल को खाने में हमें चेताया गया था हमें चेतावनी दी गई थी परंतु हमने फिर भी उसको चुना की हम खाए हम अब आदम के साथ दोषी ठहरे हैंA

आदम दोषी था तथा उसने तुरंत ही अपनी उस महिमा मैं ज्योति के वस्त्रों को खो दिया यह सुधर मी था इसी कारण से उस परिवर्तन के पहाड़ पर पूर्ण रुप से धर्मी दिखाया गया जो परमेश्वर की महिमा में ज्योति में रहता है उसके वस्त्र अत्यंत तेजस्वी हो गएA और उनके

साम्हने उसका रूपान्तर हुआ और उसका मुंह सूर्य की नाईं चमका और उसका वस्त्र ज्योति की नाईं उजला हो गया। मRrh 17:2

जब हम एक बार अपने दोसh का अंगीकार करते हैं हम परमेश्वर की ओर उस मृत्युदंड से बचने के लिए देख सकते हैं हमारी भावनाएं केवल हमें उधार सकती हैं कि हम उसकी ओर हल के लिए देखें तथा जो हम पाएं उसे अपनाने के द्वारा एक बार जब वह न्यायिक दोष हर जाता है तब जिस आधार पर दोष लगाने वाला अपने उन दोषियों को लेकर आता है वह जाती रहती हैं पुराने समय का सर्प प्रकाशितवाक्य 12:10 दोस्त फिर भी यह कोशिश करेगा कि हम दोषी महसूस करें दोषी देखें तथा हमारे दोस्त को वह सही ठहराएं तथा उस दोष के साथ हम जिए जय काफी मशीन की परीक्षा का सारांश है परंतु यीशु पूर्ण रूप से हमें हमारे पापों से क्षमा देता है इस सत्य की मजबूत समझ हमें शैतान से इतनी जल्दी धोखा खाने से आजाद करेगा तथा उसके दुष्ट आत्माओं से तथा हमें समर्थ करेगा कि हम निरंतर रूप से प्रभु के मार्ग में चलें हमारी भावनाएं उन पत्तियों के पीछे चलें तथ्यों के पीछे चलें हम सत्य पर ध्यान को केंद्रित करें दोष भावना दोष भावना जाती रहेगी

क्षमा को प्राप्त करना

नहीं ऐसे बच्चन के पद्यांश है जो हमें उस क्षमा के विषय में समझने में सहायता करते हैं जो मसीह यीशु में विश्वास के द्वारा आती हैA

दोष भावना को हटाना

तब सवाल यह है कि हम कैसे इस शराब को जो मनुष्य जाति पर आया है हटा सकते हैं यह वही समस्या है जो एक तनाव को उत्पन्न करती है जो परमेश्वर के छुटकारे की योजना को आगे धक्का देती है ढक्कन भले

कार्य करने के लिए हमारा प्रयास तथा बढ़ती हुई धार्मिक समर्पण हमारे इस दोष को हटा नहीं सकता इसी कारण से कई लोग आज भी अंधकार में जी रहे हैं शैतान चलाकी से गलत विचारों के बीजों को मनोविदलता है तथा उनके निष्कर्षों को ताकि हमारे भविष्य को चुरा लेA

नैतिक व्यक्ति यह सोचता है कि वह अपने अच्छे स्वभाव व्यवहार के द्वारा बेहतर हो सकते हैं परंतु वह मृत्युदंड पहले से ही हम सब पर है जो पुत्र पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है;

परन्तु जो पुत्र की नहीं मानता, वह जीवन को नहीं देखेगा, परन्तु परमेश्वर का क्रोध उस पर रहता है।। यूहन्ना 3:36 दुनिया में लोगों को एक बेहतर हल चाहिए हालांकि वह इसके योग्य नहीं जो परमेश्वर ने उनके लिए कहा था कियाA

उसने हमारे पापों को अपने ऊपर ले लिया

यह अच्छा होगा कि इस चर्चा को हम इस बात से शुरु करें कि परमेश्वर ने हमारे लिए क्या करें छुटकारा पूर्ण रुप से परमेश्वर के अनुग्रह कारी सोच के ऊपर आधारित है जो हमारे प्रति था हमारे भटके हुए वह वार के बावजूद :

- परमेश्वर की इच्छा हमारी सहायता करने के लिए परमेश्वर का प्रेम उस छुटकारे की योजना को चलाता है
- परमेश्वर की योग्यता कि वह एक प्रभावशाली छुटकारे की योजना को बनाएं तथा उसको पूरा भी करें

हमें शायद पत्थर किस सारांश से शुरुआत करना चाहिए जो यीशु के विषय में बात करता है और कहता है वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिए हुए क्रूस पर चढ़ गया जिस से हम पापों के लिये

मर कर के धामिर्कता के लिये जीवन बिताएंउसी के मार खाने से : तुम चंगे हुए।

1 पतरस 2:24

हम पहले प्रतिस्थापन के विषय में देखेंगे यह किसकी पाप है हमारे और उसने हमारे पापों को अपने ऊपर उठा लिया हम परमेश्वर की व्यवस्था के तोड़ने वाले हैं पुराने नियम में इसका चित्र वहां से आता है जहां पर पापी उस जानवर केसर को स्पर्श करता है इससे पहले कि उसको मारा जाए या जंगल में बना दिया जाए ताकि वह मारा जाए लोगों ने पाप किया परंतु परमेश्वर अपने क्रोध को उस जानवर पर डाल देता हैA और मण्डली के वृद्ध लोग अपने अपने हाथों को यहोवा के आगे बछड़े के सिर पर रखें, और वह बछड़ा यहोवा के साम्हने बलि किया जाए। लेव्यवस्था 4:15

पुनर्स्थापित किया जाना

मनुष्य की पुनर्स्थापना हमारे पापों तथा हमारे दोष की पहचान के द्वारा आरंभ होती है तथा मस्ती के द्वारा क्षमा प्राप्ति से जैसे पतरस कहता है हम सब भटक गए क्योंकि तुम पहिले भटकी हुई भेड़ों की नाईं थे, पर अब अपने प्राणों के रखवाले और अध्यक्ष के पास फिर आ गए हो। 1 पतरस 2:25पुनर्स्थापना इस बात की पहचान से आरंभ होता है कि हम ने पाप किया है और उस न्याय के योग्य हैं A

- हम अपने दो"kksa को माने इसकी वजह कि जो हमने किया है उसको छोटा करके दिखाएं
- हम अपने दो"kksa की पहचान करें इसके बजाय कि हम अपने दो"kksa के लिए कोई बहाना बनाए

- हल की खोज करें इसके बजाय कि हम नकली हल पर विश्वास करें

उसने हमारे पापों के साथ क्या काम करा क्या जो उसने दंड दिया था हम पर पूरा किया अपेक्षा की जानी चाहिए परंतु ऐसा नहीं उसने हमारे पापाsa को उठा लिया यहीं पर हमें इस बात को मानना है कि हमारे तारनहार में हमारे लिए कुछ बहुत बड़ा किया है उसने हमारे पापों के उस भोज को अपने ऊपर ले लिया यह पंक्ति उस महान सेवक के गीत यशायाह 53 में जो मिलता है उससे लिया गया है जिससे हम में से कई परिचित हैं

इस कारण मैं उसे महान लोगों के संग भाग दूंगा, और, वह सामर्थियों के संग लूट बांट लेगा; क्योंकि उसने अपना प्राण मृत्यु के लिये उण्डेल दिया, वह अपराधियों के संग गिना गया; तौभी उसने बहुतों के पाप का बोझ उठ लिया, और, अपराधियों के लिये बिनती करता है॥ यशायाह 53 :12

यह क्षतिपूर्ति प्रतिस्थापन की शिक्षा जो यह कहती है कि हमारे बचाने वाले ने हमारे स्थान पर दुख को उठाया यह नए नियम में कोई नई शिक्षा नहीं यह पुराने नियम की भविष्यवाणियों में सम्मिलित थी हालांकि नए नियम बच्चा-बच्चा की बनने में भविष्यवाणी या वास्तविकता बन गई क्योंकि परमेश्वर के लोगों के पास यह सुपर विश्वास के कारण यह शुक्र डाल दिए गए इशू

उसने ग्रुप पर अपनी दे में हमारे पापों को उठाया यीशु ने

यीशु ने ना केवल सहानुभूतिपूर्वक मनुष्य जाति के साथ पहचान नहीं कि उसने समानुभूति भी कि यह भावनाएं हालांकि इस देश के लिए मांगी गई कीमत को नहीं चुकाती जब किराया बाकी होता है किराए को चुकाना

आवश्यक है इसके बावजूद कि कि आप कितना चाहते हैं और नहीं चाहते हैं उसको चुकता करने के लिए अगर आप छुकता नहीं कर पा रहे हैं उसके विषय में बुरा लगना काफी नहीं कोई और उस कीमत को देख सकता है परंतु उसको देना आवश्यक है जब हम परमेश्वर को ठेस पहुंचाते हैं तो उसका जुर्माना जिस सर का उसके लिए उपयुक्त है देना आवश्यक है मुख्यतः हमारा जीवन इससे पहले कि हम इस बात में आगे बड़े की हमारे लिए क्या किया हम यह स्मरण रखें यह कैसे उसके कार्य कई वर्ष पहले पूर्व लक्षित किए गए थे A

मनुष्य के पाप की दो गंभीर परिणाम है परमेश्वर के विरुद्ध उसके पाप के कारण के द्वारा दोष भावना तथा भारत की धार्मिकता की कमी के कारण नग्नता जोकि शर्म है निम्नलिखित लेखाचित्र मनुष्य के असफल प्रयासों को दर्शाता है कि किस प्रकार से यह आत्मिक और भावनात्मक जीवन के उस अंतर को भर सके परमेश्वर का स्थाई समाधान तथा परमेश्वर का यह शिव मस्ती में प्रभाव शाली समाधानA

आरंभ से दंड विशेष व्यवस्था क्रियाशील थी पवित्र परमेश्वर की उपस्थिति परमेश्वर की पवित्र धार्मिकता की उपस्थिति से क्रियान्वित करती है जब एक व्यक्ति पाप करता है उससे अपने जीवन के द्वारा उस पाक की कीमत को चुकाना है आरंभ में मनुष्य के पास किसी चीज के विरुद्ध किसी व्यक्ति के जूस से सामर्थी है उसके विरोध में कुछ भी करने के विषय में सचेत था सचिन का है के प्रारंभिक अभिशंसा के द्वारा कई धर्म जन्मे मुझे आशा करते हुए कि उनकी बलिदान तथा अच्छे कार्य उस उन से बढ़कर जो ईश्वर है उसको खुश करेंगे वह सही थे इस बात को मानने के द्वारा कि उनमें कमियां हैं तथा परमेश्वर के धर्मी क्रोध से बचने

के लिए प्रयास करते हैं परंतु यह प्रयास काफी नहीं हूं जानवरों का लहू मनुष्य की पापों की शम्मा को नहीं दे सकता

प्रारंभिक सबूत मनुष्य के चरण की शर्म की दुविधा को उसके द्वारा अर्जित की गई के द्वारा देखें तथा परमेश्वर की इच्छा की वह मनुष्य जाति की सहायता करें यह बात स्पष्ट हुई जब परमेश्वर ने आदम और हव्वा के लिए स्थाई वस्तुओं को बनाया परमेश्वर ने तुरंत मनुष्य के पाप के कारण उन्हें नष्ट नहीं कर दिया परंतु अपनी दया में उसने यह जाना मनुष्य के प्रयास के विषय में कि उसके द्वारा उन वस्तुओं को बनाना अपर्याप्त है इसीलिए उसने एक जानवर की मृत्यु के द्वारा उन्हें स्थाई वस्त्र प्रदान करें यह इस बात को बताता है कि जानवरों की मृत्यु एक अस्थाई ओढ़नी को मनुष्य के लिए देता है

इसके पश्चात हम पुराने नियम में देखते हैं कि कैसे परमेश्वर बलिदान की प्रणाली को स्थापित करता है जहां मनुष्य अपने सीमित तरीकों से उसकी उपस्थिति में आ सकें उसके भेंट और बलिदान बड़े स्पष्ट थे लेवी व्यवस्था के पहले कुछ अध्याय उदाहरण के तौर पर बिल्कुल स्पष्ट बताते हैं की होम बली अंजलि और बबली कैसे दी जानी चाहिए व्यवस्था जोकि दौरा बाइबल की पहली 5 पुस्तक पूर्ण रूप से इन दिशा निर्देशों को समझातेहै

एक महा याजक के कार्यों को पूर्व के अध्यायों में समझाया गया है परंतु परमेश्वर के पास बलिदान के विषय में भी काफी कुछ कहने को था यह आवश्यक है कि पत्थर के शब्दों को समझें इस विषय के संबंध में उसने उसको उस पर अपने शरीर में हमारे पापों को उठा लिया यीशु की मृत्यु तथा पुनरुत्थान तक निरंतर बलिदानों को दिया जाना

आवश्यक था पुराना नियम इसी समान कार्य करता है की स्थाई वस्तुओं को दें जिसे परमेश्वर ने अदन की वाटिका में प्रदान किया यह वस्त्र अस्थाई तो थे परंतु सच्ची क्षमा तथा धार्मिक प्रदान करने में अपर्याप्त है यह चीजें पूर्ण रूप से मनुष्य को परमेश्वर के प्रति पुनर्स्थापित नहीं करती मसीह की मृत्यु हालांकि यीशु मसीह की निर्दोषता के कारण मनुष्य के प्रति परमेश्वर के रूप को क्रोध को प्रभावशाली रूप से शांत करती बलिदानों के नियम अपर्याप्त थे नहीं थे परंतु वह अस्थाई थे तथा उनको इस प्रकार से बनाया गया था कि उस आने वाले प्रभावशाली मसीह के बलिदान की ओर इशारा करें

क्षतिपूर्ति का स्पष्टीकरण

यह वर्ड छठी पूर्ति 76 बार वचन में इस्तेमाल किया गया मुख्यतः व्यवस्था में इब्रानी शब्द कफ़न कफ़न शाब्दिक रूप से उसका अर्थ झांकना है यह और स्पष्ट रुप से दिखता है जब नहाया जाए मंदिर के भीतरी कक्ष में जाता है इस साल में एक बार वचा के संदूक पर लहू को छोड़कर छिड़के लहू को चीर कर बचा के संदूक के ऊपर जहां परमेश्वर उसके अदृश्य सिंहासन पर गरीबों के ऊपर कररूप करोड़ के ऊपर विराजमान है बलिदान किए हुए क्षति पूर्ति के लिए जानवरों का लहू उस भाषा के संदूक पर छिड़का जाएगा वाचा के संदूक के अंदर परमेश्वर और उसके लोगों के बीच में की गई वाचा जो पत्थरों की पट्टियों पर लिखी गई है

बादशाह परमेश्वर को उसके अनुबंध को स्मरण दिलाती है वह अपने आप को लोगों के सामने रखता है बलिदान किए हुए जानवरों का लहू आवश्यक था कि मनुष्यों के पापा उठा सकें ढाक सके क्षतिपूर्ति

लोगों को उनके पापा क्षमा नहीं दे सकते यह केवल उसको ढूंढ सकती है ढाक सकती है इस तरह से परमेश्वर का क्रोध शांत हो क्योंकि व्यवस्था जिस में आने वाली अच्छी वस्तुओं का प्रतिबिम्ब है, पर उन का असली स्वरूप नहीं, इसलिये उन एक ही प्रकार के बलिदानों के द्वारा, जो प्रति वर्ष अचूक चढ़ाए जाते हैं, पास आने वालों को कदापि सिद्ध नहीं कर सकतीं। इब्रानियों 10:1

स्मरण रखें कि जितना लोग परमेश्वर के समीप गए उतना ही अधिक वह उस की पवित्रता को ठेस पहुंचाएंगे अपने जीवन ओके पापों के द्वारा वह उस क्रोध को अपने ऊपर लाएंगे पुरानी नियम के कारण परमेश्वर इस बात के लिए तैयार हुआ की अति पवित्र स्थान में वह अपनी उपस्थिति को प्रकट करें इस्त्राइलियों को परमेश्वर के जन्म के रुप में बुलाया जाता है लोग यह गरीबी कुछ कर्तव्यों को भी लेकर आए परमेश्वर ने हारून के दो पुत्रों का विनाश किया क्योंकि उन्होंने उस झूठ को झूठ को अनुचित रीति से उपयोग किया “तब मूसा ने हारून से कहा, यह वही बात है जिसे यहोवा ने कहा था, कि जो मेरे समीप आए अवश्य है कि वह मुझे पवित्र जाने, और सारी जनता के साम्हने मेरी महिमा करे। और हारून चुप रहा। लेव्यवस्था 10:3 हम परमेश्वर द्वारा रिव्यु को नियुक्त किए जाने को भी देखें हारून को समझाकर यह कह, कि जब जब तू दीपकों को बारे तब तब सातों दीपक का प्रकाश दीवट के साम्हने हो। और उन्हें इस्त्राएलियों में से अलग करना, सो वे मेरे ही ठहरेंगे। उन्हे ले कर मैं ने हारून और उसके पुत्रों को इस्त्राएलियों में से दान करके दे दिया है, कि वे मिलापवाले तम्बू में इस्त्राएलियों के निमित्त सेवकाई और प्रायश्चित्त किया करें, कहीं ऐसा न हो कि जब इस्त्राएली पवित्रस्थान के समीप आएं तब उन पर कोई महाविपत्ति आ पड़े। गिनती 8:2, 14,19

पुरानी नियम को पूरा करने के द्वारा परमेश्वर वायदा करता है कि उसका क्रोध उन पर नहीं पड़ेगा परंतु इसका अर्थ यह नहीं कि नियम के अनुसार चलने के द्वारा उनको पापों की सजा मिल जाएगी इसकी वजह यह बात यहूदियों में यह ज्ञान यह ज्ञान यहूदियों में इस बात को डालेगा के बलिदान की आवश्यकता है जिसके चुकाने के द्वारा परमेश्वर के साथ करीबी मिलती है पुराना नियम उस आने वाले बलिदान के चिन्ह के रूप में कार्य करता हैaa A

छुटकारे का अर्थ इसलिए ना केवल परमेश्वर के साथ करीबी संबंध परंतु और प्रभावशाली तरीका मनुष्य जाति की बाहों से व्यवहार करने का यहूदियों ने सोचा कि परमेश्वर परमेश्वर उस व्यवस्था के कारण से उनसे छुपा हुआ था परंतु यह सत्य नहीं परमेश्वर चाहता था इसकी आशीष से उनके जीवन में आए ताकि पुरानी नियम के अधीन में अन्य जाति भी उनके साथ शामिल हो हालांकि यहूदी घमंड से भर गए तथा गैर यहूदियों को तुच्छ जाना जिसे कारण से बड़े न्याय को वहां अपने ऊपर लेकर आए इब्रानियों की पुस्तक इससे और अच्छी तरह से प्रकट करती है A

नए नियम में बलिदान दूसरे अध्याय में हमने पुराने नियम की नए नियम के साथ तुलना की यहां पर मुख्य बात यह है यहां की बिंदु विशेष रुप से इस बात की तुलना करेंगी कि कैसे मर्जी का बलिदान पुराने नियम में चाहे गए बलिदानों से बढ़कर तथा बेहतर है खासतौर से परमेश्वर के छुटकारे के अंत को ध्यान में रखते हुए इमरान की पुस्तक में हालांकि हम इसी बात पर ध्यान लगाते हैं कि कैसे हैं नए नियम के बलिदान की प्रणाली दूसरों से ऊपर थी ना केवल बेहतर परंतु सच्ची

शमा पप्पू से तथा दोषमुक्ति दोषमुक्ति लाने के द्वारा और बलिदानों की अब आवश्यकता नहीं पड़ेगी A

परमेश्वर की उपस्थिति में यीशु सबसे बढ़कर महा याजक है

> अब जो बातें हम कह रहे हैं, उन में से सब से बड़ी बात यह है, कि हमारा ऐसा महायाजक है, जो स्वर्ग पर महामहिमन के सिंहासन के दाहिने जा बैठा। और पवित्र स्थान और उस सच्चे तम्बू का सेवक हुआ, जिसे किसी मनुष्य ने नहीं, वरन प्रभु ने खड़ा किया था। इब्रानियों 8:1-2

यहां पर कुछ चर्चा के बिंदु हैं पहला यीशु इस बार कारण से कि वह स्वर्ग में प्रवेश करता है एक महान महाराजा है स्वर्ग में जो परमेश्वर का वास्तविक उपस्थिति है ताकि वह उस मध्यस्ता को कर सकें पुराने नियम में वाचा का संदूक मनुष्य के हाथों के द्वारा बनाया गया जोकि परमेश्वर के पवित्र सिंहासन का पृथ्वी पर प्रतियोगिता जिस के समक्ष महा याजक वर्ष में एक बार जाता था दूसरा इस कारण से की A

यीशु ने परमेश्वर की उपस्थिति में सेवा की

उसकी सेवा महायाजक उस अतिपवित्र स्थान में प्रवेश करने से पहले जो सावधानी बरतनी होती थी उसे सीमित नहीं था यीशु धार्मिकता से सुसज्जित परमेश्वर पिता के सन्मुख निरंतर जा सकता था यीशु ने उस राजकीय कार्य को पूरा किया इब्रानियों 9: 6- 7, 11- 12 A

पुराने नियम में याजको की सेवा निरंतर थी जिससे हम उनके आने और जाने के द्वारा देख सकते हैं याजको को आवश्यकता की वह निरंतर रूप से ओम बली अन्य बली भावबली दोष गलियों को चढ़ाते रहें लेवीव्यवस्था 1-6 है अंदरूनी मंदिर में महाजन साल में एक बार

क्षतिपूर्ति के कार्य के लिए अंदर जाता था दूसरी तरफ यीशु में उस क्रूस पर एक बार मैं वह बलिदान दे दिया तथा उस बलिदान की भेंट इसकी आवश्यकता थी पूर्ण रूप से पूरा किया उसने उस महाप्रस्थान में हमेशा के लिए प्रवेश किया A

उसने अनंत छुटकारे को प्राप्त किया (भूतकाल इब्रानियों 9:12 इसकी वजह कि वह बलिदान हो जिसे पुराने नियम के अनुसार हर 1 वर्ष चढ़ाया जाना हो वह एक बार के कार्य में पूर्ण रुप से पूरा हुआ यीशु में केवल एक ही क्रोध को अपने ऊपर उठाया ने उद्धारकर्ता के कार्य के एक बार दिए जाने वाले बलिदान को पूरा किया उसके मध्यस्थता कार्य चलता रहेगा यह व्यवस्था के निरंतर आवश्यक्ताओं से बिल्कुल अलग है की याजक निरंतर रूप से उन जानवरों का बलिदान देते रहे यीशु ने हमारी क्षमा को प्राप्त किया (इब्रानियों 9:12-14)

मसीह की बलिदानी भेंट की कहानी ऐसा दिखता कार्य साधिका कार्यसाधक तरीके चौंकाने वाली है बकरों और पहले उनका बलिदान उनके लिए था जिन्होंने अपने आप को शूट किया यह शुद्ध करने का तरीका अलग है हालांकि अस्थाई था इसी कारण से सीमित था विशेष तरह जब हम यीशु की क्रूस पर उसकी मृत्यु की क्षमता के साथ इसकी तुलना करते हैं तब यीशु के प्रकरण में यहां एक व्यक्ति काला हो है एक जानवर के लहू के बजाय जब हम एक बार बलिदान की महत्वता को समझ जाते हैं हम देख सकते हैं की पप बली को इसी प्रकार की मृत्यु की आवश्यकता थी मनुष्य के लिए एक बकरे की नहीं परंतु मनुष्य के लिए मनुष्य की

यीशु के प्रकरण में एक धनी व्यक्ति और धार्मिकता के लिए मारा जाता है उसने अपने आपको निष्कलंक परमेश्वर के सामने बलिदान किया जिसे इब्रानियों का लेखक लिखता है यीशु का लहू मनुष्य के अंदर करण को शुद्ध करता है उस मृत कार्यों से तथा परमेश्वर के लोगों को समर्थ करता है कि वह जीवित परमेश्वर की उपस्थिति में जिए और उसकी सेवा करें यह छुटकारे का उद्देश्य है कि हमारी क्षमता को पुनर्स्थापित करें तथा हमारी उस इच्छा को कि परमेश्वर की पवित्र उपस्थिति में उसकी सेवा करें यीशु मसीह की बलिदानी बैठने इस बात को पूरा किया A

> मृत्यु के द्वारा वाचा लागू हुई क्योंकि ऐसी वाचा मरने पर पक्की होती है, और जब तक वाचा बान्धने वाला जीवित रहता है, तब तक वाचा काम की नहीं होती। इसी लिये पहिली वाचा भी बिना लोहू के नहीं बान्धी गई। क्योंकि जब मूसा सब लोगों को व्यवस्था की हर एक आज्ञा सुना चुका, तो उस ने बछड़ों और बकरों का लोहू लेकर, पानी और लाल ऊन, और जूफा के साथ, उस पुस्तक पर और सब लोगों पर छिड़क दिया। और कहा, कि यह उस वाचा का लोहू है, जिस की आज्ञा परमेश्वर ने तुम्हारे लिये दी है। और इसी रीति से उस ने तम्बू और सेवा के सारे सामान पर लोहू छिड़का। और व्यवस्था के अनुसार प्रायसब : वस्तुएं लोहू के द्वारा शुद्ध की जाती हैं; और बिना लोहू बहाए क्षमा नहीं होती॥ इब्रानियों 9:17-22

मसीह की मृत्यु आवश्यक थी नई वाचा को कार्य में लाने के लिए एक मनुष्य की वसीयत के समान जो कि जब तक वह व्यक्ति जो

इस में सम्मिलित है मरता नहीं तब तक वहां लागू नहीं हो सकती मसीह की उस क्रूस पर मृत्यु ने नए नियम वाचा को क्रियांवित किया सभो पापों की क्षमा सच्ची नए नियम में मिलती है A

फिर उस ने कटोरा लेकर, धन्यवाद किया, और उन्हें देकर कहा, तुम सब इस में से पीओ। क्योंकि यह वाचा का मेरा वह लोहू है, जो बहुतों के लिये पापों की क्षमा के निमित्त बहाया जाता है। मत्ती 26: 28-29

अंतिम भोज में यीशु ने अपने चेलों से कहा यह लहू में नहीं बचा है यह वह अपने आने वाली मृत्यु के विषय में जानता था वह इस उद्देश्य के साथ आया कि मारा जाए यीशु जानता था किताबों की शमा उसके उस पुरुष पर कार्य के कारण से ही संभव होगी "वह पुत्र जनेगी और तू उसका नाम यीशु रखना; क्योंकि वह अपने लोगों का उन के पापों से उद्धार करेगा। मत्ती 1:

पिछले अध्याय का सारांश बताता है व्यवस्था वास्तविक वस्तु की परछाई के रूप में है वह वास्तविक चीज का प्रतिबिंब है यदि मैं किसी व्यक्ति की जो मेरी और इस जमीन पर चल कर आ रहा है उसके परछाई को देखता हूं तुम्हें ऊपर भी देखता हूं कि वह कौन है इसी समान व्यवस्था ने आवश्यक समझ को स्थापित किया तथा उस अपेक्षा को भी जिसे अब हम नई वाचा के रूप में जानते हैं हालांकि परछाई पूर्ण प्रकाशन नहीं तथा परमेश्वर का पूर्ण कार्य नहीं वह वास्तविक के कुछ पहलुओं को बताता है A

क्योंकि व्यवस्था जिस में आने वाली अच्छी वस्तुओं का प्रतिबिम्ब है, पर उन का असली स्वरूप नहीं, इसलिये उन एक ही प्रकार

के बलिदानों के द्वारा, जो प्रति वर्ष अचूक चढ़ाए जाते हैं, पास आने वालों को कदापि सिद्ध नहीं कर सकतीं। नहीं तो उन का चढ़ाना बन्द क्यों न हो जाता? इसलिये कि जब सेवा करने वाले एक ही बार शुद्ध हो जाते, तो फिर उन का विवेक उन्हें पापी न ठहराता।परन्तु उन के द्वारा प्रति वर्ष पापों का स्मरण हुआ करता है। क्योंकि अनहोना है, कि बैलों और बकरों का लोहू पापों को दूर करे। इब्रानियों 10:1-4 A

पुराने नियम में याtd वंश को निरंतर चलना था क्योंकि वहां पर बलिदान को नियमित रूप से चढ़ाने की आवश्यकता थी यह मनुष्य के पुत्र के साथ ऐसा नहीं परमेश्वर ने उसको अति महान किया तथा प्रभावशाली रूप से उसके लहू के द्वारा नई वाचा की शुरुआत की तथा वह बन गया जो परमेश्वर के क्रोध को संतुष्ट कर सके A

इसी कारण हमें केवल मसीह पर विश्वास करना है कोई भी धर्म जो जानवरों के बलिदान को लोगों के पापों को क्षमा के लिए चढ़ाते हैं और पर्याप्त है असंतोषजनक है नाही अच्छे कार्य परमेश्वर के प्रकोप को शांत कर सकते हैं मृत्यु आवश्यक है हमें धर्मी ता का अधर्मी के लिए मारा जाना की आवश्यकता थी क्योंकि अधर्मी सीमित था कि वह अपनी बाहों के लिए अपने जीवन के द्वारा कीमत चुकाने के लिए सीमित था कोई भी व्यक्ति किसी और को बचा नहीं सकता छुटकारे की योजना में और भी बहुत कुछ है परंतु यह चीजें मनुष्य की परमेश्वर के साथ मेल मिलाप के लिए आवश्यक है A

मसीह हमारे पापो के लिए संतुष्टि कर करण

यह शब्द संतुष्टि करण बलिदान की चर्चा में एक महत्वपूर्ण शब्द है जिस शब्द का नए नियम में चार बार उपयोग किया गया इब्रानियों 2:17 ,1 ;gqUuk2:2, 4:10, रोमियो 3:25 इस शब्द का अर्थ तथा इसका उपयोग जो ऊपर लिखा गया है उसका संपूरक है परंतु और भी अधिक एक अन्य जाति यहूदी के दृष्टिकोण से पुराने नियम से प्रशिक्षित यहूदी विचारधारा के बजाय A

यह शब्द संतुष्टि करण आलोकिक व्यक्ति के क्रोध को संतुष्ट करता है यह शब्द यूनानी संसार में इस्तेमाल किया जाता था उनके कई देवी देवताओं के सन्मुख बलिदानों के लिए पर यह सब कुछ छुटकारा प्राप्त करने का आ कार्यसाधक तरीका है जैसा की हमने ऊपर चर्चा की A यह शब्द नए नियम में इस्तेमाल किया गया क्योंकि छुटकारे के विषय में यह तीन तत्व के विषय में बताता है संतुष्ट करना प्रसन्न करना मृत्यु बलिदान तथा आलोकिक प्राणी यीशु जो बलिदान है Øwस पर मारा गया कि परमेश्वर के क्रोध को शांत करें नीचे लिखा हुआ पद अपने विस्तृत संदर्भ में यीशु के एक महायज्ञ के रूप में बलिदान चढ़ाने तथा संतुष्टि करण करने संतुष्टि करण करने वाला वाले के रूप में दर्शाया गया है जोकि बलिदान है

इस कारण उस को चाहिए था, कि सब बातों में अपने भाइयों के समान बने; जिस से वह उन बातों में जो परमेश्वर से सम्बन्ध रखती हैं, एक दयालु और विश्वास योग्य महायाजक बने ताकि लोगों के पापों के लिये प्रायश्चित्त करे। इब्रानियों 2:17 ,

और वही हमारे पापों का प्रायश्चित्त हैऔर केवल हमारे ही नहीं :, वरन सारे जगत के पापों का भी। 1 यूहन्ना 2:2

आधुनिक संसार लहू के विषय में चर्चा से घृणा करता है क्योंकि यह न्याय तथा पापों के विषय में बात करता है जो परमेश्वर के पवित्र जन को समझते हैं बस यह जानते हैं कि उस व्यक्ति ने परमेश्वर को एक बड़ी ठेस पहुंचाई है A वह इस बात को जानते हैं की एक बलिदान को चढ़ाया जाना आवश्यक है यीशु एक बलिदान तथा उस बलिदान को चढ़ाने वाला दोनों है परमेश्वर उसके पुत्र के द्वारा बलिदान से संतुष्ट होता है

परमेश्वर संतुष्ट हुआ

मसीह की मृत्यु पूर्ण रुप से अस्पृश्यता के हर्जाने को पूरा करता है मृत्यु के हर्जाने के द्वारा मसीह ने जो हमारे लिये श्रापित बना, हमें मोल लेकर व्यवस्था के श्राप से छुड़ाया क्योंकि लिखा है, जो कोई काठ पर लटकाया जाता है वह श्रापित है। यह इसलिये हुआ, कि इब्राहिम की आशीष मसीह यीशु में अन्यजातियों तक पंहुचे, और हम विश्वास के द्वारा उस आत्मा को प्राप्त करें, जिस की प्रतिज्ञा हुई है।। ग़लतियों 3:13-14

1 पतरस 2: 24 के समान यह पल हमें इस बात का स्मरण दिलाते हैं मसीह की मृत्यु की आवश्यकता के विषय में कि हमें उस व्यवस्था के हिसाब से जुड़ा है व्यवस्था हमारे pkप और हमारे दोष के विषय में गवाही देता है जो बात करे उसे मरना आवश्यक है यहां पर खानपान स्थान पन्ना स्थान पन्ना मसीह की हमारे स्थान पर मृत्यु को देख सकते हैं जो हमारे लिए Jki बन गया व्यवस्था में यह कहता है कि जो उस क्रूस

पर लटकाया जाता है वह शापित है और यह ;h'kq उस tree पर लटका जो क्रूस है

एक पापी के रूप में हमें व्यवस्था के शाप के अधीन मरना होगा क्योंकि हम उसको पूर्ण नहीं कर सकते पुणे हम अब्राहम के साथ उन वायदों को देखते हैं जिसका वर्णन यहां पर है जोकि अन्य जातियों तक जाएगी परमेश्वर चाहता था कि सारे जातियों से लोग मसीह पर विश्वास करें तथा परमेश्वर की आत्मा के द्वारा नए जीवन को प्राप्त करें

दंड संहिता से आगे जीवन में तथा पुनरुत्थान में

पुनरुत्थान सबसे सामर्थ्य सत्य है जो यीशु की धार्मिकता को स्थापित करती है वह मारा गया परंतु अपनी बातों के कारण नहीं आपकी और मेरी समाज वह हमारे स्थान पर मारा गया वह मारा गया क्योंकि उसने इस बात को चुना कि हमारे पापों को अपने ऊपर ले लें जिसके देखो, सभों के प्राण तो मेरे हैं; जैसा पिता का प्राण, वैसा ही पुत्र का भी प्राण है; दोनों मेरे ही हैं। इसलिये जो प्राणी पाप करे वही मर जाएगा। यहेजकेल 18: 4 वह जीवित है क्योंकि दोष आखिरकार हर समय के लिए उसकी मृत्यु के द्वारा संतुष्ट किया गया

एक बार मसीह की मृत्यु में वह जुर्माना दिल दिया गया मृत्यु उसको अपने अधीन नहीं रख सकती मृत्यु उसको अपने अधीन नहीं रख सकती यह जो जीवित हुआ यीशु का पुनरुत्थान उसके धर्म ही जीवन का प्रमाण है मृत्यु उसको नीचे रोक कर नहीं रख सकी प्रेरितों के काम 231 औरैया जैसे पौलुस या आपके साथ कहता हैAऔर पवित्रता की आत्मा के भाव से मरे हुओं में से जी उठने के कारण सामर्थ के साथ परमेश्वर का पुत्र ठहरा है। रोमियो 1:4

विश्वास के द्वारा nks"keqfDr

विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराया जाना उन वाक्यांशों में से एक है जो यह बताता है यह जो उस शुरुआती परिवर्तन काल के लोग हो रहे थे खो रहे थे 1500 1600 ईशा पश्चात धर्मी ठहराया जाना एक न्यायिक शब्द है जो किसी व्यक्ति को धर्मेंद्र आता है धर्मी ठहराता है कई लोग उस समय धर्म की आत्मा से जकड़े हुए थे वह मुख्य था इसलिए था कि वह बाइबल के अनुसार नजदीकी से नहीं चल रहे थे हालांकि इस आदत है यह इसलिए बाइबिल उनकी स्थानीय भाषा में अनुवाद नहीं की गई थी वह यह सोचते थे की कुछ क्षमा उनके बहुतेरे कार्यो द्वारा दान द्वारा या धन द्वारा आएगी परंतु वह कभी भी इस बात को लेकर निश्चित नहीं थे सुधारकों ने बच्चन का अनुवाद करना चालू किया तथा विश्वास के द्वारा धर्मी कराए जाने कि शिक्षा देना चालू किया तथा लोग इस बात से कि कैसे एक व्यक्ति {kमा प्राप्त करता है

उसकी गलत सोच से बाहर निकलने लगे उस समय से इस शिक्षा पर जोर देना आरंभ हुआ अविश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए जाने से जय कई बार इस वाक्यांश बताया जाता है कि मसीही में व्यक्तिगत विश्वास और अधिक सामान्य वाक्यांश जैसे अधिकारी के द्वारा नहीं जैसे की कहानियों कार्य के द्वारा नहीं परंतु मसीही में विश्वास के द्वारा इस बात पर जोर देने के द्वारा कई लोग जो पहले धार्मिक संस्थानों द्वारा मोहित किए गए थे मुड़ सके की उद्धारकर्ता की और ध्यान लगा सकें बजाय इसके कि खुद के कार्यों तथा धार्मिकताA

यह विषय आने वाली शताब्दीओ में दोबारा दोहराया गया विश्वासियों का विश्वास ihडियो तक बिगड़ता जाएगा धार्मिक कार्यों में

विश्वास और संबंध को हटा देंगे परमेश्वर ने अपने अनुग्रह में इन बातों का विरोध करने वालों के बीच में नवीनीकरण को लेकर आया उदाहरण के तौर पर बैठ टेस्ट प्रेस्बिटेरियन मैथोडिस्ट अन्यथा जो इस शिक्षा विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए जाने के शिक्षा से उत्पन्न हुए हैं इसी समान चीज रोमन कैथोलिक समुदाय के बीच में भी हो रही है जब भी कभी परमेश्वर का वचन लोग बोलते हैं वह इस बात को देखते हैं कि यही सिखाया जा रहा है इनमें से कई लोग धर्म के कार्यों के द्वारा लगाए गए हैं जो विश्वास के द्वारा जो मशीन है उनके लिए कार्य किया हैA

इनसे आजाद किए जाते हैं जब भी कोई परमेश्वर के सत्य को ढूंढना आरंभ करता है परमेश्वर के वचन में मैं कई बार इस प्रश्न के साथ वापस लौटते हैं कि मैं कैसे बचाया जा सकता हूं सौभाग्य से बाइबिल छुटकारे की कहानी के विषय में है और इस कहानी का जन्म का चरम सुसमाचार के शिशु के व्यक्तित्व तथा कार्यों में मिलता है जो मारा गया तथा नई वाचा को क्रियान्वित करता है एक सामर्थ्य संदेश दो सामर्थी भागों में मिलता है जो इस बात को बताता है जो पुराने और नए नियम को जोड़ता है उस घड़ी को बताता है A

अब्राहम का विश्वास उत्पत्ति 15 :1-6 अब्राहम जिसे इस पद्यांश में अबराम बुलाया जाता है वह बच्चा ना उत्पन्न करने इस समस्या का सामना करता है यह परिस्थिति तीन कारणों से बड़े संघर्ष की बात बन गई (1) उसके नाम का अर्थ पिता था (2) परमेश्वर ने उसे वंशजों का वायदा किया था और (3) संतानहीन होने का एक लंबा समय

इन बातों के पश्चात यहोवा को यह वचन दर्शन में अब्राम के पास पहुंचा, कि हे अब्राम, मत डर; तेरी ढाल और तेरा अत्यन्त बड़ा फल

मैं हूं। अब्राम ने कहा, हे प्रभु यहोवा मैं तो निर्वंश हूं, और मेरे घर का वारिस यह दमिश्की एलीएजेर होगा, सो तू मुझे क्या देगा? और अब्राम ने कहा, मुझे तो तू ने वंश नहीं दिया, और क्या देखता हूं, कि मेरे घर में उत्पन्न हुआ एक जन मेरा वारिस होगा। तब यहोवा का यह वचन उसके पास पहुंचा, कि यह तेरा वारिस न होगा, तेरा जो निज पुत्र होगा, वही तेरा वारिस होगा। और उसने उसको बाहर ले जाके कहा, आकाश की ओर दृष्टि करके तारागण को गिन, क्या तू उन को गिन सकता है? फिर उसने उससे कहा, तेरा वंश ऐसा ही होगा। उसने यहोवा पर विश्वास किया; और यहोवा ने इस बात को उसके लेखे में धर्म गिना।

उत्पत्ति 15:1-6

परमेश्वर ने अब्राहम से प्रतिफल देने का वायदा किया उसके प्रतिउत्तर में अबराम ने यह कहा इस प्रतिफल का कोई अर्थ नहीं क्योंकि उसके पास संतान नहीं अब्राहम ने यह सुझाव दिया किसके कार्यक्रम सेवक एक मनुष्य जो दमिश्क से है उसे सब कुछ मिल जाएगा वह एक अच्छा फायदा था परंतु इसने अबराम को उत्साहित नहीं किया क्योंकि उसके पास कोई वंशज नहीं था उत्पत्ति 15 :3

परमेश्वर ने अबराम की सोच को रोका तथा उससे कहा कि एक उसके खुद की देg से आएगा ना कि उसे घर आने से वह उसका वंश होगा उत्पत्ति 15:4 तब प्रभु ने उससे कहा आकाश के तारों की गिनती को देखें और उससे कहा यह उसकी संतान इतनी होगी यह बात यहां पर जब परमेश्वर ने अब्राहम से वायदा किया लिखा है कि अब्राहम ने विश्वास किया अगला वक्तव्य जो अब्राहम के विश्वास पर सदर व्याख्या को बताता है वह बहुत महत्वपूर्ण हो जाती है उसने यहोवा पर

विश्वास किया; और यहोवा ने इस बात को उसके लेखे में धर्म गिना उत्पत्ति 15:6

परमेश्वर का सत्य ज्यादातर वास्तविक घटनाओं जैसे यह है पर आधारित होती है उदाहरण के तौर पर सुसमाचार की ऐतिहासिकता मूल घटनाएं बन गई जहां पर परमेश्वर के सत्य सुदृढ़ सदन स्थापित हो सके यह परिस्थितियां एक सामर्थी चित्रण बन गई उन मुख्य शक्तियों का सत्य का तथा सत्य के अर्थ को सुरक्षित रखने में इस प्रकरण में अपराहन का विश्वास वह चित्र बन गया कि कैसे परमेश्वर के वायदे पर विश्वास रखने के द्वारा एक व्यक्ति बचाया जाता है यहां पर अब्राहम के चरित्र का सुधार उसे धर्मी नहीं ठहराता परंतु उसका विश्वास तथा परमेश्वर का वह वायदे और भरोसा जिसके द्वारा उसने इस धार्मिकता को प्राप्त किया जब हम अब्राहम के जीवन के विषय में देखते हैं हम उसके जीवन में व्यक्तिगत समस्याओं की बताएं के प्रमाण को देखते हैं ।

उसने परमेश्वर को लेकर तथा अपनी पत्नी को लेकर असफल रहा परंतु उसके विश्वास के कार्य ने इस बात पर कि परमेश्वर ने जो कहा एक चमत्कारी क्षण बन गया जहां अब्राहम ने विश्वास किया और वह उसके लिए धार्मिक रागिनी गई धार्मिकता जिनी गई गिनी गई नया नियम इस मुख्य पद्यांश को रेखांकित करता है तथा उस सिद्धांत को प्रकट करता है जिसके द्वारा आज दुनिया भर में लोग बचाए जाते हैं विश्वास के द्वारा बचाएं जाने से एक व्यक्ति परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश करता है इस विश्वास का मूल्य यीशु मसीह के व्यक्ति तथा उसके कार्यों पर रोल डालता है ना कि उन कार्यों पर जो हम कर सकते हैं कि

परमेश्वर के साथ उस शांति को प्राप्त कर सकें और यही कारण है नए नियम में इस विषय पर इतनी शिक्षाओं dh ek=k gS

नए नियम में अब्राहम का विश्वास रोमियो 4:1-5

पद्यांश का सीधा लेख मिलता है यहां तक कि अब्राहम के विश्वास का अर्थ भी विशेष रुप से लिखा गया है रोमियो 4:3 संक्षिप्त अनुवाद और विस्तार से बताता है "सो हम क्या कहें, कि हमारे शारीरिक पिता इब्राहीम को क्या प्राप्त हुआ? क्योंकि यदि इब्राहीम कर्मों से धर्मी ठहराया जाता, तो उसे घमण्ड करने की जगह होती, परन्तु परमेश्वर के निकट नहीं। पवित्र शास्त्र क्या कहता है यह कि इब्राहीम ने परमेश्वर पर विश्वास किया, और यह उसके लिये धामिर्कता गिना गया। काम करने वाले की मजदूरी देना दान नहीं, परन्तु हक समझा जाता है। परन्तु जो काम नहीं करता वरन भक्तिहीन के धर्मी ठहराने वाले पर विश्वास करता है, उसका विश्वास उसके लिये धामिर्कता गिना जाता है। रोमियो4 -1:5

जो बाद में जाकर इस बड़े परिवर्तन को प्रेरित करने वाला बनता है मनुष्य के खुद का प्रयास व्यर्थ है "क्योंकि यदि इब्राहीम कर्मों से धर्मी ठहराया जाता, तो उसे घमण्ड करने की जगह होती, परन्तु परमेश्वर के निकट नहीं। रोमियो 4:2

यह वाक्य कार्य के द्वारा धर्मी ठहराए जाना इस वाक्यांश विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराने के विपरीत है कार्य कई चीजों की ओर इशारा कर सकती है मार्टिन लूथर ने सेंट पीटर कैथेड्रल इस वीडियो को अपने घुटनों पर चढ़ा यह सोचते हुए कि परमेश्वर के सामने वह धार्मिक मुन्नी को प्राप्त करें पूर्णिया पूर्ण पूर्णिया प्राप्त करें दोस्तों ने बलिदान दिया तथा कुछ लोगों ने अपने आप को

तथा कुछ लोगों ने अपने आप को निरंतर रूप से गर्ल एशियाई सभा में जाने के लिए समर्पित किया और काफी लोगों ने अपने आप को केवल एक बेहतर इंसान के रुप में बनाने के प्रयास में

वह लोग जिन्होंने जो अपने देने तथा धार्मिक कार्यों पर निर्भर होते हैं यह सोचते हुए कि उन्होंने कुछ विशेष प्राप्त कर लिया परंतु जैसे पौलुस कहता है उसके पास कुछ है घमंड करने का परंतु परमेश्वर के सन्मुख नहीं क्योंकि यदि इब्राहीम कर्मों से धर्मी ठहराया जाता, तो उसे घमण्ड करने की जगह होती, परन्तु परमेश्वर के निकट नहीं। रोमियो 4:2 और यही मनुष्य के भले प्रयासों के साथ समस्या है लोग कठिन प्रयास करते हैं बलिदानों को चढ़ाते हैं और सत्य धार्मिक अनुशासन के अधीन रहते हैं परंतु यह काफी नहीं लोग इस बात को एक संयुक्त प्रयास देखते हैं कि कुछ और बेहतर प्राप्त कर सकें परंतु परमेश्वर इन चीजों को उस धार्मिकता में योगदान के रूप में नहीं देखता इसका कारण सीधा सा है कि वह धर्म ही नहीं वरन पापी है रोमियो 3:23 एक चोट हो चमड़ी पर साफ कर देने से वह गहरा संक्रमण ठीक नहीं हो जाता

मनुष्य अपने प्रयासों के प्रतिफल की मांग करता है "काम करने वाले की मजदूरी देना दान नहीं, परन्तु हक समझा जाता है। रोमियो 4:4

यहां पर कार्य तथा उसके प्रतिफल का सिद्धांत मनुष्य के वहां सप्ताह में 6 दिन कार्य करने तथा अपनी कमाई को अर्जित करने की ओर इशारा करता है इस बात को इस्तेमाल कर रहा है कि वह हमारी सहायता करें इस बात को देखने के लिए कि जब हम किसी चीज के लिए अपना योगदान देते हैं कुछ करने के द्वारा तो उसका प्रतिफल हमारा

हक बन जाता है जो हमें मिलना है कार्य का पूर्ण होना उसके प्रतिफल या कीमत की मांग करता है यह सिद्धांत हालांकि परमेश्वर के छुटकारे की योजना पर लागू नहीं होता क्योंकि यह अनुग्रह पर तथा दया पर आधारित है यदि मनुष्य अनुभव के द्वारा बचाया जाता है अनुग्रह के द्वारा बचाया जाता है तो यह उस बात से नहीं जो वह करता है जिसमें उसकी धार्मिक कार्य भी हैं नहीं हो सकता एक बार जब इस बात को कह दिया जाता है कि हम परमेश्वर के अनुग्रह द्वारा बचाए गए हैं तब हमारे सारे प्रयास उद्धार तब हमारी सारी प्रयास हमारे उद्धार प्राप्त करने के लिए नामुमकिन है एक उद्धारकर्ता की आवश्यकता रोमियो 45 रोमियो 45 एक और समूह है जो विश्वास करता है कि वह अपने उद्धार को प्राप्त करने के लिए अयोग्य हैं और सक्षम है सक्षम है और सक्षम मनुष्य के सारे उत्तम प्रयासों को जोड़ कर भी जोड़ने के बाद भी वह परमेश्वर की उस अपेक्षा से कम ही होते हैं वह परमेश्वर के अनुग्रह की खोज करते हैं तथा उसके वादों पर विश्वास करते हैं कि वह उनकी असमर्थता में सहायता करेगा कि वह एक धर्मी जीवन जी सकें वह यह मानते हैं कि वह पापी हैं यह एक पत्ता पी और एक नम्र हिरदय है वह जानते हैं कि उनके पास वह नहीं जिसकी उनको जरूरत है वह हताश है उन्हें प्रभु की आवश्यकता है कि वह उनकी सहायता करें तथा विश्वास करते हैं कि उनकी और धार्मिकता में परमेश्वर के पास उनकी सहायता के लिए एक मार्ग है

उद्धार का एक तत्व जिसपर कुछ सुधार में काफी जोर दिया गया पर अनुग्रह यह विश्वास के उस विषय के साथ चलता है क्योंकि यह खुद के कार्यों पर निर्भर नहीं होता परंतु एक व्यक्ति की इस्पात को अपनाने की योग्यता उसके बाप में स्थिति को अपनाने की योग्यता अपनानी योग्यता

पर यदि एक मनुष्य घमंड करता है वह ज्यादातर इस बात पर ध्यान को लगाता है जो वह सोचता है कि उसका अपनाने योग्य भाग है या उसकी उपलब्धियों पर हालांकि यदि वही व्यक्ति इस बात को जान पाए कि उसे अब दूसरों को और अधिक खुश करने की आवश्यकता नहीं उसके लिए अपनी और धार्मिकता को मानना और अधिक आसान हो जाएगा यह हमारी बुरी स्थिति है जिसे परमेश्वर धर्म इधर आता है तथा अनुग्रह का जन्म होता है परमेश्वर को लोग इस बात को पाने से खुश हैं उनके प्रति परमेश्वर के अनुग्रह कारी बर्ताव से वह उसके लिए धार्मिक रागिनी के रोमियो 45 रोमियो 45

उस सुधार का केंद्र इन कुछ शब्दों में मिलता है यह शब्द विश्वास अब्राहम के विश्वास से परिभाषित होता है यह कार्य पर आधारित नहीं परंतु विश्वास पर जिस विश्वास की जरूरत है वह मशीनें एक साधारण विश्वास है तथा उसके उस क्रूस पर छुटकारे के कार्य पर जिसके द्वारा हम शमा को प्राप्त करते तथा परमेश्वर द्वारा अपनाए जाते हैं

यह शब्द “Reckon” एक तकनीकी शब्द है जिसका अर्थ है गिना जाना या यह शब्द तथ्यों से जुड़ा है दूसरे शब्दों में यह विश्वास धार्मिकता गिनी जाती है मसीही कई बार इस पद्यांश को एक संभावित धार्मिकता के रूप में उपयोग करते हैं इस प्रकार की धार्मिकता को बताने के लिए जब परमेश्वर हमें दिखता है वह हमें धर्मी देखता है यह परमेश्वर का प्रभावशाली तरीका है हमारी नग्नता तथा हमारी शर्म को ढकने के लिए यह यह सत्य है जो हमें अनुमति देता है कि हमारे दिखावे की जीवन को छोड़कर तथा अपने उस दुर्भावना के विषय में चिंता करने को

छोड़ कर छोड़ने में हमारा दोष ठीक कर दिया गया और हमें आजाद कर दिया गया है यह इसलिए नहीं कि हम कुछ अच्छे हैं जय मसीह में परमेश्वर की भलाई है कि हम विश्वास के द्वारा क्षमा किए जाते हैं सुधार ने लोगों की मन को ज्योतिर्मय किया तथा एक महान मिशन की कार्य को इस दुनिया में चालू किया जो आज के दिन तक नहीं रुका इस बात को समझने के लिएA

यीशु क्रूस पर क्यों मरा हमें पहले यह समझना है कि कितना भयानक पाप है पाप कितना भयानक है तभी हम दे सकते हैं कि उन पापों से क्षमा प्राप्त करने के लिए एक मार्ग है यहां पर हम देखते हैं परमेश्वर के महान प्रेम को जो यीशु के उस क्रूस पर हम सबके पापों के मरने में देखते हैं यह कुछ रीति से समझ से बाहर है कि परमेश्वर इस तरीके से धर्मी परमेश्वर इस तरीके से हस्तक्षेप करेगा उनकी सहायता करने के लिए जिन्होंने उसके विरुद्ध बलवा किया तथा सुधार का संदेश धर्मी जन विश्वास के द्वारा जीवित रहेगा आज भी अर्थपूर्ण है क्योंकि वह बाइबल के उस सत्य की गवाही देता है कि मनुष्य स्वयं के प्रयासों के द्वारा उधार को प्राप्त नहीं करता वर्णन उस बात पर विश्वास करने के द्वारा जो यीशु उनके उद्धारकर्ता ने उनके लिए की हैaaa A

कई लोगों के पास पार्क पार्क पाप यह मनुष्य जाति के कुछ लोग की और बताता है जो मसीह में विश्वास करते हैं जिससे आमतौर पर कहा जाता है सीमित कीमत यह काफी महंगी है यीशु हम सब के लिए मरा जिन्होंने मसीह में विश्वास किया यहां पर इस विषय में ढूंढ चर्चा के लिए समय नहीं परंतु याद रखें रोमियो 5:12-21 केवल वह जो नए आदम में

है जो कि यीशु है उसके द्वारा प्रतिनिधित्व किए जाएंगे इस विषय पर काफी पद है जो यीशु के इस दुनिया के लिए सबके लिए मारे जाने के विषय में बताते हैं परंतु कर ध्यान से देखें इन चीजों को तो यह बताती हैं कि कैसे लेखक इस दुनिया में फैले हुए गैर यहूदी लोगों के उद्धार के ऊपर जो डालती है जो कि अन्य जाती है

10 छुटकारे की बहुमूल्यता

पिछले अध्याय में हमने आध्यात्मिक वृद्धि या संबंधी रूस के महत्व को देखा क्रूस के महत्व को देखा जिस तरीके को परमेश्वर ने चुना हमें छुटकारा देने के लिए अपने लिए यह शुभ एक विश्वास योग्य पुत्र है जिसने अपने जीवन को दिया कि हमारे दोष को अपने ऊपर ले लें जिसने साथ-साथ नई भाषा की शुरुवात की कार्य को भी किया आरंभ परमेश्वर ने हमें बचाया तथा इसके सारा इशारे हर समय में किए हैं वचन के द्वारा विशिष्ट चिन्हों का इस्तेमाल करते हुए उसको उसकी ओर दिखाते हुए परमेश्वर की मनुष्य की सहायता की प्रति उत्सुकता को प्रकट करते हुए एक बड़ी कीमत की बजायA

बलिदानों को समझना

पुराने नियम के बलिदान इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि वह यीशु मसीह के महान संत बलिदान को दर्शाते हैं हालांकि वह विधियां जहां पर यह बलिदान चढ़ाए जाते थे वह भी महत्वपूर्ण है जो घटनाएं और बेटियों पर होती थी वह महत्वपूर्ण थी बिंदुओं की कड़ी के रुप में उस और दर्शाती हुई जहां पर यह शिव बलिदान किया जाएगा यह सब परमेश्वर की

बनावट को दिखाती हैं यह सब इस बात की पुष्टि करते हैं ऐसा वचन कहता है

हे इस्त्राएलियों, ये बातें सुनोकि यीशु नासरी एक मनुष्य था जिस का : परमेश्वर की ओर से होने का प्रमाण उन सामर्थ के कामों और आश्चर्य के कामों और चिन्हों से प्रगट है, जो परमेश्वर ने तुम्हारे बीच उसके द्वारा कर दिखलाए जिसे तुम आप ही जानते हो। उसी को, जब वह परमेश्वर की ठहराई हुई मनसा और होनहार के ज्ञान के अनुसार पकड़वाया गया, तो तुम ने अधमियोँ के हाथ से उसे क्रूस पर चढ़वा कर मार डाला। प्रेरितों के काम 2:22-23

इससे पहले किससे सिटी की शुरुआत हुई छुटकारे की योजना बनाई गई तथा प्रत्यक्ष रुप से क्रूस का विवरण भी यह पूर्व निर्धारित योजना थी तथा परमेश्वर की फूल विज्ञान द्वारा पूरी हुई

छुटकारे की बहुमूल्य था हमें बलिदानों केकड़ी से आगे ले जाती हैं तथा यह हमें उस महान बलिदान की ओर दिखाती हैं जिन चिन्हों का अध्ययन इस अध्याय में किया जाएगा वह परमेश्वर के महंगे छुटकारे की योजना की विशेष शक्तियों को प्रकट करेगा हम इस बात को जानेंगे कि कैसे पुराने नियम के बलिदानों की दो अलग-अलग बलिदान तथा उनके आसपास घटित होने वाली बातें उस महान बलिदान को दिखाती हैं तथा मसीह की वह अंतिम बलिदान

अब्राहम इसहाक को बलिदान चढ़ाता हैA

जब अब्राहम ने परमेश्वर की आज्ञा मानी तथा अपने उस पुत्र को उस पहाड़ पर ले गया की बलिदान चढ़ाएं उसका हृदय इसमें कोई शंका नहीं भावनाओं युद्धभूमि थी क्योंकि वह अपने इकलौते पुत्र को बलिदान

च<+k रहा था पुत्र जिसका वायदा किया गया था इसहाक उसकी lkFk परमेश्वर के वायदे का एकमात्र आशा का चिन्ह था

> इन बातों के पश्चात ऐसा हुआ कि परमेश्वर ने, इब्राहीम से यह कहकर उसकी परीक्षा की, कि हे इब्राहीमउसने कहा :, देख, मैं यहां हूं। उसने कहा, अपने पुत्र को अर्थात अपने एकलौते पुत्र इसहाक को, जिस से तू प्रेम रखता है, संग ले कर मोरिय्याह देश में चला जा, और वहां उसको एक पहाड़ के ऊपर जो मैं तुझे बताऊंगा होमबलि करके चढ़ा।सो इब्राहीम बिहान को तड़के उठा और अपने गदहे पर काठी कसकर अपने दो सेवक, और अपने पुत्र इसहाक को संग लिया, और होमबलि के लिये लकड़ी चीर ली; तब कूच करके उस स्थान की ओर चला, जिसकी चर्चा परमेश्वर ने उससे की थी। तीसरे दिन इब्राहीम ने आंखें उठा कर उस स्थान को दूर से देखा। और उसने अपने सेवकों से कहा गदहे के पास यहीं ठहरे रहो; यह लड़का और मैं वहां तक जा कर, और दण्डवत करके, फिर तुम्हारे पास लौट आऊंगा। सो इब्राहीम ने होमबलि की लकड़ी ले अपने पुत्र इसहाक पर लादी, और आग और छुरी को अपने हाथ में लिया; और वे दोनों एक साथ चल पड़े।
>
> उत्पत्ति 22:1-6

अबराम का ईष्ट पुत्र

इसहाक अबराम का एकमात्र सच्चा पुत्र था अब्राहम ने सkरा की दासी आगार के द्वारा इस्माइल को उत्पन्न किया परंतु वह अब्राहम और इसहाक के लिए वायदा किया गया पुत्र नहीं था इसहाक था अब्राहम

और सारा को जब तक वह 100 साल के नहीं हो गए इंतजार करना पड़ा इससे पहले की उन्हें वह वायदा किया हुआ पुत्र प्राप्त हो तथा 114 वर्ष की उम्र में परमेश्वर ने अब्राहम को आज्ञा दी कि उस वायदे किए हुए पुत्र को भी चढ़ाएं जो अब्राहम के जीवन के सपनों का स्रोत था

पहले परमेश्वर ने अब्राहम से अंगिur वंश का वायदा किया था स्वर्ग के तारों के समान इससे पहले कि शहर की रोशनी या चालू होती है तारे जो आकाश में भरे होते हैं उन का दृश्य अद्भुत होता है पिछले अध्याय में हमने उत्पत्ति 15: 6 को लिया था जहां पर अब्राहम ने परमेश्वर पर विश्वास किया परमेश्वर ने उनके विश्वास को चुनौती दी चुनौती दी यह पूछते हुए अब्राहम से कि वह अपने एकमात्र पुत्र को बलिदान करें जिसके ऊपर कई वंश की आशा टिकी हुई है

परमेश्वर उस परिस्थिति कठिनाई को जानता था जिसमें उसने अब्राहम को डाला था दूसरी आयत में प्रभु ईसा को एकमात्र पुत्र के रूप में कहता है तथा एक जिससे वह प्रेम करता है अब्राहम कि बूढ़े हृदय के लिए जहाज मलम था

तथा परमेश्वर के वायदे की पूर्णता की आशा प्रभु यहां पर इस मांग के कारण को नहीं बताता वह कैसे ना ही वह यह वायदा करता है कि वह कैसे अब्राहम के चोट खाए हुए हृदय को ठीक करेगा सारा के विषय में बताने की आवश्यकता नहीं या उसका विश्वास जो परमेश्वर की Y2 मैं भीगा हुआ है यह एक ऐसी आज्ञा थी जिसके साथ कोई व्याख्या नहीं तथा आज्ञाकारिता की सबसे कठिन परीक्षा है

हृदय के सारे भीतरी संघर्षों की बावजूद हालांकि यहां पर लिखा नहीं गया अबराम सुबह जल्दी अपने पुत्र के साथ निकला तथा 3 दिन

यात्रा करने के पश्चात अब्राहम ने उस स्थान को देखा जिसे परमेश्वर ने ठहराया था तथा वह अपने दूर सेवकों से अलग हुआ अपने एकमात्र पुत्र को लिए लकड़ी तथा अग्नि को साथ लेकर उन दोनों ने उस पहाड़ की चढ़ाई करी तथा अन्य तमाम लड़कों के समान इस बार शायद उन पत्थरों पर कूद रहा होगा लकड़ियों को साथ उठाने के बावजूद अपनी वह अतिरिक्त ऊर्जा के साथ अब्राहम हालांकि चिंताग्रस्त था भुज से दबा था परंतु उस लकड़ी के कारण नहीं परंतु अपने हाथ मैं आंख को देखकर तथा अपने पटाखे में छोरी को देखते हुए वह अपने पुत्र को खोने जा रहा था उसके पुत्र का बलिदान

उसके पुत्र का बलिदान

> इसहाक ने अपने पिता इब्राहीम से कहा, हे मेरे पिता; उसने कहा, हे मेरे पुत्र, क्या बात है उसने कहा, देख, आग और लकड़ी तो हैं; पर होमबलि के लिये भेड़ कहां है? इब्राहीम ने कहा, हे मेरे पुत्र, परमेश्वर होमबलि की भेड़ का उपाय आप ही करेगा। उत्पत्ति 22:7-8

इस कठिन चढ़ाई के किसी एक समय ऐसा हमने ध्यानपूर्वक यह देखा कि कुछ कमी है उनके पास बलिदान नहीं था और यह वक़्त उसकी है जो इस जहां की ओर से आया कि देखो अग्नि और लकड़ी तो है पर हम बलि के लिए मिलना कहां है इसमें कोई शंका नहीं यह बात पिता के हृदय पर एक पड़ेगी एक बड़े खिंचाव को लेकर आई होगी अब्राहम ने परमेश्वर की भारतीय को पकड़े हुए जहाज से कहा कि परमेश्वर उस मिनी को उपलब्ध करवाएगा अब विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय, और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है। क्योंकि इसी के विषय में

प्राचीनों की अच्छी गवाही दी गई “इब्रानियों 11:1-2 निश्चित रुप से हर एक कदम हमें उस भीतरी संघर्ष को उसके पुत्र के प्रति प्रेम तथा परमेश्वर के प्रति प्रेम के बीच में और तीव्र किया होगा अब्राहम वहां जा रहा था जहां परमेश्वर ने उसको जाने को कहा था और परमेश्वर की आज्ञा को पूरी करने के लिए पर क्या परमेश्वर उसके पुत्र के बदले में दूसरा बलिदान उपलब्ध कराएगा ?

अंत, में वह उस बलिदान के स्थान पर पहुंचते हैं अब्राहम वहां पर एक व्यक्ति को बनाता है दशहरा को बांध का है इसहाक को बांधता है तथा उसको विधि पर रखता है वह अपनी छोरी को लेता है सर जब वह अपने पुत्र पर उस चूड़ी को उठाता ही है परमेश्वर हस्तक्षेप करता है ऐसा उस मेरे को उपलब्ध कराता है जो झाड़ियों में फंसा है परमेश्वर उस सेंड का इस्तेमाल करता है अब्राहम से इस बात को मांगने के उद्देश्य को प्रगट करने के लिए A

उसने कहा, उस लड़के पर हाथ मत बढ़ा, और न उससे कुछ करक्योंकि : तू ने जो मुझ से अपने पुत्र, वरन अपने एकलौते पुत्र को भी, नहीं रख छोड़ा; इस से मैं अब जान गया कि तू परमेश्वर का भय मानता है। उत्पत्ति 22:12 इब्रानियों इसकी और पुष्टि करता है A

विश्वास ही से इब्राहीम ने, परखे जाने के समय में, इसहाक को बलिदान चढ़ाया, और जिस ने प्रतिज्ञाओं को सच माना था। और जिस से यह कहा गया था, कि इसहाक से तेरा वंश कहलाएगा; वह अपने एकलौते को चढ़ाने लगा। क्योंकि उस ने विचार किया, कि परमेश्वर सामर्थी है, कि मरे हुओं में से जिलाए, सो उन्हीं में से दृष्टान्त की रीति पर वह उसे फिर मिला।

इब्रानियों 11: 17- 19

इस घटना से जो परमेश्वर के द्वारा रची गई कई महत्वपूर्ण शिक्षाओं को इस से लिया जा सकता है A

अपने इकलौते पुत्र को बलिदान करने की बहुमूल्य था

अब्राहम का अपने एकमात्र सच्चे पुत्र का बलिदान चढ़ाना इस पूरी घटना का केंद्र बिंदु है अब्राहम और सारा के पूरे लंबे जीवन के दौरान वे स्वयं के साथ परमेश्वर प्रभु के फायदे के पूरे होने का इंतजार करते रहे उनके जीवन उसके वायदों पर आधारित है इसी कारण से वह कनान में थे इन शब्दों के पीछे बड़े कड़ी भावनाएं हैं यह एक महीने का बलिदान नहीं और यह थोड़ी सी संपत्ति का परंतु उसके पुत्र का था जिससे वह प्रेम करता था अब्राहम ने निर्णय लिया कि उस पुत्र को जिसके लिए उन्होंने इतने समय इंतजार किया वायदा किए हुए पुत्र को दी थी उसके लिए परमेश्वर को इस बात को सिद्ध करते हुए सबसे कीमती बलिदान शुरुआत में बलिदान का उद्देश्य बताया नहीं गया केवल उसकी कीमत तेरा पुत्र तेरा एकमात्र पुत्र उसके आज्ञाकारिता के द्वारा उसने परमेश्वर के प्रति संपूर्ण समर्पण को दिखाया A "उसने कहा, उस लड़के पर हाथ मत बढ़ा, और न उससे कुछ करक्योंकि तू ने जो मुझ से अपने पुत्र :, वरन अपने एकलौते पुत्र को भी, नहीं रख छोड़ा; इस से मैं अब जान गया कि तू परमेश्वर का भय मानता है। उत्पत्ति 22:12

स्थानापन्न बलिदान

किस बात ने इस आज्ञाकारिता को अब्राहम में प्रेरित किया हम यह सोच सकते हैं यह इसलिए क्योंकि उसने परमेश्वर के बायतु पर भरोसा रखना सीख लिया था कई बार उसने अपने जीवन में परमेश्वर की आशीषों को

देखा बलिदान की इस कहानी में परमेश्वर एक सामर्थी स्थान पर के चित्र को पर्दे के पीछे रख रहा था इसके बजाय कि अब्राहम को अनुमति दी कि वह इस जहां को बलिदान कर कर चढ़ाए परमेश्वर उन झाड़ियों में एक स्थान पर स्थान पर बलिदान को लेकर आया ना केवल यह स्थान पर की अनुमति थी परंतु यह बलिदान प्रभु के द्वारा उपलब्ध कराया गया अब्राहम ने उस स्थान को यहां तक की एक विशेष नाम दिया उत्पत्ति 22:14 यहां पर उसे ब्राह्मी शब्द को हम पाते हैं जय हो वह मेरे यहोवा यह A

अंत में परमेश्वर ध्यान को अब्राहम की उसे झुकता हो कि परमेश्वर ने जो कहा है उस को प्राथमिकता दें लगाता है आज्ञाकारिता उसकी सारी आशाओं से महत्वपूर्ण थी उसके सारे सपने तथा उसके अपने पुत्र के प्रति प्रेम से बढ़कर थी अब्राहम उस मनुष्य के रूप में जो परमेश्वर पर भरोसा रखता है विजई हुआ विश्वास उसकी ताकत थी तथा जिस कारण से उसे विश्वास का पिता कहा जाता हैA रोमियो 4:16 -17

उसने अपने उस सुरक्षित घर को उस यात्रा के लिए छोड़ा उस विस्मयकारी आशा के लिए उसने कभी भी इन बातों की पूर्णता को नहीं पाया परंतु वह इच्छुक था कि इस आशा के लिए भेजिए यहां तक की उस अपने पुत्र की मृत्यु की बलिदान की घटना में भी बड़ी खोजबीन थी इस बात पर परमेश्वर अपने वायदों को कैसे पूरा कर सकता है उसके लिए जिससे उसने वादा किया है इब्रानियों 11 कहता है कि उसके विश्वास ने उसे समर्थ किया कि परमेश्वर इस बात पर विश्वास करने के लिए कि परमेश्वर यदि आवश्यक हो तो मुर्दों में से भी उसे जिला सकता

है वह इस जहां को मारने के लिए तैयार था उसकी विश्वास के योग्य आज्ञाकारिता के कारण एक महान आशीष है आएंगे और पृथ्वी की सारी जातियां अपने को तेरे वंश के कारण धन्य मानेंगीक्योंकि तू ने : मेरी बात मानी है। उत्पत्ति 22:18 आज्ञाकारिता हमेशा और अधिक परमेश्वर के अनुग्रह को लेकर आता है इस प्रकरण में अनुग्रह बहुतायत से बहकर आया एक घटना बड़ा खजाना बन जाता है क्योंकि जिस रीति से वह मसीह की स्थान पर मृत्यु को पहले से बताता है

इसहाक को बलिदान के रूप में चढ़ाने की यह घटना अपने आप में अवर्णनीय है परंतु परमेश्वर का वायदा अब्राहम से कि वह इस पूरी पृथ्वी पर उसे कई वंशज देगा इस कारण से परमेश्वर की भविष्य में पूर्ण होने वाले उस के वायदे के प्रति अपेक्षाओं को बढ़ाता है इस कहानी की वास्तविकता किसी भी माता को भयभीत कर देगी परंतु यह हमारा जीवन है जो कि आप की संस्था तथा मृत्यु के द्वारा अपंग कर दिया गया है आपके बिना किसी भी बलिदान मृत्यु या छुटकारे की आवश्यकता नहीं है परंतु पाप के कारण तथा परमेश्वर की असीमअसीम सहनशीलता के कारण हम विशेष मौकों को पा सकते हैं कि परमेश्वर के प्रति प्रेम को अपनी आज्ञाकारिता के द्वारा दर्शाए जय परीक्षण सुबह से समस्याओं से और अधिक कठिन ठहरते हैं तथा अपने आप को अलग करते हैं कि और अधिक यादगार रहे परमेश्वर हमारे हृदयों को देखना चाहता है उत्पत्ति 22:1 जब वह हमारे हृदय को जानता है तथा हमें मौका देता है कि हम अपनी परमेश्वर के प्रति निष्ठा को प्रकट करें अब्राहम का अपने एकमात्र को पुत्र को बलिदान चढ़ाना केवल एक झलकती हजारों साल पश्चात उसी स्थान पर एक और बलिदान होगा A

दाऊद का मध्यस्ता की वेदी

दाऊद विश्वास का एक बड़ा नायक था फिलिस्तीनियों के ऊपर उसकी विजय तथा ग्वालियत के साथ उसकी युद्ध ने उसे इस बात से लैस किया कि वह इजरायल का सबसे पसंदीदा सेनापति बने हालांकि उसके अनावश्यक असफलताएं थी

दो प्रमुख और आज्ञाकारिता के कृत्य और दोनों के गंभीर परिणामों ने उसके जीवन को कलंकित किया osrlsok के साथ व्यभिचार तथा उसके पति रिया की हत्या के साथ एक अनन्या कारिता के कठोर घटना को बताता है हर एक मुख्य आज्ञाकारिता क्या करते कई कृतियों की कढ़ी के परिणाम स्वरुप आया जहां वहां और कठोर होता चला गया जनगणना के लिए मनुष्यों की गिनती दाऊद का परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता का दूसरा कृत्य था बात के की मनुष्य की गिनती काका काम गलत था काफी वादविवाद है कि वह गलत था क्योंकि परमेश्वर ने स्पष्ट रूप से उसको कहा था कि वह ऐसा नहीं कर सकता इसका कारण कुछ हृदय संबंधी मसला होगा

इस जनगणना के साथ धन जुड़ा हुआ था और जो कारण है जिससे हमें इस आज्ञाकारिता के बड़े कृत्य से फर्क नहीं पड़ता क्योंकि हम जानते हैं कि परमेश्वर उस सेनापति से पूर्ण रूप से सहमत था जिसने उसे मनुष्य की गणना करने से रोकने का प्रयास कियाA

क्या मैं आपकी परीक्षा ले सकता है

1 इतिहास 21 में जनगणना का यह विवरण 2 शमूएल 24 की घटना के साथ समान है परंतु यह शैतान की गाय के विषय में छोटा-मोटा बताता है और शैतान ने इस्राएल के विरुद्ध उठ कर, दाऊद को

उकसाया कि इस्राएलियों की गिनती ले। 1 इतिहास 21:1 " हम शुरुआत से जानते हैं विदाउट कुछ अच्छा करने नहीं जा रहा तथा कुछ पाठकों के लिए इस बात को समझना कठिन है दर्ज की दृश्यता को समझना कठिन है जो परमेश्वर के इस प्रकार से क्रोध को उठा सकता है परंतु दाऊद एक राष्ट्र का अगुआ था परिणाम जोबट शिवा के प्रखंड में हुआ एक अगुआ के लिए हमेशा बहुत गंभीर होता है पूरा अध्याय दाऊद की आज्ञाकारी था को प्रगट करने के लिए समर्पित है परंतु हम उन विशेष भागों को देखेंगे जो उन बलिदान को बताती है परमेश्वर की क्रोध को शांत करने के विषय में और यह बात परमेश्वर को बुरी लगी, इसलिये उसने इस्राएल को मारा। और दाऊद ने परमेश्वर से कहा, यह काम जो मैं ने किया, वह महापाप है। परन्तु अब अपने दास का अधर्म दूर कर; मुझ से तो बड़ी मूर्खता हुई है। तब यहोवा ने दाऊद के दर्शी गाद से कहा, जा कर दाऊद से कह, कि यहोवा यों कहता है, कि मैं तुझ को तीन विपत्तियां दिखाता हूँ, उन में से एक को चुन ले, कि मैं उसे तुझ पर डालूं। तब गाद ने दाऊद के पास जा कर उस से कहा, यहोवा यों कहता है, कि जिस को तू चाहे उसे चुन लेया तो तीन वर्ष का काल पड़े:; वा तीन महीने तक तेरे विरोधी तुझे नाश करते रहें, और तेरे शत्रुओं की तलवार तुझ पर चलती रहे; वा तीन दिन तक यहोवा की तलवार चले, अर्थात मरी देश में फैले और यहोवा का दूत इस्राएली देश में चारों ओर विनाश करता रहे। अब सोच, कि मैं अपने भेजने वाले को क्या उत्तर दूं। दाऊद ने गाद से कहा, मैं बड़े संकट में पड़ा हूँ; मैं यहोवा के हाथ में पड़ूं, क्योंकि उसकी दया बहुत बड़ी है; परन्तु मनुष्य के हाथ में मुझे पड़ना न पड़े। तब यहोवा ने इस्राएल में मरी फैलाई, और इस्राएल में सत्तर हजार पुरुष मर मिटे। 1 इतिहास 21: 7 -14

Ikjes’oj dk vuknj

अप्रसन्नता शैतान ने दाऊद की दुष्टता को उकसाया बिल्कुल वैसे जैसे वह किसी भी परीक्षा में करता है परमेश्वर दाऊद के सिद्धांत के प्रति गलत प्रत्युत्तर से ऑपरेशन होता है परिणाम स्वरुप यह हुआ कि प्रभु ने दाऊद को दंडित किया तथा पूरे इस्त्रायल को भी उन तीन चुनावों से दाऊद ने भविष्यवक्ता गार्ड यह कहा कि वह परमेश्वर के उस चुनाव को लेता है कि वह 3 दिन तक इजरायल में महामारी के द्वारा प्रहार करें इस प्रकरण में उसने बस बताया कि शायद वह परमेश्वर की दया को अनुभव करें जोकि हुआ इस महामारी का इस्त्राइल पर एक बड़ा प्रभाव पड़ा 70000 पुरुष मारे गए दूसरा दृश्य इस बात को दिखाता है A

जब परमेश्वर का दूr यरूशलेम में गया कि वहां के पुरुषों पर प्रहार करें वहां क्या हुआ फिर परमेश्वर ने एक दूत यरूशलेम को भी उसे नाश करने को भेजा; और वह नाश करने ही पर था, कि यहोवा दुख देने से: खेदित हुआ, और नाश करने वाले दूत से कहा, बस कर; अब अपना हाथ खींच ले। और यहोवा का दूत यबूसी ओर्नान के खलिहान के पास खड़ा था। और दाऊद ने आंखें उठा कर देखा, कि यहोवा का दूत हाथ में खींची हुई और यरूशलेम के ऊपर बढ़ाई हुई एक तलवार लिये हुए आकाश के बीच खड़ा है, तब दाऊद और पुरनिये टाट पहिने हुए मुंह के बल गिरे। 1 इतिहास 21: 15-16

यह सामर्थ्य कहानी यह एक सामर्थ्य कहानी है जिसमें कई रोचक दृश्य है दूr द्वारा एक बड़े विनाश के विषय में तथा यरूशलेम की प्रति उसके भयावह प्रवेश के विषय में राजस्थानी तथा दाऊद का वह दर्शन जिसमें स्वर्गदूत अपनी तलवार के साथ प्रहार करने के लिए तैयार

हैं इन सब के पीछे हालांकि एक छुपी हुई बारीकी है जो हमें इस बात के लिए विवश करता है कि इस घटना को छुटकारे की घटनाओं का एक मुख्य घटना माने यह विस्तृत विवरण कहता है

फिर परमेश्वर ने एक दूत यरूशलेम को भी उसे नाश करने को भेजा; और वह नाश करने ही पर था, कि यहोवा दुख देने से खेदित हुआ:, और नाश करने वाले दूत से कहा, बस कर; अब अपना हाथ खींच ले। और यहोवा का दूत यबूसी ओर्नान के खलिहान के पास खड़ा था। 1 इतिहास 21:15

छोटी बारीकियां

परमेश्वर का वचन पुणे रणनीति पूर्वक हमारे ध्यान को निर्देशित कर रहा है जैसे प्रभु ने यह दिखाया कि कहां पर अब्राहम को इसहाक को बलिदान रूप चढ़ाना है तो यहां पर वहां और नान की ओर इशारा करता है जो जब ओसियां की भूमि थी प्रभु ने दाऊद को यहां तक कि निर्देश दिए थे कि उस स्थान पर एक विधि को बनाएं तब यहोवा के दूत ने गाद को दाऊद से यह कहने की आज्ञा दी, कि दाऊद चढ़ कर यबूसी ओर्नान के खलिहान में यहोवा की एक वेदी बनाए। 1 इतिहास 21:18 वहां क्यों क्योंकि परमेश्वर का दूध वहां प्रकट हुआ था क्योंकि परमेश्वर ने उससे कहा था कि वहां पर उसको बनाए हालांकि उस समय यह स्पष्ट नहीं था परंतु उसका कारण हम पीछे मुड़कर पा सकते हैं दूसरा उसी स्थान पर जिस पर अब्राहम ने अपने बेटे को बलिदान रूप अर्पण किया उसी स्थान पर परमेश्वर ने यरूशलेम को उस महामारी से बचाया तथा अपने न्याय को रोका यह वही स्थान था मोरार पर्वत मौर्य पर्वत जहां पर प्रभु का मंदिर बनना था मोरया का मतलब यह हुआ द्वारा चुना गयाA

संपूर्ण चित्र

जैसे इस घटना के टुकड़ों को हम आपस में जोड़ते हैं क्योंकि यह क्रम में नहीं बताए गए हम यह पाते हैं कि दाऊद आखिरकार टूट गया तथा अपने पाप का अंगीकार किया दोष का शिकार किया तथा प्रभु को पुकारा तब प्रभु का दूत प्रगट हुआ और उसने वध करना बंद कर दियाA

फिर परमेश्वर ने एक दूत यरूशलेम को भी उसे नाश करने को भेजा; और वह नाश करने ही पर था, कि यहोवा दुख देने से खेदित हुआ:, और नाश करने वाले दूत से कहा, बस कर; अब अपना हाथ खींच ले। और यहोवा का दूत यबूसी ओर्नान के खलिहान के पास खड़ा था।और दाऊद ने आंखें उठा कर देखा, कि यहोवा का दूत हाथ में खींची हुई और यरूशलेम के ऊपर बढ़ाई हुई एक तलवार लिये हुए आकाश के बीच खड़ा है, तब दाऊद और पुरनिये टाट पहिने हुए मुंह के बल गिरे। तब दाऊद ने परमेश्वर से कहा, जिसने प्रजा की गिनती लेने की आज्ञा दी थी, वह क्या मैं नहीं हूँ? हां, जिसने पाप किया और बहुत बुराई की है, वह तो मैं ही हूँ। परन्तु इन भेड़बक-रियों ने क्या किया है? इसलिये हे मेरे परमेश्वर यहोवातेरा हाथ मेरे पिता के घराने के विरुद्ध हो !, परन्तु तेरी प्रजा के विरुद्ध न हो, कि वे मारे जाएं। 1 इतिहास 21:15-17

तब दाऊद ने वहां यहोवा की एक वेदी बनाईं और होमबलि और मेलबलि चढ़ा कर यहोवा से प्रार्थना की, और उसने होमबलि की वेदी पर स्वर्ग से आग गिरा कर उसकी सुन ली। तब यहोवा ने दूत को आज्ञा दी; और उसने अपनी तलवार फिर म्यान में कर ली।यह देख कर कि यहोवा ने यबूसी ओर्नान के खलिहान में मेरी सुन ली है, दाऊद ने उसी समय वहां बलिदान किया। 1 इतिहास 21:2628

यह पद स्पष्ट रूप से बताता है परमेश्वर की उस खुद को जो उसके लोगों के जीवन पर प्रहार कर रहा है परमेश्वर उनसे जितना प्रेम रखता था उसका अन्याय एक तलवार के रूप में उन पर गया तथा उसका क्रोध दशहरा इस्त्राइलियों के मारे जाने से शांत हुआ यह परमेश्वर के नियम की एक अद्भुत चित्र है जो हम पर आने वाला है हमारे बापू ने हमें खोज लिया परमेश्वर की धार्मिकतापरमेश्वर की धार्मिकता के कारण से

न्याय को ढूंढता है केवल जब दाऊद ने अपने आप रखो दीन किया यदि को बनाया भेंट को चढ़ाया राजा परमेश्वर प्रभु को पुकारा तब वह तलवार थमी 1 इतिहास 21:26 - *27*तब दाऊद ने वहां यहोवा की एक वेदी बनाई और होमबलि और मेलबलि चढ़ा कर यहोवा से प्रार्थना की, और उसने होमबलि की वेदी पर स्वर्ग से आग गिरा कर उसकी सुन ली। तब यहोवा ने दूत को आज्ञा दी; और उसने अपनी तलवार फिर म्यान में कर ली। अन्याय तभी रुक सकता है जब हम मसीह के बलिदान के द्वारा पापों की शमा को ढूंढें न्याय जैसा की हमने देखा पिछले अध्याय में वह है जिसके हम सब योग्य हैं क्योंकि हमने सब हम सब ने पाप किया दोनों आदम में तथा साथ ही साथ व्यक्तिगत रूप से भी सौभाग्य से दाऊद ने प्रभु के निर्देशों का पालन किया सांस जरूर सलेम के सारे लोग बच गए यह बलिदान इसीलिए था कि भयानक विनाश को रोका जा सकेaA मंदिर वह स्थान बन गया जिस स्थान पर परमेश्वर अपने लोगों को न्याय से बचाता था न्याय केशव योग्य थे और वह इस योग्य थे कि नाश किए जाए हालांकि परमेश्वर ने उन पर दया दिखाई और एक स्वर्ग दूr को प्रकट किया तथा दाऊद से कहा कि वह एक बेदी को बनाए तथा बलिदान को चढ़ाएं हमारा घबराना हमें नहीं

बचा सकता केवल एक टूटी हुई आत्मा तथा पापों की एक ओढनी हमें बचा सकते हैं A

मंदिर जो बाद में इस स्थान पर बनाया गया वह अंगीकार करने का स्थान था इसके बजाय की एक धार्मिक घमंड का स्थान मंदिर इस बात का समान दिलाता उस न्याय के विषय में जिसके हम योग्य हैं इसका नहीं कि हम कितने महान हैं यह छुटकारे का मुख्य विषय है परंतु कई बार इसे धर्म के घमंडी संदेश के द्वारा असमंजसता में लाया जाता है

श्रद्धा

यह भाग एक और मूल्यवान झलक को दिखाता है कि परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए किस चीज की आवश्यकता है हमने दाउद के आज्ञाकारिता को उस विधि के बनाने में देखा तथा उस पर बलिदान करने के द्वारा परंतु हमने उस आवश्यक श्रद्धा के विषय में नहीं देखा और उस स्थान को परमेश्वर प्रभु के लिए देने के लिए पेशकश की 1 इतिहास 21:23 ओमान ने स्वेच्छा से अपने पैरों लकड़ी तथा अनाज को उस बलिदान के लिए दिया मैं सब कुछ दूंगा लेकिन दाऊद ने मना कर दिया दाऊद ने इसकी बजाय कहा “ओर्नान ने दाऊद से कहा, इसे ले ले, और मेरे प्रभु राजा को जो कुछ भाए वह वही करे; सुन, मैं तुझे होमबलि के लिये बैल और ईधन के लिये दांवने के हथियार और अन्नबलि के लिये गेहूं, यह सब मैं देता हूँ। 1 इतिहास 21:23

दाऊद अपने पाप के विषय में जानता था वास्तविकता में इससे फर्क नहीं पड़ता कि वह किस चीज का बलिदान चढ़ाता है क्योंकि वह उसके पापों को क्षमा नहीं कर सकता केवल प्रभु की दया के कारण कुछ समय तक उसके बाप को अनदेखा किया गया तथा वहां पर रहने वाली

लोगों की पीढ़ी को बक्स दिया उसकी श्रद्धा आवश्यक थी हालांकि यह दाऊद के टूटे फिर से मन तथा विश्वास का प्रतिबिंब है

अब्राहम के बलिदान से हमने सीखा कि कैसे दूसरे के स्थान पर वह बलिदान दिया जाता है तथा आज्ञाकारिता में कठिनाई के विषय में खासतौर से उस चीज का बलिदान चढ़ाने में जिस से हम प्रेम रखते हैं दाऊद के प्रखंड में हालांकि हमें इस बात का संबंध दिलाया जाता है हमारी पापों के विषय में तथा परमेश्वर की बोतल लटकती भी तलवार हमारे इशारों पर के विषय में मुस्लिम बज गया यरूशलेम परमेश्वर के प्रकोप से बच गया परंतु इस संसार के विषय में क्या वह अन्याय मंडराता है परमेश्वर का प्रकोप उन पर बना रहता है यह नतीजे जो पुत्र पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है; परन्तु जो पुत्र की नहीं मानता, वह जीवन को नहीं देखेगा, परन्तु परमेश्वर का क्रोध उस पर रहता है।। यूहन्ना3:36

क्योंकि यदि तुम शरीर के अनुसार दिन काटोगे, तो मरोगे, यदि आत्मा से देह की क्रीयाओं को मारोगे, तो जीवित रहोगे।   रोमियो 8:13   दाऊद का बलिदान इस संसार को नहीं बचा सकता परंतु वह उस स्थान की ओर इशारा करते हैं जहां परमेश्वर एक बलिदान को उस स्थान पर भेजेगा इस संसार में जो मसीह पर उद्धार के लिए विश्वास करते हैं

यीशु मेमने के रूप में बलिदान किया गया

जब दो बिंदु होती है तो एक रेखा को खींचा जा सकता है दो घटनाएं जिसके विषय में ऊपर बताया गया बुलाया पर्वत पर हुई मोरया पर्वत पर हूं यह दोनों घटनाएं इसका वर्णन किया गया है मोरिया पर्वत पर हुई जैसे-जैसे हमें आगे ले जाता है हमारे पास एक दिशा को दिखाने वाला इशारा है उस क्रूस की ओर जहां पर यीशु एक मसीहा के रूप में

बलिदान के रूप में मारा जाएगा यीशु उस मोरया पर्वत पर तीसरा मुख्य बलिदान है

सुसमाचार के तीनों लेखक जुझारूसलेम को अच्छे से जानते थे उत्थान के बारे में बताते हैं जहां पर यह सब उस क्रूस पर लटकाया जाएगा (eRrh27%33 मरकुस 15:22 तथा ;gqUuk 19:17) xksyxrk कथा उस मोरिया पर्वत पर स्थित था तथा यरूशलेम का भाग था वास्तविकता में कलवरी शब्द की शुरुआत जो उस ग्रुप के लिए एक शब्द था xksyxrk से निकलता है xksyxrk का मतलब है खोपड़ी चलाती ysfVu भाषा में कyवरिया में अनुवादित हुआ है

क्यों कई लोग ;h'kq की इच्छुक था कि वह पापियों के लिए मारा जाए प्रभावित हुए यह केवल मारे जाने की इच्छा नहीं जिसने उसको इतना सामर्थ्य बना दिया उसे झुकता ने ;h'kq को पुस्तक लेकर आए परंतु मृत्यु उस प्रेम केवल उस प्रेम के चिन्ह से और अधिक थी वह ग्रुप परमेश्वर के उस प्रकोप को जो मनुष्य जाति पर आनी थी उसके लिए खड़ा हुआ आइए हम पीछे देखे मोरिया पर्वत पर घटित ऑन दो घटनाओं पर अपनी बात अपने आप को इस बात का स्मरण दिलाने के लिए कि उसको पर जो हुआ जब ;h'kq अपने लोगों की ikiksa के लिए मारा गया

उसकी महानता के विषय में परमेश्वर के बलिदान की हुमूबल्य था तथा प्रभावशीलता यूहन्ना 3: 16- 17

> क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। परमेश्वर ने अपने पुत्र को

जगत में इसलिये नहीं भेजा, कि जगत पर दंड की आज्ञा दे परन्तु इसलिये कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए। उस पर विश्वास करता है, उस पर दंड की आज्ञा नहीं होती, परन्तु जो उस पर विश्वास नहीं करता, वह दोषी ठहर चुका; इसलिये कि उस ने परमेश्वर के एकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया। यूहन्ना 3: 16- 18

जैसे इजहार अब्राहम की आशा का शोक था परमेश्वर का बहुमूल्य पुत्र इस संसार की आशा था अब्राहम को आज्ञा दी गई कि अपने बेटे को वह बलिदान के रूप में चढ़ा है उसने ऐसा किया परमेश्वर पिता ने भी मुफ्त में अपने पुत्र को बलिदान चढ़ाया इसमें कोई शंका नहीं की प्रभु अब्राहम के उस पृथ्वी पर संघर्ष को कमाल करता है कि हमें परमेश्वर के इकलौते पुत्र को देने के संघर्ष के साथ तुलना कर सकें यीशु का बपतिस्मा परमेश्वर पिता ने स्वर्ग से पुकारा किए मेरा प्रिय पुत्र है जिससे मैं अति प्रसन्न हूं "और पवित्र आत्मा शारीरिक रूप में कबूतर की नाईं उस पर उतरा, और यह आकाशवाणी हुई, कि तू मेरा प्रिय पुत्र है, मैं तुझ से प्रसन्न हूं।। लुक्का 3:22

इस प्रकरण में हम आश्चर्य करते हैं कि कैसे परमेश्वर धर्मी को अधर्मी के लिए दे सकता है जिससे वह प्रसन्नता पसंद होता है उसे दोषी ठहराया हुए पापियों के जगह पर यहqUन 3:16 कहता है कि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया क्योंकि परमेश्वर ने प्रेम किया इस कार्य से उसने अपने इकलौते पुत्र को दे दियाA

चीनी भाषा उस धार्मिकता के विषय में जिसे हमने मसीह पर विश्वास करने के द्वारा प्राप्त किया है सुंदरता से बताती है इस अक्षर का

ऊपरी भाग मेमोरी को बताता है और निचला भाग मुझको मैं को बताता है और एक साथ पूरा अक्षर का अर्थ है धार्मिकता इशू एक महीने के रूप में उस क्रूस पर चढ़ाया गया हमारे लिए मारा गया और हमें अपने लहू से धडकता है तथा निर्दोष करके प्रस्तुत करता है जोकि धर्मी ठहराया जाना है

प्रभु के सामने उसकी ओर देखने के द्वारा हम नाराज़ नहीं होंगे परंतु हमें अनंत जीवन प्राप्त होगा यह इसलिए क्योंकि यीशु की मृत्यु हमारे स्थान पर थी उसका बलिदान वह हमारे स्थान पर मारा गया परमेश्वर ने अपने बहुमूल्य पुत्र को हमारे स्थान पर उस क्रूस पर दिया क्योंकि उसने चुना कि अपने पुत्र की मृत्यु की इस क्रिया को अनुमति दें एक स्थित बलिदान के रूप में जो हमारे स्थान पर था ताकि हम बचाए जा सके और उसके साथ हमारा मेल मिलापमेल मिलाप हो यह हमें स्मरण दिलाता है कि परमेश्वर कितना हमें चाहता है कि वह इस बात के लिए तैयार था इतना सब कुछ देने के लिए

इकलौता पुत्र

यह हमारे लिए समझना कठिन है कि परमेश्वर के पास एक पुत्र है और यह समझना आसान है कि केवल 1 पुत्र यह बड़ा मुश्किल है समझना कि परमेश्वर के पास एक पुत्र भी है क्योंकि वह एक मनुष्य नहीं इसी कारण से यह शब्द उत्पन्न कमाल किया गया परमेश्वर के पुत्र का स्पष्ट विवरण पहला स्पष्ट विवरण हम भजन संहिता हमें देख सकते हैं "आओ, हम उनके बन्धन तोड़ डालें, और उनकी रस्सियों अपने ऊपर से उतार फेंके।। भजन संहिता 2:7

यूनानी में यह शब्द जन्म देना तथा उत्पन्न करना अलग-अलग है उत्पन्न करना पुत्र प्राप्ति को बताता है इसके बजाय एक शारीरिक संबंध जोकि एक शारीरिक जन्म को बताता है परमेश्वर एक पुत्र का पिता किसी माता के द्वारा नहीं बना जमुना हमारी सहायता करता है इस बात को समझाने के लिए हालांकि यह एक रहस्य बना रहता है और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हम ने उस की ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा। यूहन्ना 1:14,

परमेश्वर को किसी ने कभी नहीं देखा, एकलौता पुत्र जो पिता की गोद में हैं, उसी ने उसे प्रगट किया॥ यूहन्ना 1:18

यूहन्ना 1:14 में यीशु जो वचन है उसके लिए कहा जाता है कि वह पिता से उत्पन्न हुआ जो उसे पुत्र बनाता है वह यीशु की मानवता को बताता है हालांकि 818 पर इस बार उसकी व्यथा पर जोर देता है डाय बता देंगे उसके ईश्वर पर छोड़ देता है परमेश्वर का एकलौता पुत्र पश्चिम से हम इसको पूर्ण किसी से नहीं समझ सकते हैं परंतु यदि इसे हमें समझना भी है तो उसे हमें पिता और पुत्र के संबंध के रूप में समझना है जिसमें संबंधों के अलग-अलग पहलू है जैसे कि एक स्वभाव का होना एक पिता का ख्याल रखना एक पुत्र की निष्ठा तथा समर्पणA

जब यीशु इस मानव संसार में अपने कदम को रखता है इसका अर्थ यह नहीं कि आप बहुत दयनीय नहीं ईश्वर नहीं इसके बजाय उसने अपनी इंतजार पिता को अभियंता ईश्वरत्व को छुपा लिया कृपया फिलिप्पियों 23: 11 धर्म ज्ञान की किताबें यह कहती हैं कि वह अनंत काल से उत्पन्न हुआ जिसका जो यह सुझाव देता है यह संबंध हमेशा से था उसके इस पृथ्वी पर समय के समय पर भी कुछ दिखा टिक्का इस पद को ऐसे समझते हैं फिर परमेश्वर ने कहा, हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं; और वे समुद्र की मछलियों, और आकाश के पक्षियों, और घरेलू पशुओं, और सारी पृथ्वी पर, और सब रेंगने वाले जन्तुओं पर जो पृथ्वी पर रेंगते हैं, अधिकार रखें। उत्पत्ति 1:26 जो छुपे रूप से ईश्वरत्व में उन व्यक्तियों के बीच में बातचीत को दिखाता है तथा उनका एक उद्देश्य की मनुष्य को बनाएं एकता में अनेकता है पिता पुत्र पवित्र प्रिय प्रिय व एकता तीन एकता में दो तिहाई है तथा परमेश्वर का आत्मा तीसरा हालांकि यह शब्द त्रियक कई अनुवादों में इस्तेमाल नहीं किया गया यह विचार और यह शिक्षा कुछ सीमा तक उपस्थित है इसलिये तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्रआत्मा के नाम से बपतिस्मा दो। मत्ती28:19

कई बेटे

उसके एकलौते पुत्र के दुख उठाने के विषय के कारण को अपने को स्मरण दिलाना अच्छा है प्रभु ने अपने एक मात्र पुत्र को चढ़ा दिया परंतु उसने कई पुत्रों की भाषा रखी और तुम जो पुत्र हो, इसलिये परमेश्वर ने अपने पुत्र के आत्मा को, जो हे अब्बा, हे पिता कह कर पुकारता है, हमारे हृदय में भेजा है। ग़लतियों 4:6 हम उसके पुत्र और पुत्रियां बन गए मसीह की उस बलिदान के द्वारा

यह मूल सृष्टि की योजना है कि कई लोग होंगे जो परमेश्वर ने जिसमें उन्हें बनाया है उसमें जिए तथा उसके स्वरूप को दर्शाएं छुटकारे की योजना में कई और लोग परमेश्वर के परिवार में नेपालक पुत्र के रुप में लाए जाएंगे यह ना एक बार आ उसका आत्मा हमें रहता है तथा हमें हृदय और वह विश्वास देता है कि हम पिता पर आश्रित हो सके परमेश्वर ना केवल हमारा सृष्टि करता है परंतु हमारा उद्धारकर्ता तथा पिता है यह अद्भुत है आखिर क्यों सर्वशक्तिमान परमेश्वर अपने आप को गरीब और पापी मनुष्य को इस पृथ्वी पर उनके साथ जुड़ेगा

मौर्या पर्वत के दरवाजे के बाहर

मसीह की उस क्रूस पर मृत्यु की प्रभावशाली नेता को इब्रानियों के इस भाग में सारांश किया गया है इब्रानियों:

हमारी एक ऐसी वेदी है, जिस पर से खाने का अधिकार उन लोगों को नहीं, जो तम्बू की सेवा करते हैं। क्योंकि जिन पशुओं का लोहू महायाजक पापबलि के लिये पवित्र स्थान में ले जाता है-, उन की देह छावनी के बाहर जलाई जाती है। इसी कारण, यीशु ने भी लोगों को अपने ही लोहू के द्वारा पवित्र करने के लिये फाटक के बाहर दुख उठाया। सो आओ उस की निन्दा अपने ऊपर लिए हुए छावनी के बाहर उसके पास निकल चलें। क्योंकि यहां हमारा कोई स्थिर रहने वाला नगर नहीं, वरन हम एक आने वाले नगर की खोज में हैं। इसलिये हम उसके द्वारा स्तुति रूपी बलिदान, अर्थात उन होठों का फल जो उसके नाम का अंगीकार करते हैं, परमेश्वर के लिये सर्वदा चढ़ाया करें। पर भलाई करना, और उदारता न भूलो; क्योंकि परमेश्वर ऐसे बलिदानों से प्रसन्न होता है। इब्रानियों 13:10-16

यीशु यरूश्लेम के बाहर मौर्य पर्वत पर मरा वह पहाड़ों का वह समूह था जिस पर यरुशलेम बना था लेवी व्यवस्था के नियमों के अनुसार जहां पर पावली को जलाया जाना था लेवी व्यवस्था 4:12,21 यीशु का बलिदान यरूश्लेम की दीवारों के बाहर होना था यह वह दीवारें नहीं जहां पर नहीं दीवारें हैं आज खड़ी याजक इस बात में नहीं सोच रहे हैं जब वह इस बात की मांग कर रहे हैं उसकी मृत्यु की परंतु यह सब परमेश्वर की उस अनंत योजना का भाग है इसका संदर्भ छुपे रूप से हमें पुराने नियम के अंत का स्मरण दिलाता है तथा यीशु के द्वारा उस क्रूस पर नए रुप में नई वाचा के बनते हुए की ओर इशारा करता है

हमारी आशा यहूदी मत की जागृति पर नहीं है या उस मंदिर की पुनर्निर्माण में क्योंकि मसीह इन सब से कहीं ऊपर है जानवरों का बलिदान तथा ऐसे कई हैं इसको पूरा नहीं कर सकते पढ़िए गिनती 2829 मनुष्य जाति पर परमेश्वर का न्याय केवल परमेश्वर के एकमात्र पुत्र के द्वारा ही डाला जा सकता है यदि हम उसका इनकार करते हैं हम क्षमा प्राप्त करने का तथा परमेश्वर से फिर से एक होने की आशा को ठुकरा देते हैं

यीशु के घोषित होने के स्थान के विषय में दो सजा है दोनों मौर्या पर्वत पर हैं तथा जहां पर यीशु के सात सवाल जवाब हुए थे आधा मील की दूरी पर है चर्च ऑफ होली सफलता सफलता गोलगप्पा कि उस चोटी के साथ जिसे मसीह की उस कब्र है आप विकिपीडिया के चित्र को देखें या गार्डन कैलोरी उस बगीचे के कपड़े की कब्र यीशु का बलिदान उसी स्थान पर हुआ जहां पर इस जहां को बलिदान दिया गया जहां दाऊद ने मुख्य जीवन को बचाने वाला बलिदान दिया यीशु मसीह

हमारे उस बलिदान के रूप में मोरिया पर्वत पर मारा गया ताकि उस नई वाचा को दिखा सके तथा उद्धार के द्वार को खोल सके जैसा इब्रानियों 1315 कहता है कि जो बलिदान हम देते हैं वह हमारे होठों की स्थिति है तथा उस बात का धन्यवाद है जो परमेश्वर ने अद्भुत रीति से हमारे लिए किया

मोरिया पर्वत पर तीन महत्वपूर्ण घटनाएं एक दिशा को दिखाती हैं जो मनुष्य को परमेश्वर के उपाय की ओर तथा प्रतिस्थापना के बलिदान को बताती है यह सब कुछ अच्छी रूप से योजना बनाई गई थी सुनियोजित था और परमेश्वर की अनंत योजना का भाग था यह परमेश्वर का विज्ञापन की योजना का विज्ञापन था तथा अध्याय की योजना के साथ के लोगों को बुलाएं कि वह आए विश्वास करें और परमेश्वर के क्रोध से उद्धार को प्राप्त करें

सर्प और विश्वास

जैसे पर्वत मसीह के परिधान के स्थान की ओर इशारा करता है उसी तरह ;gqUuk3%14-16 इस बात को चित्र करता है कि कैसे मसीह की उस क्रूस पर मृत्यु आपको आपके पापों से बचा सकती है जब {kमा आती है तब आनंद जीवन की नदी आपके जीवन से इस पृथ्वी पर इसी वक्त बहने लगती है

> और जिस रीति से मूसा ने जंगल में सांप को ऊंचे पर चढ़ाया, उसी रीति से अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र भी ऊंचे पर चढ़ाया जाए। ताकि जो कोई विश्वास करे उस में अनन्त जीवन पाए॥ क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह

नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिये नहीं भेजा, कि जगत पर दंड की आज्ञा दे परन्तु इ स लि ये कि ज ग त उ स के द्वा रा उ द्धा र पा ए। ;gqUuk3%14-17

इसराइली लोग उस मरुस्थल में थे पुनः परमेश्वर के प्रति गुदगुदाते हुए उनके मिस्त्र से बाहर निकलने के पश्चात परमेश्वर की गरीबी के कारण उस की पवित्रता इतनी थी जिसको वह ठेस नहीं पहुंचा सकते उस की पवित्रता बड़ी आसानी से उस की पवित्रता को बड़ी आसानी से ठेस पहुंच सकती लोग मारे जाने लगे उन सर्पों के द्वारा जो उनके तंबू में घुस आए तथा लोगों को काटने लगी वह क्या कर सकते थे

परमेश्वर ने मूसा से कहा कि तुम दो वृक्षों को क्रूस के समान उठाओ तथा उनके ऊपर एक तांबे के लाल सर्प को लगाओ और जब भी कोई उस सर्प के द्वारा काटा जाए और उसको उसकी तरफ देखें वहां बचाए गए यह उसके साथ भी सच है जब हम इस बात को समझते हैं कि हम अपने पापों में मर रहे हैं हमें केवल यीशु की उस क्रूस पर मृत्यु को क्षमा के लिए देखना है

परमेश्वर के खुद के क्रोध में परमेश्वर द्वारा ही ठहराए गए माध्यम के द्वारा हस्तक्षेप होता है वचन यहां पर कहता है की यीशु उस सर के समान है जो इस्त्राइलियों के लिए उस पेड़ पर टांग आ गया जिस पर वह अपनी नजरें तथा अपनी आशा को लगाएं क्या आपने यीशु की और अपनी नजर को लगाया है क्या आप विश्वास करते हैं कि वह आपके पापा के लिए मारा गया परमेश्वर बार-बार इसी प्रकार के

चित्रों को उपलब्ध कराता है अपने वचन में लिखने के द्वारा ताकि हम उस मसीह की ओर देख सके जहां आशा दया तथा प्रेम पाया जा सकता है

---

1. पूरी घटना उत्पत्ति 22:9-18 में मिलती है
2. दाऊद की उस बड़ी असफलता को दूसरा शमूएल 24 में वर्णन किया गया है यह शब्द शैतान पुराने नियम में केवल तीन बार ही इस्तेमाल किया गया है
3. इस शब्द शैतान के साथ शैतान का मतलब विरोधी या व्यापारी वेरी वेरी
4. परमेश्वर की संतान बन्ना में हमारे कार्य हमारे जीवन में स्थान का अर्थ है

परमेश्वर के छुटकारे की योजना का पूरा होना (11-14)

#11 संयुक्त सेवा का आनंद

शास्त्रों के द्वारा छुटकारे का पहला भाग इस निर्णय के ऊपर ध्यान देता है कि मसीही क्या खरीद रहा है तथा दूसरा उस खरीदी का मूल्य कितना होगा उस पर इस अंतिम मुख्य भाग में हम इस बात पर देखेंगे कि कैसे वह व्यक्ति जिसने यह बड़ी खरीदारी करी है उस खरीदी हुई चीज में कितना आनंद करता है इसको और अधिक निश्चित रूप से रखने के लिए हो सकता है आपने बहुत महंगा कंप्यूटर कार या घर लिया होगा यह निर्णय आसान नहीं होते कि जब हम कुछ खरीदने का निर्णय लेते हैं हम कुछ और नहीं खरीदते किसी चीज को खरीदने के लिए हमारे पास कारण होता है तथा हम उस में आनंदित होते हैं तथा उस नई खरीदी हुई चीज का उपयोग करते हैं उसी रीति से प्रभु अपनी उस खरीद को संभालकर रखता है जो परमेश्वर की कलीसिया है

परमेश्वर से छुटकारे का आनंद

प्रभु के साथ यह परिस्थिति अलग है यह इसलिए क्योंकि उसने यह छुटकारे का चुनाव अनंत काल से किया इसमें कुछ विचार विमर्श की जरूरत नहीं थी यह सबसे उत्तम योजना थी तथा एक बुद्धिमान परमेश्वर होने के कारण यह उसके लिए महत्वपूर्ण हो गया कि इसको लागू करें बिना इस बात से फर्क पड़े कि उसकी कीमत कितनी होगी

छुपे हुए खजाने का दृष्टांत बड़े मूल्य का वह मोती कहां खोई हुई भीड़ ,खोया हुआ सिक्का लुका 15:1-10 हमें हमारे चुने हुए खरीद तथा हमारी संपत्ति की बहुमूल्यता का स्मरण दिलाता है मोती का दृष्टांत हमें स्वर्ण दिलाता है कि क्या एक मनुष्य कर सकता है उस चीज के लिए जिससे वह बहुतायत से चाहता हो हमारे परमेश्वर ने हमें अपनी लोगों के रूप में ढूंढा इस बात की चाहा करते हुए कि वह तैयार था कि अपने पुत्र को भी अनुमति दें हमारे लिए दुख को उठाने के लिए यह सत्य है कि कई अनुवादक इन दृष्टांतों को एक पक्षतापी पापी के लिए सुसमाचार की बहुमूल्य था के विषय में देखते हैं परंतु प्रभु के उस समर्पण को भी चित्रित करता है कि वह अपने खिलौने पुत्र का बलिदान दे कि अपने लिए एक दुल्हन को प्राप्त कर सकें

स्वर्ग का राज्य खेत में छिपे हुए धन के समान है, जिसे किसी मनुष्य ने पाकर छिपा दिया, और मारे आनन्द के जाकर और अपना सब कुछ बेचकर उस खेत को मोल लिया॥ फिर स्वर्ग का राज्य एक व्यापारी के समान है जो अच्छे मोतियों की खोज में था। जब उसे एक बहुमूल्य मोती मिला तो उस ने जाकर अपना सब कुछ बेच डाला और उसे मोल ले लिया॥ eRrh 13% 44-46

इस पूरे तीसरे भाग में हम विश्वास पर ध्यान को लगाएंगे कि कैसे प्रभु अपनी योजना में आनंदित होता है तथा उसको पूरा करता है परमेश्वर की कलीसिया के द्वारा जिसे उसने खुद के लहू से खरीदा है

इसलिये अपनी और पूरे झुंड की चौकसी करो; जिस से पवित्र आत्मा ने तुम्हें अध्यक्ष ठहराया है; कि तुम परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली करो, जिसे उस ने अपने लोहू से मोल लिया है। प्रेरितों के काम 20:28

हमारी चुनौती

इस अंतिम भाग में हमारी सबसे बड़ी चुनौती यह होगी यह कैसे यह छुटकारे की योजना सक्रिय रुप से इस पृथ्वी पर हमारे जीवन को प्रभावित करती है परमेश्वर ने ना केवल स्वर्ग में हमारे भविष्य के लिए कीमत को चुकता किया परंतु हमें अपने संतान के रूप में ले पालक ले लिया हमें पुनर्स्थापना स्थापित करने के लिए अब इस समय है कि हम उसके साथ मिलकर उसके महान कार्य में जुड़े जिस कारण से उसने हमें अपनी उपस्थिति में फिर से पूरा स्थापित किया एपिसोड 210 पुनः स्थापित किया (इफिसियों 2:10)

इस अध्याय में हम ध्यानपूर्वक परमेश्वर कि अपनी कलीसिया में आनंद के विषय में देखेंगे तथा कैसे वह चाहता है कि अपने लोगों के साथ वह कार्य करें परमेश्वर किसी भी विश्वासी को दूसरा विश्वासी से बढ़कर नहीं देखता परंतु हर एक व्यक्ति मजबूत तथा कमजोर को संभालता है तथा उनको दिए हुए वरदानों के द्वारा उन्हें अपने महान कार्य में सम्मिलित करता है जैसे कि उसने मसीह की धार्मिकता में हमें धर्मी ठहराया हमारी उसके प्रति सेवा के दौरान बढ़ते हुए रिश्ते की अपेक्षा करता है प्रभु एक बड़े न्यायधीश या फिर उनके समान परमेश्वर के लोगों को उसके लिए मेहनत करने के लिए नियुक्त नहीं करता प्रभु को अपनी लोगों के साथ उस कार्य में सम्मिलित होना पसंद है उन्हें अपने कार्य को पूर्ण करने के लिए समर्थ बनाते हुए जब हम इस बात को समझते हैं कि

वह हमारे साथ कैसे कार्य करता है हम उस कार्य की जो परमेश्वर ने हमारे सामने रखा है उसको पूरा करने के लिए प्रेरित होंगे

परमेश्वर की योजना यीशु मसीह के राज्य से कहीं अधिक आगे जाती है वह एक लोगों की ऐसी बड़ी सेना घर तैयार करना चाहते हैं जो उनके साथ मिलकर राज्य करें वह चाहता है कि हमारे जीत जीवनों को 3 तरह से प्रभावित करें (1) अपने वचन की घोषणा के द्वारा (2) हमारे जीवन को अपनी पवित्र उपस्थिति के द्वारा (3) प्रवचन प्रज्वलित करने से तथा करुणा से कमजोर और जरूरतमंद लोगों की ओर से मध्यस्ता करने के द्वारा छुटकारे को तब तक नहीं समझा जाता जब तक हम उसके उद्देश्य को संयुक्त सहभागिता तथा परमेश्वर कि लोगों की सेवा में पूर्ण होते हुए नहीं देखते परमेश्वर के लक्षण अति महान है तथा हमें दीया हुआ कार्य हमारे हृदय की गहराई में उन अभिलाषाओं के साथ मेल खाता है जब तक हम ध्यान पूर्वक हमारे लिए परमेश्वर की विशेष योजना में समझ को नहीं प्राप्त करते हम परमेश्वर के मुद्दे को हो सकते हैं उधार केवल वह आने वाला स्वर नहीं परंतु वर्तमान है तथा अनंतता में

आनंदमय सामूहिक कार्य आगे बढ़ने से पहले मैं एक घटना के विषय में बांटना चाहता हूं जो प्रभु के लिए

मेरे लिए तथा दूसरों के लिए काफी अर्थ को रखती है मैंने 1986 में दक्षिणी ताइवान में कलीसिया की स्थापना किए कराए पर योजना में कार्य किया हमारा लक्ष्य अंतर्राष्ट्रीय कलीसिया के साथ साथ कार्य

करना था एक साथ मिल कर कार्य करना तथा उन कविताओं के साथ जो दूसरे मत किए थे उनके साथ ऐसी समूह में जिसमें अलग-अलग

जाति के लोग तथा भाषाओं के लोग थे हरेक शुक्रवार शनिवार यह छोटे समूह पूरे द्वीप से इकट्ठे होकर तथा अपने आप को श्रमिकों के बीच में कलीसिया की स्थापना के लिए देती थी

यह संभव दिन और रात कठिन परिश्रम करते थे तथा रविवार की रात यह छोटे समूह अलग चले जाते थे परमेश्वर के लोगों के साथ उसके लोगों की परमेश्वर की महिमा के लिए नए समूह को गठित करने रिजवान मिलता था वह आज भी हमारी आनंदमय यादगार है वास्तव में उसके परियोजना पर परमेश्वर के लोगों के साथ कार्य करना मेरे जीवन का अत्यधिक आनंद में समय रहा है परमेश्वर समूह की एकता से प्रसन्न होता है भजन संहिता 136 एक दूसरे के ऊपर निर्भरता तथा उसकी इच्छा को ढूंढते हुए तथा परमेश्वर के कार्य को हमारे जीवन में और अधिक गहरा करते हुए और अधिक विस्तृत जानकारी के लिए गुझिया चर्च प्लांट हालांकि उस भीषण उमस में हमने एक साथ पसीने को बहाया हम सबने स्वर्गीय पिता के विशेष दान को सब के जीवन में देखा उन सारे सहकर्मियों में जो कार्य कर रहे थे

परमेश्वर की मूल योजना में अंतर्दृष्टिय

परमेश्वर की मनुष्य के लिए मूल्य योजना को हम शुरुआत से उत्पत्ति 1:26-28 में देख सकते हैं मनुष्य को आप आदमी और स्त्री को खुद की सुरक्षा समानता में रखने के द्वारा वह उनके कार्य के लिए नियुक्त करता है

तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया, नर और नारी करके उसने मनुष्यों की सृष्टि की। और परमेश्वर ने उन को आशीष दी:

और उन से कहा, फूलोफलो-, और पृथ्वी में भर जाओ, और उसको अपने वश में कर लो; और समुद्र की मछलियों, तथा आकाश के पक्षियों, और पृथ्वी पर रेंगने वाले सब जन्तुओ पर अधिकार रखो। उत्पत्ति 1:27-28

मनुष्य को अपनी सुरक्षा में स्वरूपरानी बनाने के द्वारा वह एक संचार तथा संबंध अनुमति देता है जो उस कार्य को और अधिक अवशोषित करता है आभूषित आभूषित जिसे मनुष्य के लिए बनाया गया जानवर अपने कार्य को अंदरूनी निर्देश के अनुसार करते हैं परंतु मनुष्य परमेश्वर से सीखता है तथा उन लोगों से जो के आसपास हैं उसे क्या करना है की रचनात्मकता को कमाल करते हो परमेश्वर के उद्देश्य को पूर्ण करता हूं जब एक स्त्री या पुरुष परमेश्वर के कार्य को पूरा करता है तब वह प्रभु में पूर्ण रीति से आनंदित होता है उपलब्धियां तथा सामूहिक कार्य तथा उन कार्यों का फल में हम प्रभु की सार्वजनिक आज्ञा को मनुष्य जाति के लिए जो है उसकी पूर्णता को देख सकते हैं किधर जाएं बढ़ते जाएं तथा राज्य करें

उत्पत्ति 2 में प्रभु विशेष रूप से मनुष्य को यह निर्देश देता है ताकि उस विशेष बगीचे को जिसे परमिशन रखा है उसकी रखवाली करें यह शायद मनुष्य को जो बातें हो सकती हैं उसके लिए प्रेरित करना है तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को ले कर अदन की वाटिका में रख दिया, कि वह उस में काम करे और उसकी रक्षा करे, उत्पत्ति 2:15 यह आज्ञा महान थी पर हम में से प्रत्येक को इसको जानना है तथा उस विशेष कार्य को जो प्रभु ने हमारे सामने रखा है पूरा करना है

यह शब्द अदन का अर्थ आनंद मनाना हैयह शब्द अदन का मतलब आमोद है तथा अंग्रेजी शब्द सुखवाद डोनेशन का अर्थ सुखवाद के लिए जीना है यह शब्द इसमें से निकला है ध्यान दें की H ध्वनि शांत रहती है दूसरी भाषाओं में सच्चा आमोद का आनंद तभी उठाया जा सकता है जब वह आगे कार्यकता तथा उसमें आनंद करता है जो सबकुछ भली वस्तु को उपलब्ध कराता है

उसके संतुलन में पैदा करना उत्पन्न करना कार्य तथा कठिन परिश्रम रोचक शब्द है जिसका अनुवाद सेवा करने में 227 बार पुराने नियम में हुआ है प्रभु की वाटिका में कार्य करने का मतलब केवल नाम मात्र कार्य करने का नहीं है जिसका अर्थ है कि व्यस्त तो है लेकिन परेशानियों से दूर परंतु यह कार्य जो परमेश्वर की महान नक्शे में योगदान है कुलुस्सियों 3:17 देखभाल करना के कई अर्थ हैं जिसमें नजर रखना व्यवस्थित रखना सुरक्षित रखना या संरक्षण करना है मनुष्य को यह आज्ञा दी मनुष्य को यह आज्ञा दी गई कि वह पृथ्वी को एक सुंदर स्थान के रूप में डालें मनुष्य एक व्यक्तिगत प्राणी के रूप में उसका एक व्यक्तिगत भाग है जिस चीज में वह ढल रही है वह कैसी दिखेगी

मनुष्य परमेश्वर की बनाई हुई चीजों से अचंभित है तथा उसमें एक तीव्र इच्छा है कि वह उस में उत्पन्न करें तथा उसे और अधिक खूबसूरत बनाएं एक समय था जब मैं अपने पिता से मिलने जाता और मुझे याद है अपने एक मित्र की बगीचे में कदम रखना उसे इतनी अच्छी से रखा गया कि वह एक बगीचे के समान दिखता था वह खूबसूरत था मैं जानता हूं परमेश्वर ने सब पौधों को बनाया है पर मैं यह भी जानता हूं कि मेरे मित्र ने काफी समय इसमें बताया अपने उस बगीचे को सूचित करने सुसज्जित करने तथा उसका रखरखाव करने में वहां एक दिन आया और मुझे बताया कि बाड़े में काम करने के उसने 4 घंटे बिताएं उसने यह भी कहा कि वह किसी को इस कार्य करने के लिए पैसे दे सकता है परंतु यह कठिन कार्य खुद करने में उसे खुशी मिलती है मनुष्य कार्य से जुड़ा हुआ है तथा संसार के इस व्यवस्था में योगदान देता है उसकी खूबसूरती बढ़ाते हुए जो उसकी गहरी आवश्यकता को पूर्ण करती है तथा महत्वपूर्णता अनिश्चितता होती है परमेश्वर के कार्य में सम्मिलित होने के द्वारा

Jki का प्रभाव

परमेश्वर ने मनुष्य जाति को किस प्रकार से रचा कि जो कार्य उसने उनको दिया

है उसमें वहां आनंदित हो हालांकि मनुष्य जाति का पाप में गिरने के कारण से चीजों में बदलाव आ गया मनुष्य को अदन की वाटिका में से बाहर कर दिया गया तथा उसे कार्य में उसे पसीना बहाना पड़ा यह वाक्य है कि अपनी जीविका के

लिए कार्य करना वह जीवन के कठिन भाग को अच्छी रीती से वर्णन करता है एक व्यक्ति को जीने के लिए कड़ी मेहनत करनी है

और आदम से उसने कहा, तू ने जो अपनी पत्नी की बात सुनी, और जिस वृक्ष के फल के विषय मैं ने तुझे आज्ञा दी थी कि तू उसे न खाना उसको तू ने खाया है, इसलिये भूमि तेरे कारण शापित हैख के साथ खाया:तू उसकी उपज जीवन भर दु : :करेगा और वह तेरे लिये कांटे और ऊंटकटारे उगाएगी, और तू खेत की उपज खाएगा ; और अपने माथे के पसीने की रोटी खाया करेगा, और अन्त में मिट्टी में मिल जाएगा; क्योंकि तू उसी में से निकाला गया है, तू मिट्टी तो है और मिट्टी ही में फिर मिल जाएगा। उत्पत्ति 3:17-19

छुटकारा उस प्रक्रिया के विषय में बात करता है उसके द्वारा मनुष्य परमेश्वर की मूल योजना के साथ पुनर्स्थापित होता है जहां पर लोग इस बात को सीखते हैं कि परमेश्वर क्या चाहता है वह करते हैं जो परमेश्वर चाहता है जो परमेश्वर चाहता है उसमें आनंदित होते हैं तथा परमेश्वर के उपायों को उनके जीवन के लिए जरूरत के लिए प्राप्त करते हैं भजन संहिता 34:10 वह जीने के लिए प्यार नहीं करते पर दुख कार्य करने के लिए जीते हैं

वह परमेश्वर के कार्य में सम्मिलित होने के लिए जीते हैं परमिशन कार्य में पुनः सम्मिलित होना आमतौर पर शास्त्रों में सेवा करने के रूप में जाना जाता है यह आमतौर पर तब इस्तेमाल होता है जब यह प्रभु के साथ पूर्ण संबंध में हैइस पुनर्स्थापना की तीव्रता तथा बढ़ोतरी को हम देख सकते हैं जब हम समय तथा पवित्र शास्त्रों में बढ़ते जाते हैं परमेश्वर का मकसद स्पष्ट रूप से परिभाषित है हम पूर्ण रुप से पुनर्स्थापित नहीं हो सकते जब तक मैसेज वापस नहीं आता जब यह

अंतिम छुटकारे के स्तर जोकि नई पृथ्वी और नया आकाश बनाया नहीं जाता तथा सारे उसके लोग जलाए जाते हैं कि सर्वदा उसकी उपस्थिति में जिए तथा उसके साथ उस कार्य को निरंतर करते रहें और उसे पूर्ण करें और फिर श्राप न होगा और परमेश्वर और मेम्ने का सिंहासन उस नगर में होगा, और उसके दास उस की सेवा करेंगे। प्रकाशितवाक्य 22:3

लागू करना

किसी कार्य क्षेत्र में बदलाव आधुनिक समाज मुख्य समस्याओं में से एक है यहां यह तीन समस्या है:

(1)कुछ लोग सोचते हैं कार्य बेकार है मैं केवल खेलना चाहते हैं की आसान जीवन हो हालांकि परमेश्वर ने शुरुआत से जी कहां कि मनुष्य को 7 दिन में से 6 दिन कार्य करना है हमें बुलाया गया है कि इस दुनिया के किसी एक कोने को बढ़ाने के लिए उसमें सम्मिलित होना है

(2)दूसरी समस्या वह तरीका है कि आधुनिक मनुष्य विश्वास करता है कि मनुष्य का चरित्र का उसके कार्य क्षेत्र में कोई अर्थ क्यों नहीं रखते हमारा चरित्र हमेशा हमारे कार्य को डालता है इससे बचा नहीं जा सकता क्योंकि हमारा चरित्र हमारे सिद्धांतों को चलाता है जिनके द्वारा हम जीवन जीते हैं तथा मूल्य को निर्धारित करता है जिसके आधार पर हम निर्णय लेते हैं

(3)परमेश्वर जो चाहता है उसकी विषय पर मनुष्य बहुत कम सोचता है परमेश्वर बातचीत करता है परंतु वह बहरे हैं वह इस बात पर केंद्रित है कि अपनी इच्छाओं को पूरा करें इसके बजाय कि उनको परमेश्वर की इच्छा पर आधारित करें परमेश्वर हमें बुला रहा

है कि हम उसकी बुलाहट को अपने जीवन में गंभीरता से लें कार्य परमेश्वर के उद्देश्यों को हमारे जीवन में पूरा करना है

जब हम अपने जीवन को परमेश्वर के दृष्टिकोण से जीते हैं तो हम परमेश्वर को अनुमति देते हैं कि हम एक परिपूर्ण जीवन जिए

परमेश्वर के लोग उसके साथ राज्य करें

बाइबिल इन दृश्यों से भरी हुई है जो यह बताती है कि कैसे परमेश्वर व्यक्तिगत लोगों से बात करता है कई प्रकरणों में यह वार्तालाप उस कार्य के इर्द-गिर्द होता है जिसे परमेश्वर उस व्यक्ति के साथ और उनके द्वारा करना चाहता है

पुराना नियम कुछ ऐसी घटनाओं के विवरण को रखता है जो हमें अनुमति देता है कि हम उन बातचीत को सुन सकें जिसे परमेश्वर ने मनुष्य से की कोई भी दिया हुआ कार्य हमेशा चुनौतीपूर्ण होता है परंतु संभव यहां कुछ है

- uksgk जिसने कश्ती को बनाया जहाज को बनाया
- अब्राहम जो विश्वास के लोगों का पिता बना
- यूसुफ एक मनुष्य जिसके द्वारा परमेश्वर ने इजरायल को अलग करके बहुतायत से बढ़ाया एक राष्ट्र के रूप में बढ़ाया
- मूसा परमेश्वर का मंत्र जिसने लोगों को मिस्र से बाहर निकाला

परमेश्वर ;gks’kq से बात करता है

यह ;gks’kq मूसा के कदमों में चला वह एक बहुत उत्कृष्ट उदाहरण है उस व्यक्ति का इसे परमेश्वर ने अपनी सेवा में नियुक्त किया मूसा की व्यक्तियों उसके तुरंत पश्चात परमेश्वर ने यह उससे कहा यहोवा के दास

मूसा की मृत्यु के बाद यहोवा ने उसके सेवक यहोशू से जो नून का पुत्र था कहा, ;gks’kq 1:1 यह बातचीत रुचिकर है परमेश्वर ;gks’kq को इस नए कार्य के लिए उत्साहित करता है तथा उसके विश्वास को बढ़ाता है प्रभु वहां था ;gks’kq को सफल करने के लिए और चुनौतीपूर्ण समयों में वह उसके साथ खड़ा रहा जब यही होगा सामना किया प्रभु एक सेनापति के समान उसके संग चला क्या मैं ने तुझे आज्ञा नहीं दी? हियाव बान्धकर दृढ़ हो जा; भय न खा, और तेरा मन कच्चा न हो; क्योंकि जहां जहां तू जाएगा वहां वहां तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे संग रहेगा॥ यहोशू 1:9

जब यहोशू यरीहो के पास था तब उसने अपनी आंखें उठाई, और क्या देखा, कि हाथ में नंगी तलवार लिये हुए एक पुरुष साम्हने खड़ा है; और यहोशू ने उसके पास जा कर पूछा, क्या तू हमारी ओर का है, वा हमारे बैरियों की ओर का?उसने उत्तर दिया, कि नहीं; मैं यहोवा की सेना का प्रधान हो कर अभी आया हूं। तब यहोशू ने पृथ्वी पर मुंह के बल गिरकर दण्डवत किया, और उस से कहा, अपने दास के लिये मेरे प्रभु की क्या आज्ञा है? यहोशू 5:13-14

यह सुखी जीवन के अंत में परमेश्वर के लोगों की कमान पर कब्जा करने के लिए विवाह के पश्चात उसने गवाही दी कि कैसे प्रभु परमेश्वर उसके साथ था यहोशू कार्यकारिणी सेनापति था परंतु प्रभु वह प्रभावशाली सेनापति था “तब यहोशू सब इस्त्राएलियों को, अर्थात पुरनियों, मुख्य पुरुषों, न्यायियों, और सरदारों को बुलवाकर कहने लगा, मैं तो अब बूढ़ा और बहुत आयु का हो गया हूं; और तुम ने देखा कि तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हारे निमित्त इन सब जातियों से क्या क्या

किया है, क्योंकि जो तुम्हारी ओर लड़ता आया है वह तुम्हारा परमेश्वर यहोवा है। यहोशू 23:2-3

प्रभु ना केवल उनके 'k=q के विरुद्ध उनके लिए लड़ा प्रभु ने यह यहोशू को अपने कार्य में नियुक्त किया तथा भरपूर अनोखी तथा निर्देश यहोशू की सहायता के लिए इस प्रक्रिया में दिया ;q) की असफलता तब हुई जब परमेश्वर के निर्देशक का पालन करने पर ध्यान नहीं दिया जिन सिद्धांतों को जोशी की पुस्तक में पाया जा सकता है वह उन सिद्धांतों के समान है जिसे मसीही जीवन जीने के लिए आवश्यक है क्योंकि परमेश्वर का मनुष्य के साथ अपने कार्य को पूरा करने कीजिए जो वार्तालाप है वह मुख्यतः समान है आप नीचे दिए गए यहोशू की पुस्तक के चार्ट को देखें और उन चित्रों को देखें जिसमें परमेश्वर एवं उसके साथ कार्य करने में सम्मिलित हुआ

यहोशू की पूरी पुस्तक में परमेश्वर ढाल रहा था सज्जित कर रहा था अगुवाई कर रहा था ठीक कर रहा था उत्साहित कर रहा था तथा जो यहोशू को समर्थ कर रहा था कि उसके साथ और कठिन कार्यों को पूरा कर सकें परमेश्वर पर विश्वास योगिता के साथ उसे चीजें मुहैया कराई एकता तेज इसके विषय में यह शुभ बड़े अच्छे से जानता था इसी समान कठिन समय में परमेश्वर हमारे विश्वास को बनाता है तथा उसके साथ संबंध को भी बनाता है

पुनर्स्थापित करने का हृदय

अंकित ऐसे लोग हैं जो परमेश्वर के इच्छा को पूरा उन लोगों के साथ बातचीत करें इस विषय को बताती है 2 इतिहास 7:14 का एक जाना-माना भाग यदि मेरे लोग एक सही तरीके से प्रभु पर निर्भर होने के विषय

को चिन्हांकित करती है प्रार्थना जो उस समय आई जब राजा सुलेमान ने नवनिर्मित मंदिर के भवन को परमेश्वर प्रभु को समर्पित किया

> तब यहोवा ने रात में उसको दर्शन दे कर उस से कहा, मैं ने तेरी प्रार्थना सुनी और इस स्थान को यज्ञ के भवन के लिये अपनाया है। यदि मैं आकाश को ऐसा बन्द करूं, कि वर्षा न हो, वा टिड्डियों को देश उजाड़ने की आज्ञा दूं, वा अपनी प्रजा में मरी फैलाऊं, तब यदि मेरी प्रजा के लोग जो मेरे कहलाते हैं, दीन हो कर प्रार्थना करें और मेरे दर्शन के खोजी हो कर अपनी बुरी चाल से फिरें, तो मैं स्वर्ग में से सुन कर उनका पाप क्षमा करूंगा और उनके देश को ज्यों का त्यों कर दूंगा। 2 इतिहास 7:12-14

साथ प्रभु चाहता है कि उसके लोक सभा तथा चंगाई का अनुभव करें परंतु वह यह भी चाहता है कि वह अपने पापा को माने तथा उनकी कविता को माने तथा इस बुरी स्थिति से निकलने के लिए सहायता को ढूंढने परमेश्वर के लिए उनको उनके पापा के अनुसार न्याय करने करना पड़ा आसान होगा परंतु वह धैर्य के साथ उनके साथ कार्य करता है उन्हें उनकी बुरी स्थिति से निकालते हुए अपने करीब लेते हैं आता है परमेश्वर अपनी उस इच्छा से कि हमें छुटकारा दें उसमें वह करुणा में है कई मशीनों का जीवन प्रभु के परिपूर्ण कार्य को जो हमारे हृदय में करता है वर्णन कहता है और हमें और अधिक पवित्र बनाता है

परमेश्वर तब परमेश्वर और मनुष्य के संबंध को छुटकारे के द्वारा पुनर्स्थापित करता है मंदिर रहस्य व स्थान है जहां पर परमेश्वर को खोजा जा सकता है वह मनुष्य के हृदय को जानता था यहां तक कि इसराइली लोग भी परमेश्वर को छोड़ देते थे इसी कारण से सुलेमानी

प्रार्थना करें कि परमेश्वर उनकी जरूरत में उनके लिए वहां रहे जब उन्होंने उसको छोड़ दिया सच्ची आशीष हैं परमेश्वर पर निर्भरता से जुड़ी हुई है परेशानियां आती है जब मनुष्य परमेश्वर के भली उद्देश्य योजना के बाहर होता है परंतु प्रभु बड़े अनुग्रह से हमें पूरा स्थापित करता है जब हम उसके नाम को पुकारते हैं पश्चाताप करते हैं तथा उसके अनुभव को खोजते हैं

परमेश्वर सुलेमान की प्रार्थना से सहमत हुआ इस प्रकार की नियमितता परमेश्वर की दृढ़ इच्छा को बताता है परमेश्वर मनुष्य की संबंध को बनाने तथा स्थापित करने के विषय में तब भी जब एक विशाल पुनर्स्थापना की प्रक्रिया इस में सम्मिलित हो यदि प्रभु इश्क अंत के लिए पापियों के साथ कार्य करता है क्या वह आनंदपूर्वक उन धर्मी जनों के साथ कारीना करेगा जो उसे खोजते हैं कि उसकी मर्जी पूरी हो

परमेश्वर ने हमें इसके लिए रचा कि ऐसे जीवन को जिए उस रिद्धि से जो उसे और अधिक महान तथा खूबसूरत तथा एक बड़ा मूल्यवान जो वह है पैसा दिखाए परमेश्वर के स्वरूप में रचे जाने का अर्थ यही है जॉन फाइट **परमेश्वर के लोग राष्ट्रों के लिए ज्योति हैं**

जब हम परमेश्वर की उसके लोगों के साथ गरीबी रूप से सम्मिलित होने उसको देखते हैं यह जरूरी है कि उस कार्य पर ध्यान देना जिसके लिए वह अपने लोगों से कहता है कि उसमें सम्मिलित हो महत्वपूर्ण है पहले हमने इस बात पर चर्चा करें की उत्पत्ति आज्ञा देता है कि भर जाए राज करें तथा सबके ऊपर अधिकार को रखे इस आज्ञा को आगे बढ़ाते हुए इसको ऐसे देख सकते हैं कि परमेश्वर के लोग अपने विश्वास को उनके साथ बांटते हैं जो विश्वास में नहीं अविश्वासी परमेश्वर के विरुद्ध बलवे

में जीवन को जीते हैं परंतु परमेश्वर का आत्मा उनकी कठोर हृदय को तोड़ सकता है परमेश्वर की प्रेम के द्वारा मुझे आज्ञा के छुटकारे की आशा को दूसरे लोगों के साथ बांटे इसे हम पुराने नियम में भी देख सकते हैं हालांकि कई समय में इस आज्ञा को नहीं माना गया

परमेश्वर की अपने लोगों को बुलाहट

> ईश्वर जो आकाश का सृजने और तानने वाला है, जो उपज सहित पृथ्वी का फैलाने वाला और उस पर के लोगों को सांस और उस पर के चलने वालों को आत्मा देने वाला यहावो है, वह यों कहता है: मुझ यहोवा ने तुझ को धर्म से बुला लिया है; मैं तेरा हाथ थाम कर तेरी रक्षा करूंगा; मैं तुझे प्रजा के लिये वाचा और जातियों के लिये प्रकाश ठहराऊंगा; कि तू अन्धों की आंखें खोले,बंधुओं को बन्दीगृह से निकाले और जो अन्धियारे में बैठे हैं उन को काल कोठरी से निकाले। यशायाह 42:5-7

परमेश्वर ने इस विशाल विश्व दर्शन को उत्पत्ति में प्रदान किया अब्राहम को पुनह इस बात की पुष्टि करें तथा अनगिनत जगह में इसको चिन्हांकित किया जैसा में उस यशायाह में उस भाग के जैसे प्रभु सबसे पहले उसकी महान सामर्थ को इस संसार पर एक सृष्टि कर्ता के रूप में साबित करता है तथा तब वह इजरायल से यह कहता है कि कैसे वह इस्पात की योजना रखता है कि उनके द्वारा कार्य करें मैं तुम्हें राष्ट्रों की ज्योति के रूप में नियुक्त करूंगा मुझ "यहोवा ने तुझ को धर्म से बुला लिया है; मैं तेरा हाथ थाम कर तेरी रक्षा करूंगा; मैं तुझे प्रजा के लिये वाचा और जातियों के लिये प्रकाश ठहराऊंगा; कि तू अन्धों की आंखें खोले, यशायाह 42: 6 व्यवस्था ने इस बात को स्पष्ट किया कि जो इज़राइल के बाहर के लोग हैं स्त्री या पुरुष इस राष्ट्र में सम्मिलित हो

सकते हैं उससे भी ज्यादा यह आज्ञा है कि उस ज्योति को जो परमेश्वर का सत्य है अनुमति दें कि एक सकारात्मक उदाहरण के तौर पर उनके जीवन के द्वारा चमके जो अंधकार में राष्ट्रों में जो उनके आस-पास है चमके यह आज्ञा परमेश्वर की हृदय को प्रकट करती हैं

भीतरी विरोध

परमेश्वर के लोग उसके राजदूत हैं जूना के समान कुछ लोग हुए हैं जो इस विधि से इस्तेमाल किए जाने से इंकार करते हैं उसने परमेश्वर के राजदूत होने के इस बड़े सौभाग्य को तुच्छ जाना भविष्यवक्ता तथा उसकी बुलाहट से दूर भागने की कोशिश करें इसराइल काफी कुछ होना के समान लंबा समय विश्वास को अनदेखा करते हुए बिताया और यह जानते हुए गिरासू में परमेश्वर के सत्य को बताने की आज्ञा ना मानने की द्वारा लोग परमेश्वर के राज्य के अंदर और बाहर उसकी दया को नहीं दर्शा रहे थे इस दृश्य में परमेश्वर का राज्य पुराने नियम में असफल रहा

यदि आप संयुक्त और / राज्यों के इतिहास को देखें तब आप केवल उसके नाच होने को ही देख पाएंगे दाऊद और सुलेमान के बढ़ते हुए राज्य अच्छी रीती से पुराने नियम में विश्वव्यापी बढ़त को दर्शाते हैं परंतु वह असफल होने लगा जब सुलेमान ने अन्य जातियों की पत्नियों की चाह तथा उनकी पत्नियों कि चाहा कि उनकी देवी-देवता परमेश्वर की उस भूमि पर ला सकें अनुमति दी अंधकार छा गया जिसके कारण से उसकी रोशनी जाती रही इजरायल ने चमकना बंद कर दिया तथा वह इस कार्य के लिए इसन आज्ञाकारिता के लिए उस पर न्याय आया

जैसे हम नए नियम में प्रवेश करते हैं हम परमेश्वर के उस कार्य का विवरण देते हैं जो उसके छोड़ आए हुए लोगों के लिए है उस कार्य में

यह भी सम्मिलित है कि वह प्रभु के अनुग्रह की गवाही दें तथा उसकी सुसमाचार की घोषणा करें फ्रिज के काम की पुस्तक इस विश्वव्यापी पवित्र आत्मा के कार्य को बताती है मनुष्य के पतन के कारण उत्पत्ति की पुस्तक से सब बातों पर अधिकार रखना तथा राज्य करना को पुनः डाला जाता है कि इस बात को सम्मिलित करें कि लोगों को यीशु पर विश्वास करने के लिए बुलाए तथा परमेश्वर के राज के अधीन दोबारा लौटे रेखाचित्र को देखें यह आदेश परमेश्वर के पीछे चलने वालों के लिए है जिसके द्वारा सुसमाचार फैलेगा तथा सारे राष्ट्रों में वह शिष्यों को बनाएगा एक बार जब नया स्वर्ग और नई पृथ्वी आएंगे यह घोषणा का कार्य फिर आवश्यक नहीं रहेगा और उस समय सारे भगोड़े यीशु की राज्य अधिकार को मानेंगे परमेश्वर दृढ़ है कि अपने लोगों के द्वारा कार्य करें वह अपने आप अपने नाम की पहचान कर सकता है परंतु वह उसकी इस इच्छा को नाकाम कर देगा कि उसकी कलीसिया उसका शरीर उसके साथ एकता में कार्य करें जय सिद्धांत जो कार्य करने का है वह उस मूल आज्ञा से ही आया है पूरी पृथ्वी को एक वाटिका में बनाने के बजाय वह मनुष्य को यह बताता है कि उसे क्या चाहिए तथा मनुष्य को लायंस करता है उस चीजों के द्वारा जिनके द्वारा इस बात को वह पूरा कर सकें

प्रभु कहता है “उसी ने मुझ से यह भी कहा है, यह तो हलकी सी बात है कि तू याकूब के गोत्रों का उद्धार करने और इस्राएल के रक्षित लोगों को लौटा ले आने के लिये मेरा सेवक ठहरे; मैं तुझे अन्यजातियों के लिये ज्योति ठहराऊंगा कि मेरा उद्धार पृथ्वी की एक ओर से दूसरी ओर तक फैल जाए।। यशायाह 49:6 प्रभु इस बात को करेगा परंतु आवश्यकता या अपेक्षा से ज्यादा इसमें समय लग सकता है

यीशु तथा यह संसार

यीशु ने रोशनी होने की गवाही दी तब यीशु ने फिर लोगों से कहा, जगत की ज्योति मैं हूं; जो मेरे पीछे हो लेगा, वह अन्धकार में न चलेगा, परन्तु जीवन की ज्योति पाएगा। जब तक मैं जगत में हूं, तब तक जगत की ज्योति हूं। ;gqUuk 8:12 95 हालांकि वह यह कहता है कि उसकी लोग उसकी ज्योति के भागी होंगे तथा इस संसार की परिवर्तन की जिम्मेदारी को अपने ऊपर लेंगे जैसे वह उसके मिशन को पूरा करते हैं पहाड़ी उद्देश के समय यीशु ने घोषणा करें कि परमेश्वर के लोग भविष्यवक्ता है तथा याजक है नमक और रोशनी के जब तक मैं जगत में हूं, तब तक जगत की ज्योति हूं। तुम पृथ्वी के नमक हो; परन्तु यदि नमक का स्वाद बिगड़ जाए, तो वह फिर किस वस्तु से नमकीन किया जाएगा? फिर वह किसी काम का नहीं, केवल इस के कि बाहर फेंका जाए और मनुष्यों के पैरों तले रौंदा जाए। तुम जगत की ज्योति हो; जो नगर पहाड़ पर बसा हुआ है वह छिप नहीं सकता। और लोग दिया जलाकर पैमाने के नीचे नहीं परन्तु दीवट पर रखते हैं, तब उस से घर के सब लोगों को प्रकाश पहुंचता है। उसी प्रकार तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के साम्हने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में हैं, बड़ाई करें॥ मत्ती 5:13-16 हमें परमेश्वर के कार्यकर्ता के रूप में रचा गया है जो उसके प्रेम का संचार करते हैं तथा खोए हुए के लिए मध्यस्ता करते हैं वह इस बात को देखें कि कैसे प्रभु अपने लोगों को समर्थ करता है तथा उन को नियुक्त करता है उन बातों को करने के लिए जिसकी वजह से अधिक इच्छा हो रही है आप इस पृथ्वी के नमक है

यीशु अपने psyksa से कहता है कि विश्वास के द्वारा लोग इस रोशनी को देखेंगे तथा परमेश्वर की आराधना करने के लिए आएंगे जीवन की गवाही से बिना कोई संदेश नहीं यीशु समझ बूझकर समरी हो तक पहुंचा एक उदाहरण के तौर पर कि कैसे परमेश्वर गैर यहूदियों के हृदय में भी कार्य करना चाहता है यह शुभ छुटकारे के उद्देश्य को स्थापित करने आया तथा इस्राइलियों को समझ करने के लिए जो उसे वस नई भाषा में जान सके उसने अपने चेलों के साथ कार्य किया ताकि वहां उस कार्य को उनको सौप सके यह प्रतीत होता है कि हालांकि यीशु के पास सारा अधिकार था कि वह लोगों को परिवर्तित कर दें तथा राजनीतिक तौर पर चीजों को ठीक कर दे परमेश्वर के संदेश की आवाहन की जिम्मेदारी ने प्रधान ताली लोगों के हृदय परमेश्वर के प्रेम के द्वारा जीते जाने आवश्यक है इससे पहले यह संसार परिवर्तित हो प्रेम का कार्य सत्य के शब्दों को पुष्टि करता है

> यीशु ने उन के पास आकर कहा, कि स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिये तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्रआत्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओऔर देखो :, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं।। मत्ती 28:18-20

परमेश्वर के तरीके

पुराने नियम के समान प्रभु जो मनुष्य के लिए रखा गया है उसको पूरा नहीं करता वह एक व्यक्ति को लैस करता है कि वह उसके कार्य को पूरा करें तथा उस व्यक्ति के साथ खड़ा रहता है उनका इंतजार करते हुए

कि वह उसको सहायता के लिए पुकारे उस कार्य को पूरा करने के लिए हालांकि हम कई बार असफल होते हैं इस कार्य को खराब करने के भय के बजाए वह इंतजार करता है कि मनुष्य उसको पूर्ण करें जब मनुष्य सफल होता है उसे अपनी असफलता तथा नजरअंदाजी के लिए पश्चाताप करना है ताकि परमेश्वर की प्राथमिकता है हमारी प्राथमिकताएं हैं जैसा हमने पहले देखा

शायद यही कारण है कि प्रभु मसीह के दूसरे आगमन की तिथि को ही नहीं करता यह मनुष्य के उस कार्य की किसी समाचार का प्रचार पूरी दुनिया में हो उस पर निर्भर करता है यीशु अनगिनत चिन्नू की ओर इशारा करता है इससे पहले कि वह छुटकारे के नए युग को लेकर आए लोका 2128 सुसमाचार की घोषणा हालांकि उसे आवश्यकता है कि दुनिया के अंत तक पहुंचे जैसा हम मस्ती में देखते हैं क्योंकि झूठे मसीह और झूठे भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे, और बड़े चिन्ह और अद्भुत काम दिखाएंगे, कि यदि हो सके तो चुने हुओं को भी भरमा दें। मत्ती 24: 14)

कलीसिया शायद मसीह के दुबारा आने के समय को जानना चाहती हो परंतु वह रहस्य बना रहता है बिल्कुल जैसे प्रभु ने अनुमति दी कि उसके लोग पुराने नियम में कठिन समय पर होकर गुजरे उसके कार्य को पूरा ना करने के कारण से वैसा ही वह नए नियम के समय में और आगे भी करेगा अंधकार का युग इसलिए आया क्योंकि परमेश्वर के लोग उसके वचन के अनुसार जीवन नहीं जी रहे थे उनके पास वचन तो था परंतु उन्होंने अपने हृदय को दीवारों से घेर लिया था इस बात को प्राथमिकता देते हुए कि धर्म की बातों को पसंद किया घमंड को

परमेश्वर के द्वारा दिए गए मिशन के ऊपर परिणाम स्वरुप उनके पास ज्योति के बजाय अंधकार आया

परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा मिशन की शुरुआत परिवर्तन काल में हुई जब परमेश्वर का वचन लोगों की अपनी भाषा में अनुवाद किया गया लोग आप भ्रष्टाचारी अब वह पर निर्भर नहीं थे जो अपने घमंड लालच तथा सामर्थ के द्वारा नियंत्रित करते थे परंतु परमेश्वर के वचन की अपने आप के लिए देख सकें कुछ शुरुआती मिशनरी जैसे विलियम कैरी उसने अपने आप को सुसमाचार के फैलाने के लिए अपने आप को समर्पित किया प्रभु के द्वारा उसको इस्तेमाल किए जाने के लिए तथा उसे उन लोगों तक पहुंचने के लिए उनके पास सुसमाचार नहीं था परमेश्वर ने चीजों को बड़े रूप से कुछ विश्वव्यापी सामर्थी जागृति यों के द्वारा बढ़ाया उसकी आत्मा ने लोगों के हृदयों में काम किया जिन्होंने प्रार्थना करें तथा सुसमाचार का प्रचार किया कहीं दूसरी संस्कृति Ok मिशनरियों की गिनती उन्नीस सौ से लेकर आज तक बढ़ती चली गई जिसमें आज कई गिनती उनकी है जो उन जगहों से भेजे जाते हैं जो कभी सुसमाचार से अछूते थे ज्योति पहले से ही चमक रही है यीशु आने वाला है

प्रकाशितवाक्य तथा परमेश्वर का राज्य

राजा आदम असफल हुआ परंतु राजा यीशु सफल हुआ यीशु में उसने उसके लोगों को राज्य बनाया ताकि वह उसके साथ राज कर सके जब यीशु परमेश्वर के राज्य के विषय में बात करता है हम कई बार उसके पूरे अर्थ को उसके वचनों के अर्थ को समझ नहीं पाते यह इस बात से शुरू होता है परमेश्वर मनुष्य से कहता है कि वह संसार पर राज्य करें

यह उस अधिकार को मनुष्य पर देता है कि वह राज्य करें परमेश्वर राज आत्मिक राज्य है तथा फिर भी यीशु के आगमन पर यह पूर्ण राजनीतिक रोक लेगा तथा सर और पृथ्वी के नहीं हो जाने में आत्मिक नियम के रूप में परमेश्वर हमारे जीवन की घटनाओं को इस्तेमाल करता है कि हमारे उन विचारों को जो उसके प्रति संबंध के विषय में है डालें प्रकाशितवाक्य की पुस्तक इस विषय में काफी कुछ कहती है

और हमें एक राज्य और अपने पिता परमेश्वर के लिये याजक भी बना दिया; उसी की महिमा और पराक्रम युगानुयुग रहे। आमीन।
प्रकाशितवाक्य 1:6

कुछ चर्चाएं हैं इस विषय पर की मस्ती का राज यह भी है या फिर वह भविष्य में अपने इस राज्य को शुरू करेगा हालांकि कुछ पद हैं जो हमारी सहायता करते हैं इस बात को समझने के लिए कि परमेश्वर का राज्य पहले से ही आ चुका है या कुछ रीति से यह वाक्य है कि उसने हमें उसका राज्य ठहराया है वह भूतकाल में है इस बात को दिखाते हुए कि यह चीज पहले ही पूर्ण हो चुकी है एक कारण के लिए कई शिष्य शहीद हुए वह इसलिए था कि वह यीशु को एक राजा के रूप में इंकार नहीं करेंगे यदि सारा महिमा और अधिकार उसका है हमेशा से हमेशा तक के लिए तब हम इस बात पर आराम महसूस करें कि यीशु को हम प्रभु और राजा के रूप में बुला सके हम उसके सेवक हैं तथा इसलिए बुलाए गए हैं कि उसकी आज्ञा को मानेंगे

प्रकाशितवाक्य 1:6 हमें परमेश्वर की इजाजत के रूप में बुलाती है इस विचार के पीछे एक बड़ा राजा और याचक के धर्म ज्ञान की चर्चा

है यह दो कार्य अलग-अलग रखे जाने चाहिए जैसे यह मसीह में ही पूर्ण हो सकती है

यीशु की भूमिका मलकीसर के द्वारा राजा और याचक दोनों के रूप में अनिरुद्ध आधी रूप शुरुआत से परमेश्वर का लक्ष्य उसके लोगों के लिए उसके अधिकार पर यह भूमिका बांटना था हम ना केवल उसका राज्य है हम उसके इजाजत भी है तथा उसके राज्य में सहभागी भी हैं तथा दूसरों की सहायता करते हैं कि वह आत्मिक परिवर्तन में से होकर जाए छुटकारे ने हमें दोष भावना से दोषी ठहरने से ऊपर उठाया तथा हमें ना केवल परमेश्वर के साथ सहभागिता में लेकर आया परंतु हमें समर्थ किया कि उसके महान कार्य में सहभागी हो सके इफिसियों 2:6-10)

मैं यूहन्ना जो तुम्हारा भाई, और यीशु के क्लेश, और राज्य, और धीरज में तुम्हारा सहभागी हूं, परमेश्वर के वचन, और यीशु की गवाही के कारण पतमुस नाम टापू में था। प्रकाशितवाक्य 1:9

;gqUuk अपने आपको परमेश्वर के राज्य का एक भाग के रूप में वर्णन करता है वह दूसरों के समान अपने राजा की सेवा कर रहा है दूसरे भाई तथा सहकर्मी जिसके कारण से वह पथ मुस्ताक ऊपर पथमेश टापू परनिष्कासित था हालांकि शत्रु के उसके लोगों पर प्रहार के बावजूद उसका राज्य बढ़ता जाता है

और उन्हें हमारे परमेश्वर के लिये एक राज्य और याजक बनाया; और वे पृथ्वी पर राज्य करते हैं। प्रकाशितवाक्य 5:10

प्रकाशितवाक्य 5:10 हमें भविष्य के दिनों में जहां पर हो शुद्धिकरण का कार्य पूर्ण होता है ले जाता है जब परमेश्वर के लोग उसकी कि निकटतम उपस्थिति में रहते हैं वह समय में परमेश्वर के लिए

राज्य तथा याजक बनाए जाएंगे जो इस पृथ्वी पर उनके भूमिका तथा प्राथमिकताओं को परिभाषित करेंगे परंतु हमें आगे देखने की समस्त करेंगे समर्थ करेंगे और अधिक महिमा में भूमिका की पूर्णता को उस नई पृथ्वी पर हम जो कुछ समझाने के विषय में सोचे यह अति आवश्यक है और उसके समान उसके जुनून में अपनी भूमिका को इस पृथ्वी पर पूरा करें

> और जब सातवें दूत ने तुरही फूंकी, तो स्वर्ग में इस विषय के बड़े बड़े शब्द होने लगे कि जगत का राज्य हमारे प्रभु का, और उसके मसीह का हो गया। प्रकाशितवाक्य 11:15

यह युग आने वाले बदलाव की परछाई में है 2 irjl 3 :7-13 परमेश्वर प्रभु का आत्मिक राज्य ;gqUuk 18:36 पृथ्वी के सारे राजनीतिक राज्यों को निकल लेगा इस दुनिया का राज्य परमेश्वर हमारे प्रभु का राज्य बन गया मसीह के अनंत काल के राज्य की पुष्टिकरण का अर्थ यह क्यों शांत नमूने में कोई फेरबदल नहीं होगा हमारा हमारी भूमिका आनंद काल के राज्य में अनंत राजा के द्वारा स्थाई किया जाएगा जिस स्थान पर उसकी उद्देश्य केवल उसकी महिमा के लिए पूरे किए जाएंगे

यह वायदा अद्भुत है हम कितने आनंदित हैं की यीशु शैतान के उस अधिकार के प्रस्ताव के सामने नहीं झुका कि उसने उस क्रूस की बजाय दूसरा रास्ता नहीं दिया मत्ती 4:8-9 वरन उसने चुना की दुख को उठाए तथा उसके अद्भुत राज्य में परमेश्वर की पूरी महिमा के साथ हमें सुरक्षित करें

निष्कर्ष

परमेश्वर का उद्देश्य केवल हम में पापों से नहीं बचाना परंतु उसकी महान सेवा के लिए योग्य भी बनाना है कि हमें उसके राज्य के कार्य में नियुक्त करें क्या यही पौलुस की मृत्यु से नहीं कहता किमती उस क्योंकि परमेश्वर ने हमें भय की नहीं पर सामर्थ, और प्रेम, और संयम की आत्मा दी है। 2 तिमोथी 1:7 परमेश्वर ने हमें लाइक किया है लास्ट लास सुसज्जित किया है दूसरे हमें डरा सकते हैं हानि पहुंचा सकते हैं परंतु परमेश्वर पूर्ण नियंत्रण में है परमेश्वर का राज्य एक महान राज्य है जिसने अद्भुत कार्यों को पूर्ण किया है निम्नलिखित शब्द प्रेरित पौलुस से लिए गए हैं जब वह अपनी मृत्युदंड का इंतजार कर रहा है दूसरी मृत्यु दूसरा दिमाग क्यों पर अब हमारे उद्धारकर्ता मसीह यीशु के प्रगट होने के द्वारा प्रकाश हुआ, जिस ने मृत्यु का नाश किया, और जीवन और अमरता को उस सुसमाचार के द्वारा प्रकाशमान कर दिया। जिस के लिये मैं प्रचारक, और प्रेरित, और उपदेशक भी ठहरा। 2 तिमोथी 1:10-11

इस पृथ्वी पर मसीह का आना उसके लोगों के लिए छुटकारा कोई लेकर आया क्योंकि उसने मृत्यु को मिटा दिया तथा अनंत जीवन लेकर आया तथा सुसमाचार के द्वारा अमरता को लेकर आया इससे फर्क नहीं पड़ता कि हमारे भविष्य की उस बुलाहट की महिमा कितनी अद्भुत है वर्तमान में हमारे पास जिम्मेदारियां है जिसे हमें पूरा करना है जब पौलुस एक प्रचारक था उसे मसीह की सामर्थ की घोषणा करनी थी जहां भी वह जाए वहां पर हममें से प्रत्येक जो इस पृथ्वी पर रहते हैं सादर पूर्ण जिम्मेदारी के भागी है 2 कुरिन्थियों 5:20 मसीह के राज्य के सिद्धांतों को जीने के लिए क्योंकि परमेश्वर का राज्य खाना पीना नहीं; परन्तु धर्म और मिलाप और वह आनन्द है; रोमियो 14:17 हम परमेश्वर के उस नमक और ज्योति के कार्य को आगे बढ़ाते जाते हैं यह स्मरण रखें कि हमने अपने में इस बात को सुनिश्चित किया है कि परमेश्वर की सामर्थ तथा उसकी प्रेम को अनुमति देंगी कि हमें भारत की उसके राज्य के कार्यक्रम कर सकें जैसा हम करते हैं हम और अधिक परमेश्वर के अद्भुत व्यक्तित्व की झलक का आनंद उठाएंगे परंतु हम भीतरी पूर्णता को भी पाएंगे हमारा जीवन और हमारी शिव इकाइयां हमारे विश्वास को जो परमेश्वर में है बनाने के लिए रची गई है तथा उसके अद्भुत कार्य साथ ही साथ दूसरों के लिए भी

उत्पत्ति हमारा मानचित्र है शुभम बार-बार परमेश्वर की रचना को समझने के लिए बेहतर रूप से उसको देखेंगे

मनुष्य का बाप का स्वभाव निश्चित रुप से उसी समान है

सेवक का गीत यह उनमें से एक है वह एक साथ परमेश्वर लोगों से बोला जाता है तथा मसीह उनके प्रतिनिधि से परमेश्वर के लोग तब उसकी सेवा के लिए भी बुलाए गए हैं

#12 उसकी पवित्रता विभागीय होने का दृढ़ संकल्प

परमेश्वर पूरे दिल से प्रयास को लगाता है कि हमें अपना बनाए तथा अपने आप को किस बात में व्यस्त करता है कि हमें पवित्र लोग बनाएं जो उसकी उपस्थिति में रहें इब्रानियों 12: 4-11 छुटकारा हमें सिद्ध नहीं बनाता परंतु हमें सक्षम बनाता है कि हम आत्मा में चलें और हमारे जीवन के लिए परमेश्वर की इच्छा को खोजें केवल उसके पवित्रता में विभागीय होने के द्वारा ही परमेश्वर अपनी आशीषों को हम पर मिल सकता है बिना कोई दंड के साथ A

9 अध्याय में हमने गुरु घर अनु यह यीशु को आवश्यक था यह हमारे बापू के न्याय को वह अपने ऊपर ले तथा जिस दंड के लिए हम योग्य है उसके लिए क्षमा प्राप्ति को प्राप्त करने की अनुमति दी अनुग्रह हमें अनुमति देता है कि हम परमेश्वर के सिहासन कक्ष में   मस्त के नाम से प्रवेश करें रोमियो 512 है हालांकि वह जीवन भर चलने वाले शुद्धिकरण की प्रक्रिया कि केवल शुरुआत है A

कई विश्वासी एक ठेठ इंजील गलत निष्कर्ष निकालते हैं की पापों की {kमा तथा स्वर्ग में थान की निश्चितता परमेश्वर के इस पृथ्वी योजना को पूरा करता है यह एक बड़ी गलती है क्योंकि हमने प्रभु के पवित्र कार्य को सही रुप से नहीं समझा तथा इसलिए कि यह इस पृथ्वी पर हमारी जीवन में इच्छा अनुरूप परिवर्तन की कमी को दिखाता है इसका प्रति उत्तर उस जवान व्यक्ति के समान है जो उसके पिता द्वारा दी गई विशेष चाबी से मंत्रमुग्ध हैं परंतु फिर भी वह इस बात की खोज नहीं करता यह चाबी किसकी है छुटकारे की कहानी उद्धार के द्वार से कहीं अधिक आगे जाती है यह द्वार केवल एक आरंभ है A

छुटकारे की महिमा हमें क्रूस में मिलती है तथा इस बलिदान की अर्थ हमें मसीही किस रुकता में बदलने की और ले जाना चाहिए मशीनों में महिमा की आशा पुलिसिया 127 परमेश्वर नहीं चाहता कि केवल हमें मौखिक रूप से धर्मी घोषित कर दे वह चाहता है हमें मसीह की धार्मिकता को पहने हुए और उसकी खुद की पवित्रता को हम में बनते हुए ताकि हम हर एक व्यक्ति को मसीही में पूर्ण प्रस्तुत कर सकें A

कलीसिया को आवश्यक है कि परमेश्वर की उसके लोगों के लिए बड़े उद्देश्य को जानना है जैसे वह इस पृथ्वी पर रहते हैं कई कलीसिया हैं इस संदेश को थामे हुए हैं जिसके द्वारा उद्धार प्राप्त होता है और यह है कि वह परमेश्वर के उनके जीवन के लिए महान योजना के प्रति अनजान होते हैं परिणाम स्वरुप कलीसिया कभी भी मर्जी की समानता में नहीं पड़ती तथा जिस कार्य को परमेश्वर ने उनके लिए रखा है उसके प्रति आयोग्य ठहरती है Aइफिसियों 2:10

बगीचे में

पवित्रता का विषय शास्त्रों की शुरूआत में प्रस्तुत किया जाता है तथा अंत तक उसको निरंतर चिन्हांकित किया गया है परमेश्वर की पवित्रता का पहला सबूत अदन की वाटिका में मिलता है जहां परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप में बनाया पुरुष और नारी के रूप में उसने उन्हें रचा उत्पत्ति 1:27 परमेश्वर पवित्र है तथा उसने अपने पवित्रता को पहले पुरुष में दर्शाया तथा स्त्री में जिन्होंने परमेश्वर किस रूप की उस पवित्र पहलू के भागी हुएA

स्त्री और पुरुष परमेश्वर की समानता विभागीय है जब हम मनुष्य के पतन के विषय में बात करते हैं (उत्पत्ति 3) हम मुख्यता मनुष्य के परमेश्वर की समानता की इस भाग को जहां वह पवित्रता का भागी है उसकी हानि के विषय में बात करते हैं जो है जिन चीजों से हम प्रेम रखते हैं जो हम सोचते हैं तथा करते हैं उसको प्रभावित करती है सहभागी पवित्रता के साथ मनुष्य परमेश्वर की इच्छा को जानने में आनंदित होता है तथा पतंग से पहले उसको पूरा करने का प्रयत्न करता है मनुष्य केवल कुछ नियमों का पालन नहीं कर रहा वहां एक संबंध का भागीदार है क्योंकि वह जानते थे कि किन बातों से परमेश्वर प्रसन्न होता है तथा अप्रसन्न होता है उन्होंने कुछ प्रकार के व्यवहारों को अलग किया तथा परमेश्वर को पसंद करने वाले सोच मैं आनंदित हुए व्यवस्था जो काफी पश्चात में आई इन व्यवहारों के लिए मार्गदर्शन उपलब्ध कराती हैA

परमेश्वर को यह सहभागी संबंध इतना पसंद आया कि उसने इसको बढ़ाने के लिए एक योजना को बनाया परमेश्वर ने उनको आशीष की तथा परमेश्वर ने उनसे कहा बलवंत हो बढ़ जाओ तथा इस पृथ्वी पर

फैल जाओ परमेश्वर को मनुष्य के साथ सहभागि पवित्रता कितनी प्रिय लगी कि उसने इस योजना का आरंभ किया कि पृथ्वी पर को लोगों से भर दे उसका दर्शन यह है हर एक मनुष्य को वह अपने महान प्रेम तथा उसके ज्ञान के द्वारा सुसज्जित करें ताकि उसके साथ वह उसकी महान योजना को पूर्ण करने में सहभागी हूं यह दर्शन सुसमाचार प्रचार तथा मिशन के पीछे है यह परमेश्वर की प्रेम योजना है A

पतन के साथ चीजें खराब रूप में परिवर्तित हुई पर यह आवश्यक है कि हम उसकी मूल योजना को मन में रखें क्योंकि यह हमारी सहायता करती है इस बात को स्मरण रखने के लिए कि परमेश्वर मसीही में अपनी छुटकारे की योजना के द्वारा क्या पूरा कर रहा है पतंग की वास्तविकता हमें यह भी स्वर्ण दिलाती है उस निरंतर चुनौती के विषय में जिसका सामना प्रभु उस तापमान मनुष्य को अपनी उपस्थिति में लाने के लिए सामना करता है A

एक तरफ परमेश्वर को अपने वचन को पूरा करना था कि मनुष्य को उसके   पाप के कारण मृत्यु दे (उत्पत्ति 2:7) परंतु दूसरी तरफ परमेश्वर ने अपने आप को इस बात के लिए समर्पित किया है कि वह अनगिनत लोगों की रचना करें जो उसके साथ एक करीबी संबंध में रहे परमेश्वर की योजना में यह तनाव पूरे शास्त्रों में दिखता है तथा यीशु के शब्दों में इस बात की ओर संकेत दिया जाता है   जिस ने मुझे भेजा है; हमें उसके काम दिन ही दिन में करना अवश्य हैवह रात आनेवाली है : जिस में कोई काम नहीं कर सकता। यूहन्ना 9:4 दूसरे शब्दों में हमें परमेश्वर कि मिशन को प्राथमिकता देनी है इससे पहले क्योंकि आएगा वह दिन और समीप आ जाएA

परमेश्वर की सबसे बड़ी चुनौती अब यह है कि अपने आप को इस बात के लिए समर्थ करें कि उन लोगों के साथ करीबी में रहे जो आप उसके पवित्र स्वभाव कि भागी नहीं रहे बिना उनका न्याय किए हुए शुरुआती कार्यों में परमेश्वर ने अपनी महिमा में सामर्थ को प्रकट किया तथा अपने लोगों से मांग की आवश्यकता के कारण इसी कारण से अनन्या और सफेरा पर न्याय आया izsfjrksa ds dke 5) हमारे जीवन में सम्मिलित होने के द्वारा परमेश्वर हमारे विश्वास को मजबूत करने का प्रयास करता है अपनी विश्वास योग्यता को हम पर प्रकट करने के द्वारा जैसे हम उस पर भरोसा रखना सीखते हैं हम उसकी आशीषों को अपने लिए तथा अपने आसपास वालों के लिए और अधिक सुरक्षित करते हैं A

परमेश्वर की समीपता के लिए पवित्रता आवश्यक है

परमेश्वर की सेवा के लिए आवश्यक है कि एक मनुष्य परमेश्वर को जाने तथा उसमें परमेश्वर की आज्ञा मानने की इच्छा हो परमेश्वर अपने लोगो की पवित्रता के विषय में अत्यधिक चिंतनशील रहता है क्योंकि बिना उसके वह उसकी सेवा नहीं कर सकते प्राकृतिक मनुष्य मैं परमेश्वर को प्रसन्न करने की बहुत कम रुचि होती है तथा उसके वह विरुद्ध रहता है A रोमियों 8:7 परमेश्वर की न्याय की सोच के कारण मनुष्य का पाप उसके क्रोध को बढ़ाता है तथा न्याय को लेकर आता है पर परमेश्वर ने दूसरी माध्यमों को बनाया है जिनके द्वारा वह अपने इस न्याय को थाम सके तथा इसलिए कि उसकी लोग उसको जान सके तथा उसे प्रेम कर सके पुरानी नियम की व्यवस्था तथा उससे जुड़ी राजकीय कार्य पुराने नियम में सबसे बड़ी योजना है जिसने परमेश्वर को अपनी महिमा अपनी लोगों के बीच दिखाने के लिए समर्थ किया बिना अपने न्याय को उन पर

लाए हुए परंतु फिर भी उन्हें परमेश्वर द्वारा निर्धारित नियमों के अनुसार जीना आवश्यक थाA

पुराने नियम में

परमेश्वर चाहता है कि हम पवित्र हो तथा उसके साथ   समीपता में रहे वह यह बात पुरानी नियम में भी चाहता था हालांकि व्यवस्था   हमारे बापू को प्रगट करने के उसका और अधिक बड़ा उद्देश्य यह था कि अपने लोगों को उसकी निकटता में रहने के लिए समर्थ करें A

हम में से कई लोग व्यवस्था के भावों को पढ़ते हैं जैसे कि निर्गमन लेवी व्यवस्था गिनती तथा व्यवस्थाविवरण की पुस्तकें हम व्यवस्था की बारीकी को देखकर आत्मविभोर हो जाते हैं उन्हें यह बताया गया था कि वह क्या खा सकते हैं या नहीं कैसे खेती करना है कैसे अपने शरीर ऊपर नहीं गुदवाना है कैसे स्त्रियों को अपने मासिक धर्म के समय में विशेष नियमों का पालन करना है इत्यादि यह नियम परमेश्वर के सारे लोगों पर लागू हुए यह वाक्यांश मेरे लोग परमेश्वर के द्वारा उत्पत्ति के अंत में इस्तेमाल किए गए इस्राएलियों का विवरण देने के लिए क्योंकि उसके साथ वह विशेष स्तर के कारण से और यह पूरे शास्त्रों में निरंतर चलता है Aविशेषकर पुराने नियम में निर्गमन 3:7A

मेरे लोग उस वाक्यांश के समान नहीं कि हमारी समानता में परंतु इनके बीच में विशेष समानताएं हैं परमेश्वर ने बड़े कदमों को उठाया कैसे लोगों को ढाल और बना सकें जोउसको तथा उसके मार्ग को बहुमूल्य समझ सकें प्रभु ने 400 वर्ष की मिस्त्र में उस इतिहास को संभाल किया तथा वहां से वायदे किए हुए देश में जाने तक की याकूब के गोत्र को ऐसे लोगों में डाल सके जो उस संस्कृति के इर्द-गिर्द हो जो

यहोवा का आदर करते हैं यह वाक्य है मेरी लोग बाइबिल में 217 बार इस्तेमाल किया गया हैA

परमेश्वर के लोगों के लिए एक विशेष पद छुटकारे मैं अति महत्वपूर्ण है क्योंकि यह उनको पहचान देता है जो परमेश्वर के साथ सक्रिय रूप से कार्य कर रहे हैं तथा उन्हें उसके समान होने के लिए विस्मरण दिलाता है एक व्यक्ति पुत्र उत्पन्न कर सकता है परंतु अविश्वास तथा दूसरे कारणों से वह पुत्र अपने आप को उस पिता से अलग कर सकता है यह बात परमेश्वर के साथ संबंध में भी सत्य है जब एक व्यक्ति परमेश्वर के लोगों का एक भाग बुलाया जाता है तथा फिर भी वह परमेश्वर पर भरोसा नहीं रखता तो यह एक विरक्त संबंध की ओर ले जाता है A

व्यवस्था उसके कई नियमों के मानने के द्वारा लोगों के लिए एक माध्यम बन गया कि परमेश्वर की उपस्थिति में रह सकें यदि इसे अच्छे से समझा जाए व्यवस्था ने परमेश्वर के भाई को उनमें डाला यह तनाव जो इस्राइलियों तथा परमेश्वर की व्यवस्था के बीच में था वह पूरे पुराने नियम मनचला क्योंकि वह बार-बार उससे दूर जाते रहे: भजन कार जो कहता है उस पर हम ध्यान दें:

परन्तु मेरी प्रजा ने मेरी न सुनी; इस्त्राएल ने मुझ को न चाहा। भजन संहिता 81:11,

यदि मेरी प्रजा मेरी सुने, यदि इस्त्राएल मेरे मार्गों पर चले, भजन संहिता81:13

कुछ लोग व्यवस्था को परमेश्वर की एक तानाशाही औजार के रूप में समझते हैं कि वह उनकी इच्छा के विरुद्ध उनको नियंत्रित करें

परंतु इस बात को एक विशेष माध्यम के रूप में समझा जाना चाहिए जिसके द्वारा वह परमेश्वर की उपस्थिति में रह सकते हैं तथा अपनी आज्ञाकारिता के द्वारा परमेश्वर की आशीषों को प्राप्त कर सकते हैं व्यवस्थाविवरण 26 1619 उन्हें केवल परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना था कि परमेश्वर की आशीष को अपने जीवन के हर क्षेत्र में देख सकें फसल मौसम स्वास्थ्य सुरक्षा अपने शत्रुओं से इत्यादि A

पुराने नियम के अधीन में

अब हम उन विभिन्न तरीकों को देखेंगे जिसे परमेश्वर ने पूरे पुराने नियम के समय में इस्तेमाल किया कि इस गाड़ियों को अपने करीबी में लेकर आ सकें उनको मेरे लोग बुलाने के द्वारा उसने उन्हें दूसरों से अलग किया उसकी योजना हालांकि यह थी कि अपने आप को उस बंद संस्कृति से बाहर दिखा सकें लोगों को परमेश्वर की आशीषों की ओर आकर्षित करने के द्वारा वह परिणाम स्वरुप परमेश्वर के लोगों के साथ जुड़ सकते थेA

जितना अधिक परमेश्वर के करीब एक व्यक्ति है उतना ही आप परमेश्वर को समझ सकते हैं तथा उसकी योजना में शामिल हो सकते हैं परमेश्वर के साथ यह संबंध अत्यधिक महत्वपूर्ण है उनके लिए जो अधिकार में है जैसे राजाA

राजा

इसराइल के राजा अपने विशेष ध्यान के द्वारा परमेश्वर के लोगों पर एक बड़े प्रभाव को लेकर आए सरकार उन लोगों के कल्याण को प्रभावित करती है राजाओं को यह कहा गया था कि परमेश्वर के वचन को प्रत्येक वर्ष पढ़ें ताकि वह जान सकें कि परमेश्वर उन से क्या अपेक्षा

करता है याद को किस सही कार्य के द्वारा तथा मिलाप वाला तंबू पर परमेश्वर की उपस्थिति के द्वारा राजा आ सकते थे तथा परमेश्वर की आशीष हो तथा उसकी इच्छा को खोज सकते थे वह सुरक्षा को प्राप्त कर सकते थे भविष्यवक्ता तथा परमेश्वर की व्यवस्था को नजरअंदाज कर सकते थे और अपने आप को अत्याधिक मुश्किल परिस्थितियों में पा सकते थे A

पुराने नियम की राजकीय इतिहास उन लोगों से भरा है जो परमेश्वर के अनुसार नहीं चलें उन्होंने केवल अपने मार्गों को ही देखा आप ध्यान दें किस रीती से वचन अच्छे और बुरे राजाओं के बीच में अंतर को दिखाता है उन तरीकों के द्वारा जिससे उन्होंने परमेश्वर को खोजा और नहीं खोजाA

> नाबात के पुत्र यारोबाम के राज्य के अठारहवें वर्ष में अबिय्याम यहूदा पर राज्य करने लगा। और वह तीन वर्ष तक यरूशलेम में राज्य करता रहा। उसकी माता का नाम माका था जो अबशालोम की पुत्री थी*;* वह वैसे ही पापों की लीक पर चलता रहा जैसे उसके पिता ने उस से पहिले किए थे और उसका मन अपने परमेश्वर यहोवा की ओर अपने परदादा दाऊद की नाईं पूरी रीति से सिद्ध न था*;* 1 राजा 15:1-3 ,
>
> यहूदा के राजा आसा के दूसरे वर्ष में यारोबाम का पुत्र नादाब इस्राएल पर राज्य करने लगा*;* और दो वर्ष तक राज्य करता रहा। उसने वह काम किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था और अपने पिता के मार्ग पर वही पाप करता हुआ चलता रहा जो उसने इस्राएल से करवाया था। 1 राजा 15: 25-26

राजा अभीजाम पूर्ण रूप से प्रभु के प्रति समर्पित नहीं था उत्तरी इजरायल का राजा नादान अपने परमेश्वर की नजरों में पाप किया दुष्टता भाषित होती है कि एक व्यक्ति जिस जीवनशैली की आज्ञा परमेश्वर ने दी है उसके विरुद्ध जीवन जीता है परमेश्वर के अनुसार बिताया गया जीवन परमेश्वर के अनुग्रह को राजा तथा उसके राज्य पर सुरक्षित करता परंतु एक दुष्ट जीवन विनाश तथा श्राप को उन पर लेकर आता राजा सुलेमान का शुरुआती राज्य इस बात का उदाहरण है कि आज्ञाकारिता के द्वारा आशीष से आती है परंतु दुर्भाग्यवश यह आशीष से जल्दी जाती रही आने वाले जीवन में उसकी आज्ञाकारिता के कारण अब वह परमेश्वर की मांगों को नहीं खोजता था और सुलैमान ने वह किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है, और यहोवा के पीछे अपने पिता दाऊद की नाईं पूरी रीति से न चला। (1 राजा 11:) और उसने दुष्टता की उसके चुनाव ने परमेश्वर को उसके साथ कार्य करना असंभव हो गया बिना उसका न्याय किए हुए अब जैसे शुरुआती जीवन में था अब वह समान हृदय और मन को परमेश्वर के साथ नहीं रख पाया तथा वह परमेश्वर की महिमा को विश्वभर में उसकी महिमा को प्रदर्शित करने के परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा नहीं कर पायाA

भविष्यवक्ता

भविष्यवक्ताओं को राजाओं से दूसरे दूसरे रूप में परमेश्वर की सेवा के लिए बुलाया गया हम देख सकते हैं कि पवित्र आत्मा विशेष रूप से इन पवित्र भविष्यवक्ताओं के ऊपर आया (पतरस 3:2) इस कारण से परमेश्वर और सीधे रूप से इनके द्वारा कार्य कर सकाA

परमेश्वर ने इन भविष्यवक्ताओं के द्वारा जैसे यशायाह दानियल f;eZ;kg के कार्य किया जिन्होंने बाइबिल की कई पुस्तकों को लिखा परंतु और अधिक कई और थे जैसे भविष्यवक्ता नाथन जिसने राजा दाऊद के जीवन में एक मुख्य भूमिका को निभाया (भजन संहिता 51:1)

यहां तक कि शमशन भी जोहन आज्ञाकारी तथा हटीला था परमेश्वर के द्वारा एक न्याय के रूप में सेवा करने के लिए बुलाया गया उसके लड़वाले कदमों के बावजूद परमेश्वर का आत्मा उस पर आया तथा उसे समर्थ कि वह कि वह परमेश्वर की इच्छा को पूरा करें तब यहोवा का आत्मा उस पर बल से उतरा, और यद्यपि उसके हाथ में कुछ न था, तौभी उसने उसको ऐसा फाड़ डाला जैसा कोई बकरी का बच्चा फाड़े। अपना यह काम उसने अपने पिता वा माता को न बतलाया। U;kf;;ksa14:6

परमेश्वर अपनी सेवकों की आज्ञाकारिता के द्वारा कार्य करने को प्राथमिकता देता है हालांकि उसने इस बात को सिद्ध किया है कि वह समर्थ है कि उसके कार्य को बिना हठीले व्यक्तियों की भी वह पूरी कर सकता है

लेवी

लव यू को चुना जाता था कि वह एक विशिष्ट सौभाग्य को बाय कि परमेश्वर के करीब रह सकें वह मेरी लोगों का भाग है परंतु वह विशेष नियमों का पालन करेंगे क्योंकि उनकी उस विशेष बुलाहट के कारण कि वह प्रभु की पवित्र उपस्थिति में सेवा करें हारुन हारुन की यह लिखा है A इब्रानियों 5:4)

हारून को समझाकर यह कह, कि जब जब तू दीपकों को बारे तब तब सातों दीपक का प्रकाश दीवट के साम्हने हो। और उन्हें इस्त्राएलियों में से अलग करना, सो वे मेरे ही ठहरेंगे। जब तू लेवियों को शुद्ध करके हिलाई हुई भेंट के लिये अर्पण कर चुके, उसके बाद वे मिलापवाले तम्बू सम्बन्धी सेवा टहल करने के लिये अन्दर आया करें।

गिनती 8:2 14 ,15 esv)

लेवियो के पास मिलाप वाले तंबू तथा मंदिर की जिम्मेदारी थी जो वंश में बांटी गई थी gkykadh वह अभी भी परमेश्वर के लोगों की महान बुलाहट के अधीन थेA

एक अच्छा उदाहरण

ihन्हांस अरोन का पोता है (fuZxeu 6%25)दयालु हृदय के विषय में बताता है जिसे परमेश्वर ढूंढता है जब कुछ इस्त्राइली विदेशी स्त्रियों के साथ अनैतिक कार्य कर रहे थे तो उसने वाले को लेकर नियम तोड़ने वाले जोड़े को एक बार में खत्म किया इसे देखकर एलीआजर का पुत्र पीनहास, जो हारून याजक का पोता था, उसने मण्डली में से उठ कर हाथ में एक बरछी ली, गिनती 25:7) परमेश्वर इसी प्रकार के व्यक्ति को खोजता है

हारून याजक का पोता एलीआजर का पुत्र पीनहास, जिसे इस्त्राएलियों के बीच मेरी सी जलन उठी, उसने मेरी जलजलाहट को उन पर से यहां तक दूर किया है, कि मैं ने जलकर उनका अन्त नहीं कर डाला। गिनती 25:11

यह वही मिन्हास था जो परमेश्वर की लोगों की पवित्रता के विषय में चिंतित था जब नियमों के अंत में दुनिया मीनू के बीच में अनैतिकता फैल गई और पीनहास, जो हारून का पोता, और एलीआजर का पुत्र था उन दिनों में उसके साम्हने हाजिर रहा करता था।(उन्होंने पूछा, क्या मैं एक और बार अपने भाई बिन्यामीनियों से लड़ने को निकल जाऊं, वा उन को छोडूं? यहोवा ने कहा, चढ़ाई कर; क्योंकि कल मैं उन को तेरे हाथ में कर दूंगा। न्यायियों 20:28 सिन्हा का परमेश्वर के साथ संबंध था इसी कारण से उसके उस ज्ञान पर कि परमेश्वर किस बात से प्रीति रखता है तथा किस बात से घृणा करता है उस पर प्रभाव डालता है इस दृष्टिकोण ने उस बात को टाला कि वह क्या पसंद करता तथा किस बात से घृणा करता है जिसने उसे प्रेरित किया कि परमेश्वर की ओर से इस कदम को उठा सकें

अनुशासन तथा बंधवाई तथा पुनर्स्थापना

पुराने नियम के अंत में परमेश्वर के लोगों ने बार बार उसको खोजने से इनकार किया उनकी आज्ञाकारिता के कारण उन्होंने भयानक न्याय का सामना किया उन्हें उनकी भूमि से निकाल दिया गया तथा दूर की देशों में बंधुओं के रूप में ले जाया गया क्योंकि वह समय आ पहुंचा है, कि पहिले परमेश्वर के लोगों का न्याय किया जाए, और जब कि न्याय का आरम्भ हम ही से होगा तो उन का क्या अन्त होगा जो परमेश्वर के सुसमाचार को नहीं मानते? 1 पतरस 4:17

परमेश्वर ने पहले से ही हर एक संभव मौका उनको दिया था अब जब उनका अन्याय हो गया तो ऐसा प्रतीत होता है कि हमेशा के लिए वह भुला दिए गए परंतु अनारक्षित होता है परमेश्वर फिरसे अपने

असीम संयम को तथा दया को दिखाते हुए उन्हें एक वायदा देता है इस्त्राइलियों के भयावह न्याय के बावजूद परमेश्वर एक आश्चर्यजनक योजना को बनाता है कि 70 वर्ष की अन्य जाति राजाओं के अधीन की बंधवाई से वापस उन्हें लेकर आए

यह सब इसलिये हुआ कि यहोवा का जो वचन यिर्मयाह के मुंह से निकला था, वह पूरा हो, कि देश अपने विश्राम कालों में सुख भोगता रहे। इसलिये जब तक वह सूना पड़ा रहा तब तक अर्थात सत्तर वर्ष के पूरे होने तक उसको विश्राम मिला। फारस के राजा कूस्रू के पहिले वर्ष में यहोवा ने उसके मन को उभारा कि जो वचन यिर्मयाह के मुंह से निकला था, वह पूरा हो। इसलिये उसने अपने समस्त राज्य में यह प्रचार करवाया, और इस आशय की चिट्ठियां लिखवाईं, कि फारस का राजा कूस्रू कहता है, कि स्वर्ग के परमेश्वर यहोवा ने पृथ्वी भर का राज्य मुझे दिया है, और उसी ने मुझे आज्ञा दी है कि यरूशलेम जो यहूदा में है उस में मेरा एक भवन बनवा; इसलिये हे उसकी प्रजा के सब लोगो, तुम में से जो कोई चाहे कि उसका परमेश्वर यहोवा उसके साथ रहे, तो वह वहां रवाना हो जाए। 2 इतिहास 36: 21-23

कठोर परमेश्वर की बजाए हम यह पाते हैं कि परमेश्वर के लोग जो अपने स्वयं केंद्रित मार्गो में नियमित चल रहे थे वह कठोर हो गए थे परमेश्वर पर यह दबाव आता है कि बड़े कदम को उठाए उन लोगों को बदलने के लिए जो उसके प्रति समर्पित नहीं

नई वाचा के अधीन

जो हम पुराने नियम में देखते हैं वह बड़े तौर पर नए नियम में सत्य है परमेश्वर एक उपाय को करता है जिसके द्वारा लोग उसके पास आ

सकते हैं तथा आशीषित हो सकते हैं दोनों में एक अंतर जो है वह उधार है मसीह के द्वारा उद्धार परिवर्तन के तत्व का परिचय देता है जिसके द्वारा परमेश्वर के लोग जो नई वाचा के अधीन है परमेश्वर के समीप आ सकते हैं नई वाचा और भी अधिक बड़ी और पूर्ण है परंतु परमेश्वर का उद्देश्य तथा उसके तरीके मुख्य था वही है जिन्हें हम पुराने नियम में पाते हैं यहां तक कि जब हम अनाज या कार्यकता के परिणामों के विषय में भी देखते हैं

मैं अपने पार्क में पतन के साथ परमेश्वर की स्वरूप को खो दिया हम यह चाहते हैं कि उद्धार के द्वारा मस्ती के सच्चे ज्ञान के द्वारा उसका नवीनीकरण हो सकता है खुशियों 310 पुराने मनुष्य के लिए कोई आशा नहीं जो अमृत है तथा प्रथम आदम के अधीन दोषी है हालांकि मस्ती में हमारे पास एक नया मनुष्यत्व है एक नया जीवन जो उस इच्छा को की मसि को जाने तथा उसके समान बने पुनर्निर्मित करता है पवित्रता की और का मार्ग तब मसीह यीशु को और बेहतर जानने का मार्ग है तथा जो वह चाहता है कि हम करें उसे करने का A

पहला पतरस

अब चीजें बदल गई हैं परमेश्वर अपने लोगों को यीशु के द्वारा धर्मी देखता है जो उन्हें समर्थ करता है कि उसके सिंहासन के सामने आ सके तथा उसकी सेवा कर सके यीशु हमारा मgk;ktd बन जाता है हमारा वकील हमारे साथ है जैसे हम प्रार्थना करते हैं यीशु के नाम से परमेश्वर अपने पवित्र स्वभाव को हमसे बांटता है हमें अपने वचन के द्वारा जीवन को हमने जन्म देता है पतरस जो यीशु का चेला था कहता है 1 पतरस 1:23 और पवित्र आत्मा का बंधन यह है कि वह हमें धर्मी घोषित करता

है, लेकिन हमें अभी भी व्यक्तिगत पवित्रता का पीछा करने की आवश्यकता है, जो यीशु के चेलों में से एक ने कहा A

पर जैसा तुम्हारा बुलाने वाला पवित्र है, वैसे ही तुम भी अपने सारे चाल चलन में पवित्र बनो। क्योंकि लिखा है, कि पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूं। और जब कि तुम, हे पिता, कह कर उस से प्रार्थना करते हो, जो बिना पक्षपात हर एक के काम के अनुसार न्याय करता है, तो अपने परदेशी होने का समय भय से बिताओ। क्योंकि तुम जानते हो, कि तुम्हारा निकम्मा चालचलन जो बाप दादों से चला आता है उस से- तुम्हारा छुटकारा चान्दी सोने अर्थात नाशमान वस्तुओं के द्वारा नहीं हुआ। पर निर्दोष और निष्कलंक मेम्ने अर्थात मसीह के बहुमूल्य लोहू के द्वारा हुआ। 1 पतरस 1:15-19

छुटकारा स्वभाव पवित्र जीवन का संचय करता है हम हमारे जीवन के व्यर्थ मार्गो से छुड़ा लिए गए हैं हमारे जीवन अद्भुत रीति से यीशु के प्रेम के द्वारा बचा लिए गए हैं कि हमारा परमेश्वर के प्रति भक्ति और अधिक गहरी होती चली जाए हमारा छुटकारा नाशवान वर्षों से नहीं परंतु बहुमूल्य लहू से हुआ है पतरस इस बात की ओर इशारा करता है ताकि हम जैसे वह पवित्र है पवित्र हूं जब हम पवित्र बनते हैं तब हम परमेश्वर के चरित्र तथा परमेश्वर के चुनाव को दर्शा सकते हैं लोग इन दोनों को अलग अलग करते हैं परंतु इन्हें एक रूप में देखा जाना चाहिए पवित्रता परिभाषा के तौर पर जो एक व्यक्ति है और वह करता है उसको अलग अलग दिखाता है धर्मी घोषित होने का अर्थ हमें यह दिखाने के लिए है कि हम धनी जीवन जी सकते हैं इसका कोई और तर्कपूर्ण उत्तर नहीं है यह हमारे जीवन के उद्देश्य के ऊपर प्रभाव डालना चाहिएA

परमेश्वर के छुटकारे की प्रक्रिया का अंतिम लक्ष्य है पापों से शुद्ध होना उस प्रक्रिया का भाग है जो मनुष्य को अनुमति देता है कि वह परमेश्वर की उपस्थिति में रहे पवित्रता ऐसा प्रतीत होता है कि हमें ऐसे जीवन की और बुलाती है जिसकी मांग को हम में से कोई भी पूरा नहीं कर सकता परंतु परमेश्वर उसका दावा करता है तथा हमें समर्थ करता है पवित्रता उसकी उपस्थिति में रहने की प्राकृतिक आवश्यकता है तथा उसके कार्य को करने के लिए भाग्य वर्ष हमारे पास हमने पवित्र आत्मा काम करता है हमारी सहायता करता है कि हम परमेश्वर से तथा उसके बातों से प्रेम रखेंA 1 पतरस 1:2

स्त्री और पुरुष भले कार्य के द्वारा बचाए नहीं जा सकते परंतु फिर भी उन को बुलाया गया कि उन कार्य को करें यह फल कार्य परमेश्वर को जानने के प्राण परिणाम स्वरुप बहता है यह वाक्य अंत भले कार्य 6 बार इस्तेमाल होता है हमारी बुलाहट को स्मरण दिलाने कि उन कार्यों को करें जो यदि परमेश्वर शारीरिक रूप से पृथ्वी पर होता तो करता हम परमेश्वर के सहकर्मी हैं जो अपने स्वामी की इच्छा को पूरी करता है A

कलीसिया ही अनुशासन

परमेश्वर ने कलीसिया ई अनुशासन को ठहराया (1 कुरिन्थियों 11:27-32, प्रेरितों के काम 5:1-11)अपने लोगों को पवित्र रखने के लिए अपेक्षा करता है की कलीसिया कल एशियाई अंगूर के सामने जवाबदेही रहे (18:15- 20) यह परमेश्वर की वह इच्छा कि अपने लोगों को पवित्र बनाएं तथा उन को पवित्र रखें उसके अनुरूप है परमेश्वर एक पिता के रुप से अपने संतान कि ताड़ना करता है (इब्रानियों 12:7)

प्रकाशितवाक्य में यीशु के वचन A

आज चलने वाली आशीष है आज्ञाकारिता के साथ जुड़ी हुई है यदि आपको कलीसिया में सहा जाता है तो आशीषें रूक जाएंगी परमेश्वर न्याय को रखेगा ताकि रिश्ता को रोक सके हालांकि यह आशीषों को रोकेंगे यीशु इन बातों को प्रकाशितवाक्य अध्याय 2 तथा 3 में कहता है आइए इन कुछ पदों को देखें

इफिसियों सो चेत कर, कि तू कहां से गिरा है, और मन फिरा और पहिले के समान काम कर; और यदि तू मन न फिराएगा, तो मै तेरे पास आकर तेरी दीवट को उस स्थान से हटा दूंगा। प्रकाशितवाक्य 2:5 यदि कलीसिया की पुनर्स्थापना होनी है तो पाप का हटाया जाना जरूरी है अंयथा और अधिक बड़ा पाप वहां प्रवेश करेगा क्या कलीसिया के पास चुनाव है निश्चित रुप से हर एक चुनाव का परिणाम होता है

थुआतीरा और मैं उसके बच्चों को मार डालूंगा; और तब सब कलीसियाएं जान लेंगी कि हृदय और मन का परखने वाला मैं ही हूंऔर : मैं तुम में से हर एक को उसके कामों के अनुसार बदला दूंगा। प्रकाशितवाक्य 2:23 यीशु न्याय को लेकर आएगा यदि उसके लोग पाप में बने रहते हैं एक व्यक्ति का प्रतिउत्तर निश्चित परिणाम को लेकर आता हैA

लोदीकिया मैं जिन जिन से प्रीति रखता हूं, उन सब को उलाहना और ताड़ना देता हूं, इसलिये सरगर्म हो, और मन फिरा। देख, मैं द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता हूं; यदि कोई मेरा शब्द सुन कर द्वार खोलेगा, तो मैं उसके पास भीतर आ कर उसके साथ भोजन करूंगा, और वह मेरे

साथ।   प्रकाशितवाक्य 3:19-20) परमेश्वर की सीधी डांट को हम यहां पुनः देख सकते हैं और यह परमेश्वर के लोगों को उस धार्मिकता के मार्ग पर लाने के लिए है वह उनको पुकारता है अपनी उपस्थिति में आने के लिए उस दुष्टता से दूर A

परमेश्वर का अनुग्रह का निरंतर प्रस्ताव जब हम पाप में भी दूर चले जाते हैं एक चमकते हुए रोशनी घर के समान खड़ा रहता है जैसे पुराने नियम में परमेश्वर की लोगों को इस बात का भय आया कि परमेश्वर के पीछे ना चलने की इच्छा के कारण से वह बाहर निकाल दिए जाएंगे तथा क्योंकि कुछ लोगों ने पश्चाताप नहीं किया परमेश्वर की ओर से मार को प्रचलित करने वाली आशा की मशाल को खो दिया यह स्पष्ट है कि यदि लोग उसकी आज्ञा मांगेंगे तो परमेश्वर के पास बेहतर योजनाएं हैंA

समर्पित (रोमियो 12:1-2)

विश्वासी लोग अपने आप को पवित्र सोचने से नफरत करते हैं शायद उसको गलती से स्वर धार्मिकता के रूप में लेते हैं पवित्रता एक घमंडी हृदय की सड़ा हट की बदबू से कहीं अलग है परमेश्वर के पास कोई पछतावा नहीं जब वह हमसे कहता है कि वह क्या करता है तथा उस स्थान पर लेकर आता है जाना चाहता है एक खरा पवित्र व्यक्ति इस बात से सुनिश्चित है कि उसकी धार्मिकता चाहे घोषित की गई हो या जी गई हो वह परमेश्वर की ओर से पौलुस कहता है कि परमेश्वर की दया के द्वारा हम उस समर्पण के स्थान पर आ सकते हैं (रोमियो 12:1 , 11:36) में परमेश्वर के अनुक्रमे जो हमारे जीवन में लाता है स्पष्ट है उसके द्वारा और उससे ही और उसके लिए सब कुछ है उसकी महिमा

सर्वदा होती रहे आमीन हमें नम्रता से इसका पति उत्तर देना है तथा धन्यवादी और समर्पित हृदय के साथA

क्या मसीह को किसी ने स्व धार्मिकता के लिए दोषी ठहराया नहीं परमेश्वर का प्रेम तथा उसकी सामर्थ्य जो उसके जीवन में थी वह दूसरों को उत्साहित करने तथा चंगा करने के लिए उपयोग की गई यीशु केवल अपने पिता की इच्छा को पूरी कर रहा था परमेश्वर के प्रति समर्पित तथा उसके उद्देश्य के प्रति रोमियो 12:1-2) हम अपने कुछ भाग को उस वेरी पर नहीं रख सकते या तो सब कुछ या कुछ नहीं वह हमें समर्पण के उत्थान पर लेकर आता है ताकि हम पूर्ण रूप से उसके उपयोग में आ सकें पौलुस अमित चुनौती देता है क्योंकि वह जानता है कि पवित्रता का अर्थ अलग परमेश्वर के लिए अलग किया जाना है पूर्ण रुप से समर्पित और जो हम कर सकते हैं और हमें करना भी है यह संपूर्ण समर्पण के इस समय में हम परमेश्वर की इच्छा को सिद्ध करते हैं जो भली है अपनाने योग्य है तथा सिद्ध है A रोमियो 12: 2)

निष्कर्ष

पवित्र होने की बुलाहट के द्वारा परमेश्वर हमारे उत्तम को ढूंढता है हमारी उस इच्छा पर कार्य करते हुए कि हमें आशीष प्राप्त करें संघर्षों से बचें तथा सफलता को प्राप्त करें परमेश्वर हमारे भरोसे को बनाना चाहता है ताकि हम उसके निकट आ सकें और वह हमारे A

यह अध्याय इस बात को रखकर आरंभ होता है कि परमेश्वर का जुनून कि हमें उस की पवित्रता में पुनर्स्थापित करें उसने हमें अपनी सुरक्षा में बनाया तथा मसीह के द्वारा वह हमें पुनः रच रहा है बाइबिल इसी संदेश के साथ समाप्त होती है जो अन्याय करता है, वह अन्याय ही

करता रहे; और जो मलिन है, वह मलिन बना रहे; और जो धर्मी है, वह धर्मी बना रहे; और जो पवित्र है, वह पवित्र बना रहे। प्रकाशितवाक्य 22:11

परमेश्वर हमें धर्मी नहीं बना रहा वह एक समान हृदय को रखता है तथा हमारे साथ उस जुनून को वह हमें उसके स्वर्गीय सिहासन कक्ष के लिए आमंत्रण देता है कि उसके साथ हम राज्य करें इफिसियों 2:6 हम कैसे बनता अपेक्षा कर सकते हैं कि परमेश्वर हमारे द्वारा कार्य करें जब हम आपको हमारे विचारों तथा मनु पर प्रभाव डालने की अनुमति देते हैं हम आशा रखें कि कि यह पीढ़ी वहां पढ़ी हो जो उसकी बड़ी तथा पवित्र बुलाहट के लिए खड़ी हो जाए कि परमेश्वर की उपस्थिति में जीवन को जिए और परमेश्वर के राज्य को इस पृथ्वी पर लेकर आएA

1. मसीह के द्वारा परमेश्वर को जानने की आवश्यकता पर जोर इस बात से उत्पन्न होता है रुढ़ीवादी धार्मिक विश्वासी यू इस बात को नजरअंदाज किया है किसी समाचार को पूर्ण रुप से सुनाएं तथा और हम उधार पंथी जो इस बात से नफरत करते हैं की यीशु किलों के द्वारा उद्धार आयाA
2. पौलुस कहता है कि व्यवस्था हमें मसीह की ओर ले जाने वाला शिक्षक है परमेश्वर व्यवस्था का इस्तेमाल करता है कि लोगों को अपनी ओर लेकर आए यह उनकी कमजोरी को प्रकट करता है परंतु यह उन से छीना नहीं जाता किस प्रकार से व्यवस्था ने उन्हें समर्थ किया परमेश्वर की उपस्थिति में और निकट जा सकेA
3. ऐसा प्रतीत होता है कि प्रभु ने अब्राहम के साथ ऐसा किया है कि वह उसे वहां जाने के लिए लुभाए, जहां उसने उसे निर्देश दिया था
4. सुलेमान का परेशान हृदय हम उसकी अंतिम बुक दोस्त ने लिखी सभोपदेशक में देख सकते हैं A

5. अनुशासन वास्तविक रूप में एक आशीष है क्योंकि न्याय बड़े ध्यान पूर्वक नियंत्रित किया जाता है एक व्यक्ति को वापस धार्मिकता के मार्ग में लाने के लिएA
6. हम जो भविष्यवाणियों को बोलते हैं हो सके तो प्रकाशितवाक्य के पन्नों को भर सकें और परमेश्वर की उस और अधिक गहरी पवित्रता के उद्देश्य तक पहुंच सके उसके लोगों की जीवन मेंA

#13 एक प्रेम संबंध की चाह

परमेश्वर चाहता है कि हम उससे प्रेम रखें क्यों? ताकि हम उसका प्रतिउत्तर दे सकें और उसके साथ एक अद्भुत संबंध का आनंद उठा सकें और बहुमूल्य फलों को प्राप्त कर सके जो इस संबंध से आती है । फल जिसमें दूसरों के साथ एक और अधिक बेहतर संबंध शामिल है । परमेश्वर चाहता है कि उसके लोग शांति और आनंद से भर जाए 1 थिस्सलुनिकियों 5:18 । यह अध्याय एक अध्ययन है कि कैसे मनुष्य का परमेश्वर के प्रति प्रेम बदला जा सकता है ।

मनुष्य संबंध तथा समाज के लिए बनाया गया । मैंने शायद पहले इसे नकार दिया होता उन समस्याओं के कारण से जो मेरे परिवारों पर टूट रही थी । मेरा संसार मेरे मन तक सीमित था । मैंने उसको आगे देखने का साहस नहीं किया हालांकि इससे सब कुछ बदल दिया जब परमेश्वर का वचन तथा कुछ अद्भुत संबंध मुझे दिखाने लगे कि एक अच्छा संबंध समृद्धि तथा परिपूर्ण जीवन की कुंजी है । झूठ और फरेब उस व्यक्ति को जो टुटेपन से संघर्ष करता है अकेलेपन में सीख सकता है गरीबी में तथा निराशा में तलाक के बढ़ते आंकड़े तथा आर्थिक मुद्दे जो तलाक की बहुत होते हैं इस बात की गवाही देता है हर एक संबंध महत्वपूर्ण है परंतु एक वैवाहिक संबंध और भी ज्यादा महत्वपूर्ण है

क्योंकि यह चुनाव है कि लंबे समय तक अपने आपको समर्पित करें जब तक हमें मृत्यु अलग ना करेंA

अच्छे संबंध बनाए रखने में कठिनाई होती है कई मौकों के साथ के मौके पर सकें नौकरियां बदले छोड़ दे यह तलाक लेने आधुनिक मनुष्य और निचले स्थान पर गिर गया है अच्छे और खरे संबंधों को पकड़े रहे योग आसान और मजे से भरपूर संबंधों को चाहते हैं बिना क्षमाशीलता संयंत्र भलाई या बलिदान के हमें एक बात समझना है कि हम कितने आशीषित हैं कि परमेश्वर ने अपने आपको वफादार के रूप में बताया है जो हमें सक्षम करता है ना केवल विश्वास योगिता की एक झलक को देखने की परंतु हमें सक्षम करता है कि अपने भले तथा फिर रहने वाले मित्र की उपस्थिति का आनंद उठा सकें A

यीशु ने अपने चेलों को अपना मित्र dgk उस विशेष विश्वास संबंध के कारण से जो उसका उनके साथ था जो उसके हृदय में था वह उनसे बांटता था तुम ने मुझे नहीं चुना परन्तु मैं ने तुम्हें चुना है और तुम्हें ठहराया ताकि तुम जाकर फल लाओ; और तुम्हारा फल बना रहे, कि तुम मेरे नाम से जो कुछ पिता से मांगो, वह तुम्हें दे। यहqUना 15:16)

आनंदमय संबंध तथा चरित्र

अच्छे चरित्र के गुणों का होना अच्छे संबंधों के सफल होने से पूरा-पूरा लेना-देना है एक व्यक्ति एक व्यक्ति का अपने पति या पत्नी से संबंध वैवाहिक जीवन में आनंद के स्तर पर प्रभाव को डालता है यह मित्रता के साथ भी सत्य है जब चीजें अच्छी रीती से चलती हैं एक व्यक्ति उत्साहित रहता है आनंदित रहता है तथा संतुष्ट रहता है हालांकि इसका उल्टा भी सत्य है बुरे संबंधों में जब संबंध अच्छे नहीं होते तब और

विश्वास और कड़वाहट जो उसमें उत्पन्न होती है वह सब प्रकार की नफरत दिशा भ्रमित चोट खाना तथा एक दूसरे को गलत समझने की बात उत्पन्न हो सकती है जो एक संबंध को बहुत तीव्रता से तोड़ सकती है चरित्र तथा अच्छा संबंध घनिष्ठ मित्र है एक्शन के लिए

आप सोचें हर एक बात जो एक अच्छे संबंध के लिए आवश्यक है वह एक व्यक्ति के अच्छे चरित्र में पाया जा सकता है सत्य प्रेम दया करुणा सच्चाई एक संबंध को धनी बनाते हैं परंतु यदि एक मनुष्य पैसे की सोच से घिरा है कंजूस तथा कोशिश करता है कि हम से हर चीज मिल जाए लालची तथा भरमाने वाले शब्दों का इस्तेमाल करता है धोखा देने वाला त्यागी संबंध की स्थिति नीचे की ओर ही जाएगी हालांकि मनुष्य इस बात पर विश्वास करता है अभिलाषा प्रेम है यह कुछ भी नहीं परंतु पूर्ण स्वतंत्रता है स्वकेंद्र जो खालीपन और उथले पंखों उत्पन्न करती है A

एक खरा मसीही बनना एक परिवर्तन का अनुभव है परंतु यह एक नए संबंध की केवल शुरुआत है परमेश्वर के साथ संबंध को बढ़ाने में मुश्किल समय भी है बिल्कुल दूसरे संबंधों के समान एक फर्क यह है कि परमेश्वर पूर्ण रूप से धर्मी तथा भला है जहां की मनुष्य नहीं है वह परम मित्र होने से कभी भी पीछे नहीं हटे गा इसका अर्थ यह नहीं हालांकि कि नए विश्वासी परमेश्वर के साथ इस विशेष संबंध को समझते हैं या कितना अच्छा यह संबंध हो सकता हैA

परमेश्वर कई बार हमारे अविश्वास को प्राप्त करने वाला बन जाता है परंतु वह बिना कोई शक सब लोगों से अधिक विश्वास योग्य है छुटकारे का परमेश्वर के पास एक लक्ष्य यह है कि वह रचना करें तथा

अपने लोगों के साथ एक अच्छे संबंध को बनाए रखें परंतु जब से पतन हुआ है शैतान की चलाकी होने अविश्वास को उत्पन्न किया जिसने लोगों को प्रभु से तथा दूसरे लोगों से दूर रखें इस धोखे में परमेश्वर के कई लोगों को छला है A जिसके कारण से वह परमेश्वर के साथ एक आदर्श संबंध से कम पर रह गए हैं A

आरंभ मैं संबंध

कितना अद्भुत होगा यदि हर एक व्यक्ति आरंभ में आदम और हव्वा के परिवार समान शुरुवात करें एकता आनंद एक दूसरे का होना अनुभवों को बांटना इत्यादि आरंभ में परमेश्वर की संरचना के साथ कैसा होगा हम इन संबंधों को दो स्थानों से देख सकते हैं परमेश्वर मनुष्य के साथ और मनुष्य मनुष्य के साथ A

परमेश्वर और मनुष्य के बीच में संबंध

तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को ले कर अदन की वाटिका में रख दिया, कि वह उस में काम करे और उसकी रक्षा करे,तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को यह आज्ञा दी, कि तू वाटिका के सब वृक्षों का फल बिना खटके खा सकता है: पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खानाक्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाए : उसी दिन अवश्य मर जाएगा॥ फिर यहोवा परमेश्वर ने कहा, आदम का अकेला रहना अच्छा नहीं; मैं उसके लिये एक ऐसा सहायक बनाऊंगा जो उससे मेल खाए।   उत्पत्ति 2:15-18 हम इस पर ध्यान से कई मुख्य पहलुओं को मनुष्य की परमेश्वर के साथ संबंध के विषय में आते हैं A

परमेश्वर का नेतृत्व

मेरा परमेश्वर स्वभाविक रुप से इस संबंध में अगुवाई को लेता है सृष्टिकर्ता होने के कारण वह उन्हें उस वाटिका में रखता है प्रभु मनुष्य से नहीं पूछता कि उसे क्या चाहिए वह उन्हें उस वाटिका में रखता है तथा उन्हें जिम्मेदारी सकता है मनुष्य को यह समझना है क्यों परमेश्वर के बराबर नहीं मनुष्य की अपनी विचार के अनुसार चलना की जिद तथा परमेश्वर से ऊपर अपनी आवाज यह अपने चुनाव को उठाना विद्रोह तथा आज्ञाकारिता कहलाताहै परमेश्वर के साथ एक अच्छे संबंध के लिए हम अपनी केवल प्राथमिकताओं के साथ नहीं रह सकते तथा परमेश्वर के अधिकार के विरुद्ध बलवा करेंA

परमेश्वर का मार्गदर्शन

प्रभु नहीं मनुष्य को आज्ञा दी कि इस वाटिका के किसी भी वृक्ष से हम जानते हैं कि आगे की कहानी कैसे आगे बढ़ती है परमेश्वर ने मनुष्य से कहा कि वह उनसे क्या अपेक्षा करता है और यह आवश्यक है स्मरण रखना कि परमेश्वर की इच्छा है महत्वपूर्ण है ना की हम उस विषय में क्या महसूस करते हैं यह बिंदु पहले बिंदु से काफी जुड़ा हुआ है मनुष्य को जो परमेश्वर चाहता है उसे खोजना है तथा करना है इसके बजाय कि परमेश्वर को वैसे भी कोई चिंता नहीं या दूसरी कोई बात हमें इस बात को अपनाना है कि परमेश्वर इस बात में रुचि रखता है कि हम चीजों को कैसे करते हैं मनुष्य में हमेशा एक सेवक की सोच होना चाहिए उस बात की और गरीबी से ध्यान देते हुए कि परमेश्वर क्या चाहता है तथा उसको कार्य में लाने के लिए तत्पर तैयारA

स्पष्ट वार्तालाप

परमेश्वर ने आदम से स्पष्ट शब्दों मेवात की प्रभु ने इस बात पर केंद्रित किया जिससे उसने सोचा कि आदमपुर जानना आवश्यक है परमेश्वर कुछ छुपाना नहीं चाहता इसीलिए परमेश्वर के वचन का निरंतर अध्ययन का अर्थ है हमें जानना है कि परमेश्वर क्या चाहता है तथा क्या नहीं उसके शब्दों को नजरअंदाज करने से पाप की ओर जाते हैं हम दिखावा नहीं कर सकते कि हमें परमेश्वर के ज्ञान तक पहुंच नहीं विशेषकर इस युग में जहां हमारी अलमारियों में अनगिनत बाइबल रखी हुई है तथा उस अप्रत्यक्ष क्लाउड डाउनलोड करने के इंतजार में है उनके लिए परमेश्वर के वचन परमेश्वर ने उन्हें मूल बातों को उनके विवेक में डाला है रोमियों 2 14 15 तथा माता पिता निर्गमन 2012 स्त्री और पुरुष को परमेश्वर के विषय में सीखना है स्पष्ट संचार की आवश्यकता के द्वारा

प्रेम देखरेख

हालांकि परमेश्वर एक प्रेमी अधिकारी है हम में से कई उस अधिकार के विषय में जो हमारे ऊपर है गलत धारणा को रखते हैं परमेश्वर वास्तविक रूप से हमारे लिए चिंता करता है तथा मनुष्य की आवश्यकताएं को देखता है उत्पत्ति 218 हमारा अधिकतर वार्तालाप हमारे अधिकारियों के साथ हमारे आवश्यक्ताओं के लिए ध्यान नहीं देते बड़ा कम उसकी ओर ध्यान देते हैं सृष्टि का हर एक पहलू परमेश्वर के मनुष्य जाति के प्रति खरे देखभाल को दिखाता है अदन की वाटिका में रहना बड़े आनंदमय था ना केवल इसलिए कि प्रभु वहां पर चलता फिरता था परंतु इसलिए भी कि उसने हमारे शरीर को बनाया था तथा उस प्राण को दिया था जो

उसकी सृष्टि का आनंद उठा सके मुझे वह बहुत पसंद है जहां लिखा है कि नदियां उस बगीचे से होकर गुजरती थीA

परमेश्वर के साथ संबंध को बढ़ाना

परमेश्वर मनुष्य के साथ संबंध को बनाता भी है तथा उसकी अगुवाई भी करता हैहालांकि हम में से कई लोगों ने हमारे ऊपर अधिकारियों से उस बहते हुए प्रेम को अनुभव नहीं किया होगा परमेश्वर निरंतर रूप से इस पृथ्वी पर अपने प्रेम की बारिश करता है जो कुछ उसने बनाया है वह उसका ख्याल रखता है वह हमारा मार्गदर्शन करने के लिए तथा हमारे सहायता करने के लिए बातचीत करता है उसकी आज्ञा ए हमेशा हमारी भलाई के अनुरूप होती है जो उसकी रचना के अनुसार है क्या उसने फलों के वृक्षों को नहीं बनाया कि मनुष्य उसमें से खा सकें मनुष्य को केवल उस वृक्ष से खाने को मना किया था किसी कारणवश परमेश्वर की बुद्धि तथा मनुष्य का रूप बदलाव के साथ परिचय तथा प्रेम निश्चित रूप से मनुष्य के लिए एक उत्तम चुनाव को उत्पन्न करती है

हालांकि कई लोग परमेश्वर के साथ संबंध की आवश्यकता के विषय में अवगत नहीं है तथ्य है कि मनुष्य की रचना इस प्रकार से की गई कि वह परमेश्वर के साथ संबंध को रखें कुछ लोगों के लिए यह विदेशी सोच है परंतु रोमियों की पुस्तक में पौलुस आलोकिक व्यक्ति के बोध का परिचय देता है जो अपनी सामर्थ और इच्छा को हमारे जीवन के साथ जोड़ता है रोमियो 1:19-20) प्रभु अपने आपको एक व्यक्तिगत सामर्थ के रूप में प्रकट करता है जिसे मानना जरूरी है A

परमेश्वर के अस्तित्व या उसके व्यक्तित्व का इनकार करने के बजाय हमें उसके उपस्थिति को पहचानना है नए युग के लोग परमेश्वर

सृष्टि कर्ता के व्यक्ति होने का इनकार करते हैं लोग अपने पापों में बंधे हैं और परिणाम स्वरुप वह परमेश्वर को जान नहीं सकते हालांकि जब उनकी आंखे परमेश्वर की आत्मा के द्वारा खोली जाती हैं वह अपने पापा के विषय में जो प्रभु के विरोध में किए गए हैं अवगत किए जाते हैं परमेश्वर एक और दूसरा तत्वज्ञान नहीं वह वह व्यक्ति है जिसे हमने गहरी चोट पहुंचाई है इस संबंध को सुधारना आवश्यक है तथा जैसे हम इसको खुद सुधार नहीं सकते परमेश्वर ने यीशु मसीह के द्वारा एक मार्ग को बनाया छुटकारे की योजना इसी के विषय में है परमेश्वर उसको उसके द्वारा 1 तरीके को बनाया जिसके द्वारा वहां खड़े विश्वासी के निष्ठा को वापस प्राप्त कर सके ताकि वह परमेश्वर के साथ मसीह यीशु में पूर्ण संबंध में पुनर्स्थापित हो सके तथा सुसज्जित किए गए कि इस पर पूरी के जीवन को उसकी इच्छा को पूरी करते हुए दूसरों से बांट सकेA

परमेश्वर का मनुष्य जाति के साथ संबंध का सारांश

परमेश्वर मनुष्य के साथ संबंध को बनाता भी है तथा उसकी अगुवाई भी करता हैहालांकि हम में से कई लोगों ने हमारे ऊपर अधिकारियों से उस बहते हुए प्रेम को अनुभव नहीं किया होगा परमेश्वर निरंतर रूप से इस पृथ्वी पर अपने प्रेम की बारिश करता है जो कुछ उसने बनाया है वह उसका ख्याल रखता है वह हमारा मार्गदर्शन करने के लिए तथा हमारे सहायता करने के लिए बातचीत करता है उसकी आज्ञा ए हमेशा हमारी भलाई के अनुरूप होती है जो उसकी रचना के अनुसार है क्या उसने फलों के वृक्षों को नहीं बनाया कि मनुष्य उसमें से खा सकें मनुष्य को केवल उस वृक्ष से खाने को मना किया था किसी कारणवश परमेश्वर

की बुद्धि तथा मनुष्य का रूप बदलाव के साथ परिचय तथा प्रेम निश्चित रूप से मनुष्य के लिए एक उत्तम चुनाव को उत्पन्न करती हैA

मनुष्यों के बीच में संबंध

परमेश्वर ने ना केवल आलोकिक इंसानी संबंध को बनाया परंतु उसने इंसानी और इंसानी संबंधों को भी बनाया नीचे दिए गए शास्त्र के भाग पति और पत्नी के संबंध के विषय में बताते हैं इस कारण से यह आम व्यक्तिगत संबंधों से और अधिक विस्तृत है दूसरे व्यक्तिगत संबंधों से परंतु वह फिर भी इंसान इंसान के संबंध की मूल बातों को चित्रित करने का कार्य करता है यहां पर कुछ चीजें हैं जिन्हें देखा गया है व्यक्ति व्यक्ति के संबंध की मूल गुणों के विषय मेंA

समझना तथा संचार

हमारे ज्ञान के लिए परमेश्वर ने आदम से बात करी हवा से नहीं आदरणीय जो उसने परमेश्वर से सुना था लिया और हवा को बताया इस कारण से हवा यह प्रत्युत्तर दे सकी कि इस वाटिका के हर एक व्यक्ति फल तो हम खा सकते हैं उत्पत्ति 32 आदम और हवा जो पूरी मानव जाती का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं वह परस्पर इस बात को समझ सकते तथा एक दूसरे के साथ संचारित कर सकते हैं उनके वंशज उन्हीं के समान इन संबंधी योग्यताओं विभागीय होंगे जब मैं एक टैक्सी में मीटिंग जाने के लिए भारत देश में सफ़र करता हूं यह अफ्रीका की उन धूल भरी सड़कों पर चलता हूं अपने दोस्तों के साथ हम उस मित्रता को प्रार्थना के द्वारा चुटकुलों के द्वारा दुखों के द्वारा तथा परेशानियों के द्वारा आनंद उठा सकते हैं जब तक हम एक भाषा बोल सकें

सरहाना तथा विस्मय

आदम हवा को अत्यधिक शराब तथा उत्पत्ति 223 परमेश्वर की अद्भुत रचना का भाग खूबसूरत स्त्री की रचना है वहां उसके समान हैं जैसे एक पुरुष अपनी योग्यता में जो जानवरों से काफी भिन्न है वह सोच सकती है कार्य कर सकती है तथा उसके साथ पहचान रखती है यह एक भेंट है ताकि आप ध्यानपूर्वक देख सकें तथा दूसरे व्यक्ति की योग्यता तथा क्षमताओं की सराहना कर सकें चाहे वह सुंदर आवाज हो या मनोहर लिखाई या किसी की ताकत कि वह समान को दूसरी जगह ले जाने में सहायता कर सके इत्यादि हम अपने आसपास के लोगों के प्रति सरहाना को मौखिक रुप से बता सकते हैं क्या यह यह भले और प्रेम भरे शब्दों का प्रतीक नहीं

सहायता तथा सहभागिता

समान रूप से एक सहयोगी की रचना अच्छा कार्य वह उस पुरुष की उसके कार्यों में सहायता कर सकती तथा उसकी सहभागिता से उस कार्य को और अधिक आनंदमय बना सकते (उत्पत्ति 2:20)इसे केवल विवाह के संदर्भ में देखना काफी नहीं जब एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति की सेवा में रखता है वह सबसे अधिक रोशन होता है लोग दूसरों की आवश्यकताओं को देख पाते हैं तथा उनकी सहायता करने के लिए अपने जीवन में आवश्यक फेरबदल को लाते हैं यह है जानवरों से काफी अलग है क्या यह एक समाज का मूल कार्य नहीं संसार की एक मजबूत शुरुआत काफी जल्दी समाप्त हो गई विद्रोह के एक कार्य ने उस

संचार को अशुद्ध कर दिया तथा व्यक्तियों में अविश्वास को उत्पन्न कर दियाA

समाज का पतन

उत्पत्ति 2 से उत्पत्ति 3 पर जाना बड़ा अच्छा प्रतीत नहीं होता पर यहां पर मनुष्य को स्वर्ग लोक से बाहर निकाल दिया गया एक विदेशी संसार में जो कठिनाइयों से भरा था मनुष्य के सारे मूल तथा मानवी स्वभाव के सुंदर सुंदर स्वरूप अब भी मौजूद परंतु वह मनुष्य के स्वार्थ से भ्रष्ट हो गया था मनुष्य दूसरे मनुष्य के साथ आदान-प्रदान तो कर सकता था परंतु उसका ध्यान किसी और चीज़ पर था A

मुख्यता खुद पर इस बात को आसानी से देखने के लिए हम उत्पत्ति 4 देखें उत्पत्ति 4:25 भाइयों के बीच दुश्मनी में आने वाले संकट की ओर इशारा किया उनके परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत संबंध मैं तथा मनुष्य मनुष्य जीवन के मार्ग पर चलेगा जो परमेश्वर के मार्ग के विपरीत है जिसे परमेश्वर ने उसके लिए रक्षा तथा उसके लिए रखा हम उसी अध्याय देखते हैं की परिस्थिति और खराब हो जाती है एक और वंशज और भी अधिक लोगों की हत्या करता हैA

> और लेमेक ने अपनी पत्नियों से कहा, हे आदा और हे सिल्ला मेरी सुनो; हे लेमेक की पत्नियों, मेरी बात पर कान लगाओमैंने : एक पुरूष को जो मेरे चोट लगाता था, अर्थात एक जवान को जो मुझे घायल करता था, घात किया है। जब कैन का पलटा सात गुणा लिया जाएगा। तो लेमेक का सत्तर गुणा लिया जाएगा। उत्पत्ति 4:23- 24

एक कदम और आगे

उत्पत्ति 5 एक अद्भुत वंशावली को उपलब्ध कराता है परंतु उत्पत्ति 6 में एक दुखद सुर पर वहां अंत होता है इस बात को कहते हुए कि मनुष्य ने अपने आपको परमेश्वर से तथा संगी मनुष्य से दूर कर लियायह सही नहीं थापरमेश्वर तथा मनुष्य के बीच का संबंधवास्तविक रुप से जैसी चाहा   की गई थी उससे काफी दूर था संबंध उस आनंद में नहीं तथा किसी प्रकार उस में बने रहने के समय में प्रवेश कर चुका था यह तनाव कुछ समय तक चलता रहा और यहोवा ने कहा, मेरा आत्मा मनुष्य से सदा लों विवाद करता न रहेगा, क्योंकि मनुष्य भी शरीर ही हैउसकी : आयु एक सौ बीस वर्ष की होगी। उत्पत्ति 6.3 क्षेत्र उत्पत्ति 5 की वंशावली को ध्यानपूर्वक देखने के द्वारा हम 16 56 वर्षों को पाते हैं जो आदम की सृष्टि से जल प्रलय के बीच में बीत चुके हैंA

> और यहोवा ने देखा, कि मनुष्यों की बुराई पृथ्वी पर बढ़ गई है, और उनके मन के विचार में जो कुछ उत्पन्न होता है सो निरन्तर बुरा ही होता है। और यहोवा पृथ्वी पर मनुष्य को बनाने से पछताया, और वह मन में अति खेदित हुआ। तब यहोवा ने सोचा, कि मैं मनुष्य को जिसकी मैं ने सृष्टि की है पृथ्वी के ऊपर से मिटा दूंगा; क्या मनुष्य, क्या पशु, क्या रेंगने वाले जन्तु, क्या आकाश के पक्षी, सब को मिटा दूंगा क्योंकि मैं उनके बनाने से पछताता हूं। परन्तु यहोवा के अनुग्रह की दृष्टि नूह पर बनी रही॥
> उत्पत्ति 6:5-8

जब परमेश्वर ने इस बात को देखा की दुष्टता बढ़ गई है हमें इसे समझना है की व्यवहारिक रूप से इसका अर्थ क्या है लोग उनकी

कठोरता स्वार्थ नफरत लालच इत्यादि में बढ़ते चले गए और पृथ्वी लड़ाई-झगड़ों से भर गई उत्पत्ति 611 हत्या बलात्कार दुष्टता दुष्ट अपुन शब्द बढ़ते चले गए लोग तैयार थे कि वह सामाजिक नियमों को त्याग में तथा संतों के समान यदि व्यक्तिगत अभिलाषा को पूरा कर सकते हैं तो बिना सोचे समझे दूसरों को चोट पहुंचा सकते हैं विनाशकारी जल प्रलय आवश्यक परिवर्तन को लेकर आया ताकि तब कीजमानत संसार को परिवर्तित कर सकेA

परमेश्वर का छोटा समाज

उत्पत्ति निरंतर रूप से इस बात की ओर इशारा करता है कि परमेश्वर उन लोगों की कितनी सहारा सदा जो इस दुनिया के तौर-तरीके पर नहीं चलते तथा जिन्होंने अपने आप को उनके अनैतिक आनंद के लिए अपने आप को नहीं दे दिया तथा उसके बजाए और परमेश्वर को खोज ते हैं

एनोश

एनोश की पीढ़ी परमेश्वर की वापसी को दिखा किसी रूप से वह उससे जुड़ा था हो सकता है उस अकेले की आवाज में लोगों को पुनः परमेश्वर की ओर बुलाया क्या वह पहला भविष्य होता था शेत के भी एक पुत्र उत्पन्न हुआ; और उसने उसका नाम एनोश रखा, उसी समय से लोग यहोवा से प्रार्थना करने लगे॥उत्पत्ति 4:26

एनोह

सातवीं पीढ़ी में मनुष्य बड़ी गिनती में पढ़ने लगा एक व्यक्ति हालांकि जिसे उस मनुष्य के रूप में देखा गया जिसने परमेश्वर के साथ समिता से जीवन जिया और हनोक परमेश्वर के साथ साथ चलता था; फिर वह लोप हो गया क्योंकि परमेश्वर ने उसे उठा लिया।उत्पत्ति 5:24

नूह

परन्तु यहोवा के अनुग्रह की दृष्टि नूह पर बनी रही।। नूह की वंशावली यह है। नूह धर्मी पुरुष और अपने समय के लोगों में खरा था, और नूह परमेश्वर ही के साथ साथ चलता रहा। उत्पत्ति 6:8-9 यह स्पष्ट है कि उसके सिवा कोई और व्यक्ति नहीं था जो परमेश्वर की आवाज को सुन सके परमेश्वर ने कि वह उनके परिवार को बचाया परमेश्वर का प्रकोप काफी बड़ा था वह भी इसलिए कि मनुष्यअपनी चरमसीमा पर थाA

परमेश्वर का चुनाव याकूब एसाव नहीं

हमें नहीं मालूम कितने लोगों ने अनुष और अनूप तथा नूह के समान परमेश्वर की खोज की पुराने नियम के प्रारंभिक भाग को पढ़ने में हमें यह प्रतीत नहीं होता कि ऐसे कई लोग थेशायद यह इसलिए क्योंकि इनकी गिनती इतनी कम थी कि प्रभु और निकटता से देखने लगा उस चरवाहे के समान जो अपनी खोई हुई भीड़ को ढूंढता है अब्राहमईश्वर को मानने वाली पीढ़ी से था परंतु यह नहीं दिखता की प्रारंभिक तौर पर उसने परमेश्वर की खोज करें परमेश्वर ने अबराम को ढूंढा और उसे उस पेटू पन्न के शहर से छुड़ाया अबराम का विश्वास उसे एक लंबे मार्ग पर ले गयाA

याकूब निश्चित रूप से तब परमेश्वर का खोजी नहीं था परंतु परमेश्वर ने उसके पीछे जाकर उसको चुना (उत्पत्ति 28)

और अभी तक न तो बालक जन्मे थे, और न उन्होंने कुछ भला या बुरा किया था कि उस ने कहा, कि जेठा छुटके का दास होगा। इसलिये कि परमेश्वर की मनसा जो उसके चुन लेने के अनुसार है, कर्मों के कारण नहीं, परन्तु बुलाने वाले पर बनी रहे। जैसा लिखा है, कि मैं ने

याकूब से प्रेम किया, परन्तु एसौ को अप्रिय जाना।। सो हम क्या कहें क्या परमेश्वर के यहां अन्याय है? कदापि नहीं! क्योंकि वह मूसा से कहता है, मैं जिस किसी पर दया करना चाहूं, उस पर दया करूंगा, और जिस किसी पर कृपा करना चाहूं उसी पर कृपा करूंगा। सो यह न तो चाहने वाले की, न दौड़ने वाले की परन्तु दया करने वाले परमेश्वर की बात है। रोमियो 9:11-16

प्रश्न यह है कि परमेश्वर के चुनाव में याकूब की रूचि तथा परमेश्वर की सेवा के प्रति प्रीति में परिवर्तन को लेकर आया या परमेश्वर ने क्या कदम उठाए कि अब याकूब के जीवन से अविश्वास को निकाल सकेहमें एक छोटी सी झलक मिलती है ऐसा हो को देखने के द्वारा (इब्रानियों 12:17) शायद परमेश्वर एक ऐसे व्यक्ति की खोज कर रहा था इसके पास सबसे कम विश्वास हो या ऐसा व्यक्ति जिसके पास प्रतापी आत्मा की एक छोटी सी बूंद हो या जैसे यीशु ने कहा आत्मा में गरीब हूं Aeत्ती 5:3

हालांकि याकूब की इसहाक द्वारा कई सालों तक परवरिश की गई तब भी जब व्यस्क याकूब परमेश्वर की खोज नहीं कर रहा था परमेश्वर को उसका ध्यान आकर्षित करना पड़ा दर्शनों को देने के द्वारा जैसे कि स्वर्ग से खेड़ी तभी यह प्रतीत होता है कि वह परमेश्वर कि अपने जीवन में महत्वता के ऊपर ध्यान को लगा सकें उसकी बड़ी आधुनिक सोच थी कई दशकों बाद याकूब अंततः आत्मिक रूप से जागृत होता हैउसके लिए आसान नहीं था कि 10 साल और की आवश्यकता पड़ी उसको अपने जीवन के साथ सुधार कर सकें

अमेरिकी लोग एक कथन को कहते हैं इस बात को बताने के लिए दांतो को खींचने के समान

मनुष्य का परमेश्वर के साथ संबंध निश्चित रुप से उस पतन के द्वारा प्रभावित हुआ संक्रमित होना एक बेहतर शब्द है पतन के समय मनुष्य ने परमेश्वर को अनदेखा करना चुना परंतु पतन के पश्चात वह इस संभावना के विषय में कि परमेश्वर के साथ संबंध हो सकता है वह अंधा हो गया मैं आशा रखता हूं कि हम उस समस्या के विषय से जो कई लोगों को परमेश्वर की चुनाव से है आगे जा सकते हैं याकूब ने कभी भी उस विकल्प को नहीं देखा होता यदि परमेश्वर ने पहले उसके जीवन में कार्य करने को चुना नहीं होता यही बात हमारे जीवन में उपयोगी सत्य है मनुष्य एक अधर्मी जीवन को जीने के द्वारा अपने बाप में हृदय को दिखाता है रोमियो 3:10-11 हमें परमेश्वर की अनुग्रह कारी प्रेम की आवश्यकता है कि हमें ढूंढ सके इससे पहले कि हम उसे खोजें

आत्मिक पुनर्जन्म

आत्मिक पुनर्जन्म हमें समर्थ करता है कि परमेश्वर तथा उसके मार्ग की खोज कर सकें यह आत्मिक चित्र प्रारंभिक समय में आदम और हवा में डाली गई क्योंकि वह परमेश्वर की सुरक्षा और समानता में बनाए गए वह बिना किसी रूकावट के परमेश्वर से बात कर सकते थे क्योंकि परमेश्वर के साथ बातचीत करना उनके लिए स्वाभाविक था इस संबंधी कार्य मैं लोगों को समर्थ किया कि एक दूसरे के साथ भी वह बातचीत कर सकें व्यक्तिगत रूप से तथा सामूहिक रुप से भी यह क्षमता है मनुष्य के विद्रोह के कारण से जाती रही थी मनुष्य ने परमेश्वर के प्रति अपनी निष्ठा को धोखा दिया तथा अपने हृदय अपनी प्रीति की उस सिंहासन

को दुष्ट को दे दिया तथा उसके पास प्रभु के लिए या परमेश्वर की बातों के लिए कोई अभिलाषा रह गई वह आत्मिक रुप से दृष्टिहीन हो गया (यहqUन्ना 9:41, 2 पतरस 1:9 तथा मृत हो गया इफिसियों 2:1, 1 dqfjfUFk;ksa 2:14- 15)

आत्मिक पुनर्जन्म परमेश्वर अपनी पवित्र की जीवनदायक समर्थ को हमारे जीवन में कार्य करने के द्वारा परमेश्वर की प्रति प्रीति की कमी को पलट देती है तकनीकी शब्द जो इस प्रक्रिया को बतलाता है वह नवीनीकरण है यह नए जनम के साथ करीबी रूप से जुड़ा है यहqUन्ना 3:3-8 नया जन्म प्राप्त करने का विषय पूरे शास्त्रों में दिखाया गया है तो यह अचंभे की बात नहीं यीशु इस बात से अचंभित होता है की की निखिल इस बात को समझ नहीं पाया यह सुनकर यीशु ने उस से कहा; तू इस्त्राएलियों का गुरू हो कर भी क्या इन बातों को नहीं समझता? यहqUन्ना 3:10 ,अचम्भा न कर, कि मैं ने तुझ से कहा; कि तुम्हें नये सिरे से जन्म लेना अवश्य है। यहqUन्ना 3:7

परिवार में दूसरे बच्चे के रूप में जन्म लेना यह बताता है यह नहीं कि जो प्राकृतिक रूप से मजबूत होते हैं या और बेहतर होते हैं उनके द्वारा परमेश्वर कार्य करने को चुनता है पर सब जिन्हें परमेश्वर की अत्यंत आवश्यकता है उनके द्वारा संसार में पहले उठे को सबसे मजबूत माना जाता है तथा उस बड़े निराश का सही हकदार माना जाता है परंतु कमजोर होने तथा जिनके पास इस पृथ्वी पर कम है उन्होंने परमेश्वर की स्वर्गीय आशीषों को प्राप्त किया है

दूसरे के स्थान पर पहले उठे को ठुकराया गया है कैन और हाबिल इस्माइल और इस तथा ऐसा हो उन पहले और दूसरे भाइयों के

समूह के कुछ उदाहरण है वह जिनका इस पृथ्वी की संपत्ति तथा स्थान से गहरा जुड़ाव है वह परमेश्वर की बातों के प्रति हम संवेदनशील होते हैं यहqUन्ना 3:3

यीशु को कहते हुए सुना तथा अपनी पहली पत्नी में इस बात को वह कहता है हर एक उपयोग इस तथ्य की ओर ध्यान को लेकर आता है कि केवल परमेश्वर ही हमें आत्मिक रुप से दिलाता है बिल्कुल उसी तरह जैसे हम अपने माता पिता से उत्पन्न हुए हैं

हम परमेश्वर से उत्पन्न हुए हैं और उसका जीवन हमारा हो जाता है (1 पतरस 1:3)

क्योंकि तुम ने नाशमान नहीं पर अविनाशी बीज से परमेश्वर के जीवते और सदा ठहरने वाले वचन के द्वारा नया जन्म पाया है। 1 पतरस 1:23

आत्मिक पुनर्जन्म वह नहीं जिसके हम योग्य हैं यह परमेश्वर की महा करुणा का कार्य है इसका अर्थ है जिसके द्वारा एक मनुष्य परमेश्वर की सामर्थ के द्वारा जो मसीह के पूर्व अध्यक्ष जीवन में दिखती है नए जीवन को प्राप्त करता है यीशु मसीह की मृत्यु के द्वारा हमें पप्पू की क्षमा मिल और उसके पुनरुत्थान के द्वारा हमें उसका जीवन मिलता है तथा भविष्य के लिए आशा मिलती है परमेश्वर अपने वचन को लेता है तथा अपनी पवित्र आत्मा के जल के द्वारा उस आदमी के बीच को अंकुरित करता है जो कि परमेश्वर का जीवित और सदा ठहरने वाला वचन है उस जीवन में हमारे जीवन मेंA

यह रुचि की हो ना केवल नए नियम में सिखाया जाता है परंतु यह पुराने नियम में भी सिखाया जाता है नया होना या नया जन्म उसने आत्मिक जीवन के विषय में बात करता है जो मनुष्य पर्दे के पीछे काम करता है जो परमेश्वर के प्रति नई सचेतता की ओर ले जाता है तथा जीवन के नए दृष्टिकोण की ओरA

लागू करना

इससे पहले कि आगे जाए और इस विषय पर गहरे रूप से परीक्षण करें क्या आप इस बात का निश्चय दे सकते हैं कि आप अपने नया जन्म प्राप्त हुआ है यदि निकट में एक आदरणीय तथा ज्ञानी शिक्षक को नए जन प्राप्त करने की आवश्यकता पड़ी तो निश्चय ही आप और मुझे भी नया जन्म प्राप्त करना है आत्मिक जीवन एक की इच्छा को उत्पन्न करता है परमेश्वर को प्रसन्न करें तथा उसके साथ रहे परमेश्वर और मनुष्य के बीच का मुख्य कार्य को पुनर्स्थापित करता है

नया होना तथा खतना किया गया

नहीं किए जाने की ओर पुराने नियम में पहला ठेके ठुकराए जाने के चित्रण यह इन इंगित किया पर नए जीवन की इन और पर लेखन पर आधारित है पुराने नियम में दूसरे स्थान पर जन्मे बच्चे का उपयोग चित्रण के द्वारा शिक्षाएं हैं तथा बड़े खतरनाक रूप से वह जा सकती हैं यदि उन्हें परीक्षाओं के बिना लिया जाए तो यह शिक्षा और अधिक स्पष्टता से परिभाषित की जाती है आत्मिक खतने के विचार के द्वारा A

शारीरिक घटना एक विधि थी जिसकी आज्ञा प्रभु ने अब्राहम को दी तथा इस्राइलियों को दी जिसमें वह उसके लोग होने के कारण

से सहभागी हो यह एक शारीरिक चित्रण है परंतु इसका आत्मिक पहलू स्पष्ट किया जाता है जब यह वाक्यांश इस्तेमाल होता है हृदय का का खतना शारीरिक खतने का शाब्दिक अर्थ है की काटना या नाश करना जिसका हृदय से कुछ भी लेना देना नहीं इस आज्ञा में बालक लड़कों के लैंगिक अंग की चमड़ी को उनके जन्म के 8 दिन के पश्चात काटा जाता है यह इस्त्राइलियों की परमेश्वर के साथ वाचा का एक चिन्ह था यदि पुरुष का खतना नहीं किया जाता तो वह परमेश्वर की लोगों का भाग नहीं हो सकता A

खतना एक सामर्थी चिन्ह है इस्पात का जो आत्मिक खतने में घटित होती है यह शब्द हृदय का खतना विभिन्न रिक्तियों से समाज किया गया है व्यवस्थाविवरण 10:16

मनुष्य से कहा गया है कि अपने हृदय के कठोर भाग को काट डाले जो परमेश्वर के सामने उसकी अतिसंवेदनशीलता को सुरक्षित करता है उसका घमंड और उसका अहंकार को काटा जाना आवश्यक है यह उसका खतना किया जाना

> और तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे और तेरे वंश के मन का खतना करेगा, कि
>
> तू अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे मन और सारे प्राण के साथ प्रेम करे, जिस से तू जीवित रहे। व्यवस्थाविवरण 30.6

पहली आयत में मनुष्य से कहा गया कि वह अपने हृदय का खतना करें परंतु यहां यह कहता है कि परमेश्वर तुम्हारे हृदय का खतना करेगा हालांकि इस में विरोधाभास दिखता है यह नए किए जाने की प्रक्रिया का एक और भाग है व्यवस्थाविवरण 30:1 में भूसा कहता है कि

जब वह अपने प्रभु परमेश्वर के पास लौटते हैं 30:2 तब तुम्हारा प्रभु परमेश्वर तुम्हें वापस लेकर आएगा व्यवस्थाविवरण 30:5 तथा तुम्हारा प्रभु परमेश्वर तुम्हारे हृदय का खर्चा करेगा तथा तुम्हारे बालकों के हृदय का भी व्यवस्थाविवरण 30:6 मनुष्य को आवश्यक है कि पहले अपनी कठोरता से स्वतंत्रता प्राप्त करें व्यवस्थाविवरण 30:2 तथा परमेश्वर के पास पुनः लौटे तब परमेश्वर उस हृदय परिवर्तन का कार्य करेगा यह शिक्षा नए नियम में भी दी गई है पश्चाताप करने तथा विश्वास करने के द्वारा मरकुस 1:15 हालांकि मनुष्य अपने आप को नहीं बचा सकता वह अपने आप को नम्र कर सकता है परंतु उसे फिर भी परमेश्वर की सहायता की आवश्यकता है उन मार्गो के द्वारा वह मनुष्य के अनुभवों को डालता है

> हे यहूदा के लोगो और यरूशलेम के निवासियों, यहोवा के लिये अपना खतना करो; हां, अपने मन का खतना करो; नहीं तो तुम्हारे बुरे कामों के कारण मेरा क्रोध आग की नाईं भड़केगा, और ऐसा होगा की कोई उसे बुझा न सकेगा। f;eZ;kg4%4
>
> तब वे अपने और अपने पितरों के अधर्म को मान लेंगे, अर्थात उस विश्वासघात को जो वे मेरा करेंगे, और यह भी मान लेंगे, कि हम यहोवा के विरुद्ध चले थे, इसी कारण वह हमारे विरुद्ध हो कर हमें शत्रुओं के देश में ले आया है। यदि उस समय उनका खतनारहित हृदय दब जाएगा और वे उस समय अपने अधर्म के दण्ड को अंगीकार करेगें; तब जो वाचा मैं ने याकूब के संग बान्धी थी उसको मैं स्मरण करूंगा, और जो वाचा मैं ने इसहाक से और जो वाचा मैं ने इब्राहीम से बान्धी थी उन को भी स्मरण

करूंगा, और इस देश को भी मैं स्मरण करूंगा। लेवीव्यवस्था 26:40 -42

अंतिम कथन अपने आप का खतना करने की आवश्यकता तथा शीघ्रता के ऊपर जोर देता है शिक्षा एक स्वाभाविक हृदय आत्मिक चमड़ी के द्वारा सुरक्षित रहता है जो आतंक और घमंड से भरा हुआ है जब शारीरिक खतना होता है तो बाहरी सुरक्षा जाती रहती है जो मनुष्य को अति संवेदनशील कर देती है और यह बिल्कुल वही है जो प्रभु चित्रित करता है कि मनुष्य जाति को एक अत्यंत संवेदनशील हृदय की जरूरत है परमेश्वर की तथा उसकी वचन की प्रतिA

आत्मिक खतना तथा नया होना

पौलुस पुरानी नियम की खतने की शारीरिक भाषा को नए नियम में परमेश्वर के आत्मिक कार्य के साथ जोड़ता है पर यहूदी वही है, जो मन में है; और खतना वही है, जो हृदय का और आत्मा में है; न कि लेख का: ऐसे की प्रशंसा मनुष्यों की ओर से नहीं, परन्तु परमेश्वर की ओर से होती है।। (रोमियो 2:29) अंत में इजरायल का शारीरिक वंशज होना कोई बड़े अंतर को लेकर नहीं आएगा सबसे महत्वपूर्ण तत्व पवित्र आत्मा का हृदय पर कार्य है जब मनुष्य इस बात का एहसास करता है किसकी शारीरिक वंशावली रीति रिवाज तथा उसके कार्य परमेश्वर प्रसन्न नहीं करते परंतु परमेश्वर का हृदय पर कार्यA

यह वही बात है जो पौलुस rhrql को कहता है तो उस ने हमारा उद्धार कियाऔर यह धर्म के कामों के कारण नहीं :, जो हम ने आप किए, पर अपनी दया के अनुसार, नए जन्म के स्नान, और पवित्र आत्मा के हमें नया बनाने के द्वारा हुआ। (rhrql 3:5) नया होना का अर्थ नया

जन्म प्राप्त करना है पहला या पुराना जीवन आवश्यक है कि ठुकराया जाए हम अब आगे अपने लिए नहीं जी सकते अपने लिए मर कर उसने के लिए जीवन को जी सकते हैं A

मनुष्य परमेश्वर को नहीं खोज रहा था जब वह नियम अपने स्थान पर थे परमेश्वर उस मिला वाले तंबू में उनके निकट था मनुष्य का हृदय परमेश्वर की चीजों के प्रति अभिलाषी नहीं था जो संबंध वह चाहता था वह तब तक नहीं हो सकता था जब तक आप को पूर्ण रीति से वहां से हटा दिया नहीं जाता उसने कई विशेष कार्य को आरंभ किया कई बार भविष्यवक्ताओं के द्वारा उन पर आंखें ताकि वह परमेश्वर का वचन बोल सकें यह जो परमेश्वर चाहता था उससे कहीं अधिक दूर था जो एक व्यक्तिगत संबंध था जहां पर वह आमने-सामने अपने लोगों से बात कर सकता था प्रभु चाहता है कि उसके साथ हम निरंतर रूप से एक संबंध को रखें वह एक नए स्वभाव को रखता है

हम में जो परमेश्वर की चाह रखता है वह इंतजार करता है हमारे पश्चाताप करने का तथा हमारे विश्वास करने का तथा तब हमारे इस नए संबंध में हम नमृता के साथ जो परमेश्वर को प्रसन्न करता है उसको परमेश्वर हम आपके सांभर के द्वारा करने की खोज करेंगे नए नियम में कलीसिया परमेश्वर का मंदिर है परमेश्वर अपने लोगों में रहता है तथा चाहता है कि उनके साथ बातचीत करें यीशु महा याजक है तथा उसके नाम से हम प्रार्थना करते हैं A

परमेश्वर से प्रेम रखना

सबसे उत्तम संबंध इस बात में बनते हैं कि एक दूसरे के साथ व्यक्तिगत आनंद में है हालांकि परमेश्वर एक अधिकारिक व्यक्ति है यह आनंद जो परमेश्वर के साथ संगति में है वह एक मसीही विश्वासी होने का भाग है

यह आकर्षण आपस में आदान-प्रदान होता है परमेश्वर आपसे प्रेम करता है तथा हमारे हृदय की चाह रखता है हमें नया जन्म प्राप्त करने के द्वारा परंतु उसके साथ वह गहरे रूप से चाहता है कि उसके लोग उससे प्रेम रखें पुराना नियम तथा नया नियम दोनों निरंतर रूप से परमेश्वर के लोगों को परमेश्वर से हर एक चीज के साथ जो उनके पास है प्रेम करने के लिए बुलाता है

> तू अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे मन, और सारे जीव, और सारी शक्ति के साथ प्रेम रखना। व्यवस्थाविवरण 6:5
>
> और अब, हे इस्राएल, तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ से इसके सिवाय और क्या चाहता है, कि तू अपने परमेश्वर यहोवा का भय मानें, और उसके सारे मार्गों पर चले, उस से प्रेम रखे, और अपने पूरे मन और अपने सारे प्राण से उसकी सेवा करे, व्यवस्थाविवरण 10:12
>
> उस ने उत्तर दिया, कि तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी शक्ति और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख; और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।
>
> ywdk 10:27

यह पूर्ण छुटकारे की कार्यवाही एक सोचा समझा परमेश्वर के द्वारा प्रयास है कि वह अपने लोगों को अपने पास पुनः ला सकें जिसके परिणाम स्वरुप उसके साथ उसके संबंध का आनंद प्राप्त होता है जो मूल रूप से उसने चाहा था हम परमेश्वर के पास आ सकते हैं तथा उसके साथ अद्भुत समय को बता सकते हैं यदि परमेश्वर हमारे करीब नहीं दिया यदि वह निरंतर हमारे मनो में नहीं तब वह हमसे बहुत दूर है परमेश्वर के प्रति पूर्ण भक्ति से कुछ भी अगर कम है तो वह मूर्ति पूजा है जीवन में हमारी प्राथमिकताएं तभी अपने स्थान पर आती है जब हम उस पर केंद्रित होते हैं इसी कारण से शांत समय तथा व्यक्तिगत अध्ययन हमारे जीवन में अत्यंत महत्वपूर्ण है A

हृदय में शुद्ध

एक उस खरे समर्पण के साथ आरंभ होता है जो समर्पण पर खुद आधारित है चाहे वह परमेश्वर पर हो या किसी दूसरे व्यक्ति पर धन्य हैं वे, जिन के मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे। (मfRr 5:8) शुद्धता जिसका वर्णन यहां किया गया है वह उस भक्ति के समान है जो परमेश्वर अपने लोगों से चाहता है यदि हम परमेश्वर से हफ्ते के 3 दिन प्रेम करें परंतु बाकी चार दिन हम दूसरी चीजों में व्यस्त हैं परमेश्वर उस प्राथमिकता को प्राप्त नहीं करता जो उसे मिलना चाहिए परमेश्वर वह होना चाहिए जिसे हम सबसे अधिक प्रेम करें हमारे परमेश्वर के और सुना ठीक किए हुए ध्यान के साथ दूसरी आशीष से निश्चित रुप से सही जगह पर आएंगी A सचमुच इस्त्राएल के लिये अर्थात शुद्ध मन वालों के लिये परमेश्वर भला है। भजन संहिता 73:1

संगी मनुष्य के प्रति प्रेम

पुनर स्थापना की प्रक्रिया पहले परमेश्वर के प्रति मनुष्य की प्रेम को पुनः स्थापित करती है परंतु साथ ही साथ मनुष्य को समर्थ करती है कि सच्चे रूप से दूसरों को प्रेम कर सकें परमेश्वर से प्रेम करना स्वभाविक रुप से मनुष्य का मनुष्य के साथ संबंध को पुनर्स्थापित करता है परमेश्वर के लोगों तथा दूसरों के बीच की मित्रता के विषय में कई किताबें लिखी गई हैं हम परमेश्वर का परिवार है यह कहना काफी होगा यदि हमारा संबंध हमारे मस्ती में भाई बहनों के साथ तनावपूर्ण है तथा अविश्वास पर बना हुआ है तब हमें और अधिक क्षेत्र को प्राप्त करना अभी बाकी है परमेश्वर का समाज कलीसिया को बाहरी लोगों ने जानना है उनकी एक दूसरे के प्रति प्रेम के द्वारा यीशु ने कहा मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूं, कि एक दूसरे से प्रेम रखोजैसा मैं ने तुम से प्रेम रखा है :, वैसा ही तुम भी एक दुसरे से प्रेम रखो। ;gqUuk13%34 समय के आरंभ से ही प्रेम करने की आज्ञा बनी हुई है यह ;h’kq ने उस मूल आज्ञा को पवित्र आत्मा के द्वारा पुनः सामर्थ्य किया ताकि हम एक दूसरे से ऐसे प्रेम करें जय श्री परमेश्वर ने हम से प्रेम किया परमेश्वर ने हमें एक करीबी सहभागिता के समाज में लेकर आया है A

निष्कर्ष

छुटकारा प्रक्रिया के माध्यम से पर मनुष्य के लिए दूसरों के साथ वह गहरे संबंध के कॉल उठाने का आधार भी बन जाता है परमेश्वर की लोगों के रूप में परमेश्वर के साथ नजदीकी तथा दूसरों के प्रति सच्चा प्रेम हमारी धरोहर बन जाता है इसी कारण हमारा हृदय इस संबंध में अत्यंत आनंद को लेता है मन रखें कि यह संबंध भी दूसरों के समान

बनाया रखा जाना चाहिए परमेश्वर ने अपने समर्पण को उस मार्ग को बनाने के द्वारा दिखाया जिसके द्वारा वह हमें अपने साथ एक कर सकें आइए हम अपने भाग को करें उस को खोजने में तथा अपने पुरे ह्रदय से उसमें आनंदित होने से A

#14 अपने प्रभु के साथ एक गहरी सहभागिता

छुटकारे पर कई अध्ययन इस बात पर केंद्रित होते हैं कि कैसे परमेश्वर ने अपने लोगों को बचाया यह आवश्यक है क्योंकि बिना पर्याप्त बलिदान की उद्धार नहीं हो सकता इससे आगे हालांकि बाकी ऊर्जा झूठी समाचारों से लड़ने में खर्च होती है तथा सुसमाचार की अधूरी समझ के साथ तथा परिणाम स्वरुप छुटकारे के उद्देश्य पर ध्यान देने के लिए थोड़ा ही समय मिलता है यह उद्देश्य हालांकि सोचने के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह परमेश्वर के लोगों को परमेश्वर की महान योजनाओं का एक दर्शन देता है जब एक व्यक्ति अपने जीवन की सारी पूंजी को लगाता है क्या वह अपनी ख़रीददारी के चुनाव के विषय में सावधान नहीं रहता इसी प्रकार परमेश्वर उद्देश्यपूर्ण करने के लिए चिंतित रहता है जिसके लिए उसने कलीसिया को खरीदा है इसी कारण पर ध्यानपूर्वक उसकी गुड़ योजना को जो उसका अद्भुत छुटकारे की योजना है उसके ऊपर से पर्दे को हटाता है

परमेश्वर की बड़ी उद्देश्य

परमेश्वर ने इसीलिए हमें खरीदा क्योंकि वहां एक करीबी तथा एक गुड संबंध को हमारे साथ चाहता हैइस अध्याय से पहले तीनों अध्याय तरीकों के विषय में बताते हैं जिसके द्वारा परमेश्वर अपने लोगों के साथ समीपता को रखता है:

(1) वह अपने कार्य को कलीसिया के साथ बांटता है ताकि वह और निश्चित रूप से जिस उद्देश्य के लिए उसको रचा गया है पूरा करें

(2) वह अपनी पवित्रता को कलीसिया के साथ बांटता है ताकि वहां उसकी उपस्थिति में बनी रहे उसके द्वारा अशिक्षित हो तथा उस का प्रतिनिधित्व करेगा

(3) परमेश्वर ने प्रियम को कलीसिया के साथ बांटता है ताकि वह उसके प्रेमी उपस्थिति में पनपती जाए तथा उसके मन की मौत आयत की बहाव के द्वारा दूसरों से सच्चाई हमसे प्रियम रख सकें

इस चौथी तथा अंतिम विचार पर हम इस बात को देखेंगे कि कैसे परमेश्वर अपनी निकटता को अपने लोगों के साथ बांटता है यह हालांकि इन पहले 3 बातों से भिन्न नहीं है क्योंकि हर एक निकटता के किसी एक स्तर की मांग करता है आप कल्पना करें कि एक कंपनी का प्रमुख आपके घर आ रहा है कि अपने एक प्रोजेक्ट के विषय में आप मत या आपकी और आपके परिवार के लिए निमंत्रण आए कि आप बार्बी क्यू के लिए उनके यहां जाएं अगर यह होता है तो इसका अर्थ यह है कि आप उसके लिए तथा उसके कार्य के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है चौथा विचार उस सबूत को रखता है जो यह बताता है कि परमेश्वर एक करीबी संबंध को हमारे साथ चाहता है इसलिए नहीं कि वह हमारी सेवाओं को प्राप्त कर सकें मानव कि हमें उसको हमारी अत्यधिक आवश्यकता है परंतु उसकी इच्छा है कि वह आपकी और मेरे साथ रहे

यह विचार इस पूरे अध्ययन काशीर माना जा सकता है इसे शॉर्ट्स बस मिस्टर कैक्टस इंजन द्वारा फिर से परिभाषित किया गया हैA

पहला प्रश्न- मनुष्य का प्रमुख अंत क्या है?

mRrj- मनुष्य का प्रमुख अंत परमेश्वर की महिमा करना है तथा हमेशा के लिए उसमें आनंदित होनाA

परमेश्वर का आनंद और परमेश्वर के साथ समीपता की आवश्यकता है चाहे आप गीत गाते हैं क्या कार्य करते हो अध्ययन करते हो इत्यादि हर यह चीज उसके साथ तथा उसके द्वारा की जानी चाहिए यदि इस बात पर कि परमेश्वर आपसे प्रेम रखता है आप शंका करते हैं आप इन आगे के अध्याय ऊपर गहन ध्यान को दें यह जीवन को परिवर्तित करने वाले हैंA

वाटिका में

वाटिका में घटित घटनाएं इस बात की झलक देती हैं कि ब्रह्मेश्वर अपनी महान शुभकारी की योजना से क्या आशा रखता है जो परमेश्वर ने रचा वह अच्छा था तथा बहुत अच्छा था सृष्टि की कहानी परमेश्वर के उस विचार को चित्रित करती है जो अच्छा है तथा जिसकी वह चाह करता है यही बात बिना कोई शंका उसके लंबे कार्यकाल की योजना में सम्मिलित की जाएगी परमेश्वर ने हमें मशीन में उसकी नई सृष्टि बनाया दूसरा ग्रंथियों 517 परमेश्वर पुराने को पुनर्स्थापित करता है तथा पुनः ठीक-ठाक करता है मृत पुणे पवित्र आत्मा के द्वारा कार्य करते हैं ताकि हम पुनः जीवित हो सके स्वतंत्र तथा उसकी उपस्थिति में सेवा करने के लिए तत्पर

अविश्वसनीय रूप से बेहतर

वाटिका में यह पहला दृश्य कि परमेश्वर को मनुष्य के साथ अच्छा समय बिताने को पसंद करता है एक परम मित्र के समान बातचीत करते हुए तब यहोवा परमेश्वर जो दिन के ठंडे समय बाटिका में फिरता था उसका शब्द उन को सुनाई दिया। तब आदम और उसकी पत्नी बाटिका के वृक्षों के बीच यहोवा परमेश्वर से छिप गए। उत्पत्ति 3:8 हम इस बात को मान सकते हैं कि परमेश्वर को आदम और हवा के साथ समय बिताना अच्छा लगता गीतकार चार्ल्स माइंड हमें इस गीत में अगुवाई करते हैं:

कि वह मेरे साथ चलता है वह मुझसे बात करता है,

और मुझसे कहता है कि मैं उसका हूं;

और जिस आनंद को हम परस्पर बांटते हैं,

हम वही ठहरे रह सकते हैं ऐसा आनंद जिसे किसी ने कभी नहीं जाना

परमेश्वर की मनुष्य के साथ निकटता के मूल चित्र ने परमेश्वर की भविष्य में अपनी लोगों के लिए दोबारा लौटने के पश्चात उनके साथ संबंध की इच्छा का रूपरेखा प्रदान करता है यदि परमेश्वर की मूल अभिलाषा अच्छी थी तब हम भी जानते हैं कि परमेश्वर के चटकारे की योजना उससे भी कहीं अधिक बेहतर होगी क्योंकि वह मूल चित्र जो सृष्टि में दिखती है उसमें बारीकियों की कमी है अब जो हमें मशीन में मिला है उसकी तुलना इस बात से करना कठिन है जो हमारे बाप

दादाओं को उस वाटिका में पतंग से पहले मिला था हालांकि हम इस बात पर इत्मिनान कर सकते हैं कि हम जो अब अनुभव कर रहे हैं उसकी तुलना उसके साथ कर सकते हैं जो हमें प्रभु की महिमा में पुनरागमन के पश्चात मिलेगाA

क्योंकि अदन की वाटिका एक थोड़े विवरण को देता है और हमें केवल उसकी कल्पना करने के लिए छोड़ देता है कि परमेश्वर के साथ उस वाटिका में चलना फिरना हम केवल यही समझ सकते हैं कि परमेश्वर की छुटकारे की योजना उसके मूल सृष्टि की योजना से कहीं अधिक महिमा में होगा इस महान निकटता की विचार को पूर्ण रुप से समझने के लिए सहायता हालांकि हमें मिल सकती है कि हम उस बात की तुलना करें जो चीजें हमें मस्ती में अब मिली है तथा उसके साथ जो इस्राइलियों को पुराने नियम के अधीन में मिली थी यीशु इस दुनिया का उपयोग करता है जब वह इस पृथ्वी पर चला गया तो हम उस मार्ग से ज्यादा दूर नहीं है परमेश्वर अपने लोगों के साथ निकटता की चाह रखता है बहुत उस विद्युत के समान है जो हर एक चीज उसके समीप में निकल आती है एक मनुष्य उस बहाव के विरुद्ध में चक्कू को जला सकता है परंतु जब सारे प्रयास खत्म हो जाते हैं परमेश्वर की और पुनः वह लेकर जाता है कई बार अनजाने में

कुछ लोग इस निकटता को नहीं जानते एक आसान परिभाषा निकटता को इस रुप से समझाती है कि दूसरे के जीवन को जीना वजन इसको गहराई में बताता है जैसे हमारे पास होगा परंतु इस समय यह शायद हमारी सहायता कर सकता है कि आप अपने पारिवारिक संबंधों को तथा मित्रता के विषय में सोचे क्या इनमें निकटता मैत्रीपूर्ण सच्चे

वार्तालाप है तथा आनंद है यह वह कड़वाहट नफरत कुविचार तथा तोड़-मरोड़ से चिन्हित है निकटता उससे पहले समूह के द्वारा सिद्ध होती है तथा जिसमें सब प्रकार के अच्छे विचार तथा निर्णय जो भरोसे पर बनते जाते हैं आइए हम परमेश्वर की उस अभिलाषा को जो वह निकटता के लिए रखता है वचन के उन तथ्यों को देखने के द्वारा जाने जिसमें नियम को दिया जाना भी सम्मिलित है

व्यवस्था के अधिन

निकटता का स्तर व्यवस्था के द्वारा काफी तीव्रता से बढ़ा उस समय से पहले परमेश्वर कुछ व्यक्तियों के द्वारा तथा उनके बातचीत करता था जैसे कि न्यू अब्राहम याकूब स्वप्नों का इस्तेमाल करते हुए दर्शन तथा कई बार शारीरिक प्रगटीकरण में ग्रुप धारण करने के द्वारा पुराना नियम 1500 ईसापूर्व के आसपास बनाया गया जिस ने मनुष्य को सक्षम किया कि वह परमेश्वर की उपस्थिति मैं आ सके

इजराइल में देवियों को चुना गया कि दूसरों की अपेक्षा वह यहां के और अधिक निकट रहे मंदिर में वह परमेश्वर की पवित्र प्रस्थिति में एक पवित्र भाग के रूप में चुने गए और जैसे यह हुआ यह बहुत रुचिकर है तथा छुटकारे की हमारी समझ की बढ़ोतरी के लिए भी यह अर्थपूर्ण है व्यवस्था एक माध्यम को उपलब्ध कराती है जिसके द्वारा यहूदी तथा संसार परमेश्वर के निकट आ सकता है तथा ऐसा करना प्रभु मनुष्य के निकट आ सकता है जो दुनिया के लोगों पर पड़ी आशीष को लेकर आता है

एक बड़ा तनाव हालांकि कई बार छुपा होता है हमारी अज्ञानता के कारण से इस लड़ाई को निरंतर लड़ना पड़ता है परमेश्वर के इतना

गरीब लोग रहेंगे उतना ही होने पवित्र होना है अन्यथा उस का प्रकोप उन पर भड़केगा और वह नाश हो जाएंगे 12वी अध्याय को देखें

इजराइली लोग मिस्त्र में ग़ुलाम में थे प्रभु मिस्त्र पर 10 विपत्तियों को लेकर आया जिसकी समाप्ति सारे पुरुष पहलूटू की मृत्यु के द्वारा यह वह व्यक्ति थे जिसे परमेश्वर ने उपयोग किया कि आखिरकार इस्त्राइलियों को मिस्त्रियों की सामर्थ से छुड़ा सके निर्गमन का अर्थ है बाहर जाने वाली सड़क चालू हुआ परमेश्वर की लंबे समय की योजना क्रियान्वित हो गई हालांकि वहां कई वर्षों तक पूर्ण रूप से क्रिकेट नहीं की गई मृत्यु के दूत के पास ही अधिकार था कि सारे पहलवान पुरुष को वह मार सके इस्त्राइलियों के बच्चों समेत हालांकि उन्हें सुरक्षा का माध्यम उपलब्ध कराया गया यदि वह उसे माने वह उन्हें सुरक्षित रखेगा उसने उसे कहा कि अपने दरवाजे पर लहू को लगाए और विशेष चीजों को विशेष रुप से खाए इत्यादि परमेश्वर ने इजराइली पहलवान पुरुषों को सुरक्षित रखा परंतु पश्चात यह प्रकट किया कि जो बचाए गए हैं वह परमेश्वर के विशेष रूप से हैं A

सब पहिलौठे मेरे हैं; क्योंकि जिस दिन मैं ने मिस्त्र देश में के सब पहिलौठों को मारा, उसी दिन मैं ने क्या मनुष्य क्या पशु इस्त्राएलियों के सब पहिलौठों को अपने लिये पवित्र ठहराया; इसलिये वे मेरे ही ठहरेंगे; मैं यहोवा हूं।। (गिनती 3:13)

बाद में भी और अधिक एक नियम दिया गया जो पहले देखो प्रभु के लिए अलग करता है परमेश्वर की उपस्थिति में इस निमंत्रण के पीछे प्रभु का इस्त्राइलियों को अपने नेपालक पुत्रों के रूप में ले लिया जाना था इसराइल पहला राष्ट्र जो हमारी सहायता करता है वह विशेष रूप से

परमेश्वर को समर्पित है तथा आवश्यक है कि इसके बदले में वह अपने आप को देख

फिर यहोवा ने मूसा से कहा, कि क्या मनुष्य के क्या पशु के, इस्त्राएलियों में जितने अपनी अपनी मां के जेठे हों, उन्हें मेरे लिये पवित्र मानना; वह तो मेरा ही है।। निर्गमन 13:1-2

हर एक पहल होता परमेश्वर की नजरों में विशेष रुप से देखा जाता जो लोगों के मन में इस बात को स्थापित करता है कि परमेश्वर जीवन को देने वाला है तथा उसको पहचाना जाना की योग्य है काफी कुछ 10 वर्ष के समान हालांकि प्रभु एक और आश्चर्यजनक कदम को उठाता है A

भारी परिवर्तन

भारी परिवर्तन इस बात की ओर दर्शाता है कि कैसे प्रभु एक xqzi को पूरे इसराइल के मध्य में अलग करता है जो उसकी उपस्थिति में अत्यंत नजदीक रहेंगे जो उसकी व्यवस्था को सुरक्षित रखने के लिए समर्पित किए जाएंगे

फिर यहोवा ने मूसा से कहा, सुन इस्त्राएली स्त्रियों के सब पहिलौठों की सन्ती मैं इस्त्राएलियों में से लेवियों को ले लेता हूं; सो लेवीय मेरे ही हों। फिर यहोवा ने सीनै के जंगल में मूसा से कहा, लेवियों में से जितने पुरुष एक महीने वा उससे अधिक अवस्था के हों उन को उनके पितरों के घरानों और उनके कुलों के अनुसार गिन ले। गिनती 3:11-12, 14- 15

परमेश्वर ने इस्राइलियों के पहलवान का दावा किया मनुष्य और पशु दोनों के पहल हो तो परमेश्वर ने उन्हें अपने लिए शुद्ध किया

तथा वह उसके हुए वह मेरे होंगे कोई भी परमेश्वर से इस विषय में वाद-विवाद नहीं कर सकता जिन्हें परमेश्वर अपना करके दावा करता है परमेश्वर उपस्थिति से अपनी समझौते की अयोग्य स्थिति को बताता है स्वामित्व का यह पहलू महत्वपूर्ण है तथा हमारी सहायता करेगा इस बात को समझने के लिए कि परमेश्वर ने किस तरीके से इस आदान-प्रदान को पूर्ण किया A

यहोवा की इस आज्ञा को पाकर एक महीने की वा उससे अधिक अवस्था वाले जितने लेवीय पुरूषों को मूसा और हारून ने उनके कुलों के अनुसार गिन लिया, वे सब के सब बाईस हजार थे।। फिर यहोवा ने मूसा से कहा, इस्त्राएलियों के जितने पहिलौठे पुरूषों की अवस्था एक महीने की वा उससे अधिक है, उन सभों को नाम ले ले कर गिन ले। और मेरे लिये इस्त्राएलियों के सब पहिलौठों की सन्ती लेवियों को, और इस्त्राएलियों के पशुओं के सब पहिलौठों की सन्ती लेवियों के पशुओं को ले; मैं यहोवा हूं। यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार मूसा ने इस्त्राएलियों के सब पहिलौठों को गिन लिया। और सब पहिलौठे पुरूष जिनकी अवस्था एक महीने की वा उससे अधिक थी, उनके नामों की गिनती बाईस हजार दो सौ तिहत्तर थी।।

गिनती 3:39-43

प्रभु ने तब कहा कि वह लेवियों को इसराइल के पहलू हैं के बदले में लेगा हम यहां रुकें तथा कुछ बातों को देखें लेवी पुरुषों की संख्या जो 1 महीने से ऊपर थे 22000 थी पहले जन्मे इस्राइलियों की संख्या 1 महीने और उससे बड़े 22273 प्रभु ने कहा 341 में तुम मेरे

देवियों के साथ बदल दिया इस पर कोई भी वह नहीं था प्रभु ने कहा कि मैं प्रभु हूं वहां पर273 अतिरिक्त पहल उठे इस्त्राइली थी तो उन्हें हर एक के लिए पांच शक्ल देनी पड़े लिए देवियों को लोगे यहां पर एक आदान-प्रदान था इस्त्राइल के सारे पहलुओं को लेने के बजाए प्रभु ने उन्हें

तब यहोवा ने मूसा से कहा, इस्त्राएलियों के सब पहिलौठों की सन्ती लेवियों को, और उनके पशुओं की सन्ती लेवियों के पशुओं को ले; और लेवीय मेरे ही हों; मैं यहोवा हूं। और इस्त्राएलियों के पहिलौठों मे से जो दो सौ तिहत्तर गिनती में लेवियों से अधिक हैं, उनके छुड़ाने के लिये, पुरूष पीछे पांच शेकेल ले; वे पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से हों, अर्थात बीस गेरा का शेकेल हो। और जो रूपया उन अधिक पहिलौठों की छुडौती का होगा उसे हारून और उसके पुत्रों को दे देना। गिनती 3:44-48

परमेश्वर अपनी योजना को दोहराता है तथा बचे हुए 273 के साथ क्या करना है वह भी बताता है क्या आपने कभी सोचा कि कैसे देवियों को चुना गया कि वह परमेश्वर के समीप रहें यह उत्तर है परमेश्वर ने एक बड़े परिवर्तन को किया इस्त्राएलियों के सारे पहलू हैं का दावा करने के बजाए उसने लिपियों का दावा किया A

ध्यान दें इस शब्द के इस्तेमाल पर फिरौती विरोधी शब्द समान शब्द से आता है जिससे छुटकारा या खरीदारी आता है विस्तृत जानकारी आवश्यक है

जब मैं बैंक में कार्यरत था जो पैसा प्राप्त किया जाता और दिया जाता उसे उस पैसे के साथ समान होना चाहिए जिसे मैंने शुरुआत में निकाला था इस्त्राइलियों के प्रकरण में परमेश्वर ने हर एक व्यक्ति की कीमत को

5 शकील रखा इस कारण से यह आदान प्रदान समान हुआ छुटकारे के पीछे यह सोच इस आदान-प्रदान में महत्वपूर्ण है छुटकारे में आर्थिक नियम मुंह की एक मजबूत बात है A

सारांश में प्रभु परमेश्वर के लोग इसराइल के विषय में घोषणा करता है ना केवल वह उसके लोग होंगे परंतु उसके बहुमूल्य पहलू थे भी वह इस्त्राइलियों को अपने निकट लेकर आया उनके पास विशेष जिम्मेदारियां थी जिन्हें उन्हें पूरी करना था ताकि वह परमेश्वर की करीब रह सकें तथा उसकी सेवा में कार्य कर सकें व्यवस्थाविवरण 319 परमेश्वर परमेश्वर की लोगों की अति गरीब आया उसकी उस योजना के द्वारा मिलाप वाला तंबू के साथ इसके पश्चात मंदिर के निर्माण के द्वारा A

मिलाप वाला तंबू तथा मंदिर

मूसा के समय पवित्र पर्वत पर दूसरी 40 दिन की यात्रा के दौरान परमेश्वर ने उसको मिला वाले तत्वों के निर्माण काव्य कर दिया तथा पवित्र आसनों जिसमें महा पवित्र स्थान भी सम्मिलित थाA

> यहोवा ने मूसा से कहा, इस्त्राएलियों से यह कहना, कि मेरे लिये भेंट लाएं; जितने अपनी इच्छा से देना चाहें उन्हीं सभों से मेरी भेंट लेना।और जिन वस्तुओं की भेंट उन से लेनी हैं वे ये हैं; अर्थात सोना, चांदी, पीतल, निर्गमन 25 :1-3

लोगों को आवश्यक वस्तुएं उपलब्ध कराया जाना आवश्यक है तथा मिलाप वाला तंबू को बनाना यह बिंदु इस बात पर जोर देती है जैसे प्रभु उस कार्य में जिसकी वह योजना बनाता है लोगों को सम्मिलित करता है उसे बनाया क्योंकि उनके जाने से पहले मिस्त्रियों ने उन्हें वह

सब कुछ दे दिया जो उन्हें आवश्यकता हमारी आराधना में भी परमेश्वर ने रियायत दी है जो कुछ हमारे पास है हमारी धन-संपत्ति हमारे अनुभव तथा हमारी आवाज में वह पहले उसके लिए दी गई हैं ताकि हम उसको सराह सके तथा उसकी स्तुति कर सकें उसके साथ जो हमें दिया गया है *A* और वे मेरे लिये एक पवित्रस्थान बनाए, कि मैं उनके बीच निवास करूं। जो कुछ मैं तुझे दिखाता हूं, अर्थात निवासस्थान और उसके सब सामान का नमूना, उसी के अनुसार तुम लोग उसे बनाना॥ निर्गमन 25:8-9

पवित्र स्थान के लिए यह शब्द इब्रानी मूल शब्द का देश से आता है जिसका अर्थ है पवित्र करना शुद्ध करना समर्पित करना अलग करना इत्यादि जिसका अनुवाद पवित्र स्थान के रूप में भवन के रूप में पवित्र स्थान के रूप में किया जा सकता है निश्चित रूप से पवित्र स्थान को परमेश्वर के रहने के स्थान के रूप में अलग किया गया इसके लिए परमेश्वर की योजना को देखें और वे मेरे लिये एक पवित्रस्थान बनाए, कि मैं उनके बीच निवास करूं। निर्गमन 25:8 इस कारण से पवित्र स्थान मिलाप वाला तंबू को ईश्वर द्वारा मोर्चा को दिए गए हुए नक्शे के अनुसार ही बना माता प्रभु इस बात को कई बार बताता है और निवास को इस रीति खड़ा करना जैसा इस पर्वत पर तुझे दिखाया गया है॥ निर्गमन 26:30 यह शब्द मिलाप वाला तंबू का अर्थ पवित्र नहीं जो हालांकि केवल एक तंबू या कनात है यह इसलिए कि इसराइली लोग इसे उठाकर लिए चलते थे इसका चित्र काफी सामर्थ्यशाली हैं परमेश्वर कि उसके लोगों के मध्य में रहने की इच्छा इतनी थी कि उसने जो आकाश और पृथ्वी का सृजनहार है बहुत तंबू में रहने को तैयार था जिसे उठाकर इधर-उधर ले जाया जा सकता था

परमेश्वर की उपस्थिति और आराधना

परमेश्वर की उपस्थिति समझा क्योंकि वह तो मुझे विपत्ति के दिन में अपने मण्डप में छिपा रखेगा; अपने तम्बू के गुप्त स्थान में वह मुझे छिपा लेगा, और चट्टान पर चढ़ाएगा। भजन संहिता 27:5 परमेश्वर माता भजन उसे इस जीवन के बयावर तूफानों से छुपाता तथा सुरक्षित रखता था दाऊद के समय के बाद में के स्थान पर मंदिर आ गया था यह परमेश्वर की उपस्थिति को बनाए रखेगा परंतु परमेश्वर अपने भविष्यवक्ताओं के द्वारा इस बात की ओर इशारा कर रहा था कि कैसे नए युग में प्रभु उनके साथ रहेगा उस नई वाचा के युग में जिसमें अन्य जाती तथा गैर यहूदी विश्वासी सम्मिलित हैं

> हे भाइयो, मेरी सुनोशमौन ने बताया :, कि परमेश्वर ने पहिले पहिल अन्यजातियों पर कैसी कृपा दृष्टि की, कि उन में से अपने नाम के लिये एक लोग बना ले। और इस से भविष्यद्वक्ताओं की बातें मिलती हैं, जैसा लिखा है, कि। इस के बाद मैं फिर आकर दाऊद का गिरा हुआ डेरा उठाऊंगा, और उसके खंडहरों को फिर बनाऊंगा, और उसे खड़ा करूंगा। इसलिये कि शेष मनुष्य, अर्थात सब अन्यजाति जो मेरे नाम के कहलाते हैं, प्रभु को ढूंढें। यह वही प्रभु कहता है जो जगत की उत्पत्ति से इन बातों का समाचार देता आया है। प्रेरितों के काम 15: 14-18

> उस समय मैं दाऊद की गिरी हुई झोंपड़ी को खड़ा करूंगा, और उसके बाड़े के नाकों को सुधारूंगा, और उसके खण्डहरों को फिर बनाऊंगा, और जैसा वह प्राचीनकाल से था, उसको वैसा ही बना

दुंगा; जिस से वे बचे हुए एदोमियों को वरन सब अन्यजातियों को जो मेरी कहलाती है, अपने अधिकार में लें, यहोवा जो यह काम पूरा करता है, उसकी यही वाणी है।। आमोस 9:11-12

एक नया मंदिर

पुरानी नियम का मंदिर नई वाचा के मंदिर का एक प्रकार है पत्थरों पर बनने की बजाए जय आत्मिक घर जीवित पत्थरों पर बनेगा तुम भी आप जीवते पत्थरों की नाईं आत्मिक घर बनते जाते हो, जिस से याजकों का पवित्र समाज बन कर, ऐसे आत्मिक बलिदान चढ़ाओ, जो यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर को ग्राह्य हों। 1 पतरस 2:5

जिसमें यहूदी तथा अन्य जाति दोनों होंगे जैस श्री मोहन ने भविष्यवाणी की थी यह परमेश्वर का सदा ठहरने वाला छुटकारे की योजना है जो पुरानी बातों में से लेकर बताता है यह वही प्रभु कहता है जो जगत की उत्पत्ति से इन बातों का समाचार देता आया है। प्रेरितों के काम 15:18

नियम में परमेश्वर अपने लोगों को पहल उठा कर कर बुलाता था वह एक परिवार के समान उसके निकट रहेंगे और वह एक पिता के रूप में उन बातों को उपलब्ध कराएगा जिन्हें उनकी आवश्यकता है पौलुस कुछ रूप से इसका सारांश देता है रोमियों 9:4 वे इस्त्राएली हैं; और लेपालकपन का हक और महिमा और वाचाएं और व्यवस्था और उपासना और प्रतिज्ञाएं उन्हीं की हैं।

पुराने नियम में यह निकटता का महान चित्र केवल एक शुरुवात थी दो और स्तर हैं जो नए नियम के समय में है तथा पूर्ण छुटकारे के युग में है जिसका आनंद हम मसीह के आगमन पर नए देह में उठाएंगे.

हम वह मंदिर हैं

ग्रंथियों तथा इफिसियों की पुस्तकों में पलूस मंदिर को परमेश्वर के लोगों के रूप में बताता है यूनानी शब्द जो मंदिर के लिए आयतों में कमाल किया गया है वह पवित्र स्थान की ओर उस भीतरी पवित्र स्थान की ओर दर्शाता है जहां केवल जातकों को जाने की अनुमति थी

> क्या तुम नहीं जानते, कि तुम परमेश्वर का मन्दिर हो, और परमेश्वर का आत्मा तुम में वास करता है? 1 कुरिंथियों 3:16
>
> यदि कोई परमेश्वर के मन्दिर को नाश करेगा तो परमेश्वर उसे नाश करेगा; क्योंकि परमेश्वर का मन्दिर पवित्र है, और वह तुम हो। 1 कुरिंथियों 3:17
>
> और मूरतों के साथ परमेश्वर के मन्दिर का क्या सम्बन्ध? क्योंकि हम तो जीवते परमेश्वर का मन्दिर हैं; जैसा परमेश्वर ने कहा है कि मैं उन में बसूंगा और उन में चला फिरा करूंगा; और मैं उन का परमेश्वर हूंगा, और वे मेरे लोग होंगे। 2कुरिंथियों 6:16

निकटता की शुरुवात समीप आने से होती है तथा निरंतर संग रहने से गहरी होती जाती है जब लोग एक साथ रहते हैं वह दूसरे को बात सुन जो दूसरे करते हैं उन्हें देख सकते हैं तथा कई बार वह साथ में खाते हैं इसमें दो महत्वपूर्ण बातें हैं

1) परमेश्वर की लोग मंदिर हैं(1 कुरिंथियों 3:16 , 2कुरिंथियों 6:16) तुम परमेश्वर का मंदिर हो हम जीवित परमेश्वर की मंदिर है यह वक्तव्य अत्यंत आश्चर्यजनक है परंतु वह उस बात को दर्शाते हैं जिसे यीशु ने उस्मान छुटकारे की योजना में पूरा किया जब उसने नई वाचा को क्रियांवित किया हम पुरानी नियम के याजक नहीं जो प्रभु की सेवा केवल पवित्र स्थान में करेंगे हम मसीह के द्वारा जो हमारा याचक है उसके द्वारा परमेश्वर के जुड़े हुए लोग हैं तथा निरंतर परमेश्वर की उपस्थिति में रह सकते हैं

2) परमेश्वर हमारे मध्य में रहेगा हम निरंतर रूप से प्रभु की उपस्थिति में रह सकते हैं क्योंकि परमेश्वर हमें रहता है अब तक प्रभु हमें अपने मंदिर के रूप में घोषित करता है हम मंदिर का वह आंगन नहीं जहां पर हम परमेश्वर की झलक को देख सकते हैं परंतु हम निरंतर रूप से उसकी पवित्र उपस्थिति का अनुभव कर सकते हैं

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक इस निकटता की चित्र को दिखाता है मंदिर की चित्र के द्वारा वह कोशिश करता है हमारे छोटे से दिमाग में इस समझ से बाहर निकटता की चित्र को डालने के द्वारा

फिर मैं ने सिंहासन में से किसी को ऊंचे शब्द से यह कहते सुना, कि देख, परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच में है; वह उन के साथ डेरा करेगा, और वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर आप उन के साथ रहेगा; और उन का परमेश्वर होगा। प्रकाशितवाक्य 21:3

हमारे अनंतता का कौनसा चित्र है स्पष्ट रुप से यह परमेश्वर की उपस्थिति में रहने के द्वारा चिन्हांकित है परमेश्वर हमें और हमारे चारों

ओर रहता है वह उसके लोग होंगे तथा परमेश्वर खुद उनके मध्य में रहेगा और मूरतों के साथ परमेश्वर के मन्दिर का क्या सम्बन्ध? क्योंकि हम तो जीवते परमेश्वर का मन्दिर हैं; जैसा परमेश्वर ने कहा है कि मैं उन में बसूंगा और उन में चला फिरा करूंगा; और मैं उन का परमेश्वर हूंगा, और वे मेरे लोग होंगे। 2कुरिंथियों 6:16 निकटता को चिन्हांकित करने का इससे कोई बेहतर तरीका है? यह ऐसा प्रतीत नहीं होता परंतु हम प्रकाशित वाक्य के अंत में इसको देखते हैं यहां पर परमेश्वर की छुटकारे के उद्देश्य के कई चित्र हैं जो आपस में उस महिमा में आशा और आनंद के चित्र मैं जुड़ते जाते हैं मैं इस की अभिलाषा अपने लिए तथा दूसरों के लिए करता हूं

लागू करना

यह शिक्षा हमारी सहायता करता है इस बात को समझने के लिए कि किन कारणों से परमेश्वर की लोगों को जगत की ज्योति होने के लिए बुलाया गया है वह परमेश्वर के निकट रहते हैं तथा उस की रोशनी को अंधकार में और त्यागी हुए संसार में दर्शा सके यह इस बात को समझाने में भी सहायता करता है उन कारणों को कि परमेश्वर के लोगों को प्रार्थना करनी है तथा उसके वचन को पढ़ना है तथा बढ़ने के लिए और परमेश्वर की निकटता में बने रहने के लिए उसकी इच्छा को पूरी करना है हमारी बढ़ोतरी और हमारी सेवा सीधे रुप से परमेश्वर के साथ संबंध को बढ़ाने पर निर्भर हैं

आपस में बांटी गई महिमा

निकटता के लिए परस्पर विश्वास का गहरा होना आवश्यक है हम अपने उनके हर विचारों को और समस्याओं को उन्हीं के साथ बांटने को इच्छुक

होते हैं जिन पर हम सबसे अधिक भरोसा करते हैं प्रभु हमारी सहायता करता है परमेश्वर की गंभीरता को तौभी यहोवा को यही भाया कि उसे कुचले; उसी ने उसको रोगी कर दिया; जब तू उसका प्राण दोषबलि करे, तब वह अपना वंश देखने पाएगा, वह बहुत दिन जीवित रहेगा; उसके हाथ से यहोवा की इच्छा पूरी हो जाएगी। वह अपने प्राणों का दुख उठा: कर उसे देखेगा और तृप्त होगा; अपने ज्ञान के द्वारा मेरा धर्मी दास बहुतेरों को धर्मी ठहराएगा; और उनके अधर्म के कामों का बोझ आप उठा लेगा। इस कारण मैं उसे महान लोगों के संग भाग दूंगा, और, वह सामर्थियों के संग लूट बांट लेगा; क्योंकि उसने अपना प्राण मृत्यु के लिये उण्डेल दिया, वह अपराधियों के संग गिना गया; तौभी उसने बहुतों के पाप का बोझ उठ लिया, और, अपराधियों के लिये बिनती करता है॥ यशायाह 53: 10-12 :

यह भाग बड़ी कीमत को दिखाता है जिसे मशीनें चुकता किया अपने लोगों को प्राप्त करने के लिए यह सेवक एक निर्मम तथा पीड़ादायक मृत्यु को प्राप्त करता है उनके लिए मारे जाने के द्वारा उसने उनके धर्मों को उठा दिया तथा उनके पापा के उस परिणाम को उसने परमेश्वर की न्याय को अपने ऊपर ले लिया

जहां पर दर्द काफी स्पष्ट है तथा उसका उद्देश्य भी क्योंकि वह यशायाह तौभी यहोवा को यही भाया कि उसे कुचले; उसी ने उसको रोगी कर दिया; जब तू उसका प्राण दोषबलि करे, तब वह अपना वंश देखने पाएगा, वह बहुत दिन जीवित रहेगा; उसके हाथ से यहोवा की इच्छा पूरी हो जाएगी यशायाह 53:10-12 उसकी बलिदान की तीन परिणाम है

पहला उसकी संतान होना और कई विश्वासियों की से जो आने वाले समय में मर्सी पर विश्वास करने के द्वारा परमेश्वर की परिवार विभाग होंगे परमेश्वर एक बड़े परिवार को चाहता है उसने हमारे पापों को अपने ऊपर ले लिया आदरणीय परमेश्वर के अनुसार बीज को उत्पन्न नहीं किया परंतु दूसरे आदरणीय परमेश्वर का भय मानने वाले एक बड़े परिवार को अपने परिवार में ले पालक ले लिया परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उस ने उन्हें परमेश्वर के सन्तान होने का अधिकार दिया, अर्थात उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं। यूहन्ना 1:12, परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उस ने उन्हें परमेश्वर के सन्तान होने का अधिकार दिया, अर्थात उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं। इब्रानियों 2:10 और अब्राहम के विश्वास के विषय में पुनः देखने के द्वारा जो एक वायदा बन गया इस कारण एक ही जन से जो मरा हुआ सा था, आकाश के तारों और समुद्र के तीर के बालू की नाईं, अनगिनित वंश उत्पन्न हुआ।। इब्रानियों 11:12

दूसरा यीशु फिर से जीवित होगा तथा अपने लोगों के मध्य में रहेगा वह अपने दिनों को बढ़ाएगा यह वाक्यांश मसीह के प्रधान की ओर दर्शाता है वह अपने लोगों के पापों की कीमत को चुकाने के लिए मारा गया परंतु यह उस व्यक्ति के समान नहीं हुआ जो एक बड़े नायक के रूप में किसी के लिए मरता है तथा लोग उसका स्मरण उसकी मूरत को बनाकर करते हैं नहीं यीशु आज जिंदा है! यीशु अपने लोगों के साथ है और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओऔर : देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं।।mfRr 28:20 वह उनमें पवित्र आत्मा के द्वारा रहता है ये बातें मैं ने तुम्हारे साथ रहते हुए

तुम से कहीं। परन्तु सहायक अर्थात पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैं ने तुम से कहा है, वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा। यूहन्ना 14:25-26

तीसरा यीशु एक सेवक राजा जो चाहता है कि अपने लोगों के साथ अपनी महिमा को बांटे हालांकि परमेश्वर के लोग उसके सेवक है बंदे हैं वह उसकी संतान भी हैं तथा उसकी महिमा और उसके लाभ के भी संघी भागी हैं यशायाह इस बात को स्पष्ट करता है इस कारण मैं उसे महान लोगों के संग भाग दूंगा, और, वह सामर्थियों के संग लूट बांट लेगा; क्योंकि उसने अपना प्राण मृत्यु के लिये उण्डेल दिया, वह अपराधियों के संग गिना गया; तौभी उसने बहुतों के पाप का बोझ उठ लिया, और, अपराधियों के लिये बिनती करता है॥ यशायाह 53:12 क्योंकि वह मारा गया और हमें अपने लिए ले लिया वह कहता है कि वह बड़े भाग को अपने कई संतानों में बांटेगा हम उस मिराज के एक बयानी को देख सकते हैं जो पवित्र आत्मा के रूप में हमें मसीही में मिला प्रभु ने कहा यह जो आने वाला है उसका थोड़ा सा भाग है वह उसके मोल लिए हुओं के छुटकारे के लिये हमारी मीरास का बयाना है, कि उस की महिमा की स्तुति हो॥ bfQfl;ksa 1:14 और जो बचा हुआ है वह परमेश्वर की खुद की संपत्ति की छुटकारे पर दिया जाएगा यह भविष्य की ओर दर्शाता है मसीह के आने पर संपूर्ण छुटकारे के समय पर इसको महान करके दर्शाने के द्वारा वह इस बात को बताता है कि कैसे अपने संतानों की विश्वास योग्यता के द्वारा यह मेरा उंर में बांटी जाएगी A

यहां पर कई आयते हैं जो मसीही में मिराज के सबूत का समर्थन करती हैं A

क्योंकि तुम जानते हो कि तुम्हें इस के बदले प्रभु से मीरास मिलेगीतुम प्रभु मसीह की सेवा करते हो। : कुyksfl;ksa 3%24

दो बार मसीह को उसकी तथा पुनरुत्थान के संदर्भ में प्रभु कर कर बुलाया गया है वह अपनी मेराज की प्रतिफल को बांटेगा यह लूट अधिकार और दूसरी आत्मिक मीटिंग मसीह की है परंतु वह स्वेच्छा से अपने लोगों में इसे बांटता है A

और इसी कारण वह नई वाचा का मध्यस्थ है, ताकि उस मृत्यु के द्वारा जो पहिली वाचा के समय के अपराधों से छुटकारा पाने के लिये हुई है, बुलाए हुए लोग प्रतिज्ञा के अनुसार अनन्त मीरास को प्राप्त करें। इब्रानियों 9:15

यह आया था यशायाह 53:10-12 के समान मसीह की मृत्यु तथा छुटकारे की योजना से उछल अंत में राज के वायदे के द्वारा जुड़ती है मसीह की मृत्यु एक नई आशा को लेकर आई और उसका प्रोग्राम उसकी योजनाओं की पूर्णता को लेकर आएगा A

अर्थात एक अविनाशी और निर्मल, और अजर मीरास के लिये।

1 पतरस 1:4

पतरस मसीह की मृत्यु की महत्वता के विषय में बात करता है और परमेश्वर पिता के भविष्य ज्ञान के अनुसार, आत्मा के पवित्र करने के द्वारा आज्ञा मानने, और यीशु मसीह के लोहू के छिड़के जाने के लिये चुने गए हैं। तुम्हें अत्यन्त अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे।। 1 पतरस 1:2 परंतु तुरंत इस बात की ओर ले जाता है की मसीह के पुनरुत्थान के द्वारा परमेश्वर के लोगों को जो आशा मिलती है उसके विषय पर मेरा स्कोर

तीन रूप से वर्णित किया गया है अविनाशी शुद्ध तथा कभी ना ढलने वाला और मुझे तो तू खराई से सम्भालता, और सर्वदा के लिये अपने सम्मुख स्थिर करता है।। भजन संहिता 41: 12

सारांश भागी होना निकटता की निशानी है जो मेरा है वह तुम्हारा है नया नियम इस बात की पुष्टि करता है तथा पुराने नियम की ओर साशा और वायदे को और अधिक तीव्रता से बताता है यीशु ने उसे हमारे लिए प्राप्त किया है तथा इस बात से प्रीति रखता है कि जो कार्य उसने हमारे सामने रखा है उस को पूर्ण करने में हमारी सहायता करें विश्वास से जो प्रतिफल आता है वह उस विश्वास योग्यता के आधार पर जो उस कार्य को जिसे उसने कर ने हमें बुलाया था दिखाते हैं उनमें बांटा जाएगा आप उन भंडारी के दृष्टांत को देखें लुका 12 :40 47 प्रभु अत्यंत उत्साहित है कि जो कुछ उसका है उसको बांटे की अनंत काल तक हम उसके साथ उन बातों का आनंद उठा सकें परमेश्वर को वह उत्सव पसंद है जो हमेशा बनी रहे A

> हे मेरे परमेश्वर यहोवा, तू ने बहुत से काम किए हैंजो ! आश्चर्यकर्म और कल्पनाएं तू हमारे लिये करता है वह बहुत सी हैं; तेरे तुल्य कोई नहींमैं तो चाहता हूं की खोलकर उनकी चर्चा ! करूं, परन्तु उनकी गिनती नहीं हो सकती।। मेलबलि और अन्नबलि से तू प्रसन्न नहीं होता तू ने मेरे कान खोदकर खोले हैं। होमबलि और पापबलि तू ने नहीं चाहा।
>
> भजन संहिता 40:5-6

हृदय और मन मैं भागी

निकट होना एक साथ एक स्थान पर होने से कहीं अधिक बढ़कर है यह एक मन और एक हृदय का भागी होना है एक स्थान मैं एक साथ यदि अनंत काल तक पी रहे वह उस विश्वास और प्रेम को नहीं ला सकता जिसकी आवश्यकता है एक दूसरे के स्वप्नों के भागी होनी के आनंद को मनाने के लिए विवाह को हम धनी और निर्धन पड़ोसियों के बीच में टूटे हुए देख सकते हैं नरक एक ऐसा स्थान है जो परमेश्वर की उपस्थिति से बिल्कुल दूर है और यह एक बढ़ने तथा पनपने वाले रिश्ते की बिल्कुल विपरीत एक चित्र है A

> जब आप इतने अंधे हो जाते हैं की आकाश को बनाने वाला तथा राष्ट्रों का शासक और जो सारे उन बातों को जानता है हमारे प्राणों का प्रेमी हमारे लिए उबाऊ हो जाता है तब एक ही चीज बचती है और वह है संसार के प्रति प्रेम क्योंकि हृदय हमेशा विचलित है उसके पास उस का खजाना होना है यदि स्वर्ग में नहीं तो अब पृथ्वी पर- जॉन फाइबर

एक बड़ा विवाह आपस में भागी निकटता का उत्तम उदाहरण है आरंभ में परमेश्वर ने आदम और हव्वा की रचना करी एक दूसरे के लिए उस विवाह के लिए तथा इस विधि को उसने निर्धारित किया इस कारण पुरूष अपने माता पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा और वे एक तन बने रहेंगे। और आदम और उसकी पत्नी दोनो नंगे थे, पर लजाते न थे।। उत्पत्ति2: 24-25 एक होना इस निकटता की राज को प्रकट करता है दो व्यक्ति अपने आप का इंकार करने की प्रक्रिया का

आरंभ करते हैं तथा एक दूसरे में डूबते जाते हैं अब तो जिंदगियां एक में रहती है दो अब एक हो गए हैं A

जय चित्र शास्त्रों की शुरुवात में रखा गया है हमारी सहायता करने के लिए कि किस प्रकार के संबंध की चाह प्रभु अपने लोगों से करता है उसकी एक झलक देने के लिए आइए पहले हम दस आज्ञाओं को परमेश्वर की अपने लोगों के प्रति प्रेम के उदाहरण के रूप में देखें व्यवस्थाविवरण 567 परमेश्वर अपने लोगों के प्रति अपने समर्पण को प्रकट करता है उसने उन्हें छुड़ाया ताकि उसको वह अपना बना सकें वहां पूर्ण निष्ठा की मांग करता है जैसे एक पति अपनी पत्नी से A

उसकी बुलाहट उससे प्रेम करने के लिए है कि अपने पूरे मन अपने पूरे हृदय तथा अपने पूरे बल से उसे प्रेम करें व्यवस्थाविवरण 65 यह समझ में आता है इस बात को देखने के द्वारा जो समर्पण परमेश्वर ने अपने लोगों के साथ किया

विवाह की भाषा पुराने और नए नियम की भाषा के समान है क्योंकि वह विश्वास योग्यता तथा एक दूसरे के प्रति समर्पण पर आधारित है यह शब्द प्रेम पुरानी नियम में कई बार इस्तेमाल किया गया है तथा वह नए नियम का भी पसंदीदा शब्द है एक इब्रानी शब्द है जो प्रेम शब्द से मिलता-जुलता है हस्त जिसका अर्थ है करुणा हालांकि इसके कई अनुवाद हैं इस शब्द का अर्थ त्वचा की क्रीम पर आधारित है तथा करुणा केभाव को दर्शाता है A

> यहोवा धन्य है, क्योंकि उसने मुझे गढ़ वाले नगर में रखकर मुझ पर अद्भुत करुणा की है। भजन संहिता 31: 21

दुष्ट को तो बहुत पीड़ा होगी; परन्तु जो यहोवा पर भरोसा रखता है वह करूणा से घिरा रहेगा। भजन संहिता 32:10

तब उसने प्रजा के साथ सम्मति कर के कितनों को ठहराया, जो कि पवित्रता से शोभायमान हो कर हथियारबन्दों के आगे आगे चलते हुए यहोवा के गीत गाएं, और यह कहते हुए उसकी स्तुति करें, कि यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि उसकी करुणा सदा की है।

2 इतिहास 20:21

श्रेष्ठ गीत

श्रेष्ठ गीत भरोसे तथा एक विवाह के संबंध में बने रहने वाले आनंद को दिखाता

है शारीरिक निकटता के शब्द इतने विचारोत्तेजक है कि कोई इसे ना पड़े विवाह के संबंध में यौनक्रिया का उपयोग किया गया है लोगों को उस निकटता के पवित्र आनंद के विषय में समझने के लिए यह यहीं पर नहीं रुकता ना ही शारीरिक निकटता निकटता बढ़ती जाती है जिसे हृदय और मन भागी होती जाते हैं A

उसकी अपने आप को कुछ जानने की भावनाएं श्रेष्ठ गीत 1:5-6 के ऊपर उसके उसके प्रति प्रेम के द्वारा जय प्राप्त होती है उस स्त्री का ध्यान अपनी ओर से हटकर उसके प्रेमी पर लगता है श्रेष्ठ गीत 2: 8-9 जो उसे अनुमति देता है कि वह एक दूसरे में बढ़ सकें श्रेष्ठ गीत 2:16 यह सगाई का समय के पश्चात अध्याय-3 में विवाह तथा और अत्यधिक अंतरंग शब्दों तथा दृश्यों का प्रयोग A

उत्पत्ति 2 में विवाह की मौलिक शिक्षाओं के साथ तथा विवाह को परमेश्वर की अपने लोगों के साथ आत्मिक वाचा के रूप में पहचाने जाने के द्वारा इफिसियों 5 में श्रेष्ठ गीत को उस गहरे समर्पण के चित्र के रूप में समझा जाना चाहिए जो विवाह तथा मसीही और उसकी दुल्हन उसकी कलीसिया के बीच में है एक बचाने वाले तथा बचाए गए व्यक्ति की विवाह से बढ़कर और कोई उत्तम चित्र नहीं हो सकता A

यदि आप परमेश्वर की महिमा की प्रगटीकरण की प्रति अत्यंत तीव्र इच्छा को महसूस नहीं करते हैं यह इसलिए नहीं कि आप अपने अत्याधिक उसे पिया है और आप संतुष्ट हैं वह इसलिए है कि आपने इस संसार की मिर्च के आसपास कितने लंबे समय तक समय को बताया है आपका प्राण छोटी बातों से भर गया है तथा बड़ी बातों के लिए इसमें कोई स्थान नहीं हैaa A

-जॉन पाइपर परमेश्वर के लिए भूख

आत्मिक विवाह

प्रेरित पौलुस इस विषय में रोशनी देता है कि एक अच्छे व्यवहार में किनवा आवश्यकता है जिससे वह विवाह के पीछे के गहरे सत्य को इस में मिलाने के बिना नहीं कर सकता जो मस्ती तथा कलीसिया की एकता में मिलता है A

> इस कारण मनुष्य माता पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा, और वे दोनों एक तन होंगे। यह भेद तो बड़ा है; पर मैं मसीह और कलीसिया के विषय में कहता हूं। पर तुम में से हर

एक अपनी पत्नी से अपने समान प्रेम रखे, और पत्नी भी अपने पति का भय माने॥ इफिसियों 5:31-33

पर इस बात की पुष्टि करता है कि विवाह की विधि का अनुवाद कुछ और अधिक बड़े के चिन्ह के रूप में है मसीह और उसकी कलीसिया के विषय में मैं मशीन और उसकी कलीसिया के संदर्भ में बात कर रहा हूं उत्पत्ति का प्रारंभिक भाग परमेश्वर के अद्भुत कार्य को समझने कि हनीफ को उपलब्ध कराता है विवाह के कारण तथा जो प्रतीक वह लेकर चलता है मसीह के उस स्पष्ट प्रेम के साथ वह समर्पित है कि सर्वदा के लिए वह उसे अपना बनाए एक रूप में वह अनंत काल के भागी हूं A

यहां पर विवाह के विषय में और भी बहुत कुछ कहा जा सकता है परंतु हमारा ध्यान इस बात पर है कि हमारी सहायता करें कि कैसे विवाह परमेश्वर कि उसकी लोगों के साथ संबंध की इच्छा को समझने के लिए जब हम एक बार इस प्रतीक के अर्थ को समझ जाते हैं दूसरे उदाहरण तथा पद्यांश हमारे स्मरण में आ सकते हैं उस बात को चिन्हांकित करते हुए की परमेश्वर की बड़ी रुचि है हमें अजाद करें कि हम आनंदपूर्वक उसकी उपस्थिति में रह सके परमेश्वर चाहता है कि हम उसके महान और कभी ना बदलने वाले प्रेम को जान सकें वह हमारे साथ उसके महान आनंद को बांटना चाहता है अति उत्तम जीवन जीना तभी संभव है जब हमारा हृदय और जीवन साथ जुड़ा हुआ है A

तैयार दुल्हन

कई लोग इसलिए विवाह करते हैं क्योंकि वह यह विश्वास करते हैं कि वह अपनी आशाओं को तथा अपने आनंद को विवाह के द्वारा प्राप्त कर

सकते हैं विवाह में कई भयानक घटनाओं की बहुतायत के बावजूद जोड़ें विश्वास करते हैं कि उनका प्रेम भिन्न है तथा उस नीम के ऊपर वह अपनी आशाओं को रखते हैं यह इसलिए है क्योंकि भीतर परमेश्वर ने उनके प्राण में यह इच्छा डाली है कि हम अपने हृदय को उसके साथ बांटें हम इस निकटता के लिए लालायित होते हैं हमें प्रेम की आवश्यकता है सिरता की आवश्यकता है तथा उन बकरों की आवश्यकता है कि हम अपने सपनों को अपने कदमों को बांट सके हमारे पास कोई हो जिस पर हम निर्भर कर सकेंगे निकटता को समझना कठिन है क्योंकि बहुत थोड़े हैं जिन्होंने इसका अनुभव किया है परंतु यह निकटता की इच्छा है जिसने परमेश्वर को अपने इकलौते पुत्र को देने के लिए बढ़ाया ताकि कलीसिया को अपना बना सके आत्मा और दुल्हन कहती है आंख आंख और

> आत्मा, और दुल्हिन दोनों कहती हैं, आ; और सुनने वाला भी कहे, कि आ; और जो प्यासा हो, वह आए और जो कोई चाहे वह जीवन का जल सेंतमेंत ले।। प्रकाशितवाक्य 22:17

उस में बने रहना

प्रसिद्ध अध्याय यूहन्ना 15 जिसके विषय में नीचे चर्चा की गई है हमें निकटता के बड़े अर्थ का चित परमेश्वर इनका इस्तेमाल करता है उस संबंध को और अधिक समझने के लिए जो उसके साथ संभव है हमारे स्वप्न यीशु के द्वारा पूरे हो सकते हैं इससे पहले केशव क्रूस पर चढ़ा उसने अत्यंत अद्भुत शब्दों को प्रदान किया की निकटता के शुद्ध उद्देश्य को समझ सके तथा कृपया गलत निष्कर्ष ना निकालें किस वर्ग में शारीरिक संबंध होगा

घुटने टेकना

एक अवसर पर यीशु अपने घुटनों पर आया अपने शरीर पर तौलिए को लपेट कर तथा अपने चेलों के पैरों को धोना आरंभ किया यीशु ने फसा के पर्व को मनाया तथा अपने चेलों के साथ खाया उसने उस संगति के आनंद में भाग लिया तथा इस बात की ओर इशारा किया कि जब तक वह महिमा में ना आ जाए तब तक वह भोजन नहीं खाएगा क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि जब तक परमेश्वर का राज्य न आए तब तक मैं दाख रस अब से कभी न पीऊंगा। लुक्का 22:18 यीशु उस फसल का मिलना होगा तथा उसका लहू होगा जिसके द्वारा मृत्यु के चंगुल से जो उसकी जेलों की आत्माओं पर है आजाद किए जाएंगे. यह न 15 हालांकि इस गहरी निकटता है दांत लता और डाली के चित्रण से बताता है

> यदि तुम मुझ में बने रहो, और मेरी बातें तुम में बनी रहें तो जो चाहो मांगो और वह तुम्हारे लिये हो जाएगा। मेरे पिता की महिमा इसी से होती है, कि तुम बहुत सा फल लाओ, तब ही तुम मेरे चेले ठहरोगे।जैसा पिता ने मुझ से प्रेम रखा, वैसा ही मैं ने तुम से प्रेम रखा, मेरे प्रेम में बने रहो।यदि तुम मेरी आज्ञाओं को मानोगे, तो मेरे प्रेम में बने रहोगेजैसा कि मैं ने अपने पिता की आज्ञाओं : को माना है, और उसके प्रेम में बना रहता हूं। मैं ने ये बातें तुम से इसलिये कही हैं, कि मेरा आनन्द तुम में बना रहे, और तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए।
>
> यूहन्ना 15: 7-11

दाख लता एवं डालियां

दाग लगा शायद एक प्रतीक ना हो जो तुरंत निकटता के विषय में बात करता

हो परंतु यदि आपको स्मरण हो यूहन्ना 15 का संदर्भ हम कल्पना कर सकते हैं कि यह शो रास्ते पर चल रहा है और जैसे उस रात के पहले जब वह क्रूस पर चढ़ाया गया जैतून पर्वत की ओर जा रहा है इन दांत के फलों को तोड़ता जा रहा है शिष्य यीशु के ना होने पर अनाथ हो जाएंगे यीशु इस बात को चित्रित कर रहा था कि कैसे उसके साथ निकटता बनी रहेगी तब भी जब वह शारीरिक रूप से उनके साथ मौजूद नहीं रहेगा

यद्यपि जैविक विज्ञान अध्ययन ने हमें अंधा कर दिया है उन अद्भुत तरीकों के विषय में जिसके द्वारा दांत एक साथ मिलकर कार्य करती है यह शुभ सच्ची दाखलता है तथा पिता किसान है 15 एक हम परमेश्वर के लोग वहां डालियां हैं जिन्हें उस मुख्य दाहकता से जोड़ा गया है तथा फल लाने के लिए बनाया गया है यीशु किस बात को स्पष्ट करता है कि कैसे जब हम उसके निकट रहते हैं वहां हमारे निकट रहता है और हम उस आनंद का आनंद उठा सकते हैं और उस प्रेम का आनंद उठा सकते हैं जो इश्क अद्भुत संबंध से आता है तथा इस निकटता के द्वारा महान और विशेष्य कार्य हमारे जीवन में बलवंत होंगे

परमेश्वर के साथ निकटता के यह विचार नए नियम के लिए कोई नए विचार नहीं है और ना ही यह पुराने नियम में से अनुपस्थित है यह इसलिए है क्योंकि परमेश्वर कभी ना बदलने वाला है और जिस व्यक्ति से वह अपने लोगों के साथ व्यवहार करता है वह बदलता नहीं यह निकटता उसके वचन को हमारे मनुष्य गुजरने के द्वारा बनती है यीशु ने यहां यह कहा मेरा वचन तुम में बने रहे पुराने नियम में यह कहता है

और इन्हें अपने अपने घर के चौखट के बाजुओं और अपने फाटकों के ऊपर लिखना; इसलिये कि जिस देश के विषय में यहोवा ने तेरे पूर्वजों से शपथ खाकर कहा था, कि मैं उसे तुम्हें दूंगा, उस में तुम्हारे और तुम्हारे लड़केबालों की दीर्घायु हो, और जब तक पृथ्वी के ऊपर का आकाश बना रहे तब तक वे भी बने रहें। इसलिये यदि तुम इन सब आज्ञाओं के मानने में जो मैं तुम्हें सुनाता हूं पूरी चौकसी करके अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम रखो, और उसके सब मार्गों पर चलो, और उस से लिपटे रहो, व्यवस्थाविवरण 11:20, 22 परमेश्वर के वचन को हमारे हृदय और मनु के निकट रहना है उसका वचन मुझ में बना रहे उसको थामे रहना है एक दूसरा तरीका है इस बात को कहने का या विवाह में एक दूसरे के साथ जुड़े रहने के चित्र के द्वारा

बने रहना

यीशु हमें बताता है हम उसके साथ जुड़े रह सकते हैं जब हम उसमें बने रहते हैं यह शब्द बने रहना समझने में काफी कठिन है परंतु चित्रण के द्वारा यह स्पष्ट होता है परमेश्वर के लोगों के रूप में हमें प्रभु से जुड़े रहना है आज के दिन में हम इस चित्रण का इस्तेमाल कर सकते हैं कि हम ऑनलाइन है या प्रभु के साथ चैटिंग कर रहे हैं हम प्रभु के साथ आर्थिक रूप से बातचीत करने के द्वारा जुड़े रहते हैं इसका मतलब है कि हम उसके वचन को अनुमति देते हैं स्वस्थ वार्तालाप को जो स्वस्थ आत्मिक नेटवर्क पर बना है जिसमें हम उसके शव को सुन सकते हैं जब हम यह समझ पाते हैं कि वह हमसे क्या चाहता है हम उस का प्रतीक उत्तर उसकी सामर्थ को कमाल करने के द्वारा दे सकते हैं आज्ञाकारिता के द्वारा उसके पीछे चलने से एक डाली में उसकी दक्षता से अलग कोई

जीवन नहीं जो फल हम लेकर आते हैं वह उस के बल पर निर्भर है जोकि डाक लता की जीवन की डाली है प्रभु के साथ हम आनंद में फलों को ला सकते हैं

निकटता तब हृदयों का एक होना है इच्छाओं का एक होना है तथा प्रभु के साथ एक समान क्रियाओं का एक होना जिसके परिणाम स्वरुप ताजा फलों की बहुतायत है जो परमेश्वर की महिमा को करती है जो हम यीशु में देखते हैं हम वैसा ही अपने जीवन में होता हुआ देख सकते हैं यदि हम नहीं बनी रहते हैं यह आनंद का मार्ग है कि तुम्हारा आनंद पूरा हो यह उस सोच से बहुत अलग है की मसि हद एक और धर्म है इसका क्या अर्थ है कि हमारा आनंद पूर्ण हो इसके अलावा कि हम प्रभु के साथ उस संबंध के लिए रचे गए हैं जो इस आनंद को लेकर आता है?

cus रहना एक बड़ा शब्द है निकटता को बताने के लिए क्योंकि इसको बने रहने के लिए स्वेच्छा होना चाहिए कि इससे जुड़े रहें बने रहना साथ ही साथ इस बात का भी हमें स्मरण दिलाता है उसकी उस इच्छा के विषय में कि वह हमारे साथ जुड़े रहना चाहता है तुम मुझ में बने रहो और मैं तुम्हें तुम मुझ में बने रहो, और मैं तुम मेंजैसे डाली यदि *:* दाखलता में बनी न रहे, तो अपने आप से नहीं फल सकती, वैसे ही तुम भी यदि मुझ में बने न रहो तो नहीं फल सकते। यूहन्ना 15:4 प्रभु हम से एक बड़ा समर्पण कर रहा है हमें उसकी आवश्यकता है उसे हमारी नहीं उसने अपने आप को समर्पित किया है कि वह हमारे जीवन भर हमारा संगीत बना रहेगा तथा हमारे संतुष्टि का वह स्त्रोत बनेगा उसने हमें चुना है कि हम भले फलों को लेकर आएं देखें अध्याय 11 जैसे परमेश्वर

पिता ने येशु उसके पुत्र तथा उसके साथ के संबंध को आशीष दे उसी प्रकार वहां हमारे उस निकट संबंध को जो उसके पुत्र के साथ है आशीष देगा यदि हम पिता की आज्ञा मानते हैं

छुटकारे की योजना कि एक वास्तविक एकता की रचना करें एक खुले आमंत्रण के रूप में हर एक विश्वासी के सामने हैं उनके लिए जो यीशु मसीह के पास आते हैं यीशु ने उत्तर दिया, यदि तू परमेश्वर के वरदान को जानती, और यह भी जानती कि वह कौन है जो तुझ से कहता है; मुझे पानी पिला तो तू उस से मांगती, और वह तुझे जीवन का जल देता। यूहन्ना 4:10 हम उस लाभ उठाने वाले हैं भिकारी अब वह बन गए हैं जिसे प्रेम किया गया जिन को निहारा गया तथा जिनकी चाहा की गई हमें यह अच्छा लगता है और हमें अपने विश्वास को उसके प्रेम पर जो हमारे लिए है और बढ़ाना है

कोई नोनिया प्रेम तथा यूहन्ना 17

यीशु इन सारे पदों को जो उसने पहले इस्तेमाल किए गए हैं निकटता के इन धागों को अपनी उस महायज्ञ की प्रार्थना में जोड़ता है

> मैं केवल इन्हीं के लिये बिनती नहीं करता, परन्तु उन के लिये भी जो इन के वचन के द्वारा मुझ पर विश्वास करेंगे, कि वे सब एक हों। जैसा तू हे पिता मुझ में हैं, और मैं तुझ में हूं, वैसे ही वे भी हम में हों, इसलिये कि जगत प्रतीति करे, कि तू ही ने मुझे भेजा। और वह महिमा जो तू ने मुझे दी, मैं ने उन्हें दी है कि वे वैसे ही एक हों जैसे की हम एक हैं। मैं उन में और तू मुझ में कि वे सिद्ध होकर एक हो जाएं, और जगत जाने कि तू ही ने मुझे भेजा, और

जैसा तू ने मुझ से प्रेम रखा, वैसा ही उन से प्रेम रखा। यूहन्ना 17 20 23

यीशु इस बात को स्पष्ट करता है कि यह ना 15 में जो फल के विषय में बात की गई है उसका अर्थ क्या है यह सुस्पष्ट सिटी से बोलता है यदि हम परमेश्वर के उस गहरे प्रेम का अनुभव करते हैं तो हम अपने भाइयों तथा अपनी बहनों से उस प्रेम के प्रति उत्तर के रुप में प्रेम करेंगे वहां पर एक अद्भुत समाज होगा जहां पर उस प्रेम को हम दे पाएंगे जिसके प्रेम के द्वारा हम से प्रेम किया गया है उस संबंध में रहने के द्वारा हम उसके मार्गो को समझ ते हैं

दूसरे शब्दों में हम विश्वास के एक दूसरे की चिंता करने की तथा प्रेम के विषय में जो राज है सीख पाएंगे परमेश्वर के साथ उस संबंध में रहने के

द्वारा हम उसके मार्गो को समझ ते हैं हम दूसरों तक इन बातों को मसीह के विस्तार के रूप में कार्य करने के द्वारा पहुंचा सकते हैं हम प्रेम करते हैं क्योंकि उसने हमसे पहले प्रेम किया इसका अर्थ क्या है परंतु यह हम प्रेम रखते हैं मसीह के कारण यह दूसरा विषय है तथा अपने आप में है परंतु यह एक बढ़ने वाले स्वस्थ संबंध की नीव है इस चित्र को देखें पौलुस इस विचार को बड़ी अच्छी रीती से सारांश देता है इफिसियों 3:00 1719

जब हम अपने परमेश्वर को धन्यवाद देते हैं जितने हमसे बहुत आए से प्रेम किया आई अब उस प्रति उन मार्ग के द्वारा जिनमें वह हमारी अगुवाई करता है

निष्कर्ष

परमेश्वर ने बड़े ध्यानपूर्वक कई उदाहरणों को अपने प्रेमपूर्ण रचना के विषय में बच्चों में तथा सृष्टि में डाला है वहां बड़े शांतिपूर्ण बरसाती साथ बड़े जोर के साथ हमें इस बात की ओर ले जाता है हमारे और गहरी आज की जो केवल प्रभु के साथ गहरे रिश्ते के द्वारा ही संतुष्ट किए जा सकती हैं

"परमेश्वर हमने तब सबसे अधिक महिमा पाता है जब हम उस में सबसे अधिक संतुष्ट होते हैं"

-जॉन पाइपर

प्रभु ने हमें उदाहरणों से बढ़कर दिया है कि हमें उस गहरे तथा संतुष्ट करने वाले संबंध की ओर ले जा सके उसने अपने खुद के शब्दों का इस्तेमाल किया है परमेश्वर की अनंत योजना के रहस्यों को बताने के लिए कि हमारे ह्रदयों को उसके साथ हमेशा के लिए जोड़ सकें

राजनीति को खरे वाद-विवाद से भयभीत नहीं होना है सत्य का हमेशा अच्छा परिणाम होता है जो दुष्टता के भयानक परिणामों के विपरीत है तथा यह स्वार्थी उद्देश्य के कारण की जाती है यह होने के लिए दुष्ट के कार्यों को छुपे रूप से याद धोखा देकर किया जाता है जो इस बात को समझाता है कि क्यों छुपा हुआ है हम भ्रष्ट होती है

हे भाइयों, कहीं ऐसा न हो, कि तुम अपने आप को बुद्धिमान समझ लो; इसलिये मैं नहीं चाहता कि तुम इस भेद से अनजान रहो, कि जब तक अन्यजातियां पूरी रीति से प्रवेश न कर लें, तब तक इस्त्राएल का एक भाग ऐसा ही कठोर रहेगा। jksfe;ksa 11%25 क्योंकि मैं उनके काम और उनकी कल्पनाएं, दोनों अच्छी रीति से जानता हूं। और वह समय

आता है जब मैं सारी जातियों और भिन्न भिन्न भाषा बोलने वालों को इकट्ठा करूंगा; और वे आकर मेरी महिमा देखेंगे। और मैं उन से एक चिन्ह प्रगट करूंगा; और उनके बचे हुओं को मैं उन अन्यजातियों के पास भेजूंगा जिन्होंने न तो मेरा समाचार सुना है और न मेरी महिमा देखी है, अर्थात तर्शीशियों और धनुर्धारी पूलियों और लूदियों के पास, और तबलियों और यूनानियों और दूर द्वीपवासियों के पास भी भेज दूंगा और वे अन्यजातियों में मेरी महिमा का वर्णन करेंगे। और जैसे इस्राएली लोग अन्नबलि को शुद्ध पात्र में धरकर यहोवा के भवन में ले आते हैं, वैसे ही वे तुम्हारे सब भाइयों को घोड़ों, रथों, पालकियों, खच्चरों और साड़नियों पर चढ़ा चढ़ाकर मेरे पवित्र पर्वत यरूशलेम पर यहोवा की भेंट के लिये ले आएंगे, यहोवा का यही वचन है। और उन में से मैं कितने लोगों को याजक और लेवीय पद के लिये भी चुन लूंगा।। ;'kk;kg 66%18&21

************notes pending

परमेश्वर के छुटकारे की योजना का सारांश (15-16)

#15 छुटकारे के सत्य का सारांश

क्योंकि परमेश्वर शास्त्रों का बनाने वाला है हमें अपेक्षा करना है कि हम उस मुख्य संदेश को इसमें पा सकें एक छुटकारे का संदेश जिसे नया नियम सुसमाचार करके बुलाता है जिसके विषय में उसके वचन में बाइबिल में निरंतर रूप से बताया गया है

इससे पूर्व के अध्याय ने छुटकारे के संदेश का बाइबिल अनुसार तथा समय अनुसार अध्ययन प्रदान किया है चाहे वह मोरिया पर्वत हो मेमना हो वस्त्र हो अब्राहम का बीच हो इत्यादि हर एक अध्याय ने छुटकारे के विषय पर रोशनी डाली है हमारा उद्देश्य यहां पर छुटकारे की संदेश का सारांश देना है उसकी पूर्णता में यह देखने के लिए कि कैसे छुटकारा के धागे सब को जोड़ते हैं

किसी भी उत्तम कलाकृति के समान अलग अलग बिंदु इस पूरी कहानी में सूत्रों से जुड़े गए हैं जब तक यह कहानी अपने चरम तक नहीं आती उस महान कथानक की छुटकारे का संदेश बिना कोई प्रश्न मसीह की उस क्रूस पर मृत्यु के बड़े रहस्य पर से परदे को उठाता है परमेश्वर ने बड़े ध्यान पूर्वक समय में उसके छुटकारे की योजना को सुरक्षित रखा है परमेश्वर के साथ पुनः स्थापना की कोई आशा नहीं बिना मसीह के क्रूस पर कार्य को समझने तथा उस पर विश्वास करने के बाइबल एक

दस्ताने के समान सही रुप से हाथ में आता है हर एक भाग एक विशेष योगदान को शास्त्रों के संपूर्ण छुटकारे मैं देते हैं परमेश्वर नहीं चाहता कि हम उसके प्रेम के संदेश से झुक जाए

अध्यात्म विद्या संबंधी चिंतन

यह   अंतिम दो   अध्याय आध्यात्मिक शिक्षा का सारांश है उन छोटी बाइबल आधारित छुटकारे पर आध्यात्मिक अध्ययन का बाइबिल का ईश्वर ज्ञान शास्त्रों को परखता है तथा जो परमेश्वर ने अपने वचन में कहा है उसको अनुमति देता है किसी भी दिए गए विषय पर हमारे विचारों को डालने के लिए यह अध्ययन जैसे समय से संस्कृति तथा भाषाओं से आगे जाता है

और भी अधिक पेचीदा हो जाता है छुटकारे के इस महत्वपूर्ण अध्ययन में हमें आवश्यक स्थान तथा समय दिया है उन बातों के ऊपर विचार करने का तथा इन बाइबिल अध्ययनों से परिणामों को एकत्रित करने का यह निष्कर्ष तब छुटकारे का आध्यात्मिक ज्ञान हो जाता है जो हमें समर्थ करता है उस विषय और और नजदीकी से जानने का जिस पर हमने विश्वास किया है उसकी तुलना में जो वचन में लिखा गया है साथ ही साथ जिस स्पष्टता से यह किया गया है हमें समर्थ करता है कि हम प्रभावशाली तासे इन सत्य को प्रस्तुत कर सकते हैं तथा साथ खड़े हो सकते हैं ताकि लोगों को मlhgh को जानने की ओर ले जा सके

जैसे कि हमारा केंद्र इस बात पर है कि बाइबल छुटकारे के विषय में क्या कहती है हमारे पास बहुत कम समय था इस बात पर विचार करने का कि कैसे यह व्यक्तिगत अध्ययन दूसरे उद्धार के संदेशों

से जुड़े हुए हैं धर्म छोटी चर्चाएं कई विचारधाराएं उधार के विषय में अपने अपने दृष्टिकोण को रखते हैं परंतु कई दृष्टिकोण दुर्भाग्यवश बाइबल की सही शिक्षा से अलग है इस स्तर तक कि उन्हें बाइबल आधारित नहीं माना जाता या मसीह या उसके द्वारा उद्धार मिल सके हम हम कितने धन्यवादी हैं कि परमेश्वर ने मानव जाति की स्थिति को जाना तथा उस पूर्ण समस्या के हल TV क्या आवश्यक है उस बात को जो उसके नाम की बड़ी महिमा को लेकर आता है

प्रभु ने पहली नोमा दृश्यों को तथा उसके विवरण को रखा है कि हमें उस पुस्तक ले जाए ताकि हम उसकी उसके लिए अपनी आवश्यकता को देख सकें तथा मसीह में विश्वास करने की जरूरत को पुराने नियम के कई उदाहरण बलिदानों के विषय में भविष्यवक्ताओं के विषय में व्यवस्था के विषय में इत्यादि के विषय में सोचने से हमें सहायता मिलती है क्योंकि छोटी-छोटी नदियां उस जीवन की बड़ी नदी की ओर ले जाती हैं प्रभु हमारी अगुवाई करता है कि हम उस जीवनदाई नदी को पा सकें उसमें वह और अंत में उस आनंद की नदी तक पहुंचाए जा सके क्योंकि केवल वही हम ग्रुप के द्वारा उसकी प्रेम को देख सकते हैं तथा उस अनंत काल की आशा में अपनी सुरक्षा को पा सकते हैं तथा उसके पुनरुत्थान में उस परिवर्तन को

शास्त्रों मैं छुटकारे के द्वारा एक समय दर्द समय मसीह के व्यक्तित्व तथा उसके कार्य को जानने के रूप में रहा है जैसे समय बीतता जाता है परमेश्वर की योजना प्रगट की जाती है थोड़ा-थोड़ा करके जैसे हम वचनों में जाते हैं तथा समय में क्योंकि यह योजना सृष्टि की नीव रखते से पहले ही पुनर्विचार की गई थी तथा प्रभु की इच्छा के

अनुसार कि हम विश्वास करें छुटकारे की योजना उन मुख्य ऐतिहासिक घटनाओं में छुपे रूप से डाली गई थी जैसे इन शास्त्रों में दिखाया गया है मसीह जब भविष्यवाणी के अनुसार आता है प्रभु नहीं चाहता था कि हम उसके फिल्म दे चुके वह चाहता था कि हम उसके प्रेम का प्रतिउत्तर दें तथा उसको अपने जीवन में स्वागत करें यह ना एक बार आ ज्योतिषियों ने आकाश के चिन्हों को देखा परंतु हम शास्त्रों में ढूंढते हैं यह अध्याय उस छुटकारे के संदेश पर केंद्रित है जैसा कि पुराने और नए नियम में देखा गया कि क्यों आवश्यक है कि लोग उद्धार प्राप्त करें तथा कैसे हैं वह उद्धार प्राप्त करते हैं

बाइबल का सर्वेक्षण

> फिर उस ने उन से कहा, ये मेरी वे बातें हैं, जो मैं ने तुम्हारे साथ रहते हुए, तुम से कही थीं, कि अवश्य है, कि जितनी बातें मूसा की व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं और भजनों की पुस्तकों में, मेरे विषय में लिखी हैं, सब पूरी हों। लुका 24:44

ईश्वर इस बात का दावा करता है कि बाइबल उसके विषय में है हालांकि कई 100 अध्याय हैं तथा लाखों छोटे शब्द हैं जिन्हें जोड़कर बाइबल को संजोया गया है यीशु का व्यक्तित्व तथा उस पर उसका कार्य इंसाफ का मुख्य केंद्र है यह इसलिए कि शास्त्र परमेश्वर की प्रेम योजना की समझ की ओर ले जाते हैं आइए यहां पर हम इस मुख्य पद में बिंदुओं को देखें

> फिर उस ने उन से कहा, ये मेरी वे बातें हैं, जो मैं ने तुम्हारे साथ रहते हुए, तुम से कही थीं, कि अवश्य है, कि जितनी बातें मूसा

की व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं और भजनों की पुस्तकों में, मेरे विषय में लिखी हैं, सब पूरी हों। लुका 24:44

मूसा की व्यवस्था तथा भविष्यवक्ता तथा भजन संहिता

यीशु ने कहा की मूसा की व्यवस्था भविष्यवक्ता तथा भजन संहिता सब में उसके कार्य तथा उसकी सेवकाई के विषय में कई वक्तव्य है यह तीन शब्द बाइबल को यीशु के समय में वर्तमान पद आती है इसमें पुराना नियम है जैसा कि हम जानते हैं परंतु नया नियम नहीं नया नियम यीशु की मृत्यु के बाद लिखा जाएगा इस उद्देश्य के साथ की पुनः मसीह के कार्य को देखें तथा बढ़ोतरी तथा कलीसिया की बढ़ोतरी तथा प्रारंभिक संघर्ष के विषय में यीशु स्पष्ट करता है कि पुराना नियम घटनाओं से लोगों से तथा उन विचारों से भरा हुआ है जो हमें मसीह के कार्य तथा आवश्यकताओं की ओर संकेत करता है

नीचे दिया गया चित्र यह बताता है पुराने नियम की अंग्रेजी बाइबल इब्रानी शास्त्रों से अलग प्रकार के क्रम में रखी गई है इस विषय पर होने की आवश्यकता नहीं क्योंकि इसकी विषय वस्तु समान है अंग्रेजी बाइबल तीन वर्गों का उपयोग करती है इन्हीं बाइबल के लिखन को व्यवस्थित करने का इब्रानी बाइबल कई बार यीशु का तिहरा विवरण उपयोग करती है

- मूसा की व्यवस्था बाइबिल की प्रथम पांच पुस्तकें जो पेंट एक्टिव के समान है(दोराहा)
- भविष्यवक्ता इसमें ज्यादातर भविष्यवाणियों की पुस्तक है जैसे अंग्रेजी बाइबल कुछ ऐतिहासिक पुस्तकें क्योंकि न्यायिक

भविष्यवक्ताओं के समान है शमूएल तथा राजा की पुस्तक उस संदर्भ को जिसमें भविष्यवक्ता की पुस्तक लिखी गई

- भजन संहिता जिसे लेखन भी कहा जाता है जिसमें भजन संहिता तथा दूसरी कविताओं की पुस्तक है जिसमें ऐतिहासिक पुस्तके भी हैं जैसे रूट तथा अस्तु डायल की पुस्तक को भी इसमें डाला गया है

यह मेरे शब्द हैं

लुक्का 24 में यीशु अपने शिष्यों से बात कर रहा है पूर्व ध्यान के बाद एक व्यक्तिगत वातावरण में उनके समक्ष उपस्थित हुआ तथा उनके साथ भुनी हुई मछली खाई लुका 24:42-43 शिष्यों को यह बात समझने में समस्या आई की इन बीते कुछ दिनों में जो कुछ हुआ उसके विषय में जब से उसे उस क्रूस पर कीड़ों द्वारा ठोका गया

अब वह उनके सामने जीवित प्रकट होता है वह शब्दहीन हो गए हैं यह सोच रहे हैं कैसर का क्या अर्थ है यीशु ने उनको बताया अपने विषय में सब कुछ जो उन पवित्र शास्त्र में यहूदी में मिल सकता है

यीशु की शिक्षाएं तथा पुराना नियम एक संदेश है हालांकि शिष्य उस पुराने नियम की भविष्य विषय संबंधी जोर को नहीं समझ पाए जो बीते कुछ दिनों में पूरी हुई उन्होंने यह शुक्र और सुनाओ उसके चमत्कारों को देखा तथा उसकी धोखे दिए जाने को उसकी मृत्यु को और आप उसके पुनरुत्थान को देखा यीशु की सहायता से आंखों की पट्टियां जाती रही और वह यह समझ पाए कि यह हो गया यीशु ने उनके मस्तिष्क को खोला कि वह शास्त्रों को समझ पाएं (लुका 24 :45)

दिनों के पश्चात पतरस हमें उस बड़ी भीड़ को प्रचार करते हुए मिलता है यीशु ने उसकी आंखों को देखने के लिए खोल दिया और उन्होंने तुरन्त जाकर मरियम और यूसुफ को और चरनी में उस बालक को पड़ा देखा। प्रेरितों के काम 2:16 उसने तथा उसके प्रेरितों ने इस बात को विस्तृत रुप से बताने के लिए काफी समय व्यतीत किया कि कैसे यहूदी शास्त्रों का पूर्ण होने में यह शिव एक मुख्य कुंजी है चेलों ने अंततः यह समझा तथा उस छुटकारे के संदेश और योजना को पूरा करना आरंभ किया तथा तथा उनकी विश्वास योग्यता तथा कई हजारों की विश्वास योग्यता के कारण लोगों ने येशु पर विश्वास किया पवित्र आत्मा पर विश्वास किया क्योंकि भी पर विश्वास किया जो उन्हें प्राप्त हुआ इफिसियों 1:13- 14

हर एक बात जो मेरी विषय में लिखी गई है उसको पूरा होना है

हालांकि इस वाक्यांश के अर्थ में थोड़ा सा फर्क है हर एक चीज जो मेरे विषय में लिखी गई है उसका पूर्ण होना आवश्यक है परंतु उसके आम अर्थ पर सहमति है यीशु एक व्यक्ति के रूप में तथा उसका कार्य जैसा पुराने नियम में भविष्यवाणी की गई थी उसको पूर्ण करता है हर एक चीज लोगों की ओर स्थान तथा घटनाओं की ओर संकेत करती हैं जो आने वाले हैं तथा उसके कार्य के प्रभावशाली ता की ओर जो उस खुश पर हुआ कुछ भाग जैसे यह यात्री पर मसीही की वेदना पर स्पष्ट थे तो कुछ दूसरे जैसे कि वह बलिदान इसकी आवश्यकता बड़ी आदम और हवा को वस्त्र पहनाएं जा सकें वह इतने स्पष्ट नहीं तथा उनको समझा भी नहीं जा सकता जब तक उसको ग्रुप की घटनाओं से जुड़ा ना जाए नए नियम के दृष्टिकोण से.

छुटकारा देने वाले की कलीसिया इस पद को पूरे पुराने नियम के रूप में समझती है; हर एक वाक्य तथा पद्यांश किसी ना किसी रूप से मस्ती की ओर विशेष तौर पर संकेत करते हैं सब कुछ उसके विषय में बात करती हैं लुक्का 24:44 के संदर्भ में यीशु हालांकि सरलता से कहता है की हर एक बात जो उसके विषय में लिखी गई है उनका पूरा होना आवश्यक है दूसरे शब्दों में जहां कहीं यीशु के विषय में भविष्यवाणी के वचन है वह पूर्ण हुए हैं फिर उस ने उन से कहा, ये मेरी वे बातें हैं, जो मैं ने तुम्हारे साथ रहते हुए, तुम से कही थीं, कि अवश्य है, कि जितनी बातें मूसा की व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं और भजनों की पुस्तकों में, मेरे विषय में लिखी हैं, सब पूरी हों। लुका 24:44 इस बात पर ध्यान लगाता है कि कैसे पुराने नियम के कई भाग मसीह के विषय में बताते हैं इसके बनिस्पत की उंर स्पष्ट भविष्यवाणियों के का भागों की पूर्णता पर ध्यान केंद्रित करने के I यह पूरा के की ओर ले जाता है जहां पर स्पष्ट अर्थ प्रमुख अर्थ नहीं रह गया है

बाइबल कई भागों को एक साथ लेकर आती है जिन सब का संदेश एक है छुटकारे का शुभ समाचार यह संदेश केवल यीशु मसीह में ही पूरा हो सकता है यदि यह भाग ध्यानपूर्वक हम तक पहुंचाएं जाते हैं तब भी उसके संपूर्ण पूर्णता से अलग हो जाते हैं तब सुनने वाले मस्ती के अलावा एक भयानक भविष्य का सामना करेंगे यही कारण है इस शैतान वचन के क्षेत्र में बड़े दबाव से लड़ाई करता है यह कोशिश करते हुए कि हमें शास्त्रों के अधिकार पर विश्वास करने से भ्रमित करें जैसे कि परमेश्वर ने उस क्रूस पर अनुग्रह को उपलब्ध कराया क्रूस को नजरअंदाज करने से मनुष्य के लिए कोई भी आशा नहीं बचेगी प्रभु ने

और अधिक बड़े जन्म तथा चमत्कारों को उपलब्ध कराया भविष्यवक्ताओं की सच्चाई की पुष्टि करने के लिए

> क्योंकि जो वचन स्वर्गदूतों के द्वारा कहा गया था जब वह स्थिर रहा और हर एक अपराध और आज्ञा न मानने का ठीक ठीक बदला मिला। तो हम लोग ऐसे बड़े उद्धार से निश्चिन्त रह कर क्योंकर बच सकते हैं? जिस की चर्चा पहिले पहिल प्रभु के द्वारा हुई, और सुनने वालों के द्वारा हमें निश्चय हुआ। और साथ ही परमेश्वर भी अपनी इच्छा के अनुसार चिन्हों, और अद्भुत कामों, और नाना प्रकार के सामर्थ के कामों, और पवित्र आत्मा के
>
> इब्रानियों 2: 24

छुटकारे की योजना की अनंतता

निर्दोष के क्रूस पर चढ़ाए जाने तथा दुष्ट के आजाद किए जाने में मनुष्य का अपना भाग था प्रेरितों के काम 2:23 परंतु परमेश्वर के पास और अधिक बड़ी योजना थी उसके छुटकारे की उद्धार की योजना उसने मनुष्य की दुष्टता की ओर झुकाव को अपनी योजना को पूरा करने के लिए इस्तेमाल किया इससे पहले की पृथ्वी का आरंभ हो छुटकारे की योजना आवश्यकता वह केवल ऐसे ही नहीं हो गया परंतु उसकी योजना बनाई गई

परमेश्वर ने उसके सिद्ध ज्ञान में हर एक चीज इस रुप से योजना बनाई गई जो परमेश्वर की महिमा मैं व्यक्तित्व को उसके लोगों के उद्धार के द्वारा सबसे उत्तम प्रदर्शित करेगा मुख्यता उन्हें मसीह के लहू के द्वारा खरीदने से परमेश्वर ने अपने पुत्र के विरुद्ध हुई दुष्टता का कृत्य नहीं किया मनुष्य ने किया परमेश्वर ने मनुष्य के द्वारा उसके प्रेम के ठुकराए

जाने की बावजूद उस गहराई तक उनके पीछे गया यहां तक की उन्हें अनुमति दी कि उसके प्रेम की महान दान का ठुकराया जाना मनुष्य के लिए क्षमा का स्त्रोत बन गया परन्तु उसी को परमेश्वर ने मृत्यु के बन्धनों से छुड़ाकर जिलायाक्योंकि यह अनहोना था कि वह उसके वश : में रहता। क्योंकि दाऊद उसके विषय में कहता है, कि मैं प्रभु को सर्वदा अपने साम्हने देखता रहा क्योंकि वह मेरी दाहिनी ओर है, ताकि मैं डिग न जाऊं। प्रेरितों के काम 2:22-24

जैसे ही इब्रानीभाषा के भाग में है वैसा ही हम पृथ्वी काम में पाते हैं उन सारे चिन्ह आश्चर्य कर्म और अद्भुत काम जिनको यीशु ने किया उसके ऊपर मोहर को यह यीशु मसीह जो परमेश्वर की ओर से बोलता है एक बड़ा सत्यापन है जैसा तुम खुद जानते हो हमें इस बात को जानने की अनुमति देता है कि इनमें से कई पाठकों ने यीशु को यह चमत्कार करते हुए देखा था प्रेरितों के काम 2:00 में सुनने वाले

हमारा ध्यान हालांकि पद 23 पर है हमें इस बात से अचंभित नहीं होना है यह देख कर की छूट कारी की योजना के संकेत पूरे शास्त्र में बिखरे हुए हैं परमेश्वर ने इसे विशेष तथा प्रत्यक्ष बनाया है तथा उसके साथ अविश्वसनीय भी उसने उसे दूसरे रूप में रखा ताकि उनके पास और बड़ा ज्ञान ना हो जो उनके दंड की आज्ञा को और भी बुरा बना दे (मत्ती 13:34-35)

यह संपूर्ण छुटकारे की योजना ऐतिहासिक घटनाओं में बुनी गई इस छुटकारे के संदेश के व्यक्तिगत भाग कई हैं यद्यपि छुपे हुए परंतु उनके पास एक सामर्थी योग्यता है मसीही के इस ग्रुप पर छुटकारे के

कार्य की भविष्यवाणी करने की नीचे हम उन कुछ बातों को देखेंगे आप पिछले अध्याय को फिर से पढ़ें ताकि और स्पष्ट ज्ञान आ सके

आदम तथा मसीह और उसके नियम

पहले आदम ने आज्ञाकारिता की (उत्पत्ति 3:17) और मनुष्य की जाति के ऊपर परमेश्वर से अलगाव केशव को लेकर आया (1 कुरिन्थियों 15:22) यीशु कुमारी से जन्मा (लुक्का 1: 34) उस शराब से बच सका पवित्र आत्मा के उस कुमारी के ऊपर कार्य के द्वारा फिर वह उन परीक्षाओं से बचने कि और बड़ा (मत्ती 4:1-11) उस पहले आदम के विपरीत उस क्रूस पर परमेश्वर की आज्ञा को माना तब भी जब वह अत्यंत दर्द से भरा अन्याय पूर्ण तथा जिसकी वह योग्य ना था तब भी (इब्रानियों 2:9) यीशु द्वितीय आदम मनुष्य का पुत्र अपनी आज्ञाकारिता के द्वारा जीवन को लेकर आया (1 कुरिन्थियों 15:45)

अब्राहम का बीज तथा वायदा (उत्पत्ति 12-18; रोमियो 4)

परमेश्वर ने अबराम को बुलाया ताकि उसे वह महान मिराज का वायदा दे सके वहां कई लोगों का पिता बनने के द्वारा पर मैं अवराम से एक पुत्र का वायदा किया इससे पहले कि इजहार आया कई दशकों तक उसको परखा गया यहां तक की 90 वर्ष की उमर में भी अब्राहम को वायदा किया हुआ पत्र नहीं मिला था परंतु उसने दूसरे मार्ग के द्वारा हजीरा से जो सहारा की सेविका थी पौलुस हजीरा तथा उसके पुत्र स्माइल को सुसमाचार विरोधी के रूप में रखता है एक कार्यों के द्वारा उद्धार खुद के द्वारा ठंड से बचने का प्रयास (ग़लतियों 4:24-25)

यद्यपि परमेश्वर ने अब्राहम जीवन शुरू से इस वायदे को बना कर रखा यह वायदा दूर तरह से पूर्ण हुआ एक शारीरिक पूर्णता जो

अब्राहम के जहाज और इस माई के द्वारा कई शारीरिक पुत्रों से तथा उससे भी बढ़कर यह पूर्ण हुआ और पृथ्वी की सारी जातियां अपने को तेरे वंश के कारण धन्य मानेंगीक्योंकि तू ने मेरी बात मानी है। : (उत्पत्ति 22:18) अब्राहम का एक वंशज एक बीज यीशु मसीह था (ग़लतियों 3:16) इन दो तरीकों के द्वारा वह कई लोगों का जो उसके समान विश्वास से चलते हैं आत्मिक पिता बना वहां मसीही में विश्वास के द्वारा अनंत जीवन प्राप्त करेंगे

युसूफ दाऊद तथा मसीही की वेदना

यूसुफ मसीही के पहले आया और इसी के कारण से इसका विस्तृत विवरण उत्पत्ति में मिलता है यूसुफ जो अपने भाइयों द्वारा ठुकराया गया वहां परमेश्वर के द्वारा अपनी लोगों को बचाने के लिए चुना गया प्रेरितों के काम 7:9-12 यहां कुछ उदाहरण है यूसुफ के जीवन की कुछ घटनाएं यीशु के समान है जिसने पहले से मसीह की जीवन की वेदना की परछाई को दिया है अपने भाइयों द्वारा ठुकराया जाना झूठे आरोप राज्य में दूसरे स्थान का अधिकार मिलना कि अपने लोगों को चुरा सके तथा क्षमा करने का अद्भुत भाव तथा परमेश्वर के लोगों के प्रति असाधारण अनुग्रह

किसी सामान दाऊद के साथ भी एक राज्य का वायदा किया गया परंतु उसे पहले ठुकराए जाने को सहना पड़ा राजा चावल के द्वारा दाऊद पुकार कर कहता है हे मेरे परमेश्वर हे मेरे परमेश्वर तूने मुझे क्यों छोड़ दिया भजन संहिता22:1 दाऊद का अनुभव यीशु के अनुभव के बिल्कुल समांथा मैं जल की नाईं बह गया, और मेरी सब हड्डियों के जोड़ उखड़ गएमेरा हृदय मोम हो गया :, वह मेरी देह के भीतर पिघल

गया। मेरा बल टूट गया, मैं ठीकरा हो गया; और मेरी जीभ मेरे तालू से चिपक गई; और तू मुझे मारकर मिट्टी में मिला देता है। क्योंकि कुत्तों ने मुझे घेर लिया है; कुकर्मियों की मण्डली मेरी चारों ओर मुझे घेरे हुए है; वह मेरे हाथ और मेरे पैर छेदते हैं। मैं अपनी सब हड्डियां गिन सकता हूं; वे मुझे देखते और निहारते हैं वे मेरे वस्त्र आपस में बांटते हैं, और मेरे पहिरावे पर चिट्ठी डालते हैं। परन्तु हे यहोवा तू दूर न रह! हे मेरे सहायक, मेरी सहायता के लिये फुर्ती कर! भजन संहिता 22:14-19

मलकीसर एक तथा मसीही का कार्य

मलकीसर एक राजा तथा याजक की छवि बाइबिल में केवल 3 बार आती है बल्कि सभी के साथ अब्राहम का अनुभव उत्पत्ति 14:18 इस अनुभव की भविष्यवाणी तथा अनुवाद भजन संहिता 110:4 में तथा उसके पश्चात मलकीसर देख की शिक्षाएं इब्रानियों 7:00 यह कार्य राजा दाऊद के द्वारा पूर्ण नहीं किया गया परंतु उसके पुत्र के द्वारा यीशु कृष्ट जो प्रभु है जैसा की भविष्यवाणी की गई थी (भजन संहिता 110: 1-4)

बलिदान याजक तथा मसीही का बलिदान

पूरे शास्त्रों में बलिदान का विषय एक बड़े तथा संपूर्ण बलिदान की ओर संकेत करता है यहां तक कि जो बलिदान दूसरे देवताओं के प्रश्न मनुष्य कि परमेश्वर के सन्मुख दोष भावना को साबित करता है परमेश्वर ने मनुष्य को ढकने के लिए पहले बलिदान को किया उत्पत्ति 3:21 आरंभ से ही हाबिल और कैन ने बलिदानों को चढ़ाया उत्पत्ति 4:3-4 परमेश्वर ने इस्त्राएलियों को निर्देश दिया बेटो को चढ़ाने के लिए तथा विज्ञानिकों

के समाज की स्थापना करें जो इन बलिदानों के ऊपर देख देख करेंगे निर्गमन 28 गिनती 8 यह शिव एक माह आयोजक तथा एक बलिदान के रूप में अपने आप को देता है और उन महायाजकों की नाईं उसे आवश्यक नहीं कि प्रति दिन पहिले अपने पापों और फिर लोगों के पापों के लिये बलिदान चढ़ाए; क्योंकि उस ने अपने आप को बलिदान चढ़ाकर उसे एक ही बार निपटा दिया। इब्रानियों 7:27 परमेश्वर के लोग मशीन को पहने हुए हैं ग़लतियों 3:27 जो हमारी धार्मिकता है रोमियो 4:22

ज्योति तथा मसीह

यहां तक की निर्जीव वस्तुएं जैसे रोशनी चीजों को दर्शा सकती है जैसे परमेश्वर आशा को दर्शाता है क्रम को दर्शाता है अंधकार में जीवन को यह वह संसार है यूहन्ना 1:5 पूरे शास्त्रों में ज्योति परमेश्वर की सुरक्षा तथा मार्गदर्शन को दिखाती है चाहे यह वह ज्योति हो जो मरुस्थल में उस अंधकार में चमकी हो गिनती 13:21 यहां वहां ज्योति किनवट जिसे मंदिर में प्रज्ज्वलित रहना है क्योंकि यह स्वर्ग के नमूने के अनुसार बनाई गई है निर्गमन 25:31- 40 यीशु ने उनसे कहा तब यीशु ने फिर लोगों से कहा, जगत की ज्योति मैं हूं; जो मेरे पीछे हो लेगा, वह अन्धकार में न चलेगा, परन्तु जीवन की ज्योति पाएगा। यूहन्ना 8:12

यह पांच समानताएं हैं जो हमें शास्त्रों में मिलती है जो मसीही तथा उसके कार्यों की ओर संकेत करती है कोई भी और उपाय नहीं है जिसके द्वारा हम मसीही और उसके सेवाओं के प्रति हमारी समझ को और बढ़ा सकें युवतियों ने नए नियम के समय रोमियो के द्वारा बड़े उत्पीड़न को उठाया तथा वह एक शारीरिक छुड़ाने वाले की राह देख रहे थे उनकी अपेक्षाओं के विपरीत यीशु ने एक दूसरे राज्य की स्थापना की

यूहन्ना 18:36 अंकित उदाहरण परमेश्वर के लोगों के विषय में मसीह के उसके लोगों के साथ कार्य को चिन्हांकित करती है 1पतरस 2:10 ज्योति मत्ती 5:14 मंदिर 1 कुरिंथियों 3:16 तथा उसका राज्य तथा याजक प्रकाशितवाक्य 1:6 इस अध्याय में हमारा ध्यान और भविष्य जो मसीह की मृत्यु तथा उसके कार्य को दर्शाते हैं

छुटकारे का धर्म ज्ञान

धर्म ज्ञान परमेश्वर के विषय में अध्ययन तथा उसके सृष्टि के विषय में उसके वचन के पहलुओं के द्वारा आया है हमारी ईश्वर ज्ञान की समझ हमारे दैनिक जीवन में एक महत्वपूर्ण भाग को रखती हैं जो सत्य है उसे प्रचलित करती है कि हम सही रुप से उस पर विश्वास कर सकें तथा उसका प्रतिउत्तर दे सकें छुटकारे का बाइबल आधारित ईश्वरी ज्ञान विशेष शक्ति है जो शास्त्रों में दिए गए छुटकारे के संदेशों से आते हैं पाठक कई बार इस बात से अनभिज्ञ होते हैं कि जब वह शास्त्रों का अध्ययन कर रहे हैं तो कहीं ना कहीं सक्रिय रुप से एक धर्म ज्ञान कार्य कर रहा है तथा मुख्य धर्म ज्ञान की बातों के प्रति वह अंधे की भी हो यद्यपि वह शायद छुटकारे के संदेश पर विश्वास भी करते हैं यहां पर तीन मुख्य शिक्षाएं विशेष रुप से प्रस्तुत की गई है

पाप तथा न्याय

मनुष्य का पतन इसलिए हुआ क्योंकि उसने परमेश्वर के विरुद्ध और आज्ञाकारिता की इस कारण से सारी मानव जाति जन्म से ही पापी हैं तथा परमेश्वर द्वारा दिए गए मृत्युदंड के अधीन है तथा उस आने वाले मृत्युदंड का इंतजार कर रहे चाहे वह इस बात को जाने या ना जाने कम बात करने के द्वारा मनुष्य उस न्याय से बच नहीं सकता हालांकि यह

हमेशा अच्छा है कि कम बात करें आदम की अनन्या का रिता के कारण जो मनुष्य जाति का प्रतिनिधि था मृत्यु आ गई तथा इस खुले द्वार से 5 आतंकी वंशजों में बढ़ता चला गया जो एक हठीले और एक विरोधी हृदय के साथ उत्पन्न हुए आपने परमेश्वर की मनुष्य के लिए प्रारंभिक सोच को नाश किया तथा एक ऐसी परिस्थिति को उत्पन्न कर दिया जहां से मनुष्य का छुड़ाया जाना आवश्यक था आज के संसार में जहां हर जगह युद्ध है नफरत है तलाक हैं स्वार्थी है जय उस पतित मनुष्य का चित्रण है जय कुछ भी आकर्षण करने वाली बात को नहीं बताता या ऐसी बात को की वजह बचाने जाने की योग्य हो

परमेश्वर की विश्वास योग्यता

परमेश्वर अपने वचन के प्रति विश्वास योग्य है और उसके विश्वास योग्यता के कारण मनुष्य के ऊपर का श्राप साथी साथ उसके छुटकारे की आशा बनी रहती है सृष्टि की रचना की कार्य के पश्चात परमेश्वर ने मनुष्य से कहा कि यदि वह उस वर्जित वृक्ष सिखाएगा तो वहां निश्चित मर जाएगा परमेश्वर ने उसको कहा तथा एक सामर्थ्य ना परिवर्तन होने वाले कथन के समान उसे ना तो कम किया जा सकता है ना ही वापस किया जा सकता है मृत्यु की आज्ञा मनुष्य में प्रवेश कि जैसे उसने उस वर्जित फल को खाया

यदि मनुष्य को वह तो उसमें परमेश्वर की रचना में एक चमत्कारिक समाधान आवश्यक है मृत्यु आ रही थी और जीवन जा रहा था मनुष्य के उसको बचाने के सारे प्रयासों के बावजूद क्या अच्छे कार्य उस मृत्युदंड को हटा सकते हैं नहीं क्या उस धन को जो मनुष्य पर आया कुछ और ठीक कर सकता है जैसे कि जानवरों का बलिदान नहीं

जानवरों का बलिदान मनुष्य कि जीवन का स्थान नहीं ले सकता क्या एक मनुष्य दूसरे मनुष्य के लिए मर जाए नहीं क्योंकि हर एक मनुष्य पहले से ही उस दंड के अधीन है तथा उसे अपने ऊपर आए हुए न्याय को ठीक करना है पर शुभ यह जो धर्मी है कुंवारी से जन्मा परमेश्वर जो पाप रहित मनुष्य बना वह उन पापियों के स्थान पर मारा जाए परमेश्वर की आशा केवाय देने उसे इस छुटकारे की योजना का उपाय करने के लिए समर्पित किया

केवल विश्वास के द्वारा उद्धार

यद्यपि विश्वास और आस्था सामान्य रूप से इस्तेमाल किए जाने वाले शब्द हैं मनुष्य बड़ी सरलता से इस बात पर विश्वास नहीं करता कि उद्धार के लिए इनकी आवश्यकता है मनुष्य अपने घमंड तथा अपने अभिमान के कारण अंधा है वह यह सोचता है कि उसके पास इतने बुरे नहीं कि जिस पर न्याय आए इस तथ्य के बावजूद कि परमेश्वर पूर्ण रूप से धर्मी है तथा अपने वजन के प्रति विश्वास योग्य है मनुष्य यह आशा करता है कि उसकी धार्मिक कार्यों के द्वारा अच्छे कार्यों में अपनी योगदान के द्वारा कलीसिया में निरंतर जाने के द्वारा करूणा दया दिखाने के द्वारा इत्यादि वह उद्धार को प्राप्त कर सकता है मनुष्य का अपनी योजना पर भरोसा उसे परमेश्वर की ओर देखने सहायता प्राप्त करने से रोकता है और मनुष्य को उस मृत्यु की अंधेरी गड्ढे में बंद कर देता है

विश्वास की महत्वता कार्यों के विपरीत हमारे मनोमय अब्राहम और दाऊद के द्वारा गढ़ी गई है उसने यहोवा पर विश्वास किया; और यहोवा ने इस बात को उसके लेखे में धर्म गिना। उत्पत्ति 15 :6 अब्राहम उस वायदे को जो परमेश्वर ने उसके साथ किया था उसका पति उत्तर

देता है उसने विश्वास किया अब्राहम ने जब अपने पुत्र को अर्पित किया अपने विश्वास को दर्शाया दाऊद यद्यपि वह पूर्ण दोषी था वह यरूशलेम के साथ बच गया जब उसने एक विधि को बनाया और विश्वास के द्वारा बलिदान को चढ़ाया

मनुष्य परमेश्वर के द्वारा खुद के कार्यों से अपनाया नहीं जाता यह स्पष्ट है क्योंकि वह पहले से ही दोषी ठहराया जा चुका है यह ना 331 उद्धार इस बात पर विश्वास करने के द्वारा आता है कि यीशु मसीह अपने लोगों के लिए और उसकी दया का यह कृत्य जो विश्वास करते हैं उनके लिए क्षमा को लाता है पतरस ने उन से कहा, मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे। क्योंकि यह प्रतिज्ञा तुम, और तुम्हारी सन्तानों, और उन सब दूर दूर के लोगों के लिये भी है जिन को प्रभु हमारा परमेश्वर अपने पास बुलाएगा। प्रेरितों के काम 2:38-39

हमारा दृष्टिकोण परमेश्वर के वचन के द्वारा डाला जाना की आवश्यकता है यदि हम परमेश्वर के प्रभावशाली औजार बनाना चाहते हैं जिन्हें परमेश्वर इस पृथ्वी पर अपने कार्य के लिए उपयोग करें यह धर्म ज्ञान अनुसार डाले गए परमेश्वर के प्रति दृष्टिकोण तथा स्वयं के प्रति दृष्टिकोण बचाने वाले विश्वास के लिए अत्यंत आवश्यक है इसी कारण से सुसमाचार का प्रचार किया जाना आवश्यक है आवश्यक सत्य जो एक बीज के समान उन्हें बोना जाना है तथा उन पर पानी डालना है सत्य को घोषित किया जाना आवश्यक है पवित्र आत्मा का कार्य हमारे हृदय

की उस भूमि पर होना अत्यंत आवश्यक है ताकि विश्वास की उपस्थिति वहां पर हो

छुटकारे का संदेश

इसलिये हमारे प्रभु की गवाही से, और मुझ से जो उसका कैदी हूं, लज्ज़ित न हो, पर उस परमेश्वर की सामर्थ के अनुसार सुसमाचार के लिये मेरे साथ दुख उठा। जिस ने हमारा उद्धार किया, और पवित्र बुलाहट से बुलाया, और यह हमारे कामों के अनुसार नहीं; पर अपनी मनसा और उस अनुग्रह के अनुसार है जो मसीह यीशु में सनातन से हम पर हुआ है। पर अब हमारे उद्धारकर्ता मसीह यीशु के प्रगट होने के द्वारा प्रकाश हुआ, जिस ने मृत्यु का नाश किया, और जीवन और अमरता को उस सुसमाचार के द्वारा प्रकाशमान कर दिया।

2 तिमोथी 1:8- 10

सुसमाचार एक सुनियोजित छुटकारे का संदेश है कॉल उसको इस संदेश की घोषणा करने के लिए नियुक्त किया गया 2 तिमोथी 1:11 विशेषता क्योंकि इन शक्तियों को यदि वह प्रभावशाली हैं तो उनको आगे बढ़ाया जाना आवश्यक है बीज को बोया जाना है सुसमाचार एक शुभ खबर है इस विषय में कि परमेश्वर ने अपने इकलौते पुत्र को इस पृथ्वी पर मनुष्य के स्थान पर मरने भेजा उसे पुनः जलाया कि हमारे लिए मध्यस्था को कर सकें

इस बात को देखें की पौलुस ऊपर दिए गए सारे विचारों को एक साथ जोड़ता है इस पद में जिस ने हमारा उद्धार किया, और पवित्र बुलाहट से बुलाया, और यह हमारे कामों के अनुसार नहीं; पर अपनी

मनसा और उस अनुग्रह के अनुसार है जो मसीह यीशु में सनातन से हम पर हुआ है। 2 तिमोथी 1:9 चाहे कितने भी अच्छे कार्यों को हम इकट्ठा करने की कोशिश करें हमारे ऊपर फिर भी वह मृत्युदंड बना रहता है अच्छा बनना उस मृत्युदंड को कम नहीं करता जिस को पहले से ही घोषित किया जा चुका है इसी कारण से धर्म अपने आप में सहायक होने की बजाय धोखा देने वाले हैं वह मनुष्य को यह सोचने की ओर ले जाते हैं कि उनका आचरण परमेश्वर के न्याय को हटा देगा

परमेश्वर की योजना उसके अनुक्रम में कसकर बंधी हुई है परमेश्वर ने निर्णय लिया आरंभ से ही कि वह हमारे जीवन ऊपर अपने उद्धार को उन्हें ले हमारी आशा इस बात पर निर्भर नहीं करती कि हम क्या करते हैं पर इस पर करती है कि परमेश्वर ने हमारे लिए क्या किया उसकी मृत्यु उन सबके लिए जिन्होंने उस पर विश्वास किया तथा उस आशा को थामे रहते हैं कैसे एक व्यक्ति विश्वास कर सकता है केवल परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा

गलत छुटकारे यह संदेश को समझना वर्तमान

संसार में दुनिया में अविश्वास अत्याधिक बढ़ता जाता है जैसे पुराने और नए नियम के दिनों में जैसे लोग परमेश्वर के अनुग्रह को नहीं मानते उन्हें कुछ दूसरी योजनाओं को लेकर आना है कि उस दोष और खालीपन के भाई को कम कर सकें दुनिया में दार्शनिक ज्ञान केवल एक वैकल्पिक तर्क-वितर्क को उपलब्ध कराता है तथा संस्थाएं और झूठी शिक्षाओं के समूह और अत्यधिक गलत विवरण को देते हैं नीचे दिए गए कुछ धार्मिक व्यवस्थाएं हैं यह दिखाने के लिए कि कैसे बाइबिल का छुटकारे का संदेश इन अंकित विश्वासों तथा रीति रिवाजों से अलग है

जेहोवा विटनेस

जेहोवा विटनेस एक झूठी शिक्षा का समूह है जिसके कई मालिक गलतियां हैं वह यह सोचते हैं कि यीशु एक प्रधान स्वर्गदूत है इसके बजाय कि वह एक मनुष्य सा इसलिए यीशु के द्वारा मनुष्य के स्थान पर दाम को चुकाया जाना नहीं है यद्यपि वह कहते हैं कि एक व्यक्ति आदम की उंर सांपों से शमा प्राप्त करता है वह यह विश्वास करते हैं कि मनुष्य को इस पृथ्वी पर कार्य करना है अपनी खराई को दिखाने के लिए ताकि आने वाले जीवन में जीने के लिए एक आशा को प्राप्त कर सकें अन्यथा वह नाश हो जाएंगे कार्यो पर आधारित प्रणाली उन्हें एक दरवाजे से दूसरे दरवाजे तक इतनी श्रद्धा के साथ जाने के लिए प्रेरित करती है जब मनुष्य अपने कार्य पर विश्वास करता है तो विश्वास के लिए कोई स्थान नहीं रह जाता वह भाई के द्वारा चलाए जाते हैं

मोर्मोंस अंतिम दिनों के संत

मोर मोर विश्वास एक मसीह ज्योति शिक्षा से कम है तथा ज्यादा पूर्व के धार से भरी हुई वह यह विश्वास करते हैं कि परमेश्वर एक अच्छे मनुष्य में से निकल कर बना है मोर मोर विश्वास एक मसीह ज्योति शिक्षा से कम है तथा ज्यादा पूर्व के धार से भरी हुई वह यह विश्वास करते हैं कि परमेश्वर एक अच्छे मनुष्य में से निकल कर बना है तथा हम भी उसके समान बन सकते हैं शाब्दिक रूप से परमेश्वर यदि हम वह करते हैं जो सही है उनके अनुसार कई ईश्वर हैं वह मसीह के छुटकारे के कार्य को नहीं मारते परंतु उनके अनुसार केवल विश्वास से यह प्राप्त नहीं होता हम यह मानते हैं कि पाप से उद्धार केवल आज्ञाकारिता के द्वारा ही आ सकता है और जैसे स्वर्ग के राज्य का दरवाजा उस बलिदानी मृत्यु तथा

मसीह के पुनरुत्थान के द्वारा खुला है उसके कार्य के द्वारा परंतु मनुष्य को अपने भंते उसे प्राप्त करना है

स्वतंत्र विचार वादी प्रोटेस्टेंट तथा कैथोलिक में

स्वतंत्र विचार वादी वचन के कई भागों को नहीं मानते तथा मसीह के उस कीमत को चुकाने के कार्य को वह मसीह के उस क्रूस पर कार्य को नकारते हैं क्योंकि वह शास्त्रों के आरंभ तथा उसके प्रकार के विषय में संदेह पूर्ण है यहां तक कि वह उसको मौलिक रुप से भी नहीं देते परंतु एक प्रेरणादायक शास्त्र के रूप में इस कारण से यह उनके दृष्टिकोण या विचारधारा को नहीं डालता इसके वनस्पति वह मर्जी के समान व्यवहार में बनने के द्वारा आशा को खराब करने की कोशिश करते हैं इस बात को बुलाते हुए या नकारते हुए कि उनके ऊपर मृत्यु का श्राप या दूसरों के ऊपर मृत्यु का श्राप है

चौंकाने वाली बात यह है कि लोग बिना परिवर्तित हुए धार्मिक बन सकते हैं जिसका अर्थ है कि वह कविताओं में जा सकते हैं बाइबल पढ़ना चालू कर सकते हैं अन्य धार्मिक कार्यों को कर सकते हैं बिना उनकी प्रसन्नता की नीव में परिवर्तन की वह अब भी वही है उनके प्रसन्नता की भूमि वह खुद ही हैं-जॉन पाइपर

रोमन कैथोलिक ऑर्थोडॉक्स प्रोटेस्टेंट

हम एक पहाड़ों में कई मस्ती समूह को ला सकते हैं रोमन कैथोलिक ऑर्थोडॉक्स कविताओं के कई समूह तथा प्रोटेस्टेंट कलीसिया है वह सब एक साथ उनको छोड़ जो ऊपर दी गई हुई सूची में है अच्छी कलीसिया है वह मस्ती के दाम चुकाने के कार्य की महत्वता को मानते हैं कई रीति रिवाज या धर्म प्रक्रियाएं मसीह के कार्यों के ऊपर छाया को लेकर आ

जाती हैं वह उन रीति-रिवाजों पर और अधिक ध्यान देती हैं तथा अपेक्षा किए हुए व्यवहार के साथ इसमें उधार पर इतना ध्यान नहीं दिया जाता जो मस्ती में किया है व्हाट इस परंतु इस तिथि पर की यह रीति रिवाज और प्रक्रियाएं पूरी की जाए उनकी गली शियाओं में जुड़ने के द्वारा वह मसीह के होते हैं इसके बजाय कि वह विश्वास के द्वारा मसीही में परमेश्वर के बनते हैं तब वह कलीसिया के होते हैं परिणाम स्वरुप मनुष्य अपनी सदस्यता तथा अपने अच्छे कार्यों पर ध्यान देता है इसके बजाय कि उद्धार की उन शक्तियों को थामे मसीह में विश्वास के द्वारा यद्यपि यह अच्छा है कि हम इस बात को अपने क्षेत्र में रखें इनमें कई ऐसे हैं जो ध्यानपूर्वक वचन की शिक्षाओं के अनुसार चलते हैं

नया युग

नए युग की शिक्षा मसीही के हमारे स्थान पर कीमत चुकाने के विषय में बिल्कुल ध्यान नहीं देती उन्होंने भौतिक वाद की कुछ बातों को नकारा है और वह विश्वास करते हैं की आत्मिक व्यायाम तथा अनुशासन अच्छी चीज है नियुक्ति लोग ज्यादातर परमेश्वर के न्याय के विषय में अनजान है यह सोचते हुए कि शायद बाइबल आधारित परमेश्वर के प्रति दृष्टिकोण पुराना है वह अपने भरोसे को आत्मिक रूप से प्रबुद्ध होने की भावना पर रखते हैं वह परमेश्वर के बाइबल आधारित सोच को त्रुटिपूर्ण विचारों के द्वारा फीका करने की अनुमति देते हैं तथा पाप करने की जो उन्हें उद्धार तक पहुंचाएं

भौतिकवादी

भौतिकवादी अबे उनके विषय में शक्ति से बोला जाए वह ना तो परमेश्वर पर विश्वास करते हैं या आत्मिक संसार उनके पास कोई

तरीका नहीं आपके द्वारा पहुंचाए गए नुकसान को समझाने में तथा निश्चित रूप से मसीह को एक भले मनुष्य से बढ़कर नहीं समझना वह आने वाले न्याय पर विश्वास नहीं करते तथा वह अपने जीवन को जितना आराम से कर उन विचारों से भरे रहते हैं

इस्लाम

इस्लामी लोग मसीह यीशु पर विश्वास करते हैं परंतु उस भाव से नहीं कि वह उसके द्वारा उद्धार प्राप्त कर सकते हैं वह मोहम्मद के शब्दों को सुसमाचार के शब्दों के ऊपर मानते हैं जिसे वह सत्य मानते हैं वह कठिन प्रयास करते हैं कि अल्लाह के भयानक न्याय से बच सकें तथा कुछ दिए गए नियमों के अनुसार जीने के द्वारा कुछ आशा को प्राप्त कर सकें तथा उन नियमों के अनुसार जो मोहम्मद ने दी है प्रार्थना उपवास तथा अन्य और चीजें जो यद्यपि उन्हें उस न्याय से नहीं बचाती वह हमारे समान दोषी बने रहते हैं उस पाप की विरासत के कारण तथा आदम के अधीन उस न्याय के कारण बाइबल को गंभीरता से अध्ययन करने तथा उस पर विश्वास नहीं करने के द्वारा वह परमेश्वर के विषय में, मनुष्य के विषय में पाप के विषय में तथा मृत्यु के पश्चात के विषय में इत्यादि, दूसरी संसारिक दृष्टिकोण को अपनाते हैं जो कई मुख्य धर्मों के लिए भी चाहे कोई व्यक्ति दूसरी शास्त्रों से जुड़ा है तथा बाइबिल पर विश्वास ना करें या थोड़ा सा बाइबल से परिचित हो जिसमें सत्य परमेश्वर के वचन में अद्भुत रुप से प्रस्तुत किया गया है बहुत छुटकारे के कार्य के लिए आजाद नहीं होते

सारांश

हम यह मानते हैं कि यह चर्चा संक्षिप्त है तथा जो दूसरी धार्मिक नामों के अधीन हैं इन बातों को लेकर मतभेद है हर एक धर्म वर्ग सरकार तथा व्यक्ति यद्यपि छुटकारे के सत्य की रोशनी में जो पवित्र शास्त्र बाइबल में दिए गए हैं जीवन व्यतीत करने के लिए जिम्मेदार है

पश्चिमी दुनिया का बाइबिल विश्वास सिर फिर जाना पहले से कहीं अधिक स्पष्ट है कलीसिया जो इस बात की घोषणा करती थी की मसीही केवल एक मार्ग है अब उस पर यह सत्य महत्वपूर्ण है विश्वास नहीं रखती निश्चित रूप से कोई भी धर्म ब्यावर धार्मिक विचारधारा गहरी जांच से परे है यह अति आवश्यक बना रहता है कि हम अपने विश्वास को जांचे जैसा पौलुस ग्रंथियों की कलीसिया को कहता है उनकी आरंभिक इतिहास में

(2 कोरिंथियंस 13: 4-5)

धर्मों का उद्देश्य एक प्रयास है कि लोगों के दोष तथा उनके विवेक कांटेक्ट कर सकें एक संक्षिप्त परीक्षण जो कुछ धार्मिक समूह का हमने ऊपर किया उनमें से ज्यादातर एक व्यक्ति के विषय में गैर बाइबल आधारित दृष्टिकोण के चारों ओर घूमती है तथा यह बताती है कि कैसे मनुष्य मनुष्य के बाप के विषय में नहीं समझता तथा परमेश्वर कि विश्वास योग्यता उसके उस वचन के प्रति कि वह पापियों का न्याय करेगा यदि वह ऐसा समझते यह सारे धार्मिक रंगमंच सामग्री क्षण भर में गिर जाते इसीलिए महत्वपूर्ण है कि एक व्यक्ति का परिचय परमेश्वर से कराया जाए तथा इसकी अपेक्षा की जानी चाहिए जब सुसमाचार को बांटा जा रहा हूं हमारी आशा केवल यीशु मसीह में है तथा उस पर जो

उसने क्रूस पर किया वैकल्पिक तरीके परमेश्वर के क्रोध को शांत नहीं कर सकते लोग दोषी हैं और खुद की शामत के द्वारा इस दोष भावना को ढका नहीं जा सकता केवल यीशु मसीह में तथा उसके क्रूस पर मृत्यु मैं ही आराधन को पाया जा सकता है जो जो पूर्ण रूप से परमेश्वर के कोप को शांत कर सकें

इसलिये कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं। परन्तु उसके अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में है, सेंत मेंत धर्मी ठहराए जाते हैं। उसे परमेश्वर ने उसके लोहू के कारण एक ऐसा प्रायश्चित्त ठहराया, जो विश्वास करने से कार्यकारी होता है, कि जो पाप पहिले किए गए, और जिन की परमेश्वर ने अपनी सहनशीलता से आनाकानी की; उन के विषय में वह अपनी धामिर्कता प्रगट करे। रोमियो 3:23- 25

निष्कर्ष

शास्त्रों का किया जा सकता है धर्म ज्ञान के ऊपर महारत हासिल की जा सकती है परंतु तब भी मनुष्य क्रूस पर उस कार्य की महत्वता को समझने में चूक सकता है तुम पवित्र शास्त्र में ढूंढ़ते हो, क्योंकि समझते हो कि उस में अनन्त जीवन तुम्हें मिलता है, और यह वही है, जो मेरी गवाही देता है। फिर भी तुम जीवन पाने के लिये मेरे पास आना नहीं चाहते। यूहन्ना 5:39-40

अध्ययन के बाद अध्ययन पर सबूत दे सकता है किस शास्त्र मसीही तथा क्रूस पर उसके कार्य की ओर संकेत करते हैं सृष्टि के सत्य जैसे ज्योति पानी समाज के सत्य जैसे विवाह याजक पुत्र परमेश्वर के वायदे जो व्यक्तियों से उसने की उनके शक्तियों से जैसे हवा अब्राहम

दाऊद सब परमेश्वर के उत्तम योजना की ओर जो मनुष्य का छुटकारा कर अपने से मिलाता है

आज का विश्व यीशु मसीह को ना जाने की विकट परिस्थिति में है निश्चित रुप से यदि हम और कई और मसीह के पास आते हैं तब हम परमेश्वर को जानने के धन के द्वारा जीवन को प्राप्त करेंगे का कई कई दिन ऐसे जो ओर से कर हैं तथा कि इस वास्तविक इतिहास में पूरा कर रहा है जिसमें हमारे जीवन का इतिहास भी सम्मिलित है हम आशा करते हैं कि हम भी उन शिष्यों के समान हो जाए जिन्होंने ना केवल विश्वास किया परंतु यीशु मसीह के नाम की घोषणा भी की तथा छुटकारे के महान संदेश को स्पष्ट भी किया

निश्चित रूप से प्रभु हमें बचाना चाहता है परंतु किस लिए इसके विषय में हम आने वाले तथा अंतिम अध्याय में चर्चा करेंगे

#16 छुटकारे की पुनर्स्थापना का सारांश

पिछला अध्याय छुटकारे के संदेश पर केंद्रित था जो क्रूस तक ले जाता है और क्यों लोगों का बचाया जाना आवश्यक है तथा कैसे वह बचाया जा सकते हैं । यह आखिरी अध्याय इस बात का सारांश है कि कैसे बाइबल के हर एक सूत्र परमेश्वर के उस विशेष छुटकारे के प्रति लक्ष्य से जोड़ते हैं ।

परमेश्वर का महिमा मैं उद्देश्य

परमेश्वर का उद्देश्य केवल राज्य करना नहीं परंतु ऐसे बड़े लोगों की सेना की रचना करना है जो उसके साथ उसके वचन की घोषणा करने में राज कर सकें । एक ऐसे जीवन को जिए जो परमेश्वर की पवित्र उपस्थिति से प्रचलित है तथा तरस के साथ कमजोर और जरूरतमंदों के लिए मध्यस्था करते हुए । छुटकारे को समझा नहीं जा सकता जब तक हम उसके उद्देश्य को ना देखें । जो संगति तथा परमेश्वर के साथ सहकार्य करने में पूर्ण होती है ।

परमेश्वर के छुटकारे की योजना क्रूस पर केंद्रित होती है तथा मसीह की वेदना के द्वारा परमेश्वर के कार्य की प्रभावशालीता ऐसा प्रतीत होता है यद्यपि मसीही समाज के मुख्य भाग में कभी भी इसको नहीं समझा या हो सकता है वह उसे भूल गया है परमेश्वर के महान योजना की योजना तथा उसे कार्यरत करने के बड़े उद्देश्य को । यह उन धनी व्यक्तियों के समान है जो अपने सारे धन को एक बगीचे की रूपरेखा बनाने तथा उसे बनाने में व्यय करते हैं परंतु उस योजना को तुरंत भूल जाते हैं । जब वह योजना बनाने का स्तर पूरा हो जाता है कुछ ऐसी बात है जो समझ में नहीं आती । जितना बड़ा नक्शा होता है उतना ही बड़ा उसका उद्देश्य होता है । परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र के जीवन को निवेश किया सो हमें सही रूप से यह अपेक्षा करनी है कि प्रभु पूर्ण रूप से अपने अद्भुत योजना को पूर्ण करने में सम्मिलित है ।

एक बड़ा मनोरंजन का उद्यान या आधुनिक फैक्ट्री या जीवविज्ञानी कोशिका जो अपनी सुष्मता में अद्भुत है परमेश्वर के छुटकारे की महान योजना के तुल्य नहीं है । समय और अनंतता में इस योजना से और यदि यह बात है जैसा पिछले प्रश्नों में दर्शाया गया कि हम अपेक्षा करें इस प्रश्न को पूछने की किस लिए क्यों परमेश्वर ने पापमय मनुष्य के साथ इतनी निकटता से कार्य ? क्यों उसने अपने इकलौते पुत्र को उस दर्द को उठाने के लिए समर्पित कर दिया ? जिसके लिए वह योग्य नहीं था और क्यों धर्मी मसीही अधर्मी मनुष्य के लिए मारा गया ? एक करुणामय और करुणामय व्यक्ति के ऊपर करुणा को दिखाता है । ऊपर दिए गए रेखाचित्र में हम देख सकते हैं कि प्रभु ने ना केवल अपने आप को परमेश्वर के लोगों के साथ अपने वचन के द्वारा

बांधा परंतु अपना बनाने के लिए उन्हें ख़रीदा । अब उसका समय है कि उसके कठिन परिश्रम के परिणाम का वह आनंद उठा सके ।

दृष्टिकोणों में त्रुटियां

यद्यपि कुछ सोचते हैं यह परमेश्वर की योजना हमें स्वर्ग ले जाने की थी निश्चित रूप से परमेश्वर ने इस बात को पूरा किया परंतु यह आसान उत्तर एक मुख्य बात से झुक जाता है जैसा की जय रेखाचित्र इसको बताता है ।

यहां पर दो प्रसिद्ध गलत धारणाएं हैं जो परमेश्वर के लोगों से उद्धार के आनंद को दूर करती हैं ।

पहला मनुष्य यह सोचता है कि परमेश्वर को मनुष्य को बचाना पड़ा क्योंकि वह बहुत मूल्यवान है । क्रूस मनुष्य के मूल को स्थापित नहीं करता परंतु उसकी आवश्यकता को । रोमियों 3 :19-20 उद्धार का संदेश अनु कर के विषय में है कार्य के विषय में नहीं रोमियों 3:21-26 मनुष्य इस के योग्य नहीं परमेश्वर मनुष्य का निवास करने के द्वारा महिमा प्राप्त करता है जैसा वह उन्हें बचाने में प्राप्त करता है जिस प्रकार से जय समान रूप से उसके महिमा में व्यक्ति को दर्शाते हैं तथा उसके न्याय को पूर्ण करते हैं उन गिराए गए स्वर्गदूतों का अंतिम न्याय जो छुड़ाए नहीं गए वह परमेश्वर की बड़ी महिमा को लेकर आया प्रकाशितवाक्य 20 :7 -15 विद्रोही मनुष्य तो मूल्यवान था ना उसकी जरूरत थी यह स्मरण रखें कि मनुष्य परमेश्वर के स्वरुप और समानता में बनाया गया परंतु उसके वह स्वरूप पतन के कारण से खराब हो गई । यह आसान सा विचार घमंड की बात को लेकर आता है । जिसे हम आज के मानव में देख सकते है । इस गलत सोच को हम बिक्री पीढ़ी

में देख सकते हैं जो अपने कमाने वालों के परिश्रम का आनंद उठाते हैं परंतु जिसके लिए उन्हें कार्य नहीं करना पड़ा । मनुष्य आज के अधिकार के तौर पर धन की मांग करता है यह घमंड का दाग धन्यवाद रहिता को लेकर आता है तथा अवास्तविक अपेक्षाओं को । ना केवल इस संसार में परंतु परमेश्वर के लोगों के साथ ही उत्पन्न करता है ।

दूसरी गलत धारणा जो हमारे आनंद को चुराता है वह तब होता है कि जब हम परमेश्वर के छुटकारे के लक्ष्य को आसान उद्धार के दृष्टिकोण के साथ समांतर रखते हैं । हमें यह पूछना है कि उद्धार क्या है यह अनंत जीवन क्या है जो परमेश्वर ने हमें दिया है यह सवाल हमें कहीं अधिक अलग उत्तर की ओर ले जाता है । इसके बजाय की स्वर्ग जाने के आसान टिकट के रूप में एक विश्वासी ने एक बार अपने विचारों का मुझसे अंगीकार किया । मैं जानता हूं कि मैं अपने पापों के शमा को आसानी से प्राप्त कर सकता हूं इससे फर्क नहीं पड़ता कि मैंने क्या गलत किया है क्योंकि यह मसीह के द्वारा क्षमा किया जाएगा । यह विचार परमेश्वर की महान योजना को बाहर रखता है जो उसने पृथ्वी पर मनुष्य के लिए बनाई है इससे पहले कि वह स्वर्ग में प्रवेश करें ।

छुटकारे के विषय में गलत सोच में हम एक स्थान पर छुटकारे के कार्य की बिल्कुल सही समझ को रख सकते हैं । यह आवश्यक रूप से परमेश्वर के लोगों को वहां नहीं लाता जहां वह परमेश्वर की प्रेम से अचंभित है तथा उसकी छुटकारे के उद्देश्य में सम्मिलित हैं । जब एक विश्वासी उसके पृथ्वी की योजनाओं की ओर केंद्रित होता है वह हमेशा परमेश्वर के उद्धार की योजना की गलत समझ से आता है । जब हम यह सोचना आरंभ करते हैं कि प्रभु हमारी जीवनों के द्वारा अब क्या

करना चाहता है इसके बजाय कि उस दूर के भविष्य में हम देखें हम इन छुटकारे के सत्यों को लागू करने की आजादी को अपने जीवन में अनुभव कर पाएंगे ।

परमेश्वर के महान छुटकारे की योजना

पिछले अध्यायों में इस बात पर ध्यान दिया कैसे सारे शास्त्र एक स्वर में तथा निश्चितता को देने वाले इशारों के साथ परमेश्वर के छुटकारे की योजना की मसीह के द्वारा पूर्णता की ओर इशारा करते हैं । मार्ग में कई ऐसे चिन्ह आते हैं परंतु परमेश्वर तक पहुंचने के लिए केवल एक सच्चा मार्ग है जो यीशु मसीह के द्वारा है । परमेश्वर का इकलौता पुत्र यीशु ने कहा यीशु ने उस से कहा, मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता। योहन्ना 14:6

अंतिम अध्याय में हम परमेश्वर की उस क्रूस पर योजना को इकट्ठा करेंगे। परमेश्वर के पास बड़ी अपेक्षाएं हैं कि इस योजना को बनाने में तथा इस योजना को लागू करने की कीमत से क्या परिणाम मिलेगा। यदि पड़ोसियों के पास ट्रक आते हैं घर बनाने के सामान के साथ तो एक व्यक्ति स्वाभाविक रूप से सोचने लगेगा कि आखिर यह कर क्या रहा है? इसी प्रकार क्रूस पर वह अद्भुत कार्य है हमें इस बात वह सोचने के लिए ले जाना चाहिए कि परमेश्वर हमारे जीवन में क्या कार्य करेगा? जैसे एक बीज से अंकुरित होने का चिन्ह होता है। परमेश्वर हमें नया जीवन बढ़ने के लिए देता है फल लाने के लिए देता है। यहां तक की धार्मिकता की वाटिका बनाने के लिए भी। क्योंकि जैसे भूमि अपनी उपज को उगाती, और बारी में जो कुछ बोया जाता है

उसको वह उपजाती है, वैसे ही प्रभु यहोवा सब जातियों के साम्हने धामिर्कता और धन्यवाद को बढ़ाएगा।यशायाह 61:11।

नए नियम कलीसिया के ऊपर दबाव देता है।यहूदी अन्य जाति पुरुष तथा स्त्री विश्वास के द्वारा परमेश्वर की उपस्थिति में ले जाता है। जहां वह परिवर्तित होती है यह परिवर्तन एक नई हृदय से आरंभ होता है। जिसे पवित्र आत्मा ने रखा है जो परमेश्वर के लोगों को सक्षम करता है प्रेम करने के लिए तथा परमेश्वर के कार्य करने के लिए जब हम उसके महिमामई मार्गों को जानते हैं। हम उसे समझाते हैं तथा उसके सम्मान करना चालू करते हैं कितना अद्भुत है कि परमेश्वर ने अपने लोगों को यह सौभाग्य दिया है कि वह उसकी सेवक तथा उसके याजक बने।

एक भाई को सलाह देने के समय हमने अपने आपको कलीसिया की समस्या पर चर्चा करते हुए पाया। एक व्यक्तिगत विश्वासी जो चीजों को ठीक करने की स्थिति में जाता है क्योंकि शायद वह संसार से अत्यधिक अचंभित हैं तथा दुनिया की कामयाबी के बजाए की प्रभु और उसकी योजनाओं से विश्व गुनगुने शंका समाधान सत्य में मिलता है जो अध्याय मैं है उस कार्य को सही रुप से समझने के साथ जो परमेश्वर ने अपने लोगों को लाइक किया है जिसे उन्हें करना है वह दुनिया भी आराम की मूर्ति बनाने से रोक सकेगी

परमेश्वर ने हमारे लिए एक स्वर्गीय घर रखा है परंतु इससे पहले कि वह हमें वहां पर ले जाएं उसने हमें अपनी सहभागिता में रखा है तथा उसके कार्य को इस पृथ्वी पर करने के लिए अनुबंधित किया है जीवन जीने में हमारी आशा तथा प्रभु की उपस्थिति में कार्य करना हमारी आंखों

को दुनिया भी व्यवस्था से परे रखती है और उसको स्वर्गीय घर पर लेकर आती है

एक भव्य दृष्टि

परमेश्वर एक महान उपकार ने अपने छुटकारे की योजना के सारे सूत्रों को पूरे शास्त्रों में एक दूसरे से जुड़ा है उसके अनुयाई होने के रूप में हमारा मुख्य उद्देश्य यह है कि हम छुटकारे के बाइबल आधारित उपयोगी ईश्वर ज्ञान की बातों को सामान्य विश्वासियों को उपलब्ध करा सकें। हम पूरे एक अध्याय का उपयोग करेंगे परमेश्वर की छुटकारे की योजनाओं को चित्र करने के लिए।

जैसा की पिछले अध्याय में हम देखेंगे कि कैसे पूरी बाइबल आपस में जोड़ती है। हर एक भाग अपने विशेष योगदान को पूरे नक्शे में कैसे जोड़ता है ।हर एक अध्याय में हमने उत्पत्ति की पुस्तक को देखा क्योंकि कई ऐसे उदाहरण है उसकी महिमा के रूप चित्र का। उसकी सृष्टि सीधे-सीधे उसकी अभिलाषाओं को प्रकट करती है। जिसमें आदम और हव्वा के साथ उसका संबंध भी सम्मिलित है ।पृथ्वी बरसात बना रहा परंतु मनुष्य हालांकि बिगड़ी हालत में भी सूर्य अस्त में सुंदरता को देख सका फलों को खाने का आनंद उठाना एक परियोजना के विषय में उत्साह तथा संगति के समय योगा आनंद इस ताकि दुनिया में शुद्धता के बचे हुए लोग हैं।

इस रेखाचित्र में बाई तरफ दो मुखी आशाओं चित्रित किया गया है जो परमेश्वर की मनुष्य से है सहभागिता तथा सहकर्मी यह असंगति कुछ समय की थी यद्यपि पता नहीं आमने सामने की परमेश्वर और मनुष्य के बीच की संगति को तोड़ दिया

हमें छुटकारे को समझने के लिए यह आवश्यक है कि हम उस समस्या को समझे जिसका सामना मनुष्य जाति करती है यदि हमने उत्पत्ति के पहले 3 अध्याय छोड़ दिए तो इस पृथ्वी की हमारी समझ उस पतन के कारण से अनभिज्ञ रहेगी जो हमें और भी अधिक कठिन कर देगी कि हम परमेश्वर की मनुष्य जाति को बनाने की योजना को समझने में इसी प्रकार से कई लोग सोचते हैं कि मृत्यु प्राकृतिक है परंतु यह प्राकृतिक को छोड़कर सब कुछ है

उत्पत्ति 3 में मनुष्य को पहले ही उस वाटिका में से परमेश्वर की उपस्थिति के बाहर फेंक दिया गया है अब वह परमेश्वर के कार्य नहीं कर रहे परंतु खुद के कार्य कर रहे हैं उत्पत्ति चेतक पृथ्वी ऐसे लोगों से भर गई है उत्पत्ति 6:5 इस रेखाचित्र के ऊपर का अंधकार मनुष्य की परमेश्वर के साथ अलगाव को दिखाती है तथा उसके ध्यान को जो उसके कार्यों पर है इसके बजाय कि परमेश्वर की गाड़ी पर हो दिखाती है है तथा परमेश्वर के कई ऐसे कदम के लोगों के हृदय को स्पर्श कर सके वह धीमी रोशनी के साथ दिखाया गया है मनुष्य फिर भी उस अंधकार में परमेश्वर से अलग रहता रहा।

यह परिस्थिति बड़े नाटके रूट से उस क्रूस पर बदल गई यीशु इस दुनिया में ज्योति को लेकर आया क्योंकि वह पुनः जीवन को आत्मिक रूप से मृत मनुष्य के हृदय में लेकर आया। इफिसियों 2:1-3 आकाश में यह परिवर्तन हो रहे थे   और विधियों का वह लेख जो हमारे नाम पर और हमारे विरोध में था मिटा डाला; और उस को क्रूस पर कीलों से जड़ कर साम्हने से हटा दिया है। और उस ने प्रधानताओं और

अधिक्कारों को अपने ऊपर से उतार कर उन का खुल्लमखुल्ला तमाशा बनाया और क्रूस के कारण उन पर जयकार की ध्वनि सुनाई॥-जय- कुलूसियो 2:14 -15 परमेश्वर ने विरोधी हकीमों के ऊपर तथा अधिकारियों के ऊपर मसीह के द्वारा जय प्राप्त की।

साथ ही में पवित्र आत्मा ने इस दुनिया के चारों तरफ लोगों के हृदय में नए रुप से कार्य करना आरंभ किया उस क्रूस पर पाप के साथ प्रभावकारी रूप से व्यवहार किया गया और शैतान के उस दोष को निहत्था कर दिया गया। परमेश्वर ने कई लोगों के साथ मसीह के लहू के द्वारा शांति को स्थापित किया । एक सिद्ध तथा सही पुनर्स्थापना में मनुष्य परमेश्वर की संगति में रह सकता है तथा परमेश्वर के कर्मचारी के रूप में एक बार फिर उसके बगीचे में कार्यरत हो सकता है ।एक और चरण होगा जो इस रेखाचित्र में दर्शाया नहीं गया इस संगति की संपूर्ण पूर्णता के विषय में तथा मसीह के आगमन पर सहकार्यता में। हमें केवल परमेश्वर पर विश्वास के द्वारा इसको जीने की आवश्यकता है। जो हमारे पास अद्भुत शांति और परमेश्वर के आनंद को हमारे हृदय में लेकर आता है । सदा आनन्दित रहो।

सदा आनन्दित रहो। निरन्तर प्रार्थना मे लगे रहो। हर बात में धन्यवाद करोक्योंकि तुम्हारे लिये मसीह यीशु में परमेश्वर की यही : इच्छा है।

1 थिस्सलुनीकियों 5:16-18

इसी कारण से हमारा विश्वास हमारे उद्धार व्यक्तिगत बढ़ोतरी तथा व्यक्तिगत सेवा के लिए मुख्य योग्यता है। विश्वास हमें समर्थ करता है कि हम वर्तमान में उन सब बातों की प्रतिउत्तर के रूप में जीवन

खोजिए जो सत्य है यद्यपि यह बहुत अधिक प्रत्यक्ष नहीं है , जब हम अपने चारों ओर तथा अपने अंदर देखते हैं। आनंद और आशीषों से आता है जो परमेश्वर ने की है और जो कर रहा है प्रार्थना एक और तरीका है परमेश्वर के साथ उसके लोगों के निरंतर संबंध को बताने के लिए। यह सब उस विषय का भाग है कि कैसे परमेश्वर ने अपने लोगों को पुनः लैस किया है जो आनंद किसी भी रूप से अपवाद करता है हमारी प्रार्थना का जीवन नियमित नहीं है तू हमारा विश्वास कमजोर है तथा परमेश्वर का उस उसके कार्य तथा उसके दूसरे कार्य हमारे लिए वास्तविक नहीं होंगी।

परमेश्वर का राज्य वास्तविक है तथा साथ ही साथ परमेश्वर के लोगों पर निर्भर करता है कि उसे पूर्ण सामर्थ और वास्तविकता के साथ जिए। मसीह जीवन में विश्वास एक मुख्य भाग बना रहता है। परमेश्वर ने हमें सब कुछ दिया है उस जीवन को जीने के लिए जो व्यवस्था के द्वारा जो हमारे हृदयों में लिखी गई है। उसके आधार पर जीना है। उस अत्यधिक आनंद प्रेम तथा शांति में खुलने वाले दरवाजे हमारे हैं यदि हम केवल यह विश्वास करें कि ऐसे द्वार है छुटकारे की मजबूत समझ हमारे विश्वास को बनाती है जिसके परिणाम स्वरुप एक मजबूत मसीही जीवन और सेवा होती है

परमेश्वर को जानना

जैसे हमारा विश्वास बढ़ता है हम उसकी पवित्रता के प्रति और अधिक संवेदनशील होती जाते हैं तथा हमारे चाल-चलन को उसकी पवित्रता में डालना आरंभ करते हैं यदि मैं विश्वास करता हूं कि परमेश्वर को सर्वोपरि करुणा मैं परमेश्वर के रूप में देखता हूं तो यह मेरी उस कठोर

व्यवहार को जो कमजोर और लाचारों के साथ मैं करता हू नरम करेगा अब मैं अपने आपको अत्यधिक बढ़ा नहीं समझूंगा परंतु मेरा ध्यान इस बात पर होगा कि कैसे मैं हर एक व्यक्ति जिस से मिलता हूं चाहे धनी हो या निर्धन हो या स्त्री हो या पुरुष हो उनके साथ अनुभवों को संजो सकूं

परमेश्वर की सेवा करना

मैं शिष्यता तथा विवाह के ऊपर कई शिक्षा के सेमिनार करता हूं मैं केवल यह सेमिनार कर सकता परंतु इस में सम्मिलित नहीं हूं परंतु ऐसा नहीं करते हुए क्योंकि सेवा की समझ जो मेरे लिए है मुझे स्मरण है कि परमेश्वर के लिए यह है अवसर है कि उसमें आने वाले लोगों के हृदयमें जीवन में उन शक्तियों को डाल सके और विश्वास में बढ़ने के लिए उन्हें समर्थ कर सके तथा जहां असंभव समझा जाता था वहां मार्ग को निकाल सके मेरी सेवा को परमेश्वर के वचन की सामर्थ पर विश्वास की आवश्यकता है तथा उसके लोगों में उसके उद्देश्य पर हम सब के पास चुनौतियां है विश्वास में बढ़ने के लिए तथा मसीह को और अधिक अनुमति देना कि हमारे जीवन से और जिए कितना अद्भुत अवसर और आनंद परमेश्वर चाहता है कि हम हमारे जीवन में उसकी महान उद्देश्य के विषय में निश्चित हूं जो आए हम इस बात पर ध्यान पूर्वक देखें कि कैसे वह अपनी शक्तियों को शास्त्रों के द्वारा प्रस्तुत करता है

उत्पत्ति से प्रकाशित वाक्य

उत्पत्ति समय के आरंभ के विषय में लिखता है जिसमें वह सृष्टि किसने बनाई है जुड़ी है तथा प्रकाशितवाक्य परिवर्तित हुए वह गा प्रकाशन है या पुनः बनाएगी चिश्ती का उत्पत्ति में जो छुपा हुआ विषय है उसे प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में पूर्ण रोशनी मिली कराया गया है इन

विषयों पर चर्चा इस अध्याय की शेष भाग को बनाती है परंतु स्मरण रखें प्रकाशितवाक्य की पुस्तक का अंतिम चित्र यही है और इस चित्र के विषय में जो सबसे अच्छी बात है वही है कि यह वास्तविक है और जैसे यह पृथ्वी और आकाश खत्म होती जाते हैं

यह और वास्तविक बनती जाती है जो लोग इस दर्शन को प्राप्त कर लेते हैं कि परमेश्वर इस पृथ्वी पर क्या कर रहा है वह मसीह की महिमा में आगमन की वास्तविकता का आनंद उठा सकते हैं। उस प्रत्यक्ष डे के साथ सब बातों को नया करते हुए आइए हम यहां आरंभ करें । बाइबल के प्रकाशन की बनावट इसी समान है उत्पत्ति वह पहला स्थान है जहां परमेश्वर अपने उद्देश्य की झलक को देता है तथा दूसरे जिलो का संकेत पूर्व में शास्त्रों के द्वारा दिया गया है। तब तक जब तक प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में जहां परमेश्वर के पूर्व उद्देश्य हम पर प्रकट किए जाते हैं ।

नई पृथ्वी और नया आकाश

आकाश और पृथ्वी की रचना में छुटकारे की योजना के ऊपर से पर्दे को हटाना आरंभ किया। इससे पहले किसी भी चीज की रचना नहीं की गई थी ।जहां तक हमारे ब्रह्मांड की बात है एक बार जब सृष्टि की रचना पूरी हो गई परमेश्वर ने अपने आपको उसकी रखवाली के लिए समर्पित किया उसकी ओर से आया हर एक शब्द स्त्री और पुरुष को बनाने अपने स्वरुप में तथा सृष्टि के बाद होने वाले परिवर्तन जैसे पतन एक मार्ग के चिन्ह बन गए जो हमें परमेश्वर की योजना के सबूत देते हैं भविष्यवाणियां चिन्ह बन गई उदाहरण के तौर पर परमेश्वर निर्णय स्वर्ग तथा नई पृथ्वी का वायदा किया उसी समान जैसे उसने नई वाचा का

वायदा किया था एक बार कहा गया वचन परमेश्वर की वह योजना कि सब कुछ नया कर दें प्रकट हुआ जिसमें आपका एक भी दाग नहीं

छुटकारे का वायदा परमेश्वर के साथ संबंध के लिए नई आशाओं को लेकर आया तथा सब चीजों के नवीनीकरण के लिए यहोवा के लिये एक नया गीत गाओ, हे सारी पृथ्वी के लोगों यहोवा के लिये गाओ! भजन संहिता 96:1, यश आया इस विषय में और स्पष्ट है क्योंकि देखो, मैं नया आकाश और नई पृथ्वी उत्पन्न करने पर हूं, और पहिली बातें स्मरण न रहेंगी और सोच विचार में भी न आएंगी। यशायाह 65 :17 क्योंकि जिस प्रकार नया आकाश और नई पृथ्वी, जो मैं बनाने पर हूं, मेरे सम्मुख बनी रहेगी, उसी प्रकार तुम्हारा वंश और तुम्हारा नाम भी बना रहेगा; यहोवा की यही वाणी है। यशायाह 66:22

हर एक फसल नए प्रधान तथा नई दाखरस का वायदा करता है सो परमेश्वर तुझे आकाश से ओस, और भूमि की उत्तम से उत्तम उपज, और बहुत सा अनाज और नया दाखमधु दे: उत्पत्ति 27:28 प्रथम वाटिका ने अद्भुत उपायों का वायदा किया परंतु उसके चले जाने के साथ हमारे लिए कठिन परिश्रम बज गया कि अपने आप को जीवित रख सकें परंतु आने वाली रचना हमें उस इंतजार के स्थान पर रखता है उस द्वितीय और महान वाटिका के लिए हम उसके बड़े फायदे की पूर्णता का इंतजार कर रहे हैं इसी कारण से मसीह के पुनरागमन के ऊपर विश्वासियों का विचार करना महत्वपूर्ण है

नए स्वर्ग और पृथ्वी का यह वायदा निश्चित रूप से यह होने देता है कि हम शारीरिक विचारधारा जो हमारी जीवन और मृत्यु के

विषय पर है त्याग पाते हैं तथा उस ने पृथ्वी और स्वर्ग के वायदे में जुड़ जाती हैं पतरस काफी समय पश्चात नए नियम में मसीही आशा को पुनः व्यक्त करता है पर उस की प्रतिज्ञा के अनुसार हम एक नए आकाश और नई पृथ्वी की आस देखते हैं जिन में धामिर्कता वास करेगी।। दूसरा पतरस 3:13 एक उत्तम पृथ्वी की आशा हमें इस और नहीं ले जाती कि हम अपने प्रकृति तथा हमारे आसपास की चीजों के प्रति जिम्मेदार ना हो परंतु हमें कुछ उत्तम घर को पानी की ओर लगाता है हमें कठिन परिश्रम करना है कि परमेश्वर के राज्य को हम इस पृथ्वी पर लेकर आएं परंतु उसी समय हमें उन चीजों को जो आपके द्वारा कलंकित हैं उन्हें ऊंचा नहीं उठाना है जिसमें हमारे शरीर भी सम्मिलित हैं हम आने वाले युग की ओर देख सकते हैं और साथ ही साथ इस पृथ्वी पर विश्वास योग्य बने रह सकते हैं

यीशु ने से स्पष्ट रूप से कहा और जो मेरे साथ बातें कर रहा था, उसके पास नगर, और उसके फाटकों और उस की शहरपनाह को नापने के लिये एक सोने का गज था। प्रकाशितवाक्य 21:15 । दुनिया की परछाइयां हैं जैसे की लुप्त होती जा रही हैं जैसे नए संसार का वायदा और ज्योतिर्मान होते जा रहा है जैसे प्रत्येक दिन हमें उस संपूर्ण छुटकारे की ओर ले कर जा रहा है हम इस सुंदर रचना को देखना आरंभ करते हैं उस उत्तम आशा से आरंभ करते हुए धीरे बनती जाती है और यीशु मसीह के पुनरुत्थान द्वारा जिसकी पुष्टि होती है उस भविष्य की आशा की रोशनी जो कभी खत्म नहीं होती ।

पहाड़ी नदी

उत्पत्ति 2 में जो जीवन की नदी बह रही है प्रकाशितवाक्य में वह नए रूप से बहती है हम इन दोनों विषय पहाड़ तथा नदियों को एक साथ जुड़ेंगे क्योंकि यह दोनों आपस में निकटता से जुड़े हैं

> और यहोवा परमेश्वर ने पूर्व की ओर अदन देश में एक वाटिका लगाई; और वहां आदम को जिसे उसने रचा था, रख दिया। और यहोवा परमेश्वर ने भूमि से सब भांति के वृक्ष, जो देखने में मनोहर और जिनके फल खाने में अच्छे हैं उगाए, और वाटिका के बीच में जीवन के वृक्ष को और भले या बुरे के ज्ञान के वृक्ष को भी लगाया। और उस वाटिका को सींचने के लिये एक महानदी अदन से निकली और वहां से आगे बहकर चार धारा में हो गई।
> उत्पत्ति 2:8-10

पहाड़ छुटकारे के संदेश का एक महत्वपूर्ण भाग बनते हैं अदन की वाटिका में एक छुपा हुआ पहाड़ है जिसे हम कई बार भूल जाते हैं पहली वाटिका एक ऊंचा स्थान था जिसे ऊंचा उठाया गया था जब मैं इन स्थानों पर गया जैसे नैरोबी केनिया आदिस अबाबा ऑफ यूटोपिया यह सब भूमध्य रेखा से दूर नहीं है मैंने प्रचंड गर्मी की अपेक्षा की थी हालांकि वहां तापमान काफी अच्छा था क्योंकि यह ऊंचे स्थान है

अदन का अर्थ है आनंद जो काफी बड़े क्षेत्र में फैला है जिसका एक भाग अदन की वाटिका को दिया गया था अदन की वाटिका में से एक नदी निकलती थी जो इस वाटिका को पानी देती नदियों पर हमेशा से निर्भर किया जाता की खेती को उठ जा सके तथा आसपास के लोगों

को ताजा पानी दे सके सभ्यताएं इस प्रकार की नदियों के आसपास पनपती है

यहां पर चित्रण यह है कि सारी जमीन पहाड़ तथा वादियां जो इस पृथ्वी पर है उन पर उस नदी के द्वारा प्रभाव पड़ना है जो परमेश्वर की वाटिका से आते हैं अदन एक बड़ा क्षेत्र है जहां से एक मुख्य नदी उस वाटिका में आती है जो चार बड़ी नदियों में बदलती है एक बार जब वह उस वाटिका में से बाहर निकलती हैं उनमें से प्रत्येक दुनिया की सर्वोत्तम नदियां बन जाती हैं परमेश्वर की बड़ी आशीषों की कितनी सुंदर चित्र इसलिए उनका निर्माण किया गया की प्रभु की जीवनदाई भेंट को सारी पृथ्वी पर ले जा सकें मनुष्य को अपने साथ में लेते हुए कि परमेश्वर की महिमा को पूरी पृथ्वी पर फैलाएं

मैं पीटर्सबर्ग में रहता हूं जहां पर 2 नदियां है अलग है ना तथा मोनू नगीना जो आपस में जुड़ती हैं और बड़े भाइयों नदी का रूप लेती हैं यह दोनों है भू भाग के रूप को डालती है यह नदियां कहां से आरंभ होती है यह नदियां प्रति प्रभाव से आती है यह जीवनदाई नदियां जो अदन की वाटिका में से बहती हैं वह कहीं परमेश्वर के पर्वत से आरंभ होती है सी एस लुईस एक बड़ा अच्छा कार्य करते हैं क्रॉनिकल्स ऑफ़ नार्निया की किताब में इस दृश्य को चित्रित करते हुए यह नदी वह माध्यम बन गया जिसके द्वारा परमेश्वर जीवन के जल को इस पृथ्वी पर लिखकर आता है यह   जिन्नात मक चित्र स्पष्ट है परमेश्वर के पास उनकी आशीषें हैं जो इस पृथ्वी के लिए प्रस्तुत करते हैं परमेश्वर का अनुग्रह इस पूरी पृथ्वी पर है वह मिशन का परमेश्वर है वह वह परमेश्वर भी है जो उस कार्य को जिसे वह लेता है समाप्ति करता है

शास्त्र निरंतर रूप से इन नदियों के विषय में बताते हैं जय सारी नदियां हमें उस नदी के विषय में स्मरण दिलाती है जो परमेश्वर की भूमि से बहती है परमेश्वर जीवनदाई है तथा बहुतायत का स्त्रोत है

यह एजेकेल का दर्शन उत्पत्ति की वाटिका की नदी को प्रकाशित वाक्य की पुस्तक की उस नदी से जोड़ता है नव रचित् जीवन की नदी

> फिर वह मुझे भवन के द्वार पर लौटा ले गया; और भवन की डेवढ़ी के नीचे से एक सोता निकलकर पूर्व ओर बह रहा था। भवन का द्वार तो पूर्वमुखी था, और सोता भवन के पूर्व और वेदी के दक्खिन, नीचे से निकलता था। तब वह मुझे उत्तर के फाटक से हो कर बाहर ले गया, और बाहर बाहर से घुमाकर बाहरी अर्थात पूर्वमुखी फाटक के पास पहुंचा दिया; और दक्खिनी अलंग से जल पसीजकर बह रहा था। जब वह पुरुष हाथ में माप ने की डोरी लिए हुए पूर्व ओर निकला, तब उसने भवन से ले कर, हजार हाथ तक उस सोते को मापा, और मुझे जल में से चलाया, और जल टखनों तक था। उसने फिर हजार हाथ माप कर मुझे जल में से चलाया, और जल घुटनों तक था, फिर ओर हजार हाथ माप कर मुझे जल में से चलाया, और जल कमर तक था। तब फिर उसने एक हजार हाथ मापे, और ऐसी नदी हो गई जिसके पार मैं न जा सका, क्योंकि जल बढ़ कर तैरने के योग्य था; अर्थात ऐसी नदी थी जिसके पार कोई न जा सकता था। एजेकेल 47:1-5.

यह नदी यद्यपि अदन की वाटिका की उस नदी के समान है जो बड़े छोटे रूप से आरंभ होती है तथा आश्चर्यजनक रीति से गहरी गहरी

होती जाती है जिसको हमने कभी भी अनुभव नहीं किया जीवन की यह नदी परमेश्वर की उपस्थिति से आरंभ होती है क्योंकि यह परमेश्वर के मंदिर के नीचे से आरंभ होती है यह नदी केवल आधा किलो मीटर दूर है और इतनी गहरी है कि उसमें तेरा जा सके हमें यह स्मरण रखना है कि परमेश्वर का भवन यरूशलेम के उस पर्वत पर बना हुआ है

यीशु इन नदियों का शारीरिक कड़ी को आत्मिक क्षेत्र में जोड़ता है जो मुझ पर विश्वास करेगा, जैसा पवित्र शास्त्र में आया है उसके हृदय में से जीवन के जल की नदियां बह निकलेंगी। यूहन्ना 7:38 यीशु किस वाक्यांश का इस्तेमाल करता है जीवन के जल की नदियां परमेश्वर की आत्मा के विषय में बताने के लिए वह जो ताजगी देता है और उस ताजे पानी में मनुष्य को जी लाता है और हम व्यक्तित्व के लिए परमेश्वर की आत्मा के लिए भी सत्य है जो मुझ पर विश्वास करता है वह इस बात की 10 कि जीवन बहने वाली आत्मा का स्रोत है परमेश्वर के लोग वह माध्यम बन जाते हैं कि परमेश्वर उनके द्वारा अपनी आत्मा से दूसरों को स्पर्श करता है यहां पर ढांचा स्पष्ट है परमेश्वर इस नदी का स्रोत है यह जीवन को स्पर्श करता है तथा बहता है कि दूसरों के जीवन को हमारे द्वारा वर्ष कर सकें

प्रकाशित वाक्य के अंत मे वाटिका की एक महत्वपूर्ण कड़ी को जीवन की बहने वाली नदी के विषय में दिया गया है देख, मैं शीघ्र आने वाला हूं; और हर एक के काम के अनुसार बदला देने के लिये प्रतिफल मेरे पास है।

> फिर उस ने मुझे बिल्लौर की सी झलकती हुई, जीवन के जल की एक नदी दिखाई, जो परमेश्वर और मेंम्ने के सिंहासन से

निकल कर उस नगर की सड़क के बीचों बीच बहती थी। और नदी के इस पार; और उस पार, जीवन का पेड़ थाउस में बारह : प्रकार के फल लगते थे, और वह हर महीने फलता था; और उस पेड़ के पत्तों से जाति जाति के लोग चंगे होते थे। प्रकाशितवाक्य 22:1-2

एक नदी का कितना सामर्थी नाम जीवन की नदी जो यीशु की उस कथन के जीवन जल की नदियों के निकट है यह विचार उत्पन्न आधार नक्शे को दर्शाता है स्रोत परमेश्वर का सिहासन है तथा मेमना उस की शुद्धता तथा चंगाई की खबर देखी जा सकती है जो बिल्लौर के समान सांप है यह नदी उसने येरुशलम से बहती हुई जाएगी तथा उस नई वाटिका के चित्र को उपलब्ध कराती है एक ही अंतर इन दोनों में है कि आप इसमें अनगिनत लोग रह रहे

विश्व के निर्धन राष्ट्रों की मुख्य समस्या शुद्ध स्वच्छ पानी है सौभाग्य वर्ष ऐसी कई मसीही शिवकाइयां है जो इन लोगों के पास स्वच्छ पानी लेकर आने में सहायता कर रहे हैं परंतु केवल निर्मल जल इस समस्या का समाधान नहीं कर सकता उन्हें परमेश्वर के जीवित जल की आवश्यकता है उस आपकी उपस्थिति के कारण प्रभु की उपस्थिति के साथ हम इस बात के विषय में निश्चित हो सकते हैं यह जल दूषित नहीं है प्रकाशितवाक्य में जिन आशीषों का विवरण है वह बड़ी स्पष्ट है जीवन का वृक्ष निरंतर रूप से फलों को लेकर आ रहा है उनकी पत्तियों को चंगाई के लिए उपयोग किया जा रहा है

यह नदी ऊंचे स्थान पर है और नई यरुशलेम से इस संसार की ओर बहती है प्रकाशितवाक्य 21, एक पर्वत होने के कारण जीवन का

जल बहता रहता है तथा कभी नहीं थमता इसकी आशीषें पृथ्वी के हर एक छोर तक जाएगी तथा सृष्टि के हर कोने तक इसमें कोई संदेह नहीं नए स्वर्ग और पृथ्वी मैं हम यह पाते हैं नया यरूशलेम अदन की इन नदियों से बहने वाले जीवन का स्त्रोत है जो उत्पत्ति में मिलता है भविष्य उसको पुनर्स्थापित कर रहा है जिसे उसने पूर्व में बनाया था

मिलाप वाला तंबू तथा मंदिर

मिला पाला संभू तथा मंदिर चित्र है जो पतन तथा उसके लिए क्षमा की आवश्यकता का परिणाम था अदन की वाटिका में प्रभु मनुष्य के साथ चला वहां पर कोई मिला पहला तंबू नहीं था जिसका शाब्दिक अर्थ है तंबू यह मंदिर जो परमेश्वर की महिमा को मनुष्य से छुपा सके क्योंकि यह दोनों परमेश्वर की महिमा से ढके हुए थे परमेश्वर के द्वारा इस ढके जाने में परमेश्वर को समर्थ किया कि वह उस मनुष्य के निकट जा सके जो पापों के साथ है यह एक अस्थाई बनावट थी जिसने परमेश्वर को समर्थ किया कि वह मनुष्य जाति के निकट रह सके कि मनुष्य को और अधिक बड़ी आशीषों को उन्हें दे सकें यदि वह उस परमेश्वर की आज्ञाओं को माने आज्ञाकारिता केवल एक बड़े श्राप को लेकर आएगी

यह मिलाप वाला तंबू तथा मंदिर इन्हें कई बार पुराने नियम में मुख्य विषयों के रूप में बताया गया है यह हमें परमेश्वर कि उस इच्छा के विषय में कि वह मनुष्य जाति के निकट रहना चाहता है, बताता है परमेश्वर ने बड़ी सरलता से पाप की समस्या का समाधान मनुष्य जाति को नाश करने के द्वारा कर दिया होता या वह हमेशा के लिए उनसे दूर रहकर संतुष्ट रहता परंतु उसने और भी अनेक अंधकार को ला दिया होता ना तो एक स्थाई समाधान परमेश्वर को उस निकट संबंध की

अनुमति देता जिसे उसने आरंभ चाहा था यह खेल के उस महान दर्शन के अंतिम शब्द परमेश्वर के मसीही में नई सृष्टि के विषय में जो है वह मंदिर को केंद्र में रखते हुए विचारधारा से है परमेश्वर के लोग प्रभु के चारों ओर हैं

> और मैं इस्त्राएलियों के मध्य निवास करूंगा, और उनका परमेश्वर ठहरूंगा। तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा उनका परमेश्वर हूं, जो उन को मिस्त्र देश से इसलिये निकाल ले आया, कि उनके मध्य निवास करूं; मैं ही उनका परमेश्वर यहोवा हूं॥ निर्गमन29:45-46

परमेश्वर के लोगों के मध्य में सामर्थ के प्रगटीकरण के साथ-साथ राजा का विषय भी इसमें जुड़ा हुआ है प्रभु ने अपने लोगों के लिए एक राजा की मांग को पार्क के रूप में देखा है उस से कहने लगे, सुन, तू तो अब बूढ़ा हो गया, और तेरे पुत्र तेरी राह पर नहीं चलते; अब हम पर न्याय करने के लिये सब जातियों की रीति के अनुसार हमारे लिये एक राजा नियुक्त कर दे। 6 परन्तु जो बात उन्होंने कही, कि हम पर न्याय करने के लिये हमारे ऊपर राजा नियुक्त कर दे, यह बात शमूएल को बुरी लगी। और शमूएल ने यहोवा से प्रार्थना की। 1शमूएल 8:5-6 परंतु वह इसकी अनुमति देता है प्रभु एक सच्चा राजा है जो सबके मध्य में रहता है अपनी लोगों की सुधि लेते हुए यह विषय उन पवित्र याचकों के द्वारा जो परमेश्वर की निकटता में रहते थे और भी वितरित करते हैं लेवी तथा याचक उनके पास प्रभु उनकी मेराज के रूप में था फिर यहोवा ने हारून से कहा, इस्त्राएलियों के देश में तेरा कोई भाग न होगा, और न उनके बीच तेरा कोई अंश होगा; उनके बीच तेरा भाग और तेरा अंश मैं ही हूं॥

गिनती 18:20

यह बड़ा रुचिकर है इस बात को यह खेल के उस भविष्यवाणी में आगे चलकर देखते हैं क्योंकि यादों को यह आज्ञा दी गई थी कि राजकुमार के उस सीमा रेखा के अंदर ही उन्हें रहना है जैसा कि वायदा किया गया है जो प्रधान का भाग होगा, वह लेवियों के बीच और नगरों की विशेष भूमि हो। प्रधान का भाग यहूदा और बिन्यामीन के सिवाने के बीच में हो। यहेजकेल 48:22 नगर की चारों अलंगों का घेरा अठारह हजार बांस का हो, और उस दिन से आगे को नगर का नाम "यहोवा शाम्मा" रहेगा। यहेजकेल 48:35 यह सारे विषय यरूशलेम, मंदिर,परमेश्वर की उपस्थिति मेरा तथा उसके लोग अद्भुत रीति से इस भविष्यवाणी में जोड़े गए हैं

जैसे हम नए नियम की हार जाते हैं हम यह पाते हैं यह परमेश्वर के लोग हैं कलीसिया जो याजक बन गए हैं और पिता का धन्यवाद करते रहो, जिस ने हमें इस योग्य बनाया कि ज्योति में पवित्र लोगों के साथ मीरास में समभागी हों। कुलूसियो 1:12 पत्र इस विषय का और अधिक विस्तार करता है

> उसके पास आकर, जिसे मनुष्यों ने तो निकम्मा ठहराया, परन्तु परमेश्वर के निकट चुना हुआ, और बहुमूल्य जीवता पत्थर है। तुम भी आप जीवते पत्थरों की नाईं आत्मिक घर बनते जाते हो, जिस से याजकों का पवित्र समाज बन कर, ऐसे आत्मिक बलिदान चढ़ाओ, जो यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर को ग्राह्य हों। १ पतरस 2: 4-5

यह विषय सामर्थी रूप से प्रकाशितवाक्य 21 में आपस में जुड़ते हैं उसने यरूशलेम के शहर में उस शहर बना हो तथा पाठकों के बीच में परमेश्वर के लोग प्रभु के निकट रह रहे हैं परंतु मुख्य रुप से जैसे उस आरंभ की वाटिका में था वैसे ही इसमें कोई मंदिर नहीं है और मैं ने उस में कोई मंदिर न देखा, क्योंकि सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर, और मेम्ना उसका मंदिर हैं। प्रकाशितवाक्य 21:22

परमेश्वर को अपने लोगों से और अधिक अलग रहने की आवश्यकता नहीं वह एक साथ रह सकते हैं वह पढ़ता जिसने अति पवित्र स्थान को अलग किया था वह ऊपर से नीचे तक फट गया जब यीशु मारा गया नई वाचा को अपने लहू से मुद्रित करते हुए और मन्दिर का पर्दा ऊपर से नीचे तक फटकर दो टुकड़े हो गया। मरकुस15:38 उस संगति की ओर संकेत करते हुए जो अब परमेश्वर मसीह के कार्य के द्वारा अपने लोगों के साथ रख सकता है

और भी कुछ इस विषय में लिखा जा सकता है परंतु हम इस बात से संतुष्ट है यह देखने के द्वारा की मुख्य नक्शे में मंदिर नहीं था तथा नाही वह लंबे समय तक रहा पहले में एक वाटिका थी जहां परमेश्वर स्वतंत्रता से मनुष्य के साथ चलता था तथा दूसरे मैं हम देखते हैं एक शहर जिसमें एक वाटिका है क्या आपको वह नदी तथा उसमें उन वृक्षों के विषय का स्मरण है यह परमेश्वर के सिंहासन के रूप में कार्य करता है जहां परमेश्वर राज करेगा और जहां वह अपने लोगों के ऊपर छत्रछाया को देगा

परमेश्वर ज्योति है

इसमें कोई शंका नहीं की आरंभ से ही परमेश्वर की उपस्थिति को दर्शाने के लिए ज्योति किस सामर्थी चित्र को उपयोग किया गया है हम उत्पत्ति के पहले अध्याय में देखें की ज्योति के विषय में कई विवरण है जो अंधकार में देखने के लिए समर्थ करता है तथा ऊर्जा को लेकर आता है यह शब्द रोशनी उस वाटिका में नहीं आता परंतु निश्चित रूप से उत्पत्ति के पहले अध्याय में

- उत्पत्ति 1:3 तब परमेश्वर ने कहा, उजियाला होतो उजियाला : हो गया।
- उत्पत्ति 1:4 और परमेश्वर ने उजियाले को देखा कि अच्छा है; और परमेश्वर ने उजियाले को अन्धियारे से अलग किया।
- उत्पत्ति 1:5 और परमेश्वर ने उजियाले को दिन और अन्धियारे को रात कहा। तथा सांझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार पहिला दिन हो गया।।
- उत्पत्ति 1:15 और वे ज्योतियां आकाश के अन्तर में पृथ्वी पर प्रकाश देने वाली भी ठहरें; और वैसा ही हो गया।
- उत्पत्ति 1:16 तब परमेश्वर ने दो बड़ी ज्योतियां बनाईं; उन में से बड़ी ज्योति को दिन पर प्रभुता करने के लिये, और छोटी ज्योति को रात पर प्रभुता करने के लिये बनायाऔर तारागण को भी : बनाया।
- उत्पत्ति 1:17 परमेश्वर ने उन को आकाश के अन्तर में इसलिये रखा कि वे पृथ्वी पर प्रकाश दें,
- उत्पत्ति 1:18 तथा दिन और रात पर प्रभुता करें और उजियाले को अन्धियारे से अलग करेंऔर परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है। :

इन पहली 18 आयतों में ज्योति; यह शब्द का वर्णन वाटिका में नहीं है । इसलिए नहीं क्योंकि यह वहां पर नहीं है परंतु इसलिए कि इस वाटिका के चारों ओर के ढांचे का यह भाग है जिसमें अगर है इस वाटिका के सारे पौधे ज्योति पर निर्भर करते हैं उसकी गर्माहट के लिए तथा उस ऊर्जा के लिए ।

हम जो भी करते हैं ज्योति उसके लिए महत्वपूर्ण है । किस कंप्यूटर में उसका स्क्रीन काला हो? जब एक मनुष्य एक कमरे में रात्रि के समय प्रवेश करता है पहला कार्य जो वह करता है की बत्तियों को जलाएं । क्या आप गाड़ी चलाते हैं जब अंधकार होता है तो उसकी हेडलाइट को चालू किया जाता है? धर्म भी ज्योति को एक दिन के रूप में इस्तेमाल करते हैं क्योंकि उसकी ऊर्जा तथा शुद्धता के कारण शास्त्रों में ज्योति एक बड़ी ज्योति की ओर संकेत करती है । जो परमेश्वर खुद है मंदिर में एक दीवट थी जिसे निरंतर रूप से प्रज्ज्वलित रहना था जकरिया के पास एक दर्शन आया दो जैतून के वृक्षों के विषय में जो इस दीवट को निरंतर रूप से तेल प्रदान करते थे

> और उसने मुझ से पूछा, तुझे क्या देख पड़ता है? मैं ने कहा, एक दीवट है, जो सम्पूर्ण सोने की है, और उसका कटोरा उसकी चोटी पर है, और उस पर उसके सात दीपक है; जिन के ऊपर बत्ती के लिये सात सात नालियां हैं। और दीवट के पास जलपाई के दो वृक्ष हैं, एक उस कटोरे की दाहिनी ओर, और दूसरा उसकी बाईं ओर। तब मैं ने उस दूत से जो मुझ से बातें करता था, पूछा, हे मेरे प्रभु, ये क्या हैं? जो दूत मुझ से बातें करता था, उसने मुझ को उत्तर दिया, क्या तू नहीं जानता कि ये क्या हैं? मैं ने कहा, हे मेरे

प्रभु मैं नहीं जानता। तब उसने मुझे उत्तर देकर कहा, जरुब्बाबेल के लिये यहोवा का यह वचन है : न तो बल से, और न शक्ति से, परन्तु मेरे आत्मा के द्वारा होगा, मुझ सेनाओं के यहोवा का यही वचन है।हे बड़े पहाड़, तू क्या है? जरुब्बाबेल के साम्हने तू मैदान हो जाएगा; और वह चोटी का पत्थर यह पुकारते हुए आएगा, उस पर अनुग्रह हो, अनुग्रह! फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, जरुब्बाबेल ने अपने हाथों से इस भवन की नेव डाली है, और वही अपने हाथों से उसको तैयार भी करेगा। तब तू जानेगा कि सेनाओं के यहोवा ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है। क्योंकि किस ने छोटी बातों के दिन तुच्छ जाना है? यहोवा अपनी इन सातों आंखों से सारी पृथ्वी पर दृष्टि कर के साहुल को जरुब्बाबेल के हाथ में देखेगा, और आनन्दित होगा। तब मैं ने उस से फिर पूछा, ये दो जलपाई के वृक्ष क्या हैं जो दीवट की दाहिनी-बाईं ओर हैं? फिर मैं ने दूसरी बार उस से पूछा, जलपाई की दोनों डालियें क्या हैं जो सोने की दोनों नालियों के द्वारा अपने में से सोनहला तेल उण्डेलती हैं? उसने मुझ से कहा, क्या तू नहीं जानता कि ये क्या हैं? मैं ने कहा, हे मेरे प्रभु मैं नहीं जानता। तब उसने कहा, इनका अर्थ ताजे तेल से भरे हुए वे दो पुरुष हैं जो सारी पृथ्वी के परमेश्वर के पास हाजिर रहते हैं।।जकरिया 4:2-14

यह आश्चर्यजनक नहीं है कि मंदिर में उस प्रज्वलित दीपक को देखाजाए परंतु यह कि कैसे वह जैतून के वृक्ष जो उस दिवस की दोनों और है अपेक्षा से बाहर है यह जैतून के व्रत अपने आप उस दीवट को तेल प्रदान कर रहे हैं नाली कहां हो के द्वारा विशेष रूप से दो अभिषेक लोगों के साथ जुड़ी हुई थी य हो शु तथा जरुरत है जो इन दो वृक्षों

के द्वारा दर्शाए जाते हैं एक साथ वह राजा अगुआ तथा याचक के कार्यालय को दर्शाते हैं उन्हें यीशु मसीह जो महान राजा तथा याजक है उसकी ओर संकेत करते हैं(मलकीसदेख)

नए नियम में यीशु इस ज्योति के चिन्ह को मजबूती से उपयोग करना आरंभ करता है इस वक्त व्य को देखकर जीवन ज्योति का उसी के विषय में है तथा तब यीशु ने फिर लोगों से कहा, जगत की ज्योति मैं हूं; जो मेरे पीछे हो लेगा, वह अन्धकार में न चलेगा, परन्तु जीवन की ज्योति पाएगा। यूहन्ना 8:12 जब तक मैं जगत में हूं, तब तक जगत की ज्योति हूं।   यूहन्ना 9:5

यह कहना कि वह जगत की ज्योति है इसका तात्पर्य यह है कि इस बात को मानना कि वह सारी शुद्धता दिशा तथा सामर्थ का स्त्रोत है पुनः राजा की सामर्थ के विषय में सोचे ऊर्जा तथा   याजक शुद्धता. सुधारवादी फिर भी सही पौलुस इन्हें जोड़ता है इसलिये कि परमेश्वर ही है, जिस ने कहा, कि अन्धकार में से ज्योति चमके; और वही हमारे हृदयों में चमका, कि परमेश्वर की महिमा की पहिचान की ज्योति यीशु मसीह के चेहरे से प्रकाशमान हो।। (2 कुरिंथियों 4:6)

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक अनंत काल के मंच को स्थापित करती है बिना कोई सूर्य तथा चंद्रमा की परमेश्वर उसकी ज्योति है और उस नगर में सूर्य और चान्द के उजाले का प्रयोजन नहीं, क्योंकि परमेश्वर के तेज से उस में उजाला हो रहा है, और मेम्ना उसका दीपक है। और जाति जाति के लोग उस की ज्योति में चले फिरेंगे, और पृथ्वी के राजा अपने अपने तेज का सामान उस में लाएंगे। और उसके फाटक

दिन को कभी बन्द न होंगे, और रात वहां न होगी। प्रकाशितवाक्य 21:23-25

प्राकृतिक सूर्य पृथ्वी को कुछ घंटों के लिए ही ऊर्जा को प्रदान करता है परंतु प्रभु यीशु जो मिलना है वह ज्योति है जो हमेशा चमकती है पर हम उसके द्वारा उर्जा तथा उसकी रोशनी से सामर्थ को प्राप्त करते जाएंगे कृति खुद सृष्टि की महिमा की ओर संकेत करती है कितना अधिक यह नई पृथ्वी पता नहीं स्वर्ग में सत्य होगा तथा पृथ्वी विश्व में कोई भी साफ नहीं तथा प्रकाश और फिर श्राप न होगा और परमेश्वर और मेम्ने का सिंहासन उस नगर में होगा, और उसके दास उस की सेवा करेंगे। प्रकाशितवाक्य 22:3

और फिर रात न होगी, और उन्हें दीपक और सूर्य के उजियाले का प्रयोजन न होगा, क्योंकि प्रभु परमेश्वर उन्हें उजियाला देगाऔर वे : युगानुयुग राज्य करेंगे॥ प्रकाशितवाक्य 22:5

विवाह

बार बार चिन्ह जो हमें उत्पत्ति मैं संकेत मिलता है प्रकाशितवाक्य के अंतिम अध्याय उसकी पूर्णता हमें अचंभित करती है हमने इनमें से कुछ के ऊपर स्पर्श किया है अंतिम जिसके विषय में हम देख सकते हैं यद्यपि वह 14 अध्याय में आया था प्रथम बार विवाह है

सृष्टि का मुख्य बिंदु मनुष्य की सृष्टि है तथा इस रचना का चरण हवा है परमेश्वर ने विवाह को नियुक्त किया परमेश्वर द्वारा दो लिंगों की रचना के बिना हमारे पास समाज नहीं होता ना ही हमारा अस्तित्व होता परमेश्वर अपनी सृष्टि की रचना का विवरण धीमा करते हुए इस बात

पर चर्चा करता है कि कैसे उसने हवा की रचना की तथा उसे आदम के पास लेकर आया (उत्पत्ति 2:17-25)

यह सृष्टि की अंतिम चित्र है क्योंकि यह है परमेश्वर के द्वारा कलीसिया को अपने इकलौते पुत्र के लिए दुल्हन के रूप में रखता है यीशु मसीह के लिए हम इस निकटता के विषय में सुझाव नहीं यदि हमारे पास इन शास्त्रों की स्पष्टता नहीं होती विवाह के उद्देश्य को संत अगस्टीन के द्वारा समझाया गया है जो प्रसिद्ध कलीसिया के पिता है

संत अगस्टीन ने विवाह के दो परिणाम तथा उद्देश्य को पहचाना है   पह ला यह प्रजनक है विवाह 16 पृष्ठभूमि को देता है संत उत्पत्ति तथा बच्चों का पालन पोषण करने की दूसरा यह जोड़ने वाला अंत है विवाह स्त्री और पुरुष को निकटता की भाषा में बांधता है एक बहुत गरीबी मित्रता में संत अगस्टीन को कुछ विचार नहीं करना पड़ा इन दो उद्देश्यों को सामने रखने के लिए यह दोनों उद्देश्य उत्पत्ति के पहले अध्याय में उभर कर आते हैं।

क्या यह वह नहीं जिससे हम आरंभ से कह रहे हैं विवाह बलवंत होने को दर्शाता है ?जो पति और उसकी पत्नी के एक होने के द्वारा आरंभ होता है यहां पर विवाह के तीन उद्देश्य हैं यह उस एकता को दर्शाता है जिसे परमेश्वर मनुष्य जाति के साथ रखने की इच्छा करता है। हर एक संतान उस एकता का परिणाम है उस एकता की सुंदरता की गवाही देता है तथा विवाह हमें मसीह की ओर संकेत देता है इस रूप में कि केवल वही हमारी गहरी इच्छाओं को पूरा तथा संपूर्ण कर सकता है हम यीशु के लिए बनाए गए हम नए नियम के

अभिलेख को देखें अनगिनत बार यह अपने आप को दूल्हे के रूप में कहता है परन्तु वे दिन आएंगे, कि दूल्हा उन से अलग किया जाएगा; उस समय वे उपवास करेंगे। उस ने उन का विश्वास देखकर उस से कहा; हे मनुष्य, तेरे पाप क्षमा हुए। (मरकुस 2:20 लुक्का 5:34)cप्रेरित इस कड़ी को आगे बढ़ाते हुए कहते हैं :

> इसी प्रकार उचित है, कि पति अपनी अपनी पत्नी से अपनी देह के समान प्रेम रखें। जो अपनी पत्नी से प्रेम रखता है, वह अपने आप से प्रेम रखता है। क्योंकि किसी ने कभी अपने शरीर से बैर नहीं रखा वरन उसका पालनपोषण करता है-, जैसा मसीह भी कलीसिया के साथ करता है ।इसलिये कि हम उस की देह के अंग हैं। इस कारण मनुष्य माता पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा, और वे दोनों एक तन होंगे। यह भेद तो बड़ा है; पर मैं मसीह और कलीसिया के विषय में कहता हूं। इफिसियों 5:28-32

विवाह हमें विश्वास योग्यता तथा शुद्धता का स्मरण दिलाता है शास्त्र कलीसिया को परमेश्वर के लोगों का दुल्हन के रूप में व्यवहार करता है उसे यह आवाज दिया जाता है कि वह अपने पति के प्रति विश्वास के योग्य रहे विवाह सब में आदर की बात समझी जाए, और बिछौना निष्कलंक रहे; क्योंकि परमेश्वर व्यभिचारियों, और परस्त्रीगामियों का न्याय करेगा। इब्रानियों13:4 इसी कारण से परमेश्वर अपने लोगों के ध्यान के लिए जलन रखता है क्योंकि मैं तुम्हारे विषय मे ईश्वरीय धुन लगाए रहता हूं, इसलिये कि मैं ने एक ही पुरुष से तुम्हारी बात लगाई है, कि तुम्हें पवित्र कुंवारी की नाईं मसीह को सौंप दूं। 2 कुरिंथियों 11 :2

अंत में यदि कोई भी संदेह है परमेश्वर प्रभु के अपने दुल्हन के प्रति समर्पण पर है उसको हटाने के लिए यीशु जो दूल्हा है अपनी दुल्हन कलीसिया के साथ विवाह करता है प्रकाशितवाक्य 19:6-9 आओ, हम आनन्दित और मगन हों, और उस की स्तुति करें; क्योंकि मेम्ने का ब्याह आ पहुंचाऔर उस की पत्नी ने अपने आप को तैयार कर लिया : है।प्रकाशितवाक्य 19:7 इसके तुरंत पश्चात प्रभु उसे उस नए घर को दिखता है जिसे उसने उसके लिए तैयार किया है (प्रकाशितवाक्य 21:15-21; यूहन्ना14:1-3)

फिर मैं ने पवित्र नगर नये यरूशलेम को स्वर्ग पर से परमेश्वर के पास से उतरते देखा, और वह उस दुल्हिन के समान थी, जो अपने पति के लिये सिंगार किए हो। प्रकाशितवाक्य 21:2 यरुशलेम परमेश्वर का शहर जहां पर मंदिर स्थित है वहां इस विवाह के चित्रण के साथ जोड़ा जाकर मसीह यीशु के सात कलीसिया के संबंध की उत्तमता को दर्शाता है जो उसका पति है

प्रभु वापस आ रहा है कि अपनी दुल्हन को ले जा सकें जो कल ही किया है कलीसिया उसकी दुल्हन है जिसे अपने आप को उसके आने के लिए तैयार करना है जिस समय दूल्हा उसे लेने के लिए आता है वह उसके सहायक के रूप में रहती है जो अपने पति को खुश करने की चाहत रखती है तथा इस बुलाहट में बहुत बड़ी संतुष्टि का अनुभव करती है मुझ यीशु ने अपने स्वर्गदूत को इसलिये भेजा, कि तुम्हारे आगे कलीसियाओं के विषय में इन बातों की गवाही देमैं दाऊद का मूल :, और वंश, और भोर का चमकता हुआ तारा हूं।। और आत्मा, और दुल्हिन दोनों कहती हैं, आ; और सुनने वाला भी कहे, कि आ; और जो

प्यासा हो, वह आए और जो कोई चाहे वह जीवन का जल सेंतमेंत ले।।
(प्रकाशितवाक्य 22: 16- 17)

एक पति तथा पत्नी के बीच में एकता जल्द ही पूर्ण रूप से मसीह की दुल्हन तथा दुल्हन के दूल्हे के द्वारा अनुभव की जाएगी । उस पुरुष शरीर के साथ और नए सदा ठहरने वाले घर के साथ तथा परमेश्वर की निरंतर बने रहने वाले उसके ऊपर प्रचलित रोशनी की उपस्थिति के साथ ,वह परमेश्वर की महिमा में अनुग्रह की ज्योति को फैलाएगी और सिद्ध लोगों में तथा उनके द्वारा कार्य करते हुए जो वह अपनी और मसीह के द्वारा लाता है परमेश्वर एक गहरे था व्यक्तिगत संबंध को हमारे साथ बांटना चाहता है जहां से बड़ी आशीषें रहेंगी।

निष्कर्ष

परमेश्वर के उद्धार की योजना उसके लोगों को समर्थ करती है कि उसकी उपस्थिति में रह सके तथा उसके महिमा में कार्य को कर सकें । विश्वास वह तरीका नहीं ;नरक से उद्धार को प्राप्त कर सकें लेकिन वह मार्ग है कि परमेश्वर की उपस्थिति में जी सकें तथा उसके साथ कार्य करने का आनंद उठा सके । उन कार्यों में जो अभी तक नहीं हुए हैं । इस समय इन कार्यों में सारे देशों के लोगों के बीच में सुसमाचार का प्रचार संबंधित है तथा उन्हें शिष्य बनाना ताकि वह भी उस बढ़ते हुए परिवार में सहभागी हो सके तथा उसकी पवित्र उपस्थिति में रह सके परमेश्वर की महिमा में कार्य को करते हुए ।

मुझे आज भी जॉन स्टार्ट द्वारा कई वर्ष पहले दिए गए स्वतंत्रता पर संदेश स्मरण है परमेश्वर ने न केवल हमें हमारे पापों से छुड़ाया है परंतु अपने उद्देश्यों के लिए भी बचाया है। स्वतंत्रता की घोषणा

अपर्याप्त होगी इस बात को घोषित किए बना कि किस लिए हम स्वतंत्र किए गए हैं? जो मिस्त्र से बाहर निकल कर आए उनके पास यही समस्या थी और वही समस्या उन परमेश्वर के लोगों के लिए भी है जो इस संसार से बाहर निकलते हैं। परमेश्वर के पास एक बड़ा आलोकिक उद्देश्य हमारे लिए है जो हमें इस बात के लिए प्रेरित करता है कि हम उन बातों की खोज करें जिनके लिए हम बचाए गए हैं। यह परमेश्वर का उद्देश्य हमारे लिए है जो हमारे लिए उस असीमित आनंद को लेकर आता है तथा हमारे आसपास के लोगों की और उत्तम सहायता करने में समर्थ बनाता है और यहोवा ने भी आज तुझ को अपने वचन के अनुसार अपना प्रजारूपी निज धन सम्पत्ति माना है, कि तू उसकी सब आज्ञाओं को माना करे, और कि वह अपनी बनाईं हुई सब जातियों से अधिक प्रशंसा, नाम, और शोभा के विषय में तुझ को प्रतिष्ठित करे, और तू उसके वचन के अनुसार अपने परमेश्वर यहोवा की पवित्र प्रजा बना रहे। (व्यवस्थाविवरण 26: 18- 19)

अब शान्तिदाता परमेश्वर जो हमारे प्रभु यीशु को जो भेड़ों का महान रखवाला है सनातन वाचा के लोहू के गुण से मरे हुओं में से जिला कर ले आया। तुम्हें हर एक भली बात में सिद्ध करे, जिस से तुम उस की इच्छा पूरी करो, और जो कुछ उस को भाता है, उसे यीशु मसीह के द्वारा हम में उत्पन्न करे, जिस की बड़ाई युगानुयुग होती रहे। आमीन।। (इब्रानियों 13:20 21)

शेषसंग्रह १: लेखक के विषय में कुछ और बातें

लेखक का परिचय

पॉल जे बुकनेल , एक सक्रिय लेखक एवं अंतरास्ट्रीय निर्देशक के रूप में प्रासंगिक मसीही प्रशिक्षण विषयो पर १० से अधिक पुस्तकों का लेखन किया है ।इनकी पुस्तके इस बड़े विश्वास के साथ लिखी गयी है की हम जितना अपने जीवनो को परमेशवर के वचन के सत्य पर बनायेगे उतनी है जोशपूर्ण हमारा विश्वास और हमारा जीवन होगा ।

पासबानो के अंतराष्टीय प्रशिक्षण सेमिनारों के दौरान ,पॉल सामर्थी रूप से परमेश्वर के वचन को लेते है तथा उसके सत्य को मसीही जीवन विभिन्न

पहलू पर लागू करते है ।बाइबिल आधारित स्वतंत्रता के संस्थापक के तौर पर ,पॉल वीडियो ट्रेनिंग तथा साथ में चलने वाली वेबसाइट सेवकाई के साथ साथ प्रिंटेड तथा डिजिटल मीडिया को भी उपलब्ध करते हैं ।पॉल, अपनी पत्नी लिंडा के साथ ,वर्त्तमान में अपने बच्चो का पालन पोषण करने में वयस्थ हैं तथा वर्त्तमान में अपने तीन पोतो में आनंदित हैं ।

पॉल और लिंडा के विषय में जानने के लिए तथा BFF सेवकाई के विषय में जानने के लिए आप ऑनलाइन www.foundationsforfreedom.net पर देख सकते हैं ।

शेषसंग्रह २: पुस्तक का सारांश

सारांश: शास्त्रों के द्वारा छुटकारा

ऐसा प्रतीत होता है की कलीसिया आधुनिक संस्कृति से अपने युद्ध को हार रहा है । परमेश्वर के लोगो में मिटता हुआ समर्पण का स्रोत उनकी अनगिनत निर्बलताओं में मिलता हैं ,परन्तु उन में मुख्य हैं उनकी छुटकारे का अपंग ईश्वर ज्ञान । आधुनिक मूल्यों दवारा भटकाए गए लोगो के लिए उद्धार उन कई सस्ते प्रस्तावों के सामान है जो उन्हे परमेश्वर के परिसर में दुबक कर ले जाता है । सुसमाचार , यधपि एक और सस्ता प्रयास नहीं है हमे पकड़ने के लिए ,मनो जैसे उससे बेहतर कुछ हो । परमेश्वर के छुटकारे की योजना , इसके विपरीत ,हमारे जीवन उद्देश्य को सम्मलित करता है ,केवल हमारे भविष्य के स्वापनों में ही नहीं । शास्त्रों के दवारा छुटकारा, कई चित्रणों से भरा है , जो ध्यानपूर्वक हमारी अगुवाई करता है की हम पीछे मुड़ कर क्रूस पर मसीही के कार्य को देखें , जहाँ हम सामर्थी रूप से प्रेरित होंगे की परमेश्वर के अविश्वसनीय योजना पर एक नए हियाब के साथ । हमारे जीवन के लिए परमेश्वर की योजना की निकटता के परिक्षण करने के दवारा ,हम प्रबल रूप से उसकी गहरी निकटता तथा योजना में खींचे जाएंगे जो हमे समर्थ करता है की हम अपने जींवन को नए रूप से तथा सही ढंग से पुनः केंद्रित करे ।